vk/k|fud Hkkock/k d dfo
Mk- g"kn|o ek/ko % ,d leh{kkRed v/;;u

(व्रणो रूढग्रन्थिः, स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः एवं तथास्तु के संदर्भ में)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

dh

ih,p-Mh- ¼lLd`r½ mikf/k g|r| iLr|r

शोध–प्रबंध

¼dyk ladk;½

vu|l/kkud=h

Jherh रश्मि खाण्डल

शोध निर्देशिका

Mk- lk/kuk dly

lLd`r&foHkkx

jktdh; dyk egkfo|ky;] dkVk ¼jkt-½

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

o"k 2017

घोषणा–पत्र (शोधार्थी)

मैं घोषणा करती हूँ कि शोध–प्रबन्ध ^^vk/kqfud Hkkocks/k d dfo Mk- g"kno ek/ko ¼,d leh{kkRed v/;;u **(व्रणो रूढग्रन्थिः, स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः एवं तथास्तु के संदर्भ** e½** में, जो शोधकार्य मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया है, वह पीएच-Mh- ¼lLdr½ dh mikf/k d fy; आवश्यक है। मैंने यह शोधकार्य Mk- lk/kuk dly] 0;k[;krk lLdr] jktdh; dyk egkfo|ky;] dkVk d निर्देशन में पूर्ण किया है। यह मेरा मौलिक कार्य है। मैंने अपने विचारों को अपने शब्दों में प्रस्तुत किया है और जहाँ दूसरे विचारों और शब्दों का प्रयोग किया है, वे मेरे द्वारा fofHkUu ekU; L=krk l fy; x; gA vifjgk; fLFkfr e yh xb ,lh gj lkexh dk ;FkkLFkku सन्दर्भ एवं आभार व्यक्त कर दिया गया है। जो कार्य इस शोध–प्रबन्ध में प्रस्तुत किया गया है, वह dgh vkj fdlh vkj fMxh d fy, fdlh Hkh lLFkk e iLrr ugh fd;k x;k gA

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि मैंने विश्वविद्यालय के सभी अकादमिक नि;ek dk fu"Bk ,o bekunkjh l ikyu fd;k g rFkk fdlh rF; dk xyr iLrr ugh fd;k gA e le>rh g fd किसी भी नियम का उल्लंघन करने पर मेरे खिलाफ प्रशासनिक कार्यवाही की जा सकती है और मेरे f[kykQ tekuk Hkh yxk;k tk ldrk gA ;fn eu fdlh L=kr l fcना, उसका नाम दर्शाये या जिस स्त्रोत से अनुमति की आवश्यकता हो, बिना अनुमति के किया हो।

श्रीमती रश्मि खाण्डल

(शोधार्थी)

प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी श्रीमती रश्मि खाण्डल (F-6()/Res/UOK/2013/13525-26½ }kjk mi;Dr lHkh lpuk, ejh tkudkjh d vulkj lgh gA

Mk- lk/kuk dly

0;k[;krk] lLdr

jktdh; dyk egkfo|ky;] dkVk

izek.k&i=

मुझे यह प्रमाणित करते हुए प्रसन्नता है कि शोध–प्रबंध ^^vk/kqfud Hkkock/k d dfo Mk- **हर्षदेव माधव : एक समीक्षात्मक अध्ययन (व्रणो रूढग्रन्थिः, स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः एवं rFkkLrq dk lanHkZ esa½**** शोधार्थी **श्रीमती रश्मि खाण्डल** ने कोटा विश्वविद्यालय, कोटा से पीएच-Mh- के नियमों के अनुसार निम्नलिखित आवश्यकताओं को पूर्ण किया है –

1- शोधार्थी ने विश्वविद्यालय के नियमानुसार कोर्स वर्क किया है।

2- शोधार्थी ने विश्वविद्यालय के 200 दिन क आवासीय आवश्यकता नियम को पूरा fd;k gA

3- शोधार्थी ने नियमित रूप से अपना कार्य प्रगति प्रतिवेदन दिया है।

4- शोधार्थी ने विभाग एवं संस्था प्रधान के समक्ष अपना शोध कार्य प्रस्तुत किया है।

5- शोधार्थी का बताई गई शोध पत्रिका में शोध पत्र का प्रकाशन हुआ है।

¼Mk- lk/kuk dly½

(शोध पर्यवेक्षक)

ih,p-डी उपाधि हेतु शोध–प्रबन्ध का अनुमोदन

यह शोध–प्रबन्ध ^^vk/kqfud Hkkocks/k d dfo Mk- g"kno ek/ko % ,d leh{kkRed **अध्ययन (व्रणो रूढग्रन्थिः, स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः एवं तथास्तु के संदर्भ में)'*** शोधार्थी श्रीमती रश्मि खाण्डल (पंजीयन संख्या F-6()/Res/UOK/2013/13525-26½ jktdh; dyk egkfo|ky; (कोटा विश्वविद्यालय, कोटा) द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इसे पीएच-Mh- ¼lLdr½ mikf/k d fy, vuekfnr fd;k tkrk gA

fnukd % ijh{kd

LFkku % &&&&&&&&&&&&

&&&&&&&&&&&&

&&&&&&&&&&&&

' शोध पर्यवेक्षक

&&&&&&&&&&&&

&&&&&&&&&&&&

&&&&&&&&&&&&

ikDdFku

vk/kfud lLdr lkfgR; dk ikjHk ik;% lekykpdk u if.Mr vfEcdknÙkO;kl dh jpuk ‘शिवराजविजय’ नामक उपन्यास से माना है। इस उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1901 में हुआ था। तब l ydj vkt rd vk/kfud lLdr lkfgR; e vud jpuk, fy[kh o i<h tk jgh gA fo/kk] विषय–वस्तु, छन्द, अलंकार, भाषा–शैली आदि के दृष्टिकोण से संस्कृत साहित्य में व्यापक परिवर्तन g, gA

miU;kl] y?kdFkk] nh?kdFkk] uDdMukVd vkfn fo/kkvk e jpuk, gk jgh gA lLdrÙkj भारतीय भाषाओं यथा – तमिल, उर्दू, हिन्दी आदि के छन्दों तथा विदेशी छन्दों हाइकु, तांका, सॉनेट vkfn e Hkh dfo viu dF; dk iLrr dj jg gA vk/kfud lLdr dfo io dfo;k dh Hkkfr मात्र प्रकृति–चित्रण, नख–शिख वर्णन, स्तुति प्रशस्ति में ही नहीं उलझे हुए हैं, अपितु वह lelkef;d nf"Vdk.k viukr g, ekuo eu d gj igy dk Hkh mn?kkfVr dj jg g rFkk Hkk"kk dh ljyrk ij Hkh /;ku n jg g] ftll fd lLdr dforkk lk/kkj.k lLdrK dk Hkh ckf/kr gk ldA

समकालीन संस्कृत कवियों में रामरूप पाठक, सत्यव्रत शास्त्री, जगन्नाथ पाठक, पी· d· नारायण पिल्लई, वसंत त्रिम्बक शेवड़े, कालिकाप्रसाद शुक्ल, रामकरण शर्मा, रेवाप्रसाद द्विवेदी, gfjukjk;.k nhf{kr] jk/kkoYyHk f=ikBh] jfldfcgkjh जोशी, केशवचन्द्र दास, श्यामदेव पाराशर, बच्चूलाल अवस्थी, श्रीनिवास रथ, काशीनाथ मिश्रा, कलानाथ शास्त्री तथा हर्षदेव माधव प्रमुख हैं।

vk/kfud lLdr lkfgR; d egku euhf"k;k e vkpk; g"kno ek/ko dk uke cM vknj l fy;k tkrk gA vkiu viuh dforkk e lLdr dkO; ijEijk l gVdj uru fo"k;k ij jpuk, कर, एक नई दिशा का सूत्रपात किया है, जिससे सम्पूर्ण जगत् में एक नई क्रांति आई है, और नये ढंग की रचनाएँ होने लगी हैं। प्रस्तुत शोध प्रबंध ^^vk/kfud Hkkockk/k d dfo Mk- g"kno

ek/ko % ,d leh{kkRed **अध्ययन (व्रणो रूढग्रन्थिः, स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः एवं तथास्तु के** lnHkZ e½** Mk- g"kZno ek/ko dh jpukvksa ij gh vk/kkfjr gA

प्रस्तुत शोध–प्रबंध का प्रथम अध्याय vk/kqfud laLd`r lkfgR; gA blds v/;k; esa vk/kqfudrk dh vo/kkj.kk] vk/kqfud laLd`r lkfgR; dh fodkl;k=k ,o vk/kqfud laLd`r lkfgR; esa ipfyr uohu izofRr;ksa ,o fo/kkvksa dk lfEefyr fd;k x;k gA f}rh; v/;k; Mk- g"kZno ek/ko & 0;fDrRo ,o d`frRo gA r`rh; v/;k; Mk- g"kZno ek/ko ds dkO;ksa esa fo"k;xr vk/kqfudrk gA mudh jpukvksa esa vk/kqfudrk एवं नवीन प्रयोग का समावेश होता है। डॉ- ek/ko viu dkO;k esa u;&u; iz;kx djrs jgrs gA iLrqr v/;k; esa Mk- g"kZno ek/ko }kjk jfpr ?kj] परिवार, समाज, देश, विदेश, पर्यावरण, राजनीति, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, धर्म, आध्यात्म, नारी संवेदना, ekuoh; eY;] वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, औद्योगीकरण, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, सामाजिक विद्रूपता, o)koLFkk vkfn fo"k;k ij jph xbZ jpukvksa dks lfEefyr fd;k x;k gA prqFkZ v/;k; Mk- **हर्षदेव माधव के काव्यों की शिल्पगत आधुनिकता** gA blds v/;k; ds vUrxr Mk- g"kZno ek/ko d विवेच्य काव्यों की भाषा, शैली, छन्द, अलंकार एवं रसों का अध्ययन किया गया है। पंचम v/;k; Mk- g"kZno ek/ko dk laLd`r lkfgR; esa LFkku ls lcaf/kr gA Mk- g"kZno ek/ko dh लेखन शैली पर अनेक विद्वानों ने अपने मतों को व्यक्त किया है, जिसे काव्यशास्त्रीय दृf"V ls] leh{kdksa dh nf"V ls ,o ledkyhu lkfgR;dkjksa dh nf"V ds vk/kkj ij iLrqr v/;k; esa lfEefyr fd;k x;k gA "k"Ve v/;k; milagkj ds :i esa gA

प्रस्तुत शोध प्रबंध को पूर्ण करने का संपूर्ण श्रेय मेरी गुरु एवं परम आदरणीय निर्देशिका Mk- l/kuk dLy dks जाता है। आपने कुशल निर्देशन के कारण ही यह शोध कार्य संभव हो पाया है। आपने अपने व्यस्ततम समय में से समय निकाल कर शोध संबंधी मेरी समस्त कठिनाईयों को दूर

किया । आपकी योग्यता, अनुभव एवं दिशा निर्देश का लाभ लेकर ही मैं अपने शोध कार्य को पू.k कर सकी हूँ। मैं उनके स्नेह, सहयोग एवं मार्गदर्शन हेतु आजीवन ऋणी रहूँगी।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को पूर्ण करने में मुझे अपने सभी गुरुजनों का सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझती हूँ। शोध संबंधी विषय पर आपd बहुमूल्य सुझावों ने मुझे दिशा प्रदान की मैं आप सभी की आभारी रहूँगी।

e Mk- g"kno ek/ko के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने मुझे शोध कार्य gr lk{kkRdkj dh vuefr nh ,o ejh ftKklkvk dk lek/kku fd;kA blds vfrfjDr njok.kh rFkk i= }kjk Hkh vkiu ejh leL;kvk dk gy fd;kA ,l egku 0;fDr dk lEcy ikdj e कृतज्ञ हो गयी हूँ। आपके शुभाशीष एवं शुभकामनाओं के कारण ही यह कार्य पूर्ण हो सका है।

viu ekrk&firk vknj.kh; **श्रीमती मन्जु शर्मा** ,o **श्री शिवनन्दन जी शर्मा** rFkk ekrk&firk rY; ej lkl&llj **श्रीमती शान्ति शर्मा** ,o **श्री महेश जी शमा** d ifr lefir Hkko l ureLrd gkdj vkHkkj idV djrh g] bUgku ej vnj LQfr dk lpkj fd;k ftll आज मैं अपने इस कार्य को पूर्ण कर सकी हूँ। आपका आशीर्वाद सदैव मेरे साथ रहा है। मैं आपकh fpj_.kh jgxhA

e viu Hkkb lkjHk [kk.My ,o ifjokj d vU; lnL;k d lg;kx dh Hkh vkHkkjh g जिनके कारण मैं अपने कार्य को तनावमुक्त होकर कर सकी। शोध कार्य से संबंधित मेरी समस्याओं dk gy dju e vkiu ejh Hkjij lgk;rk dh gA

e viu thoulkFkh lh-,- **आशीष शर्मा** d lg;kx dk dHkh Hkh foLer ugh dj ldrh g। आपने समय–समय पर मुझे शोध कार्य हेतु प्रेरित किया एवं इस कार्य में आने वाली समस्त कठिनाईयों को दूर करने में मेरी सहायता की है। आपके सहयोग को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा

ldता है। साथ ही मैं अपने पुत्र आराध्य शर्मा को स्नेह समर्पित करना चाहूँगी, जिससे मैं अपने dk; dk rukoeDr gkdj dj ldhA

e viu fe=k vuq] fjrq ,o vU; d lkFk gh **कौशल तिवारी** ,o yfyrukek dh Hkh vkHkkjh g ftudk lg;kx e> le;≤ ij iklr gvkA

शा/k dk vfre :i nu e Jh jkeckcw lkuh u vFkd ifjJe djd fo}ku ,o x.khtuk के समक्ष मूल्यांकन हेतु प्रेषित करने में अपना पूर्ण सहयोग दिया है। शोध प्रबंध के सुन्दर, व्यवस्थित ,o Rofjr Vd.k d fy, e vkidh vkHkkjh gA

(श्रीमती रश्मि खाण्डल)

iFke v/;k;
vk/kfud lLdr lkfgR;

vk/kfudrk dh vo/kkj.kk &

अन्य अधिकांश अवधारणाओं की तरह आधुनिकता की भी कोई आत्यंतिक अथवा सर्वमान्य परिभाषा या अवधारणा संभव नहीं है। अवधारणाएँ देश–काल सापेक्ष होकर न केवल अपनी rkfRodrk e cfYd viu 0;kogkfjd ifrQy e Hkh tfVyrj gkrh tkrh gA vk/kfudrk Hkh ,d tfVy ldYiuk gA bldh tfVyrk dk e[; dkj.k g viuh xR;kRedrk e bldk cgvk;keh foLrkjA

शब्दार्थ पर विचार करें तो 'अधुना' या इस समय जो कुछ है वह आधुनिक है। पर 'आधुनिक' dk ;gh vFk ugh gA[1] हालाँकि आधुनिक शब्द की व्युत्पत्ति पाँचवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लैटिन शब्द ''मॉर्ड्नस' (Moderuns½ l gbl g] ftldk i;kx vkipkfjd :i l blkbl oreku dk xj&blkb jkeu vrhr l vyx dju gr fd;k x;k FkkA mld ckn dk 0;ogkj ikphu dh txg oreku dk LFkkfir dju gr fd;k x;k] tk ;jki e ml vof/k e mRiUu gk jgk Fkk] tc u; ;x dh pruk ikphu d lkFk u; lc/k d ek/;e l u;k vkdkj xg.k dj jgh FkhA[2]

vk/kfud dky dk vkjHk &

lLdr lkfgR; d vk/kfud dky d vkjHk d fo"k; e fo}kuk ,o fopkjdk e Li"V erHkn irhr gkrk gA blh d lkFk lkfgR; d lnHk e vk/kfudrk fdl dgk tk,] ;g Hkh विचारणीय प्रश्न है। जो व्यतीत हो चुका है उसे प्राचीन और जो वर्तमान है, प्रवर्तमान है उसे vk/kfud dgk tk,] ,lk fopkj] vk/kfurk d fu.kk;d rF; d :i e Lohdkj ugh gA dkfynkl u viu le; l io jfpr dk0; lkfgR; dk ^^ijk.k** vkj mldh vi{kk viu dk0; dk ^^uo**

dgk Fkk] fdUr ;g vk/kkj lkfgR; d bfrgkl d lUnHk e 0;ogk; irhr ugh gkrk gA bl ilx e Mk- jk/kkoYyHk f=ikBh dk fopkj g fd ^^fo श्व और देश में बदलती राजनैतिक, सामाजिक fLFkfr;k d ck/k d lkFk lex jk"V d ,dkRE; d ifr nf"V de l de ,d 0;kord g] tk dky vkj fo"k;oLr dh nf"V l vk/kfud lkfgR; dk miØe djrk gA**[3]

ik- o.kdj th u viu ejkBh xUFk ^vokphu lLdr lkfgR;* e vokphu dky dk vkjHk सत्रहवीं शताब्दी से माना है, किन्तु उनके इस विचार से स्पष्ट रूप से अपनी असहमति व्यक्त करते g, viu ,d 0;fDrxr i= e vkpk; i- cyno mik/;k; th u vokphu dky dk vkjHk 1750 b- से माना है, जब नागेश भट्ट का स्वर्गवास हुआ था। उUgku ,d vU; i= e vk/kfud lLdr lkfgR; dk dky[k.M 1850 b- l ydj 1990 rd gkuk pkfg,] ,lk l>ko Hkh fn;k FkkA

lLdr lkfgR; d vk/kfud dky dk j[kkfdr djr g,] lEi.k Hkkjr e ifjorueku gk jgh jktufrd rFkk lkekftd fLFkfr;k dk vun[kk ugh fd;k tk ldrkA if.Mrjkt d ckn d lkfgR; e ,d Bgjko] ,d xfrghurk Li"V :i l n[kh tk ldrh gA lHkor% ;gh dkj.k Fkk fd bfrgkldkjk dk /;ku ml ij vkd"V ugh gvkA ol rk ^^Bgjko** dh fLFkfr if.Mrjkt l पूर्व बारहवीं शती से ही अनुभूत होने लगती ह] fQj Hkh ml if.Mrjkt d ckn Li"V vuHkr fd;k tk ldrk gA

Mk- हीरालाल शुक्ल ने अपने ग्रन्थ ''आधुनिक संस्कृत साहित्य'' में 1784 को संस्कृत के uotkxj.k d ilx e egÙoi.k ekuk g] D;kfd lj fofy;e tkUl d i;kl l dydÙkk e ''रॉयल एशियाटिक सोसा;Vh** dh LFkkiuk blh dky e gbZ FkhA bl lLFkk }kjk lLdr d gLrfyf[kr xFkk dk m)kj vkj lLdr d {k= e vulU/kku dk ioru fd;k x;k FkkA blh काल में श्रीमद्भगवद्गीता, हितोपदेश और शकुन्तलोपाख्यान के अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित हुए। lLdr dk साहित्य प्रथम बार प्रेस में मुद्रित होकर प्रकाश में आया और इसी माध्यम से संस्कृत का

संपूर्ण यूरोप में प्रचार हुआ। इसके फलस्वरूप संस्कृत के प्रति आकर्षण बढ़ा, फिर शाकुन्तलम् का ¼1791½ teu e vuokn gvk] ftl n[kdj teu d egkdfo xV cgr iHkkfor g, FkA okjk.klh e lLdr dkyt 1791 e LFkkfir gvk FkkA Mk- शुक्ल इन सब कारणों से 'संस्कृत की भाव–धाराओं में एक विशेष परिवर्तन' का अनुभव करते हैं और उन्हें लगता है कि संस्कृत भाषा में ub lHkkoukvk dk flg&}kj [ky x;k] fdUr 1835 e Hkk"kk&विषयक मैकाले का प्रस्ताव शासन }kjk Lohdr dj fy; tku ij lEi.k lLdr txr e 0;klr fo{kkHk dh Hkkouk rFkk mldh ifrfØ;kLo:i lLdr dh j{kk d fy, u; mRlkg d lkFk feydj dk; dju l Mk- शुक्ल lHkor% lLdr lkfgR; d vk/kfud dky dk vkjHk ekur g vkj 1835 l ydj 1920 rd d fy[k x; lLdr lkfgR; dk njckjh lonuk lkfgR; l fcYdy vyx ân; d jDr l flpk gvk cgn moj ekur g vkj lkFk gh] bl vof/k dk lLdr d uotkxj.k dk fodkldky dguk mi;Dr ekur gA[4]

lLdr lkfgR; d vk/kfud dky dk Mk- jktUn feJ u nook.kh lokl dh Hkfedk e iutkxj.k dky ¼1784&1884½] LFkkiuk dky ¼1884&1950½ rFkk lef)dky ¼1950 l vc rd½ d :i e rhu Hkkxk e foHkDr fd;k x;k gA ,d fo}ku nk lk o"k dh vof/k d bl dky dk bl :i e foHkDr djr g &

1800–1900 तक 19वीं शताब्दी, स्वतंत्रतापूर्व काल

1900–1950 तक 20वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध, स्वतंत्रता संघर्षकाल

1950–1990 तक 20वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध, स्वातन्त्र्योत्तरकाल

उक्त विभाजन निश्चित रूप से राजनैतिक परिवर्तनों की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है और bl idkj d ifjoruk d lkfgR; ij iMu oky iHkko dk udkjk Hkh ugh tk ldrkA

lLdr lkfgR; d vk/kfud dky dk e[;r% rhu ;xk e foHkkftr fd;k tkuk pkfg, & राशिवडेकर युग 1890–1930, भट्ट युग 1930–1960 तथा राघवन युग 1960–1980। अप्पाशास्त्री राशिवडेकर (1873–1913) एक मौfyd jpukdkj rk Fk gh] lkFk gh ^^lLdrpfUndk** vkj ^^lurokfnuh** if=dkvk d lEiknd d :i e mUgku lLdr e u;h ;xhu iofRr e y[ku dk fofHkUu idkj dh dfBukb;k d mijkUr ikRlkfgr fd;k vkj lLdr d foLrr lekt e ,d tkx#drk yk;hA bसके लिए उन्हें शासन तंत्र के रोष का पात्र होकर जेल भी जाना पड़ा, फिर भी mudh lk/kuk ckf/kr ugh gbA viu pkyhl o"k d vYi thoudky e mUgku lkfgR; dk प्रशस्तिगान वाली प्रवृत्ति से अलग करने का प्रयास किया, उसमें राष्ट्रीय चेतना के साथ प्रसाद गुण okyh Hkkषा को महत्त्व दिया और पाण्डित्य प्रदर्शन की मानसिकता से ग्रस्त होने से बचाया। श्री कलानाथ शास्त्री ने संभवतः उनकी मृत्यु के बाद भी उनके प्रभाव को स्वीकारते हुए राशिवडेकर युग dk 1890 l 1930 d chp ekuk gA bl ;x d dN vkj euhf"k;k d uke fy; tk ldr g जैसे हृषीकेश भट्टाचार्य, म-e- रामावतार शर्मा, म-e- विधुशेखर भट्टाचार्य आदि, जिनका साहित्य में vk/kfudrk dk iofRr gku e cgr dN ;kxnku gA

भट्ट युग पं भट्ट मथुरानाथ शास्त्री (1889–1960) के नाम से प्रवर्तित है। भट्टजी ने भी lLdr jRukdkj vkj Hkkjrh tlh if=dkvk dk lEiknu fd;k vkj Lo; lLdr e u;h fo/kkvk में लेखन करके नये लेखकों के लिए मार्ग प्रशस्त किया। इन्होंने गद्य–लेखन को कुछ तराशा और mle u;h xfr ;k iokge;rk dk yku d lkFk ml ifjfuf"Br dju dk Hkh i;kl fd;kA HkVV ;x d vU; jpukdkjk e ;rhUn foey pk/kjh ¼1908&1996½ ie[k gA

jk?kou&;x d iord Mk- odV jk?kou ¼1908&1978½ u lkfgR; vdkneh dh ^^lLdr ifrHkk** dk lEiknu 1958 l vkjHk fd;kA rc ml vf[ky Hkkjrh; ifr"Bk rk feyh gh] mld ek/;e l vf[kल भारतीय स्तर का साहित्य एक स्थान से प्रकाशित होने लगा और व्याकीर्ण लेखन

अखिल भारतीय स्तर पर एक दिशा और लक्ष्य की ओर प्रवर्तित हुआ। स्वयं डॉ॰ jk?kou u vk/kfud संस्कृत साहित्य में प्रकाशित सामग्री का अपने विभिन्न लेखों के माध्यम से महत्त्व बताया। इस प्रकार vk/kfud lLdr lkfgR; d ledkfyd Hkkjrh; Hkk"kkvk d lkfgR; d led{k LFkkfir gku e उनका विशिष्ट योगदान रहा। डॉ॰ jk?kou u vkykpukRed y[ku d lkFk vud ukVdk dk Hkh y[ku fd;k vkj mUg jxep ij vfHkuhr Hkh fd;kA mud i;kl l ledkfyd lLdr lkfgR; d {k= e ,d u;h Åtk dk lpkj gvk vkj mle u; i;kx ?kfVr gku yx] ftUg vf[ky Hkkjrh; Lrj ij eku;rk feyhA

vk/kfud lLdr lkfgR; d lEiorru vkj lo)u e viuh Lo; dh jpuk/kferk d lkFk gh vU; vud euhf"k;k dk ljkguh; ;kxnku jgkA jk?kou ;x d vU; euhf"k;k e mYy[kuh; g & Mk- jketh mik/;k;] ftUgku vk/kfud lLdr ukVdk ij y[ku fd;k vkj vk/kfud lLdr साहित्य के रचनाकारों पर शोध–कार्य को सागर विश्वविद्यालय में प्रवर्तित किया।

राशिवडेकर युग से पूर्व रचित साहित्य मात्रk e dN de u gvk] fdUr mle lkefgd ck/k का अभाव रहा। संस्कृतचन्द्रिका के पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिकाओं में साहित्य के स्तर पर लगभग सामूहिक बोध को प्रवर्तित करने की दिशा में प्रयास नहीं किया गया। उनका उद्‌देश्य केवल अप्रकाशित कृतियों का प्रकाशन था अथवा शास्त्रीय या धार्मिक विचारों का प्रसार था। इस कारण हम उन्नीसवीं शती के नवम् दशक तक की रचनाओं को बहुत व्याकीर्ण पाते हैं। इस काल में अंग्रेजी शासन के प्रभाव से अनुदित होकर ईसाई धार्मिक साहित्य पुष्कल मात्रा में प्रकाशित हुआ।

राशिवडेकर युग में संस्कृत की समास बहुलता शिथिल हुई और उसे बोधगम्य बनाने के साथ iokgeku cuku dk Hkh i;kl gvkA lLdr 0;kdj.k d fu;ek l lokf/kd xLr Hkk"kk g rFkk उसमें वार्णिक वृत्तों में लेखन गद्य की अपेक्षा अधिक हुआ है। इन दोनों विशेषताओं के साथ

jpukdkjk d /;ku dk dfork d dykfoykl dh lhek l gVkdj ekuo d l[k&n[k dh vfHkO;td cuku dk Hkh i;kl gvkA

भट्ट युग में विशेष रूप से उक्त परिष्कार को बढ़ावा मिला, साथ ही नयी विधाओं में लेखन iLrr gvkA blI lLdr e ,d vfrfjDr vkt vkj iokge;rk dk vuHko gkrk gA x| e वैचारिक निबन्धों में सामयिक विषयों को प्रश्रय मिला। यह युग राशिवडेकर युग के आधार पर निर्मित gvk vkj mlu vk/kfud lLdr lkfgR; d Hkou dk ,d eftyk cuku e cgr lQyrk vftr dhA[5]

jk?kou ;x e vkdj ml Hkou dh ,d vkj efty fufer gbZ vkj vk/kfud lLdr lkfgR; ,d HkO; Hkou d :i e viuh lex NVk d lkFk ifrf"Br gvkA mle fofHkUu o.kkZ dykdfr;k rFkk xEctk dk fuek.k gvkA bl ;x u vk/kfud lLdr lkfgR; d ml HkO; Hkou dk cgr dN lex rFkk nर्शनीय रूप दिया।

vk/kfud lLdr lkfgR; dh fodkl;k=k &

1954 e ub fnYyh e lkfgR; vdkneh LFkkfir gb rc l Hkkjrh; Hkk"kkvk d lkfgR; dk ,d&nlj l vufnr djd iLrr dju dk Hkh ,d 0;ofLFkr rFkk mi;kxh i;kl vkjHk gvkA bl vf[ky Hkkjrh; lLFkk d ek/;e l vud fodflr Hkk"kkvk dk lkfgR; vkykfpr gkdj iLrr gvkA lkfgR; vdkneh d ek/;e l ledkyhu lLdr jpukdkjk d ekfyd xUFk पुरस्कृत होने लगे। उसके बाद तो देश में, विभिन्न राज्यों में संस्कृत अकादमी की स्थापना का आरंभ gvkA lLdr d db विश्वविद्यालय तथा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ स्थापित हुए। अखिल भारतीय और राज्यस्तरीय कवि सम्मेलन आयोजित होने लगे, आकाशवाणी के केन्द्रों और बाद में दूरदर्शन dUnk }kjk Hkh ledkfyd lLdr lkfgR; dk Hkh iJ; feyu yxkA

lLdr lkfgR; dk egÙo bl vFk e Hkh ekuk x;k g fd og ,d ek= ,lk lkfgR; g जो देश में क्षेत्रीय सीमाओं को पार करके, कुछ भागों को छोड़कर, कश्मीर से कन्याकुमारी तक ijLij 0;ogkj dk ek/;e g] gkykfd bldk 0;ogkj dN lifBr ykxk d chp gh gA

ledkyhu lLdr lkfgR; d fodkl e rhu mi;kxh fLFkfr;k vFkok dkj.k cuA 1- विभिन्न विश्वविद्यालयों में आधुनिक संस्कृत रचनाकारों के साहित्य पर शोधकार्य का आरंभ। 2- fofHkUu dkyk e vud LFkkuk ij] vf[ky Hkkjrh; Lrj ij vk/kfud lLdr lkfgR; ij lxkf"B;k dk vk;ktu] 3- ledkfyd lLdr lkfgR; dk c<kok nu okyh db lLdr if=dkvk का प्रकाशन।

आधुनिक संस्कृत साहित्य पर विचार और शोध कार्य का आरंभ सबसे पहले मध्यप्रदेश के सागर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग ने किया, जिसका श्रेय विभागाध्यक्ष प्रो- jketh mik/;k; dk tkrk gA vk/kनिक संस्कृत साहित्य के विषय में चिन्तन तथा शोध कार्य को बढ़ावा nu dk tk ,d vkj Hkh mYy[kuh; egÙoi.k dk; gvk g] og g] Mk- Jh/kj HkkLdj o.kdj }kjk fyf[kr ejkBh xUFk ^vokphu lLdr lkfgR;* dk 1963 e rFkk Mk- हीरालाल शुक्ल द्वारा लिखित ^vk/ुनिक संस्कृत साहित्य' का 1971 में प्रकाशन। साथ ही डॉ- jkexkiky feJ }kjk fyf[kr 'संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास' का 1976 में प्रकाशन भी इसी क्रम में है।

आधुनिक संस्कृत साहित्य पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के आर्थिक सहयोग से संगोष्ठी ;k ifjlokn d vk;ktu dk शुभारंभ भी सागर विश्वविद्यालय से होता है, जिसमें पठित निबन्धों का संकलन ''आधुनिक संस्कृत साहित्यानुशीलन'' नाम से 1865 में प्रकाशित हुआ। भारतीय विद्या भवन, बम्बई से प्रकाशित 'भारतीय विद्या' (त्रैमासिक पत्रिका) के भाग 1, 2—3, 1980 में बीसवीं शताब्दी के lLकृत साहित्य पर दिसम्बर 1972 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के आर्थिक सहयोग से आयोजित संगोष्ठी में पठित लेख प्रकाशित हुए। राजस्थान अकादमी (जयपुर) की ओर से 1987 में

जोधपुर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग ने अखिल भारतीय संस्कृत लेखक सम्मेलन का आयोजन fd;k] उसमें पठित निबन्धों का सम्पादित संकलन ''आधुनिक संस्कृतसाहित्य'' 1988 में प्रकाशित हुआ। फिर इसी अकादमी के सहयोग से 1988 में राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के संस्कृत foHkkx }kjk lxk"Bh vk;kftr dh x;h] ftle ifBr fucU/kk dk lEikfnr ldyu ^uokUe"kk* uke से 1990 में प्रकाशित हुआ। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के आर्थिक सहयोग से स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत साहित्य पर नागपुर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग में 1985 में अखिल भारतीय Lrj ij vk;kftr lxk"Bh e ifBr fucU/kk dk ldyu] ^ikLV&b.Mi.MV lLdr fyVjpj* uke से 1990 में प्रकाशित हुआ।

इनके अतिरिक्त सागर विश्वविद्यालय, सागर में यू-th-lh- d vkfFkd lg;kx l 1989 e अखिल भारतीय संगोष्ठी तथा साहित्य अकादमी तथा रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, dydÙkk d lfEefyr lg;kx l 1992 e vk/kfud lLdr lkfgR; ijEijk vkj vfHkuo ifjoru ij jk"Vh; lxk"Bh vk;kftr gbA bu lxkf"B;k e vf[ky Hkkjrh; Lrj ij vk/kfud ,o समकालिक संस्कृत के रचनाकारों तथा मनीषियों द्वारा बहुत उपयोगी विचार–विमर्श प्रस्तुत हुआ, ftld ledkfyd lLdr lkfgR; dk cgr xfr feyhA

vkt tk lLdr dh if=dk, ledkfyd lLdr y[ku dk xfr inku dj jgh g] mue प्रमुख हैं – संस्कृत प्रतिभा (साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली), 'दुर्वा' (मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी Hkkiky½] ^lkxfjdk* ¼lkxfjdk lfefr] lkxj½] Loje³xyk ¼jktLFkku lLdr vdkneh] t;ij½ विश्वसंस्कृतम् (साधुआश्रम, होशियारपुर), भारती (भारतीभवन, जयपुर) अजस्त्रा (अखिल भारतीय lLdr ifj"kn] y[kuÅ½] l;kn; ¼Hkkjr/ke egke.My] okjk.klh½ vkj vokphulLdre ¼ok.kh fogkj] fnYyh&59½ vkfnA

ledkfyd lLdr lkfgR; d dN dfo;k dk lHkkf"kr संग्रह ''षोडशी'' नाम से डॉ- jk/kkoYyHk f=ikBh }kjk ldfyr rFkk likfnr gkdj lkfgR; vdkneh] u;h fnYyh l 1992 e प्रकाश में आया है। इसके पूर्व डॉ- शिवदत्त चतुर्वेदी द्वारा 'अभिनव कथानिकुंज' 1966 में प्रकाशित gvk FkkA

vk/kfud lLdr lkfgR; dh dkykof/k लगभग दो शताब्दियों (19वीं और 20वीं) की है। यह काल न केवल भारत के इतिहास, प्रत्युत विश्व के इतिहास की दृष्टि से बड़े उद्‌वेलन और परिवर्तन का काल है। इसमें दो विश्वयुद्ध घटित हुए, हिरोशिमा और नागासाकी पर अणुबम के प्रहार द्वारा ekuo lgkj dh fodV n`fLFkfr उत्पन्न हुई। भारत में अंग्रेजी शासन के विरूद्ध प्रबल संघर्ष छिड़ा, ftld QyLo:i Hkkjr Lor= gvkA Hkkjr foHkktu d lkFk lkEinkf;d nxk dh yiV Qyh और इस शkrh d lcl egku urk egkRek xk/kh dh gR;k gbA bl chp] Hkkjr e ukuk foHkfr;k u tUe fy;k vkj mue l vud u Hkkjr e jk"Vh; pruk dk txku d lkFk lkekftd djhfr;k ij Hkh icy igkj fd;kA Lor=rk ikflr d ckn Hkkjr ,d v[k.M jk"V rFkk ykdrU=kRed ^x.kjkT;* d :i e ifrf"Br gvkA ge jktufrd ijr=rk l rk eDr g,] fdUrq ekufld तौर पर हम उन्हीं पाश्चात्य भोगवादी दुष्प्रभावों के वशीभूत या गुलाम होते गये और हमारा ufrd pkfj«; iru dh vkj tkrk gvk irhr gvkA ;g lc dN vU; Hkkjrh; Hkk"kkvk d uo fodfIr lkfgR; dh rjg vk/kfud lLdr lkfgR; d ni.k e Hkh Li"V n[kk tk ldrk gA

vk/kfud lLdr lkfgR; e i|pfyr uohu i|ofÙk;k ,o fo/kk,| &

vk/kfud dky e x| dh vi{kk i| dk vf/kd iJ; feyk] tcfd vU; Hkkjrh; Hkk"kkvk में गद्य में लेखन को ही अधिक समर्थन दिया गया। यह कम आश्चर्य का विषय नहीं है कि egkdkO; fo/kk e y[ku tgk vU; Hkkjrh; Hkk"kkvk d lkfgR; e cgr dN mif{kr gvk] ogk lLdr e mlI cgr vf/kd iJ; feykA egkdkO;k d fo"k; d :i e Lokeh n;kuUn] Lokeh

foodkuUn] ykdekU; fryd] egkRek xk/kh] ug# vkfn jk"Vh; urk rFkk egki#"kk dk fo"k; cuk;k x;kA

lLdr e x| y[ku dk vk/kfud ;x e vf/kd c<kok feykA cxyk vkfn vud Hkk"kkvk के संस्कृत गद्य में अनुवाद प्रकाशित हुए, फिर भी मौलिक उपन्यास और लघु कथा साहित्य के y[ku dh iofRr c<rh x;hA

bl dky e xhfr;k dk y[ku cgr de gvk] ftl ij xhrxkfoUn dh ijEijk l gVdj पाश्चात्य ''लीरिक'' विधा का प्रभाव अधिक पड़ा। गीत के क्षेत्र में भट्ट मथुरानाथ शास्त्री और ललितललाम जानकीवल्लभ शास्त्री का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। बाद में मुक्त छन्द में गीत y[ku dh iofRr Hkh fodfIr gbA blh fo/kk e e?kदूत के अनुकरण पर सन्देशकाव्यों की परम्परा e y[ku Hkh vk/kfud dky e gvkA lLdr e ykdxhr Hkh fy[ku dh ijEijk jghA mld ,d प्रवर्तक भारतेन्दुकालिक कवि कमलेश मिश्र थे, जिन्होंने ''कमलेश विलास'' का प्रणयन किया, ये भट्ट मथुरालाल शास्त्री के पूर्ववर्ती गhrdkj Fk] tk lkfgR; e pfpr ugh gk ldA vk/kfud संस्कृत कविता में मूल राष्ट्रीय स्वर भी आधुनिक काल की एक विशेष प्रवृत्तियों में परिगणनीय है। vk/kfud lLdr lkfgR; e ipfyr uohu iofRr;k ,o fo/kk, fuEukulkj g &[6]

egkdk0; &

ikf.kfu u viuh अष्टाध्यायी में शिशुक्रंदीय, यमसभीय तथा इंद्रलननीय, इन काव्यों का प्रसंगवश सूत्रों में उल्लेख किया है। इससे प्रतीत होता है कि प्रबंधकाव्य की परम्परा में पाणिनि के io okYehfd dh jkek;.k ;k egkHkkjr d vfrfjDr vU; vud dk0; jp x; FkA ij ; dk0; ikIr ugh gkr gA dkfynkl d io egkdk0; dh jpuk dju oky nk egkdfo;k d uke ikIr gkr g & ikf.kfu rFkk oj#fp ;k dkR;k;uA bu nkuk d jp egkdk0; ylr gk pd gA dYg.k

ने अपनी सूक्ति मुक्तावली में राजशेखर के कतिपय श्लोक उद्धत किये हैं, जिनमें से एक में crk;k x;k g fd ikf.kfu u 0;kdj.k d xFk d lkFk tkcorht; egkdk0; dh Hkh jpuk dh Fkh &

^^LofLr ikf.kfu;s rLeS ;L; #nzizlknr%A

vknkS 0;kdj.ka dk0;euq tkEcorht;eAA**

जांबवतीजय महाकाव्य का नाम कहीं–कहीं पातालविजय भी मिलता है। अमरकोश के Vhdkdkj jk;मुकुट ने पाणिनि के जांबवतीजय का यह श्लोकार्थ भी उद्धत किया है –

''पयः पृषन्तिभिः स्पृष्टा वान्ति वाताः शनैः शनैः।।''

नमिसाधु ने रूद्रट के काव्यालंकार की टीका में पातालविजय से एक श्लोक उद्धत किया है। पुरुषोत्तम की भाषावृत्ति तथा शरणदेव की दुर्घटवृत्ति म Hkh bl egkdk0; dk mYy[k feyrk gA i- बलदेव उपाध्याय के अनुसार आर्षकाव्यों के पश्चात् जांबवतीजय या पातालविजय संस्कृत का प्रथम egkdk0; gA ikf.kfu d uke l yxHkx 17 i| ikphu lHkkf"kr lxgk e ikIr gkr g] ftul fofnr gkrk g fd ikf.kfu ,d mÙke dfo FkA

vk/kfud dky e egkdk0; fo/kk e y[ku dk lLdr e ledkyhu Hkkjrh; Hkk"kkvk d lkfgR; dh vi{kk cgr vf/kd iJ; feyk vkj vk/kfud dfo;k u ikphu vkpk;k d y{k.kk d ikyu e dN Lor=rk Hkh cjrhA dN u rk mudh mi{kk Hkh dhA bl idkj] ,d vkj ijEijkxr :< y{k.kk d vuqlkj egkdk0; fy[k x; rk nljh vkj ijEijk d vkxg l eDr gkdj Hkh egkdk0; fufer g,A vk/kfud dky e egkdk0; fo/kk e y[ku dk lLdr e tk vf/kd iJ; feyk mld db dkj.k eku tk ldr g] ftue ie[k g &

1- fdUgh egki#"k d eguh; pfjr dk x.kxku djd viuh ok.kh dk lkFkd cukuk]

2- mul viu dk tkMdj ifrf"Br gkuk]

3- egkdkO; dk y[ku dj egkdfo d :i e Lohdr gkuk]

4- अपने कवित्व को एक विस्तृत आयाम में प्रस्तुत कर चमत्कार प्रदर्शित करuk vkfnA आधुनिक काल के संस्कृत कवियों में महाकाव्य के निर्माण द्वारा लाभ के उद्देश्य से प्रशस्ति गान की प्राचीन मानसिकता शिथिल हुई और कुछ उत्तम कोटी के महाकाव्य लिखे गये, जिनमें विविधता के lkFk jk"Vh; pruk dk cgr egÙo fn;k x;kA

उन्नीसवीं शताब्दी मे 1857 के गदर के पश्चात् सम्पूर्ण राष्ट्र में अंग्रेजों के शासन के प्रतिष्ठित होने पर, अंग्रेजी शासन के विरूद्ध क्रमशः क्रान्ति की चिन्गारी के भड़कते रहने पर भारतीय tupruk e jk"Vh;rk dk ,d u;k Hkko mfnr gvk] ftl dk iHkko u doy lLdr d jpukdkjk ij] cfYd lEi.k ledkyhu Hkk"kkvk d lkfgR; d y[kdk ij Hkh iMkA jk"Vh;rk dh ;g अनुभूति सम्पन्नता नयी नहीं थी, किन्तु उसका वह प्रबल रूप इसी समय लक्षित हुआ। पश्चिम के lEid u tgk ,d vkj Hkkjrh; lkfgR;dkjk e tuefDr vkUnkyu dh Økfr dh pruk tkxr dh ogh nljh vkj u; Hkkock/k d vudy viuh Hkk"kk dk 0;ofLFkr ,o iokge; cuku dh vkj Hkh mUg ifjr fd;kA

आधुनिक काल में जिसकी काल सीमा संस्कृत में 18 वीं शती के अन्त तक मानी गयी है, egkdkO;k dh y[ku&ijEijk ek= v{k..k gh ugh jgh] cfYd mle ,d fHkUu idkj dh xfr ,o कुछ विशेष परिवर्तन भी लक्षित किये गये। संस्कृत में महाकाव्य लेखन की जो सुदीर्घ परम्परा आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है, यह कुछ कम आश्चर्य की बात नहीं, जब कि समकालीन भाषाओं के साहित्य में वह बहुत कुछ शिथिल या उपेक्षित हो गयी।

u"k/k d बाद अठ्ठारहवीं शती तक के महाकाव्यों में कोई विशिष्ट रचना इस कारण नहीं आ ldh] D;kfd dfo;k u vf/kdrj rk fdlh vkJ;nkrk d x.kxku e egkdkO; fy[k vkj mudk dkO;fuek.k ^fLFkfr dk fuokg* ek= gkdj jg x;k] lân;k dk jlkLokfor djuk mldk y{;

ugh jgkA ;fn vkJ;nkrk dk x.kxku ugh fd;k rk fdlh noh&nork dk ydj mldk pfjrxku dj fn;kA oLrq ;g iofÙk ij lLdr dk0;&txr e ;gk rd fd vk/kfud dky e Hkh ioreku jgh] fQj Hkh vkx pydj ble cgr dN vUrj Hkh vk;kA

उन्नीसवीं शताब्दी में जब भारत पश्चिमी सभ्यता d lEid e vk;k] vxth d ek/;e l पश्चिम के ज्ञान–विज्ञान का चमत्कार फैला, तब संस्कृत कवि का मन उससे अप्रभावित न रहा। उसे y[ku d u; vk;ke lgt :i l feyu yx] vkj ckn e rk jk"Vh;rk dh ygj u mlI ljkckj dj fn;k] fdUr fQj Hkh mldh ^x.kगान' वाली मानसिकता बनी रही। उसने अंग्रेज शासकों के x.kxku e Hkh dk0; fy[k vkj vkx pydj rk vud jk"VHkDr urkvk d rFkk lekt l/kkjdk d mnkÙk thou dk ydj vk/kfud lLdr lkfgR; d dfo;k e egkdk0; y[ku dh gkM lh yx xbA

tgk rd vk/kfud lLdr lkfgR; e egkdk0; y[ku dh ckr g] jkeikf.kckn ¼1707&1781½ d egkdk0; jk?koh;e l ekuk tk ldrk gA ;|fi ,lh dkb j[kk [khp lduk fd egkdk0; y[ku e dc ikphu ;x lekIr gvk vkj dc uohu ;x] ftl vk/kfud dky dgr g] vkjEHk gvk] cgr dfBu gA oLrq tgk rd ikphurk vkj uohurk dh ey /kkjkvk dh ckr g] nkuk vk/kfud dky d egkdk0;k e lfEefyr :i l iokfgr gk jgh gA vk/kfud संस्कृत साहित्य के कवियों ने शताब्दियों से चली आ रही 'सर्गबन्ध' वाली इस विधा को बहुत कुछ Hkkeg] n.Mh] mद्भट, विश्वनाथ द्वारा प्रस्तुत लक्षणों के अनुसार ही कुछ परिवर्तनों के साथ अपनाया vkj blI idkj mud }kjk egkdk0; y[ku dk iJ; feykA

lLdr d vk/kfud jpukdkjk u] pkg og egkdk0; dk jpf;rk gk ;k pkg vU; fo/kkvk e fy[kr gk] ;x d ioreku l dN iHkkfor gku ij Hkh viu dk viuh mnkÙk ijEijk l vyx ugh fd;k gA egkdk0; fo/kk e mldk y[ku blI rF; dk lcl i"V iek.k gA fQj Hkh

mlu u doy dFkkud ;k ik= d p;u e uohu ;x l iHkko xg.k fd;k oju HkkokfHk0;fDr vkj Hkk"kk d lk"Bo dk Hkh u; ;x d vu:i dju dk i;kl fd;kA

vk/kfud lLdr lkfgR; d egkdk0;k d ,d vkykpd Mk- jgl fcgkjh f}onh dk] Lor=rk ikflr d ckn lLdr dh nh?kdk; fo/kk] egkdk0; d y[ku dh vkj dfo;k dh lk/kuk सुखद आश्चर्य का विषय लगती है, किन्तु यह संस्कृत के रचनाकार की विवशता भी हो सकती है, क्योंकि उसे शताश्धिक महाकवियों द्वारा क्षुण्ण एवं प्रशस्त महाकाव्य के राजमार्ग पर चलने में जितना सौविध्य प्राप्त था उतना अन्य विधाओं, विशेषकर गद्यविधा के लेखक को नहीं। यह भी बहुत सरलता l Lohdkj ugh fd;k tkuk pkfg, fd mlu ftruh ek=k e vf/kd egkdk0; fy[k mruh gh मात्रा में उसका कवित्य भी अपनी गुणवत्ता के कारण अपना विशेष महत्त्व स्थापित कर सका है।

जहाँ तक महाकाव्य विधा में लेखन का प्रश्न है, इस युग में राम पाणिवाद (1707–1781) से लेकर एडवर्डवंशम् के रचयिता उर्वीदत्त शास्त्री (1875) तथा उनके जैसे अनेक समसामयिक egkdk0;dkjk rd iodky l pyh vk jgh bl fo/kk e vuxr y[ku dk iJ; feykA ,d vkj dfo;k u dkfynkl] Hkkjfo] ek?k vkj u"k/k dh ijEijk e egkdk0; fy[k rk nljh vkj egki#"kk d mnkÙkpfjr dk viuk dj लिखने की प्रवृत्ति को प्रश्रय दिया। ऐसे काव्यों में महेशचन्द्र तर्कचूड़ामणि का भूदेवचरित, दुःखभंजन कवि का चन्द्रशेखरचरित, रामर्वतम्पुरान का शङ्करगुरुचरित, वेमूरी रामशास्त्री का गुरुकल्याणम्, अखिलानन्द शर्मा का दयानन्ददिग्विजयम् आदि विशेष उल्लेखनीय g fd bl ;x e dkek{kh dk vfHkuojkek;.k egkdk0; fy[kk x;k] tk fdlh ukjh }kjk lHkor% lLdr e fyf[kr lcl igyk egkdk0; gA blh ;x e] ijEijkxr egkdk0; y[ku dh i)fr l fcYdy vyx] vkRepfjrijd egkdk0; Hkh jfpr g,] tl dkjnjkepUn dfo dk Lokn;dk0;e vkj puDdj jke okfj;j dk 20 lxk e iLrr jkekRepfjrA blh Øe e e/klnu feJ dk Lore ¼egkdk0;½ Hkh mYy[kuh; gA

l ³Økfrdky d dfo &

bl dky d dfo;k e jke ikf.kokn ¼1707&1781½] txTthou HkVV ¼1740½] :iukFk >k (मध्यप्रदेश अनुमानतः 1760), विश्वेश्वर पाण्डेय (उत्तरप्रदेश, 1708–1788), सुब्रह्मण्य (केरल 1724–1798), आरूर माधवन् आडितिरि (1765–1836) एवं श्याम भट्ट भारद्वाज प्रमुख हैं।

राम पाणिवाद ने अठ्ठारहवीं शताब्दी के इस महान् संस्कृत कवि ने 'राघवीयम्' महाकाव्य के vfrfjDr vud fo/kkvk e dk0; jpuk dh A jk?kohयम्, त्रिवेन्द्रम् संस्कृत सीरिज में प्रकाशित हुआ FkkA Mk- हीरालाल शुक्ल ने इन्हें आधुनिक काल में स्थान दिया है। राम पाणिवाद के द्वारा रचित jk?koh;e 20 lxk dk egkdk0; g] tk jke d tUe l ydj jkT;kfHk"kd dh dFkk ij vk/kkfjr gA ey jkedFkk e dfo u कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया है। कैकेयी द्वारा दो वरों के मांगने के il ³x e dfo u :id dk vkJ; fy;k g&

^^dd;Unnfgrei[kxrkn R lrk oj;xf}jlKkA
ok³e;h reFk ePN;fr Le nk³ujUnefi dkyHkt³xhAA**[7]

dd;h d e[k d xr l fudyh] nk ojk dh nk thHkk okyh ok.kh dh dkyh ukfxu u उस नरेन्द्र (राजा दशरथ, श्लेष से सपेरे) को भी मूर्च्छित कर डाला।

जगजीवन भट्ट मारवाड़ के शासक महाराजा अजीतसिंह के चरित्र पर समसामयिक कवि txthou HkVV }kjk fyf[kr ,frgkfld ^vftrkn;* egkdk0; Jh fuR;kuUn nk/khp }kjk सम्पादित होकर 1986 में प्रकाशित हुआ था। इसका प्रकाशन महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाशन, egjkux< E;ft;e] tk/kij }kjk fd;k x;k FkkA txthou HkVV d".k d HkDr FkA

रूपनाथ झा मूलतः मिथिला के निवासी थे, किन्तु उनके पूर्वज मध्यप्रदेश में जा बसे थे। इन्होंने दो महाकाव्यों की रचना की श्रीरामविजयमहाकाव्य और गढेशनृपवर्णनम्। श्री रामविजय

egkdk0; xoueUV lLdr dkyt cukjl l 1932 e i- गणपतिलाल झा शर्मा द्वारा संपादित gkdj i- नारायण शास्त्री खिस्ते की भूमिका के साथ प्रकाशित हुआ।

विश्वेश्वर पाण्डे अल्माMk fty d ikfV;k xke d fuokl h FkA bUgku y{ehfoykl dk0; dh रचना की। इनकी कृतियों में आर्यासप्तशती (मुक्तक काव्य), मन्दारमंजरी (गद्यकाव्य) और vy³dkjdkLrHk vy³dkj xUFk vR;Ur ifl) g,A

lcã.; jkefy³xe vkj dkfdykEck d l i= lcã.; dkfrd fr#uky jkeoe egkjkt d njckj d dfo FkA bUgku vkB lxk e ineukHkfot; egkdk0; fy[kkA

vk:j ek/kou vkfMfrfj dk tUe djy e p# oÙkfj LFkku d x#jeB e gvk FkkA budk mÙkju"k/ke 16 lxk dk egkdk0; g tk 1830 e i.k gvkA

उन्नीसवीं शती के egkdk0;dkj &

इस शती के महाकाव्यकारों में गोदवर्म युवराज (1800–1851), चण्डीदास (1904), परमेश्वरन् मूत्ततु (1816–1883), सीताराम भट्ट पर्वणीकर (1818–1834), शिवकुमार मिश्र (1847–1918), vUunkpj.k rdpMkef.k] efUndy lh- ,u- रामशास्त्री (1849), विश्वनाथदेव वर्मा (1850&1920½ ,o jkeukFk rdjRu ¼1840&50 d chp tUe½ gA

xknoe ;ojkt u ^Jhjkepfjre* uke d egkdk0; dh jpuk dhA budk nljk egkdk0; lkyg lxk dk ckY;nHko ;k egUnfot; crk;k tkrk g] tk dfo dh vkjfHkd jpuk gA fo}n;ojkt u jkepfjr dk viu thou dky d vfUre fnuk e fy[kk Fkk] vr% bld 13o lx के 31वें श्लोक मात्र तक ही वे लिख सके। इस रचना को उसी परिवार के कवि सार्वभौम रामवर्ग dkPpf..k rEijku ;k dkPpf..kjkt ¼1858&1926½ u pkyhl lxk e fy[kdj ijk fd;k FkkA

p.Mhnkl dk itkc d egkjkt j.kthrflg d njckj e lEekfur in feykA ckn e कवि, चण्डीदास पटियाला, जयपुर और अन्त में जम्मू–कश्मीर की राजसभा में प्रतिष्ठित हुए। इनकी

ifr"Bk dk vk/kkjHkr xUFk g] 13 lxk e fyf[kr ^Jhj?kukFkx.kkn;* egkdk0; A bl egkdk0; का प्रकाशन डॉ॰ xxkदत्त शर्मा विनोद के सम्पादकत्व में श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जम्मू l 1979 e gvkA

परमेश्वरन् मूत्ततु अपने समय के प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान तथा वैद्य परमेश्वरन् मूत्ततु गोदवर्म युवराज के शिष्य थे। इन्होंने आठ सर्गों में रामवर्ममहाराजचरित काव्य का निर्माण किया, tk vkbY;e fr#uky egkjkt ¼1860&1880½ d thou&pfjr ij vk/kkfjr gA

सीताराम भट्ट पर्वणीकर सवाई राजा जयसिंह तृतीय के शासनकाल (1818—1834) में थे और इन्होंने अनेक शास्त्रीय ग्रंथों की रचना की तथा इनके द्वारा रचित चार महाकाव्यों, नृपविलास, नलविलास, जयवंश तथा राघवचरित्रम् में से दूसरा जयवंशमहाकाव्य प्रकाशित है।

शिवकुमार मिश्र दरभंगा नरेश लक्ष्मीश्वर सिंह तक दरभंगा के नरेशों की वंशावली 'लक्ष्मीश्वरप्रतापः' नाम के महाकाव्य के माध्यम से प्रस्तुत की।

vUunkpj.k rdpMkef.k dk 1922 e vxt ljdkj }kjk egkegkik/;k; dh inoh l अलङ्कृत किया। इनके दो महाकाव्य प्रकाश में आए 'रामाभ्युदयम्' और 'महाप्रस्थानम्'। रामाभ्युदयम् e jke d fookg l fookg rd dh ?kVuk, of.kr g rFkk egkiLFkkue egkHkkjr dFkk ij vk/kkfjr gA

efUndy lh- ,u- रामशास्त्री को मैसूर के महाराज कृष्.kjkt okfM;j u bul iHkkfor gkdj bUg ^dfojRu* dh mikf/k l vy³dr fd;k rFkk egkjktk lLdr dkyt elj dk i/kku if.Mr fu;Dr fd;kA bUgku d".kjktkH;n; egkdk0; dh jpuk dhA fQj bUgku lhrkjko.klokn>jh uke l fp=dk0; dh jpuk djd viu vfrfjDr dk0;fuek.k& pkrjh dk ifjp; fn;kA

विश्वनाथदेव वर्मा आठगढ़ (उड़ीसा) के महाराज थे। इन्होंने 'रुक्मिणीपरिणय' महाकाव्य का fuek.k fd;kA 6 lxk dk ^vfuyjktdFkk* ,d vi.k egkdkO; g] tk budh eR; d dkj.k vi.k jg x;k FkkA

jkeukFk rdjRu u vBkjg lxk e ^okInofot;* egkdkO; dh jpuk dh] ftldk प्रकाशन कलकत्ता से हुआ था। इसके अतिरिक्त इनकी दो और रचनाओं की जानकारी प्राप्त होती g & vk;kygjh ¼jpukdky 1893½ vkj foykiygjh ¼jpukdky 1892½A

बीसवीं शती के महाकाव्यकार –

बीसवीं शती के महाकाव्यकारों में अखिलानन्द शर्मा (1880–1955), सखाराम शास्त्री भागवत ¼1886&1935½] e/kkor ¼1893&1964½] cnjhukFk >k ¼1893&1974½] {kekjko ¼1890&1954½] गंगाप्रसाद उपाध्याय (1881), भगवदाचार्य (1880–1977), काशीनाथ द्विवेदी (1897–1969), उमापति शर्मा द्विवेदी (1898), विन्ध्येश्वरीप्रसाद मिश्र, गोस्वामीबलभद्रप्रसाद शास्त्री, बालकृष्ण भट्ट, सत्यव्रत शास्त्री, ब्रह्मानन्द शुक्ल (1904–1970), क्षेमधारिसिंह शर्मा (1893–1961), कालीपद तर्काचार्य (1888), भोलाशंकर व्यास (1924), रेवाप्रसाद द्विवेदी (1935), श्रीधर भास्कर वर्णेकर (1918), प्रभुदत्त स्वामी, «;Ecd vkRekjkम भण्डारकर (1897), उमाशंकर शर्मा त्रिपाठी (1922–1982), परमानंद शास्त्री (1926), ih-d-नारायण पिल्लई (1910), राजेन्द्र मिश्र (1942), माधव श्रीहरि अणे (1880–1968), रमेशचन्द्र शुक्ल (1909–1995), वसन्त त्र्यम्बक शेवडे (1917), रामावतार मिश्र (1899–1984), रसिकबिहारी जोशी (1927), सुबोधचन्द्र पन्त (1934), विद्याधर शास्त्री (1901), पी- lh- noL; ¼1906½] कालिकाप्रसाद शुक्ल (1921), जग्गू बकुलभूषण (1902–1993), प्रभुदत्त शास्त्री (1892–1972), रामचन्द्र मिश्र (1911), निगमबोध तीर्थ (1936), हरिहर पाण्डेय, द्विजेन्द्रलाल शर्मा पुरकायस्थ, पद्म शास्=h (1935), हरिनारायण दीक्षित (1936), द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री (1892–1963), नारायण शास्त्री, छज्जुराम शास्त्री (1905), भवानीदत्त शर्मा, पाण्डुरंग शास्त्री डेग्वेकर, काशीनाथ पाण्डेय, रघुनंदन शर्मा, श्यामवर्ण

f}onh] j?kukFk iz lkn pronh] ih- उमामहेश्वर शास्त्री, के- ,u- ,>rpu ¼1922&1982½] jkedcj मालवीय, सुधाकर शुक्ल, साधुशरण मिश्र, मुतुकुलम् Jh/kj] ¼1978½] d- बालराम पन्निकर, शान्तिभिक्षु शास्त्री, ओगेटि परीक्षित् शर्मा (1930), के- ,l- नागराजन्, रघुनाथ शर्मा, वनमालिदास शास्त्री, मधुकर शास्त्री (1931), रामरूप पाठक (1891–1973½] txUukFk feJ] Jhfuokl jFk ¼1933½] fnxEcj महापात्र (1928), श्रीजीव न्यायतीर्थ (1892–1985), विष्णुदत्त शर्मा (1937), पशुपति झा (1927), इन्द्रदेव द्विवेदी 'इन्द्र', बलभद्र शास्त्री, शिवकुमार शास्त्री एवं त्रिपुरारिशरण पाण्डेय प्रमुख हैं।

अखिलानन्द शर्मा ने प्रथम बार, vk; lekt d ifr"Bkid Lokeh n;kuUn ljLorh d pfj= dk vk/kkj cukdj ^n;kuUn&fnfXot;* uked egkdkO; dh jpuk dh] tk bf.M;u iszl] iz;kx l प्रथम बार 1906 में प्रकाशित हुआ। श्री शर्मा ने इस महाकाव्य में लिखा है –

''यत्कृतं मुनिवरेण भारते भारतोदयकृते शिवं कृreA

Hkkjrkuufrfufo"Vpsr lk Hkkjrs Hkors rUeqns lrkeAA**[8]

vFkkr Hkkjr dh mUufr d fy, nÙkfpÙk efuJ"B u Hkkjr e Hkkjr d mn; d fy, tk dY;k.k dk dk; fd;k og ;gk lTtuk dk vkufUnr djA

सखाराम शास्त्री भागवत का जन्म करवार भूधर दुर्ग के निकट onx³xk unh d rVorh ^xkjxkVh* uked xke e gvkA vkiu db स्त्रोत लिखे और 'ज्ञानेश्वरी' के pjek/;k;"kVd dk संस्कृत में अनुवाद भी किया, जो प्रकाशित नहीं हुए। ये अपनी रचना 'अहल्याचरित' महाकाव्य के i.k gku d dN gh le; ckn fnoxr gk x,A

e/kkor dk tUe ukfld tuin d vUrxr ^;oyk* e lukru/keh ifjokj e gvk FkkA vkidk lLdr e ^defnuhpUn* uked miU;kl gA vkiu n;kuUnfnfXot; rFkk cãf"koj tkuUnpfjr uke d nk egkdkO;k dk i.k;u fd;kA bld io Lokeh n;kuUn d thou

ij vk/kkfjr nk egkdkO; प्रकाश में आ चुके थे – एक अखिलानन्द शर्मा द्वारा लिखित दयानन्ददिग्विजय (1910) और दूसरा दिलीपदत्त शर्मा का मुनिचरितामृत (1918)।

बदरीनाथ झा का जन्म मधुबनी मण्डल के सरिसब ग्राम में हुआ। आपको 'कविशेखर' की mikf/k l foHkf"kr fd;k x;kA jk/kk&d".k dh mikluk को समर्पित कवि शेखरजी ने संस्कृत और efFkyh e vud xUFkk dk fuek.k fd;k] ftue mYy[kuh; g & lLdr dk egkdkO; ^Jhjk/kkifj.k;* vkj efFkyh dk ,dkoyhifj.k;A Jhjk/kkifj.k; egkdkO; chl lxk dk g vkj इसका प्रकाशन 1939 ई- e fot; iIl] et¶Qjij l gvkA

{kekjko dk tUe iuk e gvk FkkA cgr le; rd ; vxth e dfork, fy[krh jgh] fdUr 1931 d ckn lLdr y[ku e ioÙk gk x;hA bud }kjk jfpr Jhrdkjkepfjre ¼1950½] श्रीरामदासचरितम् (1953) और श्रीज्ञानेश्वरचरितम् (1955) ये तीनों ही रचनk, egkjk"V d rhu egku सन्तों के जीवन पर आधारित हैं। महात्मा गांधी के जीवन दर्शन को भी आपने अपना विषय बनाया। इनके अन्य महाकाव्य हैं 'सत्याग्रहगीता' और शंकरजीवनाख्यानम्।

xxkilkn mik/;k; dk tUe ,Vk fty d unjb xko e dk;LFk ifjokj e gvk FkkA bud }kjk jfpr vk;kn; egkdkO; nk Hkkxk e foHkä gA iok) e nl lx vkj mÙkjk) e 11 lx gA

Hkxonkpk; dk tUe L;kydkV ¼vc ikfdLrku½ e gvk Fkk] vkidk io uke loftr FkkA आपको कई भाषाओं का ज्ञान था। आपने काशी में संस्कृत के शास्त्रh; xUFkk dk v/;;u fd;kA mud }kjk jfpr ^JhegkRekxkfU/kpfjr* ¼1951½ egkdkO; ie[k gA mUgku jkekuUnfnfXot; egkdkO; dk Hkh fuek.k fd;kA

काशीनाथ द्विवेदी का जन्म वाराणसी में हुआ था। आप 'सुधीसुधानिधि' के उपनाम से विभूषित g,A vkidh ,dek= jpuk bDdhl lxk e jfpr ^#fDe.khgj.k* egkdkO; gA ;g JhenHkkxor

d ifl) #fDe.kh vk[;ku ¼10@52&54½ ij vk/kkfjr gA dfo u ey dFkkud e lkekU; ifjoru djr g, o.kuk l jpuk dk [kc gh l tk;k vkj lokjk gA

उमापति शर्मा द्विवेदी का जन्म देवरिया जनपद मे gvk FkkA vkidk dk0;&y[ku dh lQyrk d fy, ^dfoifr* dgk x;kA vkid }kjk 21 lxk e fyf[kr ikfjtkrgj.k egkdk0; 1957 b- में प्रकाशित हुआ। कवि श्लेषाश्रित उपमा के सुनियोजन द्वारा शरत् के अवतरण का दृश्य bl idkj iLrr djrk g &

''श्वेताम्बरा रसिकहंसगतिपसन्ना शृङ्गारहारकुसुमोत्करकाम्यकान्तिः।
उल्लासितस्वसमयाश्रितबन्धुजीवा वाग्वेदतेव समुदेति मुदे शरन्नः।।''[9]

अर्थात् श्वेत वसन वाली, अथवा स्वच्छ आकाश वाली, शृङ्गार के लिए उपयुक्त हार के फूलों d dkj.k deuh; dkfUr okyh] Kku d vkfJr cU/kvk d ik.kk dk mYyfl r dju okyh vFkok खिले अपने समय के बन्धुजतीव नाम के फूलों से युक्त, वाग्देवता की भाँति शरत् हमारी प्रसन्नता के fy, mfnr gk jgh gA

विन्ध्येश्वरीप्रसाद मिश्र भारतधर्म महामण्डल से जुड़े रहे। इन्होंने महाभारत और पद्मपुराण में ikIr d.k vkj vtu d chp ;) l lEc) dFkkud dk ydj 22 lxk e d.kktuh; egkdk0; dh jpuk dhA budh nljh egkdk0; jpuk egf"kKkukuUnpfjr g] tk 23 lxk e gA onHkh jhfr okyh dfo dh Hkk"kk e dgh&dgh vydkj lgt Hkko l vuL;r yxrk g &

''प्रकृतिः किल यस्य सादृशी नहि ;Rukr ifjorrr DofprA
सहितः सितर्शकरादिभिः, न च निम्बो विजहिति तिक्तताम्।।''[10]

vFkkr ftldk tlk LoHkko gkrk g og dgh ;Ru l ugh cnyrk g] phuh d lkFk gku ij Hkh uhe viuk rhrkiu ugh NkMrk gA

गोस्वामिबलभद्रप्रसाद शास्त्री द्वारा रचित 'नेहरुयशःसौरभमहाकाव्य' गोस्वामी प्रकाशन, सकाहा हरदोई से 1975 में 12 सर्गों के साथ प्रकाशित हुआ था। परम्परागत महाकाव्यों के लक्षणों पर निर्मित bl dkO; e dfo dh leFk y[kuh idV gkrh gA

विश्वनाथ केशव छत्रे ने अनेक संस्कृत तथा मराठी ग्रन्थों की रचना की। आपने nl lxk e jfpr lHkk"kpfjr egkdkO; d vfrfjDr rhu vkj egkdkO;] 18 lxk e mifuc) ,dukFkpfjr] Jhlkroydjpfjr vkj Hkkjrh;LokrU«;kn; fy[kA ,dukFkpfjr dk 9 lxk dk iFke Hkkx प्रकाशित हुआ और बारह सर्गों के श्रीसातवलेकरचरित का निर्माण 1983 में पjk gvk] fdUr ;g अप्रकाशित है। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जीवन पर लिखित सुभाषचरित महाकाव्य अपने pfjr&uk;d d R;kxe; thou dh gh Hkkfr ,d lkFkd i;kl gA

ckyd".k HkVV dk tUe fVgjhx<oky d tk[kkyh xke e gvk FkkA vkid }kjk jfpr lRrkbl lxk dk कनकवंश महाकाव्य स्वयं कवि द्वारा भागों में प्रकाशित कराया गया है। कवि HkVV dh nljh jpuk Hkkjr dh LorU=rk ikflr d volj ij jfpr ^LorU=Hkkjre* uke dk [k.M dkO; nk Hkkxk e foHkDr gA dfo u bl ^HkkjrLokrU«;ykd%* Hkh dgk gA

सत्यव्रत शास्त्री का जन्म ykgkj e gvk FkkA vkidh jpuk Jhx#xkfoUnflgpfjr ¼1967½ ij lkfgR; vdkneh ijLdkj 1968 e iklr gvk FkkA dfooj }kjk fy[k vU; rhu egkdkO; 'श्रीबोधिसत्त्वचरित', 'इन्दिरागान्धीचरितम' एवं 'श्रीरामकीर्तिमहाकाव्य' मूलामल भी प्रकाश में आए हैं।

ब्रह्मानन्द शुक्ल का tUe et¶Qjuxj fty d pjFkkoy xke e gvk FkkA vkiu vud lLdr lkfgR; dh jpuk] ftue y?kdkO; ^JhxkfU/kpfjre* Hkh gA budh vfUre jpuk ^Jhug#pfjre* egkdkO; g tk vVBkjg lxk e gA dfo u ;ed] ifjl[;k vkfn vydkjk dk Hkh ;FkkLFkku iJ; fn;k है। वह अपने नायक के देश सेवा व्रत को इन शब्दों में, नायक के मुख से 0;Dr djrk g &

^^dnkfi ukga fopykfe lR;kr~ iFk% l pks d#.kk djkr;A

शरीरमेतन्मम देशसेवारतस्य कामं विलयं प्रयातु।।''[11]

vFkkr lR; d iFk l e dHkh fopfyr ugh gkm] og ,lh d#.kk करे। देश की सेवा में लगे मेरा यह शरीर चाहे विलीन ही क्यों न हो।

क्षेमधारीसिंह शर्मा का जन्म मिथिला के राजपरिवार में हुआ था। इनकी दार्शनिक भाव वाली अनेक कृतियाँ अप्रकाशित रह गयीं। 'सुरथचरित' महाकाव्य का प्रकाशन भी इनकी मृत्यु के पश्चात् gvkA

dkलीपद तर्काचार्य का जन्म बंगाल (अब बांग्लादेश) के फरीदपुर जिले के कोटलिपारा–उनशिया ग्राम में हुआ था। इनका उपनाम काश्यपकवि था। इनके अनेक रूपक हैं तथा nk egkdkO; g & ^lR;kuHkko* vkj ^;kfxHkDrpfjr*A

भोलाशंकर व्यास का जन्म बूंदी, राजस्थान के नरेशों क dyx# ifjokj e gvk FkkA vkiu संस्कृत के साथ–साथ पाश्चात्य पद्धति से अध्ययन करके काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र तथा भाषाशास्त्र का विशेष अध्ययन किया और इन विषयों पर ग्रन्थों का निर्माण भी किया। इनके द्वारा हिन्दी में fyf[kr if.Mrjkt txUukFk d thou ij vk/kkfjr ekfyd miU;kl ^lenl³xe* ,d mÙke कृति है। आपके द्वारा 16 सर्गों में 'शक्तिजयम्' महाकाव्य की रचना की गई। इस महाकाव्य की कथावस्तु दुर्गासप्तशती के उत्तरचरित से ली गई है।

jokilkn f}onh dk tUe Hkkiky d fudV ^uknuj* xke e gvk FkkA vkid vud dkO; vkर मौलिक साहित्यशास्त्रीय ग्रन्थ प्रकाश में आये। ये कारयित्री तथा भावयित्री, दोनों प्रकार की प्रतिभा से सम्पन्न हैं। इनके दो महाकाव्य प्रकाशित हुए – 'सीताचरित' (1960) तथा ^LokrU«;lEHko* g] ftl ij dfo dk lkfgR; vdkneh] ubZ fnYyh }kjk ifrf"Br ijLdkj vkj d-d-बिरला फाउण्डेशन, नई दिल्ली द्वारा वाचस्पति पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

Jh/kj HkkLdj o.kdj dk tUe ukxij e gvk FkkA vkiu lLdr dh vud fo/kkvk e लेखन के साथ, 'अर्वाचीन संस्कृत साहित्य' नाम से मराठी में शोध–प्रबन्ध लिखा और ^lLdrHkfor0;e* पत्रिका का सम्पादन किया। इन्हें कांचीपीठ के शंकराचार्य ने 'प्रज्ञाभारती' की mikf/k l foHkf"kr fd;k] bud lkfgR; dk lxg ^iKkHkjrh;e* uke l 1993 e lex :i l प्रकाशित हुआ। इन्हें 'रामकृष्ण डालमिया' श्रीवाणी सम्मान भी मिला। छत्रपति शिवाजी के गौरवमय pfj= ij निर्मित, 68 सर्गों का इनका महाकाव्य श्रीशिवराज्योदय शारदा गौरव ग्रन्थमाला, पूना से 1972 में प्रकाशित हुआ। इस पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

प्रभुदत्त स्वामी का जन्म मेरठ जनपद के किशनपुर बराल में हुआ था। आपके दो महाकाव्य प्रकाश में आये, ^ioHkkjre* vkj ^ek;pUnkn;e*A budh vfrfjDr jpukvk e ^nodhuUnue* ¼[k.Mdk0;½] ^jkekpk;dlektfy½* vkj ^Jhd".kck/kLrokere* ¼nkuk Lrk=dk0;½ gA ioHkkjr महाकाव्य में कवि ने प्रथम पद्य में पूरे आर्य देश को धराभूत विष्णु के रूप में दे[kk g &

''अस्त्यद्रिराजाद् दिशि दक्षिणस्यां महाहिमोद्भासितभव्यभालः।

पयोनिधिक्षालितपादपद्मो हरिर्धराभूत इवार्यदेशः।।''

अद्रिराज हिमालय से दक्षिण दिशा की ओर, हिम शक्ति से उद्भासित भाल, समुद्र से i{kkfyr pj.kdey okyk /kjk dk :i /kkj.k fd; g, foष्णु जैसा आर्यदेश है।

«;Ecd vkRekjke Hk.Mkjdj u ^fo|kFkh* uke l ^vkRepfjr* dk i.k;u fd;k g] tk rkjk प्रिंटिंग वर्क्स, वाराणसी से 1973 में मुद्रित हुआ है। 'तिलक' आदि नेताओं द्वारा प्रवर्तित 'स्वदेशी' vkUnkyu e mUgku Hkkx fy;k FkkA dfo Hk.Mkjdj }kjk vBkjg lxk e fufer ^JhLokfefoodkuUnpfjr* egkdk0; pk[kEHkk lLdr lhjht vkfQl] okjk.klh }kjk 1973 e प्रकाशित हुआ था।

उमाशंकर शर्मा त्रिपाठी का जन्म देवरिया जनपद के सिगहा ग्राम में हुआ। इन्होंने काशी fo|kihB e vxth lkfgR; dk v/;kiu fd;k और शिवाजी के चरित्र पर आधारित 'क्षत्रपतिचरित' egkdkO; dh jpuk dh] tk fefgjef.k f=ikBh }kjk vkuUn dkuu i l] nf.<jkt] okjk.klh l मुद्रित होकर प्रकाशित किया गया। इसके अतिरिक्त कवि त्रिपाठी ने उमरखय्याम की रुबाइयों का lLdr e i|kuokn] egkRekxkU/kh dh lfDr;k dk vu"Vi NUn e :ikUrj.k] Hkkjrhxhre uke l lLdr d xhr rFkk foukni.k vU;kfDre; lLdr dk0; ^jklHkkjrh* dk i.k;u fd;kA

परमानन्द शास्त्री का जन्म मेरठ जिले के अनवरपुर ग्राम में हुआ। इन्होंने संस्कृत में अनेक y?kdk0;k d vfrfjä nk egkdk0;k dh jpuk dh ^tufot;e* vkj ^phjgj.ke*A dfo dk mud चीरहरण महाकाव्य पर मध्यप्रदेश साहित्य परिषद ने 1985 में कालिदास पुरस्कार से पुरस्कृत किया gA Hkkjrh; tu dh vHkrio fot; dk ydj dfo dgrk g&

''क्रान्तिर्विना शोणितबिन्दुपातमशिक्षितानां जनतन्त्रबोधः।

vHkrioki fot;k tuL; ykdL; tkrk·nHkrfoLe;k;AA**[12]

अर्थात् बिना रक्तपात के क्रान्ति, अशिक्षित जन का जनतन्त्र–बोध, जनता की अभूतपूर्व fot;] ;g ykxk d vnHkr foLe; dk dkj.k cukA

ih- d- ukjk;.k fiYyb dk tUe fr#oYy e gvk gA vki ey;kye vkj lLdr nkuk साहित्य में अपनी रचनात्मक प्रतिभा के कारण प्रशंसित हैं। स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर आधारित उनका संस्कृत महाकाव्य 'विश्वभानुः' 'जयविहार', त्रिवेन्द्रम से 1980 में प्रकाशित हुआ था।

राजेन्द्र मिश्र का जन्म जौनपुर के द्रोणीपुर ग्राम में हुआ और उच्च शिक्षा bykgkckn विश्वविद्यालय से हुई। इनके कथासंग्रह 'इक्षुगन्धा' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार और जानकीजीवन egkdk0; ij d- d- बिरला फाउण्डेशन का 'वाचस्पति–पुरस्कार' प्राप्त हुआ है।

ek/ko Jhgfj v.k dk tUe i.k d ifrf"Br ifjokj e gvk FkkA o i.k d fryd egkjk"V fo|kihB d dyifr jgA fcgkj jkT; d jkT;iky d :i e mUgku Lor= jk"V dh lok dhA mUg Hkkjr d jk"Vifr u 1968 e inefoHk"k.k vydj.k l foHkf"kr fd;k FkkA mudk dfo :i उनके महाकाव्य, ‘श्रीतिलकयशोऽवर्णन’ के प्रकाशन से लोक–विदित हुआ।

गणेश xxkjke i<kjdj dk ^lLdkjl³xje* uke dk uk lxk e fyf[kr egkdkO; Jh j- c- जोशी चिटणीस प्राज्ञ पाठशाला, मण्डल बाई जिला सतारा से 1977 में प्रकाशित हुआ।

नारायण शुक्ल उत्तरप्रदेश के देवरिया जिले के खोण्डा ग्राम के निवासी थे। आपने अपने ही fty d ,d lLdr egkfo|ky; e v/;;u fd;k vkj JhukFk lLdr egkfo|ky;] gkVk (देवरिया) के प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए। कवि शुक्ल ने ‘उर्मिलीयमहाकाव्य’ का निर्माण किया जो उनके ही द्वारा 1973 में प्रकाशित हुआ। कवि शुक्ल ने कृष्णायनम् नाम से भी एक महाकाव्य की jpuk dh] ,lk mYy[k ikIr gkrk gA

रमेशचन्द्र शुक्ल का जन्म धौलपुर में हुआ था। इनके द्वारा 14 सर्गों में रचित महाकाव्य ‘सुगमरामायण’ देववाणी परिषद् दिल्ली से 1978 में प्रकाशित हुआ। कविवर शुक्ल का दूसरा ग्यारह lxk e fuc) egkdkO; ^Jhd".kpfjr* nook.kh परिषद्, दिल्ली से ही 1978 में प्रकाशित हुआ।

वसन्त त्र्यम्बक शेवडे का जन्म मुम्बई में हुआ था। कवि ने प्राचीन पद्धति से अनेक गुरुजनों से विविध शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त की। आपका लघुकाव्य ‘रघुनाथशिरोमणिचरितम्’, ‘सरस्वतीसुषमा’ वाराणसी से प्रकाशित हुआ। आपके अब तक तीन महाकाव्य प्रकाश में आये विन्ध्यवासिनीचरित, शुम्भवध और श्रीदेवदेवेश्वर।

jkekorkj feJ dk tUe x;k fty d Vdkjh d ikl cuhij xke e gvk FkkA vkiu lLdr d vfrfjDr 0;kdj.k] vk;on rFkk T;kfr"k dk Hkh v/;;u fd;kA dfo u vud [k.Mdk0;k d vfrfjDr nk egkdkO; ^Jhnohpfjre* ¼1962½ ,o ^Jh#fDe.khe³xye* ¼1999½ dh

रचना की। कवि को देवीचरित पर उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ का कालिदास पुरस्कार ¼1983½ iklr gvkA

रसिकबिहारी जोशी ने वाराणसी में अध्ययन किया और जोधपुर तथा दिल्ली विश्वfo|ky;k d lLdr foHkkxk e v/;{k in ij ifrf"Br jgA Jh d".kHkfDr io.k jpukvk d fuek.k e fui.k कवि जोशी का आठ सर्गों में लिखित 'मोहभङ्गम्' नाम का महाकाव्य 1978 में जोधपुर विश्वविद्यालय से प्रकाशित हुआ।

lck/kpUn iUr u 22 lxk e लिखित 'झांसीश्वरीचरित' महाकाव्य की रचना की जो गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, प्रयाग से 1978 में प्रकाशित हुआ। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम d bfrgkl e >klh dh jkuh y{ehckb ¼1835&1858½ dk uke vej gA dfo iUr u mUg noh nxk d vorkj d :i e fpf=r fd;k g &

^^n|xi; ukjhtu bR;okpYykdL; u=: mnehfeyPpA
;n fofLerk·Hkkn cr foLe;k·fi pØ leLr rnn"VioeAA**[13]

vFkkr ;g dU;k nxk tlh g] ,lh ukfj;k u dgkA mlu ckfydk u ykxk d u= [kky fn;] ;gk rd fd foLe; Hkh fofLer gvk] lc dN vn"Vio ?kfVr gvkA

विद्याधर शास्त्री संस्कृत क्षेत्र में प्रतिष्ठित हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी ने इनकी कुछ रचनाओं का संग्रह 'विद्याधरग्रन्थावली' (1977) के नाम से प्रकाशित किया है। आपका 'हरनामामृतम्' egkdk0; 16 lxk e foHkDr g rFkk firkeg i- gjuke nÙk d thou&pfjr ij vk/kkfjr gA

ih- lh- noL; u ^fØLrHkkxore* uke l blk elhg d thou ij 33 lxk e egkdk0; की रचना की है, जो जयभारतम् त्रिवेन्द्रम, केरल से 1977 में प्रकाशित हुआ है। कवि की यह रचना lkfgR; vdkneh fnYyh }kjk ijLdr gA

कालिकाप्रसाद शुक्ल का जन्म कुशीनगर के निकट मठिया ग्राम में हुआ था। आपका 13 सर्गों में रचित 'राधाचरित' महाकाव्य कवि की रचनाशिल्प की प्रौढ़ता की परिचायक कृति है। कवि dk bl jpuk ij lkfgR; vdkneh ijLdkj Hkh ikIr gk pdk gA Lo· शुक्ल जी ने भगवान् vkfnR; ij ,d L=kr dk0; dh Hkh jpuk ^HkkLdjHkkoHkkuo%* uke l dh gA ;|fi dfo eyr% o;kdj.k g rFkkfi mldk ân; HkfDrHkko l mYyflr g] ftldh vuHkfr mud iR;d in l gkrh gA dfo dh ^jk/kk* d fo"k; e ;g vk;k vR;Ur ekgd g &

^^/kU;: oUnkfofiu dnEcyoyhfud:tfufprkUreA
;fLeLrekyekyk uR;fr ck/kkgjk jk/kkAA**[14]

vFkkr dnEc dh yrkvk d fudt l 0;klr oUnkou /kU; g] reky l f?kj ftle ck/kk nj dju okyh jk/kk uR; djrh gA

जग्गू बकुलभूषण का 15 सर्गों का 'अद्भुतदूतम्' महाकाव्य 1968 में प्रकाशित हुआ थाkA bld साथ रत्नप्रभा नाम की संस्कृत व्याख्या भी प्रकाशित है। कवि ने महाभारत के उद्योग पर्व की मूल dFkk] ftle Jh d".k ik.Mok d nr cudj dkjok dh lHkk e tkr g] dk vk/kkj cuk;k gA vkiu lkfgR; dh vud fo/kkvk x|dk0;] pEi] ukVd] xhr rFkk L=kr e jpuk dhA

प्रभुदत्त शास्त्री का जन्म अलवर जनपद के ततारपुर ग्राम में हुआ था। आपने 'गणपतिसम्भव egkdk0;* dh jpuk dhA nl lxk e jfpr bl egkdk0; e mUgku vk|kiUr doy शार्दूलविक्रीडित छन्द का उपयोग किया है, किन्तु सर्गान्त में छन्द बदल दिये हैं।

jkepUn feJ dk tUe lhrke<h ftyk d idMh xke e gvk FkkA vkid }kjk ifj.kr वयःकाल में निर्मित दस सर्गों का 'वैदेहीचरित' महाकाव्य कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा से 1985 में प्रकाशित हुआ। कवि ने इसे अपने साहित्यिक जीवन का 'चरमपरिणामभूत काव्य xUFk* dgk gA

fuxeck/k rhFk dk tUe fHkokuh fty d ygkjh tkV xke e gvk FkkA vkiu 'हरियाणावैभवम्' की रचना की । आपके द्वारा रचित 13 सर्गों का श्रीशङ्कराचार्यचरित महाकाव्य परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली से 1988 में प्रकाशित हुआ।

gfjgj ik.M; dk tUe vktex< fty d dd<hij xke e gvkA vkidh jpuk 'उमोद्वाह' महाकाव्य निर्मल प्रकाशन, वाराणसी से 1985 में प्रकाशित हुई। इसमें 16 सर्ग हैं। कवि u vk|kikUr ,d gh NUn] mitkfr e ijh jpuk mifuc) dh gA dfo dh nf"V jk"Vh;rkijd irhr gkrh gA tIk fd fgeky; d jkT; o.ku e fy[krk g &

> **''नायव्ययं राष्ट्रधनस्य चक्रे कोऽप्यम्बुविद्युद्शरणीवनादेः।**
> **नैवात्मनो व्यर्थकृतौ च नाशं चकार कालप्रतिभावनादैः।।''**[15]

vFkkr turk ty] fctyh] Hkfe] ou vkfn jk"Vh; lEifRr;k dk vi0;; ugh djrh Fkh vkj mRiknughu fujFkd dk;k में अपने धन, समय तथा प्रतिभा का नाश नहीं करती थी।

द्विजेन्द्रलाल शर्मा पुरकायस्थ ने शुक्राचार्य, कच और देवयानी के प्रसिद्ध पौराणिक कथानक पर आश्रित 12 सर्गों का महाकाव्य 'महीमहम्' की रचना की, जिसे 1984 में स्वयं प्रकाशित किया। dfo dh vU; lLdr jpukvk e ,d ^vydkfeyue* Hkh gA

पद्म शास्त्री का जन्म अल्मोड़ा में हुआ था। रूस में बोल्शेविक क्रांति के जन्मदाता महान् Økfrdkjh Cykfnehj yfuu ¼1870&1924½ d thou ij vk/kkfjr ^yfuukere* dh jpuk 15 lxk में की है। कवि का यह महाकाव्य विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर से प्रकाशित हुआ।

हरिनारायण दीक्षित का जन्म उत्तरप्रदेश के जालौद के पड़कुला ग्राम में 1936 को हुआ था। vkiu vud fo/kkvk e y[ku fd;k gA budh jpukvk e ^JhenIi;&nhf{krpfjre* ¼x|dk0;½] 'मेनकाविश्वामित्रम्' (दृश्य काव्य), 'श्रीहनुमद्दूतम्' (सन्देशकाव्य), 'गोपालबन्धुः' (कथाकाव्य) के साथ

chI Ixk okyk egkdk0; ^Hkh"epfjr* g] tk IkfgR; vdkneh] ub fnYyh }kjk ijLdr gk pdk gA

द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री का जन्म उत्तरप्रदेश में हुआ था। कवि ने घटनाप्रधान LojkT;fot;egkdk0; dh jpuk dhA bIe 20 Ix g rFkk iR;d Ix dh dFkkoLr vyx gku d dkj.k I?kfVr ugh gA

हरिप्रसाद द्विवेदी शास्त्री का जन्म उत्तरप्रदेश के अलीगढ़ के बाण ग्राम में हुआ। आपने 11 Ixk e ^xkLokferyIhnkIpfjr* egkdk0; dk fuek.k fd;kA

नारायण शास्त्री की रचना 'श्रीशैलजगnx#pfjr* egkdk0; g tk 19 Ixk e fuc) g rFkk 1953 में बंगलौर से प्रकाशित है। इसमें श्रीशैल के जगद्गुरुओं का जीवन वृत्त वर्णित है। इसमें पण्डितराध्य से आरंभ करके चन्न बसवदेशिक तक के गुरु वर्णित हैं।

छज्जुराम शास्त्री का जन्म कुरूक्षेत्र के पास शेखपुरा लाoyk xke e gvk FkkA vkiu nk पौराणिक महाकाव्यों की रचना की 'परशुरामदिग्विजय' तथा 'शिवकथामृतम्'। दोनों को ही पुराणों में 0;kdh.k IEc) dFkkvk dk ,d= djd dfo u ^Ixc)* :i e iLrr fd;k gA

भवानीदत्त शर्मा का जन्म आरा (बिहार) के निकट गंगk d nf{k.k rV ij gvk FkkA vkiu uk Ixk d egkdk0; ^Ikfef=IUnjhpfjr* dh jpuk dhA mfeyk d thou ij vk/kkfjr ;g ILdr dk nIjk egkdk0; gA le;kfpr loknk e ,d Igt iokg ,o jIknrk g tk eu dk vfHkHkr dj nrh gA Ikfef= y{e.k fi;k Åfeyk I dgr g &

> ''दासः प्रियो मे भविता प्रभोश्चेद् दासीं प्रियां विद्धि धरात्मजायाः।
> foHkT; pkok nreo Iokorrk|u"Bkuijk HkoAA**[16]

vFkkr ej fi; vki iHk jke d nkI gkx rk /kjkRetk Ihrk dh e> nkIh Ie>] viu&viu dk; dk foHkktu djd ge nkuk Iokorkfn d vu"Bku e rRij gk tk;A

पाण्डुरंग शास्त्री डेग्वेकर ने महाभारत से गृहीत मूल कथानक पर आधारित तथा 10 सर्गों में fuc) ^Jhd#{k=* egkdkO; ¼1959½ dh jpuk dh gA ijk jpuk e jk"Vh; pruk dk iJ; feyk gA

काशीनाथ पाण्डेय 'चUnekfy* chdkuj d fuokI h gA vkiu ILdr dh vud fo/kkvk e काव्य प्रणयन किया है। आपके द्वारा लिखित 21 सर्गों का 'श्रीमज्जवाहरयशोविजय' महाकाव्य 1985 में अखिलभारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ समताभवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर द्वारा प्रकाशित कराया x;k g। विषय के अनुसार धार्मिक उपदेशों को कवि ने कवित्वमय अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया gA

रघुनन्दन शर्मा ने जैन तेरापन्थ सम्प्रदाय के संघाधिनायक आचार्य श्री तुलसी के जीवन–दर्शन पर आधारित 'श्रीतुलसीमहाकाव्यम्' की रचना 1982 में प्रस्तुत की, जिसमें 25 सर्ग है। dfo eyr% vk;onkpk; Fk] fdUr mue lgt dfoRo dk vkHkkI iLrr jpuk d ek/;e l feyrk gA

स्वयम्प्रकाश शर्मा का जन्म पंजाब के होशियारपुर के निकट एक गाँव में हुआ था। आपने ^JhHkDrflgpfjr* egkdkO; dk i.k;u fd;k] ftle 7 lx gA Hkxrflg dh ifrKk dk dfo u इन शब्दों में प्रस्तुत किया है –

^^pT tUe n|kRiujo noLrn= Hk;kn Hkfo Hkkjr·fLeuA
lok¥p d;k futekrHkenRok·fi eLr cgHkfDr;kxkrAA**[17]

अर्थात् फिर यदि विधाता भारत–भूमि पर जन्म दें तो अपनी मातृभूमि की सेवा अतिशय HkfDr;kx l viuk eLrd p<kdj d:A

श्यामवर्ण द्विवेदी का जन्म उत्तरप्रदेश के गोरखपुर जनपद में हुआ। आपने 'विशालभारत' egkdkO; dk fuek.k fd;k] ftldk iFke Hkkx tokgjfnfXot;e gA dfo dh Hkk"kk leFk ,o dfoRo l i.k gA frjx jk"V/ot d lc/k e o fy[kr g &

^^jk"V/ot r xxu f=o.kenoh{; ok;LQjnTToykUreA
xkjk iirh;% Ødp pyUr idfEirk³xk ân#foinkjeAA**[18]

vFkkr rhu o.kk oky] iou l Qgjkr vx&Hkkx oky] ân; d o.k dk fonh.k dju oky mI jk"V/ot dk xkj vxtk u pyrk gvk vkjk le>kA

j?kukFk ilkn proinh u 21 lxk e foHkDr ^tokgjT;kfregkdkO;* dh jpuk gA ble i- tokgjyky ug# d tUe l ydj ngkolku rd dh dFkk dk lfEefyr fd;k x;k gA

ih- उमामहेश्वर शास्त्री का महाकाव्य 'कंससंहारमहाकाव्य' 1968 में प्रकाशित हुआ थाA 18 lxk d bl egkdkO; e Jhd".k dh ckyyhykvk dk o.ku fd;k x;k gA

d- ,u- ,>rpu u 21 lxk e ^djykn;* egkdkO; dh jpuk dh gA ;g ,frgkfld egkdkO; g] ftle djy dk bfrgkl of.kr gA ble ikphurk d lkFk vk/kfudrk dk Hkh समावेश है।

jkedcj ekyoh; dk tUe i;kx d fudV dMk e gvk FkkA bUgku ^Jhekyoh;pfjre* egkdkO; e egkeuk enuekgu ekyoh; th dk thou&pfjr 15 lxk e fpf=r fd;k gA bl रचना का प्रकाशन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की पत्रिका 'प्रज्ञा' में क्रमशः हुआ है।

सुधाकर शुक्ल dk tUe bVkok d D;kVjk xke e gvk FkkA vkiu rhu egkdkO;k dh jpuk dh & LokfepfjrfpUrkef.k ¼16 lx½] xkU/khlkxfU/kde ¼20 lx½ rFkk Hkkjrhlo;Eoje ¼12 lx½A

साधुशरण मिश्र ने 19 सर्गों में निबद्ध 'गान्धिचरित' महाकाव्य की रचना 1962 में की थी। dfo u egkRek xk/kh dk jke vkj d".k dh Hkkfr vorkj ekuk gA

श्रीकृष्ण प्रसाद शर्मा घिमिरे का जन्म 1918 में टंगाल गहिरीधारा, काठमाण्डु (नेपाल) में हुआ FkkA bUgksu pkj egkdkO;k dk i.k;u fd;k & ^Jhd".k&pfjrke`re*] ^o=o/ke*] ^;;kfrpfjre* rFkk ^ukfpdsle*A dfo f?kfej d dkj.k lLdr dfork dk {k= Hkkjr dh lhek l ikj igpkA Jhd".kpfjrker 58 lxk ,o ukfpdrl 28 lxk e fuc) gA

erdye Jh/kj u ^uoHkkjre* ¼1978½ uke dk 18 lxk dk ,frgkfld egkdkO; fy[kk g tk Lor= Hkkjr d iFke i/kkue=h tokgjyky ug# d thou ij vk/kkfjr gA

d- ckyjke ifUudj }kjk jfpr ^Jhukjk;.kfot;* uke dk 21 lxk dk egkdkO; g tk केरल के प्रसिद्ध समाजसुधारक एवं सन्त श्रीनारायण गुरु के जीवन तथा शिक्षा पर आधारित है।

शान्तिभिक्षु शास्त्री का 'बुद्धविजय काव्य' साहित्य अकाneh fnYyh }kjk ijLdr fd;k tk pdk gA ;g 100 lxk e fuc) gA

ओगेटि परीक्षित् शर्मा का जन्म 'परीक्षितनाटकचक्रम्' नाम से 27 नाटकों का संग्रह है। इन्होंने दो महाकाव्यों यशोधरामहाकाव्य तथा श्रीमत्प्रतापराणायन की रचना की है।

d- ,l- ukxjktu u 16 lxk e jfpr ^JhlhrkLo;oje* egkdkO; dh jpuk dhA bld पश्चात् दूसरी महाकाव्य रचना 'श्रीलवलीपरिणयम्' 1975 में प्रकाशित हुई थी। स्कन्दपुराण की शंकरसंहिता के देवकाण्ड में प्राप्त लवली और सुब्रह्मण्य के विवाह की पौराणिक कथा ही इस रचना dk vk/kkj gA

रघुनाथ शर्मा का जन्म उत्तरप्रदेश के बलिया जिले के छाता ग्राम में हुआ था। आपके द्वारा 8 सर्गों वाले 'पार्वतीपरिणय' महाकाव्य का निर्माण किया गया है। इस महाकाव्य का प्रकाशन साहित्य अकादमी दिल्ली की पत्रिका 'संस्कृत प्रभा' के पंचदश उन्मेष (1985) में हुआ है।

वनमालिदास शास्त्री u nk egkdkO; fy[k g ^gfji"B egkdkO;* vkj ^Jhd".kkuUn महाकाव्य'। 'श्री वनमालिप्रार्थनाशतकम्' आपके द्वारा रचित स्त्रोत–काव्य है। कवि ने परम्परागत महाकाव्य के लक्षणों का अनुगमन किया है और यथास्थान उपदेशात्मक बातें प्रस्तुत की हैं।

मधुकर शास्त्री का जन्म जयपुj d ikl ,d xke e gvk FkkA vkiu rhFkdj egkohj Lokeh ij vk/kkfjr ^Jhegkohjlk jHke* dk fuek.k fd;k g] tk 16 lxk dk gA

jke:i ikBd dk tUe fcgkj d lglj ke e gvkA bud }kjk fyf[kr ^fp=dkO;dkrde* ij lkfgR; vdkneh dk ijLdkj ikIr gvkA bUgku ^Jhjkepfjre* uke l ,d egkdkO; dh jpuk dh FkhA

txUukFk feJ dk tUe fcgkj d e/kcuh d cfy;k xke e gvk FkkA vkiu uk lxk d 'भारतीशबरीमहाकाव्यम्' की रचना की। कवि शबरी के प्रति अपना भाव इन शब्दों में व्यक्त करता है &

^^;L;k u ekrk u firk u cU/kquk lhr· lekt·fi inu ekU;kA
rL;k egknU;i;kf/kohpk jkek·Hkor· ikr bo i.krkA**[19]

अर्थात् जिसके माता–पिता, भाई–बन्धु न थे और न जो समाज में ही मान्य थी, उस शबरी d jke egknU; d len dh ygjk e ikr dh Hkkfr mckju oky g,A

Jhfuokl jFk ^^rno xxu lo /kjk** d ifl) xk;d ,o viuh ^dkO;;k=k* e ijEijk dh miyfC/k;k dk vk/kfudrk l tkMu d i;kl e ioÙk dfo jFk u vkpk;
i- cyno mik/;k; d thou ij vk/kkfjr ^cynopfjre* egkdkO; dh jpuk dh ;ktuk g] ftld dN lx ^nok* e प्रकाशित हो चुके हैं।

fnxEcj egkik= u 11 lxk e ^ljUnpfjregkdkO;* uked ,frgkfld egkdkO; dh jpuk dhA ;g 11 lxk e gA

Jhtho U;k;rhFk d }kjk 18 lxk e ^ik.MofoØee* egkdkO; dh jpuk dhA ;g 18 lxk e fufer gA bl egkdkO; dh dFkk egkHkkjr d nk iok] ou rFkk fojkV dh ?kVukvk ij vk/kkfjr gA ble ohj jl i/kku :i l ifrf"Br gA

विष्णुदत्त शर्मा का जन्म मेरठ में हुआ था। श्री शर्मा कई विषयों के आचार्य हैं। आपने ^Jhx#ukudnopfjr* dh jpuk dh tk] 17 lxk e g] ble fl D[k /ke d iord x#ukud no जी के जीवन की घटनाओं के साथ उनके उपदेश एवं जीवन–दर्शन को सम्मिलित किया गया है।

पशुपति झा का जन्म नेपाल के जनकपुर के निकट सादा ग्राम में हुआ था। आपने 15 सर्गों e ^uikylkekT;kn;* egkdkO; dh jpuk dhA vkidh ,d vkर रचना 'वाताह्वानम्' भी प्रकाशित gA

bUnno f}onh ^bUn* dk tUe fcgkj d Hkktij d ygBku xko e gvk FkkA vkidh jpuk 'सूक्तिमन्दाकिनी' उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ द्वारा पुरस्कृत हुई है। इनके द्वारा 21 सर्गों dk egkdkO; ^lnkekpfjr* 1962 e Hkkjrh साहित्य परिषद गोमतीनगर लखनऊ से प्रकाशित हुआ gA

बलभद्र शास्त्री के महाकाव्य 'दूतांजनेय' का प्रकाशन, वाग्देवता प्रकाशन, अशोक नगर, बरेली l 1993 e fd;k x;k FkkA ;g 14 lxk dk egkdkO; gA ble Jh gueku }kjk Jh jke d nkR;de dk e[;r% o.ku gA

शिवकुमार शास्त्री का जन्म बिहार के वर्तमान कैमूर जिले के मुख्य नगर भभुआ में हुआ था। vkiu Hkkjrh; Lokr«; lxke l iHkkfor gkdj 16 lxk e ^Jhohjdekjflgpfjr* egkdkO; लिखा, जो गायत्री प्रकाशन, बुद्धकॉलोनी, पटना से 1995 में प्रकाशित हुआ है।

f=ijkfरिशरण पाण्डेय का जन्म झकरानी नायन राज्य रायबरेली में हुआ था। आपने चौदह सर्गों में रचित 'रामामरचरितामृत महाकाव्य' की रचना की, जो समीक्षा प्रकाशन, बरेली से 1995 में प्रकाशित हुआ था।

¼2½ y?kdk0; [20]

lLdr lkfgR; e y?kdk0; uked dkb fo/kk ugh g] किन्तु विगत दो शताब्दियों के काव्यों e ge egkdk0;] ukV;dk0;] x|dk0; ,o xfrdk0; d vfrfjDr vU; ftru Hkh idkj d dk0;k dk ltu gvk mUg ^y?kdk0;* dh lKk nh tk ldrh gA ;g fo/kk vokphu lLdr lkfgR; d ,d cgr cM Hkkx dk viu vki e lekfo"V djrh gA y?kdk0; ik;% iktu Hkk"kk एवं सहज शैली में निबद्ध हुए हैं। भाषा कठिनता से सरलता की ओर है। अलंकारादि के प्रयोगों में नवीनता आई है। अधिकांश लघुकाव्यों की रचना पारम्परिक वार्णिक एवं मात्रिक छन्दों में हुई है, जो lLdr&dk0;txr e एक अभिनव प्रयोग है। उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी की राजनैतिक घटनाओं u y?kdk0; dh iofRr;k ,o fo/kkvk dk fu/kkfjr fd;k gA vk/kfud ;x e ftu fofo/k fo"k;k dk lekfgr dj bu dk0;k dh jpuk gb g] mue ie[k fuEu g &

ijkdFkkfJr dk0; & ijkdFkkfJr dk0; e[; :i l ey mitk0; xUFk jkek;.k] egkHkkjr] fofo/k ijk.kk ,o dFkkxUFkk dk vk/kkj cukdj jp x, gA dgh&dgh ijkoÙkk dk ;xku:i ifjofrr dj Hkh iLrr fd;k x;k gA bu ikjEifjd dk0;k e e[; :i l dfo gepUndr 'परशुरामचरितम्', स्वयंप्रकाश शर्मा शास्त्री कृत 'इन्द्रयक्षीयं काव्यम्', एन॰ कुमारन् आशान कृत ^lhrkfopkjygjh*] Jh fHk- oy.kdj dr ^fo".ko/kkiue vkfn gA

noLrfrijd dk0; & bl idkj d dk0;k e fdlh nork dk vkjk/; ekudj mldh Hkkoi.k Lrfr iLrr dh xb gA dN dk0;k e flQ ,d nork dh Lrfr gb g rk dN dk0;k e vud noh&norkvk dh Lrfr dh xb gA bu dk0;k e Jh vkVVj mf".k uEcnjhikn dr

’राधाकृष्णरसायनम्’, श्री सत्यव्रत शर्मा ’सुजन’ शास्त्री कृत ’श्रीयुगलशतदलम्’, अभिराज राजेन्द्र मिश्र dr ^iराम्बाशतकम्’ तथा ’श्रीयुगलशतदलम्’, नलिनी शुक्ला कृत ’भावांजलिः’ एवं श्रीभाष्यम् विजय lkjfFk dr ^eUnkfduh* vkfn ie[k gA

jk"VªHkfä ijd dkO; & Lor=rk d io jk"Vh; pruk tkxr dju okyk lkfgR; fy[kk x;kA 1857 के विद्रोह के परिप्रेक्ष्य में श्री वासुदेवशास्त्री okxokMhdj u ^Økfr;)e* rFkk ih- xkikyd".k HkVV u ^egkjkuh >klh y{ehckb* dkO; fy[kA if.Mrk {kek jko u ^lR;kxgxhrk*] ^mÙkjlR;kxgxhrk* rFkk ^LojkT;&fot;%* tl y?kdkO; fy[k] d-,l-uxjktu dr ^HkkjroHkoe प्रमुख हैं। स्वतंत्रता पश्चात् के काव्यों में सुरेशचन्द्र शास्त्री कृत ’वीरोत्साह—वर्द्धनम्’, रमेशचन्द्र शुक्लकृत बँगलादेशः, शशिधर शर्मा कृत ’वीरतरंगिणी आदि हैं। राष्ट्रभक्ति की भावना जाग्रत करने oky y?kdkO;k e i- यज्ञेश्वर शास्त्री कृत ’भारतराष्ट्ररत्नम’, श्रीधर भास्कर वर्णेकर कृत ’श्रमगीता’, y{ehukjkयण शुक्ल कृत ’राष्ट्रतन्त्रम्’, श्रीमहादेवशास्त्री कृत ’भारतशतकम्’ गरिकपाटि लक्ष्मीकान्तैया dr ^HkO;Hkkjre*] i- बालकृष्ण भट्ट शास्त्री कृत ’स्वतन्त्रभारतम्’ डॉ- रमाकान्त शुक्ल कृत ’भाति मे Hkkjre* ie[k gA

pfjruk;d&ijd dkO; & बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक के काल e Lor=rk d fy, viu ik.kk dh vkgfr nu oky vud ohjk] Lor=rk lukfu;k] egkiq#"kk] /kkfed urkvk vkj jkturkvk dk vk/kkj cukdj vud y?kdkO;k dk fuek.k fd;k x;kA bue e[; :i l i- pUnhyky lnu dr ^Hkkjrflgpfjrkere*] i- cãानन्द शुक्ल कृत ’श्रीगान्धिचरितम्’, पं- t;jke शास्त्री कृत ’श्रीगान्धिबान्धवम्’, श्रीनिवासताडपत्रीकर कृत ’गान्धीगीता’, राजनारायण प्रसाद मिश्र कृत ’सुभाषचन्द्रोदयम्’ रामशरणशास्त्री कृत ’जवाहरजीवनम्’, श्रीधर भास्कर वर्णेकर कृत ’जवाहरतरंगिणी’, आचार्य रमेशचन्द्र शुक्ल कृत ’श्रीनेहरुवृत्तम’ तथा ’लालबहादुरशास्त्रिचरितम्’, विष्णुकांत झा कृत

’राष्ट्रपतिराजेन्द्रवंशप्रशस्तिः’, रमेशचन्द्र शुक्ल कृत ’इन्दिराशस्तिलकम्’, डॉ॰ रामाशीष पाण्डेय कृत ’इन्दिराशतकम्’ तथा श्रीकृष्ण सेमवाल कृत ’इन्दिराकीर्तिशतकम्’ आदि हैं।

lkekftd leL;k eyd dk0; & Hkkjr dh fofHkUu lkekftd leL;kvk dk vk/kkj cukdj lLdr dfo;k u db dk0;k dk fuek.k fd;k gA bu lkekftd leL;kvk e ngt iFkk] lrhiFkk] ukjh mRihMu] vkrdokn] Hk"Vkpkj vkfn gA bu y?kdk0;k e Mk- उमाकान्त शुक्ल कृत ’कूहा’, Jherh ljkftuh देवी कृत ’स्त्रीशिक्षालयम्’, व्योमशेखर कृत ’अग्निजा’ तथा प्रो॰ jked".k HkVV dr ^dk0;k|kue* vkfn gA

शुद्ध रसात्मक काव्य – jli.k dk0;k dh jpuk Hkh bl ;x e gb gA fdlh Hkko&ie] fojg] mRlkg vkfn d 0;ftr ,o ikf"kr gku ij gh dk0; jluh;rk dk ikIr djr gA bl ;x e Jh मधुकर गोविन्द माइणकर कृत ’स्मृतितरङ्म्’, पुलिवर्ति शरभाचार्य कृत ’यशोधरा’, कृष्णप्रसाद शर्मा घिमिरे कृत ’श्रीरामविलापः’ तथा डॉ॰ रमाशंकर तिवारी कृत ’वेदेह्या अतीतावलोकनम्’ शुद्ध jlkRed gku d dkj.k bl rjg vyx J.khc) fd; x; gA

i:dfro.kuijd dk0; & dfo dh dYiuk idfr l nj ugh jg ldrh] pkg og ikphu dfo gk ;k vokphuA dfri; dfo;k u idfr o.ku d ikjEifjd :i dk gh fy;k gA bl rjg d dk0;k e jkeukjk;.k f=ikBh dr ^_rfoykl%*] d- ,l- कृष्णमूर्ति शास्त्री dr ^idfr&foykl%*] श्री सुन्दरराज कृत ’सुरश्मिकाश्मीरम्’ आदि।

दूतकाव्य/संदेशकाव्य – दूतकाव्य या संदेशकाव्य लिखने की परम्परा प्राचीन समय से चली आ jgh gA ioe?k&mRrje?k dh rjg nrdk0;k e ik;% ioHkkx LFkku&o.ku ,o idfr&o.ku l ;Dr g vkj mRrj Hkाग विरह सन्देश लिए हैं। विरह के अतिरिक्त सामान्य संदेश वाला काव्य है सुधाकर शुक्ल कृत – ’देवदूतम्’। व्यंग्यपरक दूतकाव्य में पं॰ रामावतार शर्मा कृत ’मुद्रगरदूतम्’। अन्य प्रमुख काव्यों में वासुदेव कृत ’भ्रमरसन्देशः’, बटुकनाथ शर्मा कृत ’बल्लवदूतम्’, पी॰ d- d".kefr

शास्त्री कृत 'शुनकदतम्', परमानन्द शास्त्री कृत 'गन्धदूतम्' चिन्तामणि रामचन्द्र सहस्त्रबुद्धे कृत 'काकदूतम्', कृपाराम त्रिपाठी कृत 'तरंङ्दूतम्' तथा रामाशीष पाण्डेय कृत 'मयखदूतम्' आदि हैं।

vU;kfäijd dk0; & y?kdk0;dkjk u oreku le; dh fo"kerkvk dk 0;X; vkj dVk{k d ek/;e l iLrr dju d fy, dfo;k u vU;kfäijd dk0; dk Hkh lgkjk fy;k gA bl idkj d dk0;k e eFkjkiIkn nhf{kr dr ^vU;kfDr&rjf³.kh*] vfHkjktjktUn feJ dr 'आर्यान्योक्तिशतकम्' आदि।

gkL;0;³xijd dk0; & gkL;&0;³xijd dk0;k dh lLdr e deh g] fdUr oreku le; e lkekftd fo"kerkvk] de gkr thou&eY;k] jktufrd vkMEcjk] Hk"Vkpkj] vkfn tfVyrkvk u gkL;&0;³X; i/kku dk0; fy[ku dh ij.kk dfo;k dk nh gA dk0;fo/kk lLdr lkfgR; e viuk एक विशिष्ट स्थान रखती है। इस idkj d dk0;k e ,e- ih- lEirdekj vkpk; dk 'काफीपानीयम्' तथा श्रीरंगम वैंकटेश्वर ने 'काफीशतकम्' लघु काव्य लिखे। वासुदेव आत्माराम लाटकर ने 'अर्धखरार्भक' काव्य की रचना की। इसी प्रकार शैलताताचार्य कृत 'कपीनामुपवासः', वागीश शास्त्री कृत 'नर्मसप्तशती', प्रशस्यमित्र शास्त्री कृत 'हासविलासः', वनेश्वर पाठक कृत 'हीरोकाव्यम्', शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी कृत 'हाहा–हूहू शतकम्' आदि।

वैदेशिक–यात्रावृत्त–विषयक काव्य – संस्कृत कवियों की विदेश यात्राओं पर आधारित काव्यों को bl J.kh e j[kk tkrk gA bl idkj d dk0;k e lR;व्रत शास्त्री कृत 'शर्मण्यदेशः सुतरां विभाति' तथा 'थाईदेशविलासम्', राजेन्द्र मिश्र कृत 'बालीप्रत्यभिज्ञानशतकम्' डॉ॰ रमाकान्त शुक्ल कृत 'भाति मौरीशसम्'। विमान यात्रा पर प्रभाकर नारायण कवठेकर कृत 'भूलोकविलोकनम्', राधावल्लभ त्रिपाठी कृत 'धरित्री–दर्शनम्' तथा राजेन्द्र मिश्र कृत 'विमान–यात्राशतकम्' आदि हैं।

vUrjk"Vh; pruk&ijd dk0; & bl ;x d lLdr dfo jk"Vh; pruk d lkFk&lkFk vUrjk"Vh; fopkjk l Hkh iHkkfor g, vkj mu ij dk0; d :i e viuh y[kuh pykbA bl

idkj d dk0;k e djyoe ofy; dkbrEcjkन कृत 'विक्टोरियाचरितम्', अप्पाशास्त्री– राशिवडेकर कृत 'उद्वाहमहोत्सवम्' तथा राधा कृष्ण गोस्वामी कृत 'वैवाहिकवर्णनम्', शिवराम पाण्डेय कृत ^,MoMjkT;kfHk"kdnjckje* rFkk ^tktkfHk"kdnjckje*] d- l- अय्यास्वामी शास्त्री अय्यर कृत 'जार्जवंशम्', म-d- dkp ujfIgkpk; dr ^tktegkjktfot;k*] th- oh- inHkukHkkpk; dr 'जार्जचरितम्', केवलानन्द शर्मा कृत 'लेनिनकुसुमांजलिः', पदम्शास्त्री कृत 'लेनिनामृतम्', शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी कृत 'कार्लमार्क्सशतकम्', रघुनाथप्रसाद चतुर्वेदी कृत 'मेक्सिमगोर्कीपंचशती' आदि। डॉ- g"kno ek/ko की 'जापानदेशे', मिस्त्रदेशे आदि कविताएँ इसी श्रेणी की हैं।

NUnkUeqDr fucU/k dk0; & ikjEifjd NUn&fo/kku d cU/kuk l eDr dk0;k dk bl J.kh e j[kk tkrk gA bl idkj d dk0; vk/kfud ;xck/k ij vk/kkfjr g vkj ekuo d ekufld }U}k] ihMkvk vkj Hkkok dk 0;Dr djrh gA bl idkj d dk0;k e d".kyky dr ^mohLou*] 'शिंजारवः' एवं 'शशिकरनिकरः', देवदत्त भट्टि कृत 'इरा' और 'सिनीवाली', केशवचन्द्रदास कृत 'महातीर्थम्', 'भिन्नपुलिन्', 'अलका', 'ईशा' आदि, डॉ- g"kno ek/ko dr ^jF;kl tEco.kk"kk शिराणाम्', इन्द्रमोहनसिंह कृत 'हिरण्यरश्मिः' तथा व्योमशेखर कृत 'अग्निजा' आदि।

cky&dk0; & lLdr lkfgR; e cky lkfgR; vi{kkdr de ikIr gkrk g] fdUr oreku le; e lLdr dfo;k u cky lkfgR; dh jpuk djuk ikjHk dh gA bu y?kdk0;k e okIno द्विवेदीशास्त्री के 'बालकवितावलिः', 'दीपमालिका' आदि काव्य, श्रीधर भास्कर वर्णेकर कृत 'वात्सल्यरसायनम्' रामकिशोर मिश्र कृत 'बालचरितम्', गणेश गंगाराम पेंढारकर कृत 'शिशुलीलालाघवम्' आदि प्रमुख हैं।

शतक काव्य – किसी विषय पर सौ श्लोकों को लिखना शतक काव; dgykrk gA lLdr lkfgR; में यह परम्परा प्राचीन समय से आ रही है। शतक काव्य प्रायः देवस्तुति, लोकनीति तथा राष्ट्रभक्ति विषयों से संबंधित होते हैं। प्रमुख शतक काव्यों में गुमानी कवि कृत 'उपदेशशतकम्', महादेवशास्त्री

कवितार्किकचक्रवर्ती कृत ‘भारतशतकम्’, ति· X· वरदाचार्य कृत ‘कृष्णशतकम्’, ‘भास्करशतकम्’ तथा ‘कालहस्तीश्वरशतकम्’ प्रीतमलाल नृसिंहलाल कच्छी कृत ‘शक्तिशतकम्’, विठलदेवमुनिसुन्दर शर्मा कृत ‘वीरांजनेयशतकम्’, ‘श्रीनिवासशतकम्’, ‘शम्भुशतकम्’, ‘देवीशतकम्’, ‘छायापतिशतकम्’, गदाधर दाश कृत ‘मेघशतकम्’, रामकृष्ण कवि कृत ‘सारशतकम्’, विद्याधरशास्त्री कृत ‘अनुभवशतकम्’, पद्मशास्त्रीकृत ‘सिनेमाशतकम्’ हरेकृष्ण शतपथी कृत ‘कविशतकम्’, श्रीधर भास्कर वर्णेकृत ‘स्वातन्त्र्यवीरशतकम्’, कैलाशनाथ द्विवेदी कृत ‘गुरुमाहात्म्यशतकम्’ पी· jkepUnM dr ‘कुमतिशतकम्’, नलिनी शुक्ला कृत ‘वाणीशतकम्’, केवलानन्द शर्मा कृत ‘यतीन्द्रशतकम्’, श्रीकृष्ण सेमवाल कृत ‘सर्वमङ्लाशतकम्’ एवं ‘इन्दिराकीर्तिशतकम्’ कृष्णभाऊ शास्त्री धुले कृत ‘विज्ञानशतकम्’, रामकरण शर्मा कृत ‘पाथेयशतकम्’, रामकृष्ण शास्त्री कृत ‘इन्दिराशतकम्’ तथा रामाशीष पाण्डेय कृत ^bfUnjkशतकम् प्रहेलिकाशतकम्’ आदि।

ygjh dkO; & लहरी काव्य मूल रूप से विषय पर आधृत न होकर रचना वैशिष्ट्य पर आवृत्त होते हैं। अनेक कवियों ने अपने लघुकाव्यों के नाम तत्तत् विषयों के साथ ‘लहरी’ शब्द जोड़कर रखे हैं। bl idkj d dkO;k e jk"Vh; Hkkouk] pरितप्रशस्ति, भक्ति, प्रेम, युगचेतना आदि विषयों पर रचना gb gA bu jpukvk e if.Mrk {kek jko dr ^ehjkygjh*] e?kkor dr ^n;kuUnygjh*] प्रकाशशास्त्री कृत ‘भावलहरी’, काशीनाथ रघुनाथ वैशम्पायन कृत ‘जवाहरगंगालहरी’, गोपीनाथ द्राविड़ कृत ‘काशीलहरी’, एन· कुमारन आशान–कृत ‘सीताविचारलहरी’, के· HkkLdj fiYyb dr ^ieygjh*] विद्याधर शास्त्री कृत ‘वैचित्र्यलहरी’, ‘मत्तलहरी’, ‘लीलालहरी’, श्रीधर भास्कर वर्णेकर कृत ‘मातृभूलहरी’, राधावल्लभ त्रिपाठी कृत ‘लहरीदशकम्’, मधुकरशास्त्री कृत ‘मारुतिलहरी’ एवं ^ekrygjh*] Jh Hkk";म् विजयसारथि कृत ‘विषादलहरी’ तथा जगदीशचन्द्र आचार्य कृत ‘संगीतलहरी’ vkfnA

fp=dkO; & fp=dkO; dh ijEijk ikphudky l pyh vk jgh g rFkk oreku dfo;k u Hkh bl परम्परा का त्याग नहीं किया है। इस प्रकार की रचनाओं का उद्देश्य मानसिक व्यायाम एवं eukjtu gkrk है। भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने अपने 'साहित्यवैभव' एवं 'जयपुरवैभव' काव्यों में आकारचित्र शैली को पर्याप्त स्थान दिया है तथा 'चित्रचत्वर' नामक एक पृथक सर्ग भी लिखा है। bld vfrfjDr dfopØorh nohilkn dr ^fp=kigkj&dkO;*] nkeknj feJ dr ^fp=cU/k&dkO;*] oh-jkepUnu dr ^jkepfjr&fp=dkO;*] ^jke:i ikBd dr ^fp=dkO;dkrd*] JhthoU;k;rhFk dr 'सारस्वतशतकम्', नित्यानन्द शास्त्री कृत 'हनुमद्दूतम्', रामावतार शर्मा कृत 'चित्रबन्धावतारिका', #nno f=ikBh dr ^fp=ky³dkj&pfUndk*] e/knlu rdokpLifr dr ^guer सन्देशम्', पं- मूलचन्द्र शास्त्री कृत 'वचनदूतम्' आदि हैं।

uhfr&lfä&ijd dkO; & ikphu lLdr dkO;k dh rjg vokphu lLdr dkO;k e Hkh uhfr;k ,o lfä;k dk lfEefyr dj dkO; jpuk dh xbl gA thou d fofo/k 0;ogkjk] jhfr;k] uhfr;k dk fo"k; cukdj rFkk fofo/k lfä;k dk xghr dj dfo;k u eDrd dkO;k dk i.k;u fd;k है। इस प्रकार के काव्यों में गिरिधर शर्मा कृत 'नवरत्न–कृत', 'नवरत्ननीतिरचनावलि' एवं 'अमरसुक्तिसुधाकर', नित्यानन्दशास्त्री कृत 'आर्यामुक्तावली' तथा अमृतवाग्भवाचार्य कृत 'अमृतसूक्तिपंचाशिका' vkfn gA

idh.kl dkO; & प्रकीर्ण काव्यों में एक से अधिक विषयों का समावेश होता है। यह काव्य विविध fo"k;k d fefJr :i gA fofo/k fefJr fo"k;k ij jfpr dkO;k dk ge idh.k y?kdkO; dgr gA इस प्रकार के काव्यों में हरिपददत्त कृत 'कवितावली', विश्वेश्वj fo|kHk"k.k dr ^dkO;&dlektfy*] चिन्तामणि द्वारकानाथ देशमुख कृत 'संस्कृत–काव्यमालिका', श्रीकान्त त्रिपाठी कृत 'श्रीकान्त–कविताकलापः', रामनाथ आचार्य कृत 'पद्यमालिका', भट्ट मथुरानाथ शास्त्री कृत

^i|eDrkofy*] ;rhUnukFk HkVVkpk; dr ^dkdyh* rFkk vuUr fo".k dk.k dr ^dk0;lfjr* ie[k gA

vufnr dk0; & वैदेशिक भाषाओं के काव्यों को संस्कृत में अनुवाद करने की प्रवृत्ति इस युग में c<h gA ,l vufnr dk0;k dk lLdr y?kdk0;k dh J.kh e gh j[kk tkrk gA bl idkj d dk0;k e mej [k¸;ke dh :ckb;k dk i- गिरिधर शर्मा द्वारा 'अमरसूक्ति– सुधाकर' नाम से किया x;k vuokn] Jh lcã.; v¸;j }kjk ^i|i"iktfy* uke l fd;k x;k vxth dforkvk dk lLdrkuokn] ejkBh dfo ekjkir dh dforkvk dk Mh- Vh- ldfjdj }kjk ^xhok.kddkoyh* uke l fd;k x;k vuokn] Vxkj dh cxyk dforkvk dk QfVdyky nkl dr i|kuokn] rfey dfo vk0ob dh dforkvk dk okb- महालिंगम शास्त्री द्वारा 'द्रविडार्यसुभाषितसप्तति' नाम से किया गया अनुवाद, तेलुगु भाषा के तेलगुशतक, सुमतिशतक, वेमनशतक, दाशरथिशतक, कृष्णशतक, भास्करशतकों क fpfÙkxn# ojnkpkfj;j dr vuokn] Jh vjfoUn dh dforkvk dk Vh- oh- कपालि शास्त्री द्वारा 'कविताजंलि' नाम से किया गया अनुवाद, रघुनाथ चौधरी के असमिया भाषा में fyf[kr dk0; dk ^drdh&dk0;e* uke l i- मनोरंजन शास्त्री द्वारा किया गया अनुवाद, हिन्दी Hkk"kk d कवि बिहारी की सतसई का प्रेम नारायण द्विवेदी कृत 'सौन्दर्यसप्तशती' नामक अनुवाद, vxth dfo;k dh dfork dk xkfoUnpUn ik.M; }kjk ^vLrkpyh;e* uke l fd;k x;k vuokn ie[k gA

¼3½ xhfrdk0; &[21]

lLdr e xhry[ku dh ijEijk cgr ikphu gA on dh vud _pkvk e ofnd _f"k;k d vkRefoHkkj ân; dk Linu vkj xhrkRedrk dk lgt vuHko gkrk gA vkx pydj e?knr e xhrkRedrk dk vuHko gkrk g] gkykfd ml ikphu vkpk;k u ^[k.Mdk0;* fo/kk d vUrxr j[kk g fQj Hkh mld vud eDrd jpukvk dk xhfrdk0; dh fo/kk d vUrxr j[ku dh iofÙk

मूलतः पाश्चात्य इतिहासकारों के प्रभाव से चल पड़ी। भर्तृहरि के शतकत्रय, स्तोत्रकाव्य जैसे सूर्यशतक, महिम्नःस्तोत्र आदि और अमरुकशतक तथा बिल्हण की चौर–पञ्चाशिका भी मुक्तक काव्य gku l xhfrdk0; dh fo/kk d vUrxr eku x; । गाथासप्तशती के प्रभाव पर लिखित आचार्य गोवर्धन की आर्यासप्तशती को भी गीतिकाव्य कहा गया।

ek= Lrk= jpuk gku d dkj.k ;k eDrd dk0; gku d dkj.k dkb Hkh jpuk xhfrdk0; d vUrxr ugh vk ldrhA fdlh jpukdkj }kjk idfr dh jE;rk dk n[kdj vFkok fi ;kfojg] ईश्वर–प्रेम, राष्ट्र–प्रेम आदि की स्थिति में सहज भाषा में स्वानुभूति की अभिव्यक्ति के क्षण ही xhfrdk0; dk l tu gkrk gA lHkh Lrk= dk0;k rFkk eDrddk0;k dk xhfrdk0; ugh ekuk tk ldrkA

गीतिकाव्य के क्षेत्र में शोकगीत, अवगीति या व्यंग्यप्रधान पद्यरचनk rFkk jk"VHkkouk l ;Dr xhfrdk0;k dk fuek.k uohu iofÙk;k dk ifjpk;d gA mUuhloh lnh d lLdr dk0; jpukvk में अनेक शोकगीतकाव्य भी हैं यथा करुणात्रिंशिका, विलापलहरी, शोकोच्छ्वासः, अश्रुविसर्जनम् आदि।

उन्नीसवीं शताब्दी में संस्कृत में गीतिकाव्य dN fHkUu idkj d fy[k tku yxA igy rk उनमें प्रशस्तिपरकता लक्षित होती है, बाद में राष्ट्रीय चेतना का उभार अनुभूत होता है। बंकिमचन्द्र का राष्ट्रीय गीत की प्रतिष्ठा पाने वाला ''वन्देमातरम्'' गीत संस्कृत में रचित हुआ। क्रमशः देश में tl tl jk"Vh; pruk tkxrh x;h ol&ol mud dkj.k jk"Vie i/kku xhr Hkh fy[k tku yxA lkFk gh lkekftd djhfr;k vkj fo"kerkvk dk ydj ^fo/kokJek tue* vkfn xhr fy[k x;A e?knr d iHkko l ,d vkj xhr fy[k x; rk nljh vkj Lrk=dk0; Hkh jfpr g,A ^xhrxkfoUn' की रागकाव्य–परम्परा में भी विश्वनाथ सिंह के 'सङ्गीतरघुनन्दन' जैसे रागकाव्य रचित g,A vUunkpj.k rdjRu u ^^rnrhreo* tlh vrhr d xkjo dk xku djr g, nh?k dfork लिखी। भारतेन्दु युग के एक गीतिकाव्यकार कमलेश मिश्र ने 'कमलेशविलासः' की रचना की, जिसमें

vud ^lkgj* vkfn ykdxhrk d <x ij lLdr e xhr fy[k vkj lkFk gh xtyk dk Hkh fuek.k fd;kA

बीसवीं शताब्दी में गीतिकाव्यों की सृष्टि व्यापक और मार्मिक स्तर पर हुई। इसमें आरम्भ में if.Mrk {kekjko] i- रामावतार शर्मा, भट्ट मथुरानाथ शास्त्री और जानकीवल्लभ शास्त्री जैसे कवि mYy[kuh; gA ckn e xhfrdk0; d y[ku e ioÙk jpukdkjk dh ,d yEch lph gk tkrh g] ftle jkeukFk ikBd] ^i.k;h*] okjk.klh dh ^dfo Hkkjrh* d vud ifrf"Br dfo] e/kdjxkfoUn ekb.kdj vkfn vkr gA

lLdr i=&if=dkvk d iकाशन से इस विधा को अधिक प्रश्रय मिला। इसमें सन्देह नहीं कि गीतिकाव्य की प्रवृत्ति को नया रंग देने में पाश्चात्य साहित्य का और साथ ही बंगला के johUnukFk dk] e[; :i l mudh xhrktfy dk lLdr d vk/kfud xhfrdkj dfo;k ij cgr iHkko jgkA

iu#RFkkuoknh Loj & वर्तमान की विसंगतियों, पाश्चात्य सभ्यता के दुष्प्रभाव तथा विदेशी शासकों द्वारा प्रचारित इस देश की संस्कृति के विरूद्ध भ्रामक दुष्प्रचार के कारण अनेक संस्कृत कवियों ने अतीत का गौरवगान किया है। श्रीनिवास दीक्षित अपने 'कलिपरिदेवनशतकम्' में कहते हैं –

^^ekr% Jr **स्विदिह जीवसि धर्मशास्त्र**

Hkkr% Do i;Vfl fe= bgfrgklA

fd Dokfi xkjoeif"k xjk ijk.k

oinkUr gk tud dk u xfrLrokl hr \AA**[22]

O;fDrokn rFkk vkRekfHkO;fDr & ikphu lLdr dkO; dh ryuk e vokphu lLdr dkO; e dfo dh o;fDrd Hkkoukvk dh vfHkO;fDr ;k oLrfu"B icU/kkRedrk d LFkku ij fo"k;fu"B रागात्मकता का उदय देखा जा सकता है। अन्नदाचरण की 'क्व गच्छामि' तथा अप्पाशास्त्री की

'तिलकमहाशयस्य कारागृहवासः' जैसी कविताएँ इसका उदाहरण हैं, जिनमें कवि नितान्त निजी vuHko l lkj dk [kkyrk gA lkekftd foMEcukvk d dkj.k fopfyr dfo ^Do xPNkfe* e अपनी आन्तरिक व्यथा को विशद् अभिव्यक्ति देता है –

''दशन्ति तिग्मं हृदयं विवेकं

सर्पा दशन्त्यत्र सुदीर्घकालम्।

0;Fkkdyk Hk"kte= u{k

हरे क्व गच्छामि बत क्व शान्तिः।।''

उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी के lLdr xhfrdk0;dkjk u viu le; d lekt vkj उसकी प्रवृत्तियों, दुष्प्रवृत्तियों पर अपनी काव्यात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की है। नवीन शिक्षा पद्धति, पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से समाज में होने वाली दुष्प्रवृत्तियों पर इस काल के कवियों ने अपना विशेष विरोध प्रकट किया है। भारतीय नागरिकों के आचार, विचार, वेश–भूषा और दिनचर्या में आये परिवर्तनों को परिलक्षित करते हुए 'कलिपरिदेवनशतकम्' में कवि श्रीनिवास शास्त्री कहते हैं –

^^l;kn; DofFkrchtd"kk;iku

/kkr p lkofnddpdedokl%A

शौचं च सान्ध्यमपिनो शिवकर्म r"kk

EyPN% lgkVueFkkfu;ek p tfX/k%AA**[23]

vFkkr mudk l; d mfnr gku ij ^dkQh* ¼[kky cht½ d dly jl dk iku] lno लुंगी और धोती धारण, सन्ध्याकालीन भी शौच का आचरण न करना, मलिन जनों के साथ भ्रमण vkj Hkktu ;g fnup;k gA

lekt e सब ओर व्याप्त अशान्ति और अव्यवस्था को लेकर खिन्न होकर ‘क्व गच्छामि’ dfork e vUunkpj.k dgr g &

> ^^dke% i;eknk cyoku~ i;ekn%
>
> शेषाभिमानो विषमा च हिंसा।
>
> ØkefUr fd uk lrr leUrkn&
>
> धरे क्व गच्छामि बत क्व शान्तिः।।’’

vFkkr dketUe iekn cyoku iekn g] vfHkeku rFkk fo"ke fglk ;g lc vkj fujUrj फैल रहे हैं, हे भगवान् कहाँ जाऊँ, कहाँ शान्ति है \

शास्त्रकाव्य –

उन्नीसवीं सदी के संस्कृत काव्य में शास्त्रज्ञान, पाण्डित्य तथा चिन्तन के स्वर भी प्रमुखता से mHkjr gA i- गंगाधर शास्त्री का काव्य ‘अfyfolkfllyki%* bl nf"V l mYy[kuh; dk0; gA i- शिवकुमार शास्त्री के ‘यतीन्द्रजीवनचरितम्’ काव्य में भी शास्त्रचर्चा और विचारविमर्श के प्रसंग बहुसंख्य हैं। वैतिक उपदेश की दृष्टि से श्री धीरेश्वर की ‘विद्यामंजरी’ इस काल की प्रमुख रचना है।

^vfyfoykflllyki%* uked [k.Mdk0; i- गंगाधर शास्त्री की काव्यप्रतिभा का उत्कृष्ट स्वरूप g &

> ^^ikKfjn ifr i/ofu lko/kku%&
>
> jUo{;ek.ke ldUuo[k.Mdk0;eA
>
> /kekFkdkeijefDrleh{k.k"k
>
> nk{; Qfy";fr lHkkl lnknjkgeAA**[24]

इस काव्य में भारत के तीर्थस्थलों तथा द्वादश दर्शना (षड्दर्शन, जैन, बौद्ध, तथा चार्वाक) का विशद् वर्णन किया गया है।

लक्ष्मणसूरि प्रसन्न, मधुर और उदार शैली के कवि हैं। विप्रसन्देश में सन्देहालंकारसमन्वित lUn; o.ku dh iLrfr &

^^fd {khjkC/kjfrifjp;kn n"VeH;kxrkfe&

श्चन्द्रज्योत्स्ना किमु परिचरत्यkReuk·{k;;rk;A

fd ok x³xk iogfr iu% fd u ok e/kt kuk

pMkeDrk fRofMfr cg/kk rD;r ;Uu[kJh%AA**[25]

vFkkr ftud u[k dh dkfUr bl idkj cgr idkj l rd dk fo"k; gkrh g& {khjlkxj की ऊर्मि अतिपरिचियवश देखने के लिए पहुँची है क्या\ vFkok pUn dh T;kRLuk viu v{k; gku d fy, lok dj jgh g D;k\ vFkok x³xk iu%iokfgr gk jgh g D;k\ vFkok mud ckyk dh pMkef.k dh dkfUr g D;k \

egkohjijlkn f}onh }kjk jfpr ^dkO;dCtyhykere* lkekftd pruk ,o 0;X; dh J"B jpuk gA dfo u dkU;dCt ब्राह्मणों की लोलुपता, पाखण्ड, अन्धविश्वासवृत्ति पर कड़ा प्रहार किया gA dkU;dCtk dh ngt dh fylIk rFkk ?kj e vk;h cg dk lrku dh n"iofRr ij dfo dgr g &

^^vgk n;kyRoer% ij fd ;Fkfgr rn nfo.k xghRokA

fuU|kufi Ro foey djkf"k rnh;dU;kifjihMuuAA**

jkeukFk dh ^foykiygjh* e ekrân; dh ihMk dk d#.k o.ku gvk gA i= fdruk gh दुष्ट निकल जाए पर माता को तो उसके न रहने पर शोक होता ही है –

^^gUrk u dkyk] u efrrul pkg
I|rk grLr fu t de.koAA**[26]

mUuhlohZ lnh d ie[k dfo;k में लल्ला दीक्षित, श्रीधरन नम्बी, विश्वनाथसिंह, सदाशिव, तारानाथ तर्कवाचस्पति, बाबू रेवाराम, स्वातितिरुनाल रामवर्म कुलशेखर, सीतारामभट्ट पर्वणीकर, रघुराजसिंह, गोमतीदास रामस्वामीशास्त्री, सदाशिव शास्त्री, रामवारियर, वीरराघव, उमापति त्रिपाठी, xkihukFk nk/khp] Jhd्ष्णराम भट्ट, हरिवल्लभ भट्ट, महेशचन्द्र तर्कचूड़ामणि, प्रमथनाथ, कमलेश मिश्र, केरलवर्मा, मानविक्रम एट्टनतम्पूरन् कविराजकुमार, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, गंगाधर शास्त्री, रामशास्त्री तेलंग, नारायण भट्ट, परमेश्वर झा, शिवकुमार शास्त्री, यादवेश्वर तर्करत्न, विधुशेखर HkVVkpk;] y{eh jkKh] JhfuokI nhf{kr] y{e.kIfj] ,- vkj- jktoek] egkohjiIkn f}onh] सरोजमोहिनी देवी, अन्नदाचरण, रामवतार शर्मा, अप्पाशास्त्री राशिवडेकर एवं रामनाथ हैं।

chIoh Inh d iok) e ILdr dk0;jpuk fujUrj xfreku jgh] fdUr bu jpukvk dk 0;kid ipार एवं विवेचन न मिल पाया। स्वातंत्र्योत्तरकाल के तीसरे दशक से इस स्थिति में ifjoru vk;k] tc Mk- jk?kou vkfn fo}kuk u u; vkj ledkyhu ILdr dk0; ij leh{kk,] शोधलेख प्रकाशित कराना आरंभ किया। इस शती में सर्वाधिक संस्कृत काव्य की रचना हुई। इस शती e ,d vkj ILdr dfo;k dk ikphu dk0; dk ILdkj] jIkRed ck/k vkj Hkk"kk d परिनिष्ठित रूप तथा शब्द की साधुता का अवधान जागृत है, तो दूसरी ओर प्रजातन्त्र की नयी व्यवस्था, बदलते राजनीतिक, सामाजिक पर्यावरण और विश्व की घटनाओं ने उन्हें प्रभावित और fopfyr Hkh fd;k gA

श्री उमाशंकर कृत 'काव्यकलिका' में पं- ug# th d oDr0; dk idV djr g, dfo dgrk g &

''देशेऽत एव शान्त्यै ग्रहणीया सहयोगभावना।

tugkfufujk?kgro·oufl)kUrfee pfj";FkAA**

अर्थात् अतएव देश में शान्ति के लिए सहयोग की भावना को iJ; nuk pkfg,] turk dk gkfu u gk blfy, j{k.k d bl fl)kr dk ikyu djA

भट्ट मथुरानाथ शास्त्री के काव्य में वैयक्तिक अनुभूतियों, करुणा और भक्तिभाव का lfEefyu gvk gA viu vki dk lckf/kr djr g, o dgr g &

^^vf; fpRr fpj.k fofpUr;rk·fi p ppyrk u xrk] u xrkA

अपि नाम निरन्तरयत्नशतैस्तव निष्ठुरता न गता, न गता।।''

vFkkr g fpRr] fpjdky rd r fpUruijk;.k g] yfdu rjh ppyrk ugh xb] ugh xb vkj ldMk mik; fd; ij rjh fu"Bjrk ugh xb] ugh xbA

ukxktu yfuufo"k;d dk0; e viने महान् नेता के अवसान पर उसके सन्देश को भूल tku dh iofUk ij ekfed dVk{k djr g, dgr g &

''अपि कौशेयनिचिताः स्वर्णवर्णाङ्किता अपि।

lä;Lro lhnfUr n0;k[;kfo"kefPNrk%AA**

vFkkr flYd d oL= ij [kfpr lku tl o.kk l vfdr Hkh rEgkjh lfä;k n0;k[;k d fo"k lefPNr gkdj d"V lg jgh gA

gfjnRr ikyhoky ^fuHk;* Lor=rk vknkyu e lfØ; jg FkA bud ijorh dk0; e LokfHkeku vkj eufLork ;Fkkor g] ij vkthou Hkkx d"Vk d dkj.k dgh&dgh ihMk dk Loj Hkh e[kfjr gvk g &

^^fut/kel pn 0;Ø";eg] gE;kf.k rnk/;dfj";egeA

Ro LokFkfl); turk;k d# diVikVohnlycU/keAA**[27]

vFkkr ;fn eu viuk /ke cp fn;k gkrk rk cM egy cuok yrk vkj re LokFk dh flf) d fy, turk e ny&cnh djkA

जगन्नाथ पाठक ने 'कापिशायनो' में कवि ने मधुशाला के प्रतीक के द्वारा वैयक्तिक प्रेम की विश्वजनीन अनुभूति तथा चैतन्य और उसके सायुज्य को अभिव्यक्ति दी है –

^^p"kdk bg thou e;k ifjihrk vfi pf.krk vfiA
ene"k fcHkfe dloy {k.kihrL; e/kfLerL; rAA**

vFkkr thou e eu db p"kd fi; g] db rkM HkhA ij ,d {k.k e ih yh x;h rEgkjh e/kj eLdku dk en gh cl e fy; fQjrk gA

व्योमशेखर ने अपने गीत संग्रह 'अग्निजा' में शोषितजनों की हाय का अभिशाप भयंकर होता है, इस मंतव्य को गज़ल की शैली में प्रस्तुत किया है –

^^oयं श्वसिमः श्वसन्त्यपि ते, न सूयं नो पुनः श्वसिथ।
न जाने केन निःश्वसितं जगन्निर्दग्धमिदमास्ते।।''[28]

राजेन्द्र मिश्र की गज़लों में वेदना, अन्तर्द्वन्द्व तथा गहन वैयक्तिक अनुभूतियाँ भी हैं, और देश dh oreku fLFkfr;k ij rh[kk 0;X; Hkh fd;k g &

^^tk;r fu>jh gUr dy³d"kk
एथते साम्प्रतं भारते दुर्दशा।''[29]

अर्थात् नदी तट–बन्ध तोड़ रही है, भारत में दुर्दशा बढ़ रही है।

jk/kkoYyHk f=ikBh dh dforkvk e fo"k;oLr dh uohurk] vk/kfud lkekftd vkj jktuhfrd fLFkfr;k dh folxfr;k dk 0;X;i.k fp=.k vkj Hkkoio.krk d lkFk dYiuk dh

lEiUurk vkfn gA dfo ;jki ;k=k d le; foeku l fgekPNkfnr /kjrh dk n[kr g, dYiuk djrk g &

^^L;r L;r iujfi p ;PNh;r /kk;ek.k

xk= Dyr dFkefi rFkk·PNku ukyeoA

धृत्वा देहे हिममयमितं श्वेतकार्पासवस्त्रं

पृथ्वी शेते विकलकरणा निर्धना गेहिनीव।।''

vFkkr nfjn xfg.kh dh Hkkfr] 0;kdy bfUn;k okyh iFoh BM bl lQn lrh oL= dk शरीर पर धारण करके सो रही है, इसका वस्त्र बार–बार सीये जाने पर भी धारण करने पर गलता tk jgk gA vx ij ijk Hkh ugh iMrk vkj u gh vk<u dk dke djrk gA

egkjktnhu ik.M; u viu dk0;lxg ^ekuo/kh* e ldfyr dforkvk e ^ueL;kLr x#EeU;k e ; dgr g &

^^in yh<ok in ikIrk

opu lEin ikIrk

चाटुवचनैः पटूनामनुपदं ये सन्ततशरण्याः।''[30]

vFkkr tk ij dk pkV dj vkgnk ikIr dj pd g] opuk l lEifRr dk ikIr dj pd हैं और चाटुवचनों से पटुजनों के पग–पग पर निरन्तर शरणगत हैं।

बीसवीं सदी के प्रमुख संस्कृत कवियों में श्री अरविन्द, चिन्तामणि द्वारकानाथ देशमुख, के·,y· ch· शास्त्री, ब्रह्मानंद शुक्ल, श्री लक्ष्मीनारायण, केशिराजु वेंकट नृसिंह अप्पाराव, गणपतिशंकर शुक्ल, प्रीतमलाल नरसिंहलाल कच्छी, नारायणप्रसाद त्रिपाठी, मंगलदेव शास्त्री, शिवप्रसाद भारद्वाज, सुरेशचन्द्र त्रिपाठी, उमाशंकर, राजेन्द्र मिश्र, श्रीमती नलिनी शुक्ला, श्रीमती पुष्पा दीक्षित, लक्ष्मणशास्त्री ryx] fxfjधर शर्मा नवरत्न, श्रीधर पाठक, भट्ट मथुरानाथ शास्त्री, क्षमा राव, दत्त दिनेशचन्द्र,

महादेव शास्त्री, मेघाव्रत, महालिङ्ग शास्त्री, सूर्यनारायण शास्त्री, नागार्जुन, अमीरचन्द्र शास्त्री, स्वामीनाथ पाण्डेय, जानकीवल्लभ शास्त्री, बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते, रतिनाथ झा, रामनाथ पाठक ^प्रणयी', मधुकर गोविन्द माईणकर, परमेश्वर अय्यर, श्री भि· oy.kdj] cPpyky voLFkh] gfjnÙk पालीवाल 'निर्भय', मंजुनाथ भट्ट, रामकरण शर्मा, श्रीनिवास रथ, शंकरदेव अवतरे, जगन्नाथ पाठक, शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी, सुन्दरराज, व्योमशेखर, अमरनाथ पाण्डेय, रामकैलाश पाण्डेय, उमाकान्त शुक्ल, दीपक घोष, भास्कराचार्य त्रिपाठी, राजेन्द्र मिश्र, पुष्पा दीक्षित, हरिदत्त शर्मा, राधावल्लभ त्रिपाठी, विन्ध्येश्वरीप्रसाद, केशवचन्द्र दाश एवं महाराजदीन पाण्डेय आदि।

ukV; lkfgR; &

vk/kfud dky dk lLdr ukV; lkfgR;] ftle :id d Hkn ukVd] iglu vkfn dk0; :i lekfgr g] dk iHkr ek=k e fuek.k gvkA ble ,d vkj jkek;.k] egkHkkjr vkfn mitho; eguh; jpukvk l lEc) dFkkudk ij vk/kkfjr :id fy[k x; rk nljh vkj vudk y[kdk u Lor=rk lxke dk leFku vkj cy nu d fy, Hkkjr d fofHkUu egkiq#"kk] ohjk d pfjr dk आधार बनाया। अधिकतर ऐसी भी रचनायें प्रकाश में आयीं जिनमें पूर्व रचनाओं शाकुन्तल आदि का पिष्टपेषण सा हुआ। फिर भी अनेक रचना ऐसी प्रकाशित हुई, जिनमें इस क्षेत्र में एक नया ही प्रयोग yf{kr gvk] tl lUnjohj j?knog dk Hkktjktkd] ftle /kkjk d jktk Hkkt vkj etl l lEc) ?kVukvk dk vk/kkj cuk;k x;k gA ukVdh; dFkk&foU;kl dh nf"V l bl ,d lQy i;kx dgk tk ldrk gA i· vfEcdknkl 0;kl dk lkeore Hkh ,d lUnj jpuk gA jktoek dk irhd Nk;k शैली का नाटक 'गैवर्वाणीविजय' संस्कृत भाषा की दुःस्थिति के प्रकाशन के उद्देश्य से लिखी गयी एक अच्छी नाट्यकृति है। परशुराम नारायण पाटणकर का 'वीरधर्मदर्पण' कई दृष्टियों l ,d mÙke dkfV dh jpuk g] ftldh ryuk o.khlgkj ¼HkVVukjk;.kdr½ l dh tk ldrh gA bldk fgUnh vuokn ^t;njFko/k* uke l gvkA bl ikB; iLrd e fu/kkfjr fd;k x;kA bldh

प्रशंसा 'सरस्वती' में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने की थी। पंचानन तर्करत्न, जिन्होंने स्वातन्त्र्य lxke e Hkkx fy;k Fkk vkj vyhij cedk.M e 1907 e cUnh cuk; x; Fk] dk veje³xy ukVd ,d ,frgkfld ukV;dfr g] tk egkjk.kk irki d i= vejflg d thou dh ?kVukvk ij vk/kkfjr gA ;g Hkh ,d vkdyuh; ukV;jpuk gA

राष्ट्रीय जागरणकाल के मुख्य नाटककार हैं – हरिदास सिद्धान्तवागीश, मूलशङ्कर ekf.kdyky] eFkjkilkn nhf{kr] Jh tho U;k;rhFk rFkk odVjke jk?koA eFkjkilkn nhf{kr dh एक रचना 'भारतविजय' को अंग्रेज शासन में जब्त कर लिया गया था। डॉ॰ जयशंकर प्रसाद ने स्व॰ ब्रह्मदेव शास्त्री की काव्य नाटिकाओं, वेला और सावित्री की विशेष प्रशंसा की है। हालाँकि उनमें Hkk"kktU; =fV;k dk vkf/kD; gA

dky&foHkktu d vk/kkj ij vk/kfud dky d lLdr ukVddkj fuEukulkj g&

1800&1870 b- rd dk dky &

bl dky d lHkh ukVddkj ik;% nf{k.k Hkkjr d g vkj mUgku vrhr dh ikjkf.kd xkFkkvk ij ukVdk dh jpuk dh gA bl dky d ukVddkjk e dLrfj jxukFk] ohj jk?ko] oYyh lgk; vkj lUnjohj j?knog gA

lUnjohj j?knog dh dfr ^jEHkkjko.kh;* dh dFkk ikjkf.kd g] ftle jko.k u uydcj dh iRuh i;lh jEHkk d lkFk cykr lHkkx fd;k FkkA ^Hkktjkt* ukVd e jktif#"kk d dgu ij Hkkt dk i= e t d gkFk e fn;k] ;g i= lLdr lkfgR; e cgr ifl) g &

^^ekU/kkrk l eghifr% d r;xky dkjHkrk xr%

सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः।

vU;s pkfi ;f/kf"Bji Hkr;k ;krk fno Hkir

udukfi le xrk olerh e t Ro;k ;kL;frAA**

कृतयुग के महान् पुण्यशाली राजा मान्धाता की भी मृत्यु हुई है, वे अमर नहीं रहे, पृथ्वी को NkMdj fn0; ykd py x;] Hkxoku jke ftUgksu lsrq ckWa/kk Fkk] vkSj jko.k dk ekjk o Hkh iFoh dk ;gh NkMdj nlj ykd x;] jktk ek/kkrk ! ;f/kf"Bj vkfn nlj ifl) jktk Hkh vej ugh jg] eR; dk ikl g,A o ftl /kjrh d jktk Fk] og /kjrh ;gh jg x;h vkj o noyksd py x;] fdlh ,d d Hkh lkFk ;g /kjrh ugh x;h] ij ,lk yxrk g fd e tc re eR; d वशीभूत होकर दूसरे लोक में जाने को लगोगे तब ;g /kjrh dk jkT; Hkh rEgkj lkFk pyk tk,xk] blfy, re ejh gR;k dj jg gksA

1870 ls 1920 bl- rd dk dky &

इस काल के प्रमुख नाटककारों में पंडित अंबिकादत्त व्यास, सुन्दरराज, नारायण शास्त्री, रामराज वर्मा, परशुराम नारायण पाटणकर, पंचानन तर्करत्न एवं श्री श्रीनिवास 'kkL=h gA

पंडित अंबिकादत्त व्यास द्वारा रचित 'सामवत नाटक' में व्यासजी ने नाटकीय शिल्प तथा lkfgR;d lk"Bo d lkFk viu ikf.MR; dk Hkh ifjp; fn;k gA ukVddkj 0;kl viuh bl dfr d Lo:i dk le> Hkh jg Fk] vr% mUgksu viuk fuonu izdV djr g, dgk &

^^{k.kepि चेत् पंक्तिमपि प्रीत्या कश्चित् पठिष्यति प्राज्ञः।

d`rdR;rk rnkls dyf;";fEcdknÙk%AA**

vFkkr dkbi fo}ku ;fn ,d {k.k Hkh ej bl ukVd dh ,d Hkh ifDr i<xk rk og vfEcdknÙk viu dk /kU; le>xkA

सुन्दरराज के नाटक 'स्नुषा–विजय' में दुराशा नामक सास का अपuh lPppfj= uked o/k d ifr ?kkj n0;ogkj rFkk viuh n"V i=h nyfyrk d fy, ?kkj vklfDr dk fp=.k fd;k x;k gA lkl viuh cgq d fo"k; e dgrh g &

^^rL;k% firk fofnr ,o i|jk·frn|"V%]

ekrk p n|e!frfjfr i!fFkrk ifFkO;keA

Hkkrk foVk·Fk Hkfxuh O;fHkpkfj.khfr

[;krk u ofRI [ky| rRd|yeHkd! RoeAA**

vFkkr mIdk firk ijkuk n"V g ;g [;kfr gA ekrk viuh n"V cf) d fy, ifI) gA Hkkb foV g] cgu O;fHkpkfj.kh gA ej ckyd ! D;k re viuh iRuh d ifjokj dk ;g ifjp; ugh tkur gk \

ukjk;.k शास्त्री के नाटक 'शर्मिष्ठा–विजय' में नाटककार की नूतन सूक्ति–कल्पनायें भी mIdh ifrHkk dk ifjp; nrh g] tI Ik;dky e I; d len d chp vLr gku dk dkj.k dfo dh nf"V e ok#.kh dk Iou g&

''भानुरपि वारुण्यास्सेवातः शिथिलपादसंचारः।

रक्तश्च गगनधिया पश्चिमपाथोनिधिंच प्रविशित ननु।।''

dfojkt j.kUnukFk xIr u 1911 b- में 'हरिश्चन्द्रचरित' नाटक की रचना की। हिन्दी में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इसी आख्यान को लेकर 'सत्यहरिश्चन्द्र' नाटक 1874 ई- e fy[kk FkkA

1920 I 1950 b- rd dk dky &

bI ;x e Lor=rk ikfIr d fy, gjIHko i;Ru IHkh d }kjk fd, x,A egkRek xk/kh dk urRo turk dk mnofyr djrk jgkA bI dky d ie[k ukVddkjk e gfjnkI सिद्धान्तवागीश, मूलशंकर माणिकलाल, मथुराप्रसाद दीक्षित, जीव न्यायतीर्थ, वेंकटराम राघवन् आदि gA

gfjnkl fl)kUrokxhश का नाटक 'शिवाजीचरित' दस अंकों का नाटक है। यह लम्बी कथा नाटक को महानाटक का रूप देती है। औरंगजेब से बात करने को शिवाजी दिल्ली जाते हैं तो उनके मित्र उन्हें इसके लिए रोकते हैं। इस पर शिवाजी कहते हैं –

''तेजस्विनं कौशलिनं महाधियं शूरं तथा को नु #.kf) gUr| okA

vkgU;ekuk·fXud.kk fg r:t lk io/kr: lpjr·U;oLr| okAA**

अर्थात् जो तेजस्वी है, कौशल से युक्त है, बुद्धिमान और वीर है, उसको कौन बन्दी बना ldrk g vFkok ekjrk gA vfXud.k ij ;fn vk?kkr fd;k tkrk g rk og viu r:t l vkj Hkh iTofyr gkrk g vFkok nljh oLr e fNVd dj mlI tyku yxrk gA

eFkjki lkn nhf{kr }kjk jfpr ^ohjirki* ukVd e fgUnRokfHkeku dh vfHkO;fDr g] ukVd d vkjHk e l=/kkj dh iLrkouk g &

''इदानीं भारतदेशे हीनदीनदशापत्रानां वीराणां शौर्य–साहस–सहिष्णुतागुणाuke m|kruk; परकाष्ठामापत्तिं भजमानानां पौर्वकाकालिक–क्षत्रियाणां शौर्यधैर्याभिनयेन भाविनवयुवकेषु rÙknx.klEiknuk;------------A**

अर्थात् इस समय भारत देश में हीनदीन दशा में पड़े वीरों के शौर्य, साहस, सहिष्णुता, गुणों dk mnnhlr dju d fy, foifत्ति में होने पर भी पूर्वकाल के क्षत्रियों में जो शौर्य धैर्य रहा है उसके vfHku; d }kjk Hkkoh ih<h d uo;odk e mu&mu x.kk dh tkxfr d fy,---------A

महालिंग शास्त्री का 'उभररूपक' नाटक में सीधे–सादे विचार और उक्तियाँ तात्कालिक lekt d lgt Hkkok dk ifjp; nr gA v/;kid ot ?kk"k dk er g &

''विदेश–वेश–भाषाढ्याः प्रभ्निगतयो नराः।

विप्रकर्ष शनैर्यान्ति स्वजनेभ्योऽपि नूतनाः।।''

अर्थात् विदेशी भाषा पढ़कर और विदेशी पोशाक में सजकर नये युवक प्रगतिशील होते हुए viu tuk l /khj&/khj nj gkr tkr gA

1950 l 1990 rd dk dky &

15 vxLr 1947 dk Hkkjr Lor= gvkA bl ;x e lLdr Hkk"kk d ipkj&i lkj] अन्वेषण–अनुसंधान तथा गहन अध्ययन के मार्ग खुले। संस्कृत विश्वविद्यालयों तथा केन्द्रीय संस्कृत fo|kihBk dh LFkkiuk gbA

bl ;x d ie[k नाटककारों में विश्वेश्वर, विष्णुपभट्टाचार्य, लीला राव, वीरेन्द्रकुमार HkVVkpk;] Jhjke oy.kdj] dk- j- वैशम्पायन, श्री सुब्बाराम, श्री विश्वनाथ केशव छत्रे, विश्वनाथ मिश्र, गजानन बालकृष्ण पलसुले, ब्रह्मदेव शास्त्री, श्री विष्णुदत्त त्रिपाठी, शिवसागर त्रिपाठी, वेलादेवी, joप्रसाद द्विवेदी, ओगेटि परीक्षित शर्मा, भवानीशंकर त्रिवेदी, वीणापाणिपाटनी, शिप्रसाद भारद्वाज, कपिलदेव द्विवेदी एवं हरिदत्त शर्मा प्रमुख हैं।

लीला राव कवयित्री क्षमा राव की पुत्री है। इनका नाट्य शिल्प अभिनव है। आधे से अधिक :id ,l g ftudh dFkkoLr yhyk jko th u viuh ekrk dh fy[kh dgkfu;k l yh gA

यतीन्द्र विमल चौधरी ने देशभक्ति की प्रेरणा से और महापुरुषों के उज्जवल चरित के प्रति J)k j[kdj lLdr ukV; lkfgR; dk le) dju d mRlkg e lkjh jpuk, dh gA

Jhjke oy.kdj u ,d ntu ukVdk dh jpuk, dh gA mudk ukVd ^jkuh nxkorh* e गोंडवाना की महारानी दुर्गावती का वीरचरित अंकित हुआ है, जिसने बादशाह अकबर से युद्ध किया FkkA

dk- j- वैशम्पायन ने 'देशस्वातन्त्र्य–समरकाले राष्ट्रधर्मः' नाटक में अस्पृश्यता, गोरक्षा, U;k;&fu"k/k] L=h LokrU«; vkfn fo"k;k ij ekfed ,o jkpd ilx iLrr fd; gA

bl idkj vk/kfud dky d lLdr ukVdk e ijEijk vkj dfrRo nkuk dk gh egRo fn;k x;k gA mUuhloh lnh d vkjHk l ydj chloh lnh d ikjHk rd ik;% ikphu नाट्यपद्धति का ही पिष्टपेषण होता रहा, पर बीसवीं शती e ukV;ijEijk dh i)fr e ifjoru gvk] mll ukUnh] iLrkouk vkj Hkjrokd; dh i)fr ik;% ylr gkrh xbA

x|dk0; &

lLdr e x|dk0; dh vud fo/kk;&dFkk] vk[;kf;dk vkfn ikphudky l ipfyr gA egkdfo ck.k HkVV dh jpukvk] g"kpfjr vkj dknEcjh dk संस्कृत की अलंकृत गद्यशैली का सर्वोत्कृष्ट प्रयोग माना गया और उनके आदर्श पर अनेक शताब्दियों तक संस्कृत में लेखन की प्रवृत्ति अभिलक्षित होती है। यहाँ तक कि आधुनिक काल में, जब पाश्चात्य प्रभाव के कारण संस्कृत में miU;kl] y?kdFkk vkfn fo/kkvk dk fodkl gvk] rc Hkh vud x|dkj viu dk mll eDr ugh dj ik;A

vk/kfuddky d lLdr x|dkjk u ,d loFkk uru lkekU; lLdrKk }kjk xká y[kui)fr dk fodkl dj fy;k g vkj viuh jpukvk dk dkYifud dFkkud :f<;k l eDr dj thou dh ;FkkFk Hkfe nu e dN lQyrk Hkh vftr dh gA vk/kfud lLdr e i| dh अपेक्षा गद्य का लेखन कम हो रहा है, फिर भी पत्रिकाओं के माध्यम से गद्य को अवश्य प्रश्रय मिला gA

igy rk lLdr e cxyk vkfn lkfgR;k d jpukdkjk l iHkkfor lLdr x|dkjk u vf/kd ek=k e mud miU;klk dk lLdr e vufnr fd;k] fQj ckn e ekfyd miU;kl Hkh jpA lLdr d iFke miU;kl i- अम्बिकादत्त व्यास रचित ‘शिवराजविजयः’ को बहुत प्रतिष्ठा मिली, हालाँकि उसे भी एक बंगला उपन्यास का कुछ अंश में अनुवाद ही प्रमाणित किया गया है, फिर भी

mle i- 0;kl dh jpukधर्मिता, जलचादर के दीप सी झिलमिलाती है। निश्चय ही गद्य लेखन में पं- 0;kl dk feyh ifr"Bk u lLdr e x|y[ku dk nj rd ifjr fd;k gA

lLdr e y?kdFkk lkfgR; dk Hkh vk/kfud dky e vif{kr fodkl gvk gA vud y?k कथाओं के संग्रह प्रकाश में आ चुd gA blh idkj vk/kfud lLdr lkfgR; e fucU/k fo/kk dk fodkl Hkh gvk g] ftle yfyr fucU/k Hkh fy[k x; g rFkk fy[k tk jg gA blh idkj जीवनचरित पर गद्य रचनाएँ भी प्रकाश में आयी हैं और यात्रावृत्तान्तों का भी अभ्युदय हुआ है। vk/kfud ;x e x| lkfgR; dh fofHkUu fo/kk, fuEu g &

miU;kl &

vk/kfud dky e lLdr d uoy[ku dk tk iutkxfr ;x vk;k mle miU;kl dh fo/kk e Hkh ;xkUrj vk;k rFkk tk vk/kfud miU;kl mUuhloh lnh d mÙkjk) e fy[k x; ;k chloh lnh d ikjHk e ilkfjr gए वे स्पष्टतः पाश्चात्य उपन्यास की उस विधा से प्रभावित थे, ftl Hkkjr e cxyk miU;kldkjk d ek/;e l fofHkUu Hkk"kkvk u viuk;k FkkA

इय युग के प्रमुख उपन्यासकारों में अम्बिकादत्त व्यास, मेधाव्रत शास्त्री, श्रीनिवास शास्त्री, रुद्रदत्त पाठक, दुर्गादत्त शास्त्री, श्रीनाथ हसूरकर, सत्यप्रकाश सिंह, श्याम विमल, श्रीकान्त आचार्य, कृष्णकुमार, हरिनारायण दीक्षित, रामशरण त्रिपाठी शास्त्री एवं जगदीशचन्द्र आचार्य हैं।

y?kdFkk &

आधुनिक युग में लघुकथा का विकास पाश्चात्य साहित्य, विशेषकर अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव dh nu ekuh tkrh g] fdUr ;g i.kr% lR; ugh gA dFkk fo/kk dh ijEijk lLdr lkfgR; e lgL=kfCn;k ijkuh gA on vkj ijk.k d mik[;ku Hkh dFkk, g vkj lf{klr gA ipr= dh कथाओं को कथा–साहित्य की जननी माना जा सकता है। हितोपदेश, भोजप्रबन्ध, वेतालपंचविंशति,

fI हासनबत्तीसी, सुआबहत्तरी तथा दशकुमारचरित आदि अनेक ऐसी कथाएँ हैं जिन पर किसी प्रकार का विदेशी प्रभाव नहीं है।

इस युग के लघुकथाकारों में अभिराज राजेन्द्र मिश्र, नलिनी शुक्ला, कलानाथ शास्त्री, दुर्गादत्त शास्त्री, वी- oy.kdj] Jh/kjHkkLdj o.kdj] e-e-dkyhiIाद शास्त्री, रामशरण शास्त्री, तिरुवेंकटाचार्य, गणेशराम शर्मा, डॉ- कृष्णलाल, कर्णवीरनागेश्वर राव, शिवदत्त शर्मा, सूर्यनारायण शास्त्री, भागीरथप्रसाद त्रिपाठी शास्त्री, नरसिंहाचार्य, डॉ- कमल अभ्यंकर, नारायण शास्त्री, प्रभुनाथ द्विवेदी, प्रशस्यमित्र शास्त्री, केशवचन्द्रदाश एवं द्वारकाप्रसाद शास्त्री प्रमुख हैं।

fucU/k &

ikphu ILdr IkfgR; e fucU/kk dk bfrgkI fo|eku g] ftIe x|c) fuc/k] विमर्शात्मक निबंध, प्रबन्ध निबन्ध तथा ललित निबन्ध आते हैं। इस विधा में लेखक के मौलिक एवं वैयक्तिक विचार उसकी मौलिक शैली में आते हैंA /khj&/khj bI fo/kk e ekfydrk ie[k gk xbZ और इसने विश्व की समस्त भाषाओं में अपनी लोकप्रियता प्राप्त की जो कि आज भी सजृनात्मक x|IkfgR; dh ,d ie[k fo/kk ekuh tkrh gA IkfgR; d {k= dh fo/kk ^yfyr fucU/k* gh g] ;g fo/kk Hkh IkfgfR;d i=&if=dkvk d ek/;e I Iokf/kd c<h gA

इस युग के प्रमुख निबन्धकारों में हृषीकेश भट्टाचार्य, पं- नृसिंहदेव शास्त्री, प्रो- jorhdkUr HkVVkpk;] Mk- मंगलदेव शास्त्री, पं- चारुदेवशास्त्री, डॉ- रामजी उपाध्याय, आचार्य केशवदेव शुक्ल, Mk- dfiyno f}onh] Mk- jked".k vkpk;] Mk- ikjIukFk f}onh] Mk- रमेशचन्द्र शुक्ल, श्री कर्णवीर नागेश्वर राव, पं- रघुनाथ शर्मा, डॉ- d".kno mik/;k;] i- नवलकिशोर कांकर, पं- बटुकानाथ शास्त्री, ujfIgkpk;] Mk- कृष्णकुमार अवस्थी, वासुदेवशास्त्री द्विवेदी, नृसिंहनाथ त्रिपाठी, डॉ- शिवबालक द्विवेदी, गणेशराम शर्मा, स्वामिनाथ आत्रेय, परमानन्द शास्त्री, विष्णुकांत शुक्ल, कलानाथ शास्त्री, एस-

ih- HkVVkpk;k] i- हरिहरसुरूप शर्मा, टी- गणपतिशास्त्री, बहादुरचन्द छाबड़ा, ए- jktxkiky pØorh ,o ukjk;.kpUn LefrrhFk vkfn gA

vkRedFkk &

lLdr e vkRedFkk, Hkh fy[kh xb g] fdUr mudh l[;k de gA vkRedFkk nk idkj dh gkrh g] ,d rk o fdlh egRoi.k 0;fDr d viu thou dk oRr Lo; vfHkfyf[kr djrh gk ,o nljh o tk ;FkkFkoRr dk fyfic) djrh gkA iFke idkj dh vkRedFkk e egkRek xk/kh }kjk लिखित जिसका अंग्रेजी शीर्षक 'माई एक्सपेरिमेंट्स विध ट्रुथ' था।

i=lkfgR; &

ikphu le; e Mkd 0;oLFkk ugh Fkh] fdUr i=k d vknku&inku dk bfrgkl cgr पुराना है। शकुन्तला के दुष्यन्त को पत्र लेखन की तरह अनेक पत्रों का हवाला तो काव्यादि में feyrk gh g, विद्वानों, राजाओं आदि द्वारा परस्पर संदेशों का आदान–प्रदान करने चले पत्रों तथा ipukek ;k fu.k; i= tl i=k dk Hkh mYy[k vkj vfLrRo iklr gkrk gA ,d y[kd }kjk viu fe=k ,o vU; fo}kuk dk fy, x, i=k dk Hkh lLdr lkfgR; e ,d fo/kk ekuk x;k gA

pEi dk0; &

^x|i|e; dk0; pEifjR;fHk/kh;r* vFkkr bl fo/kk e x| rFkk i| nkuk dk feyk&tyk i;kx gkrk gA

शास्त्र/दर्शन –

दर्शन और अन्य शास्त्रीय क्षेत्रों में आधुनिक काल में अनेक उत्कृष्ट ग्रंथकार हुए जिन्होंने एक vkj ijEijkxr fpUru dk ;k rk xfr inku dh ;k u;k ekM fn;kA Lokeh n;kuUn ljLorh] i- l/kkdj f}onh] e-e- e/kqlnu vk>k] i- /kenÙk >k] udPNnjke f}onh] Lokeh djik=h th

egkjkt] i- रामेश्वर झा आदि अपने–अपने क्षेत्र के महान चिन्तक थे, जिन्होंने आधुनिक संस्कृत lkfgR; d fodkl e eY;oku ;kxnku fn;kA

lnHk & iFke v/;k;

1- gtkjhilkn f}onh] gtkjhilkn f}onh xUFkkoyh] Hkkx 9] i- 359
2- मॉडर्न सोशल थॉट, ऐडिटर–विलियम वथवेट, पृ- 404
3- uokUe"k] jktLFkku lLdr vdkneh] t;ij] i- 118
4- ikBd Mk- txUukFk ¼l½ vk/kfud lLdr lkfgR; dk bfrgkl] i- 116
5- ikBd Mk- txUukFk ¼l½ vk/kfud lLdr lkfgR; dk bfrgkl] i- 32
6- ikBd Mk- txUukFk ¼l½ vk/kfud lLdr lkfgR; dk bfrgkl] i- 116
7- jke ik.Mhokn] jk?koh;e] 5@38
8- शर्मा अखिलानन्द, दयानन्द–दिग्विजय, 18/92
9- शर्मा उमापति, ikfjtkrgj.k] 10@12
10- मिश्र विन्ध्येश्वरीप्रसाद, कर्णार्जुनीय, 6/11
11- शुक्ल ब्रह्मानन्द, श्री नेहरुरितम्, 9/22
12- शास्त्री परमानन्द, चीरहरण, 13/37
13- पंत सुबोधचन्द्र, झांसीश्वरीचरित, 1/27
14- शुक्ल कालिकाप्रसाद, भास्करभावभानवः, 6/1
15- ik.M; gfjgj] meknokg] 2@21
16- शर्मा भवानीदत्त, सौमित्रिसुन्दरीचरित, 4/13
17- शर्मा स्वयंप्रकाश, श्रीभक्तसिंहचरित, 7/47
18- द्विवेदी श्यामवर्ण, विशालभारत, 114/15
19- मिश्र जगन्नाथ, भारतीशबरीमहाकाव्यम्, 1/71
20- ikBd Mk- txUukFk ¼l½ vk/kfud lLdr lkfgR; dk bfrgkl] i- 122
21- ikBd Mk- txUukFk ¼l½ vk/kfud lLdr lkfgR; dk bfrgkl] i- 237
22- nhf{kr Jhfuokl] lLdr pfUndk] 7@1
23- शास्त्री श्रीनिवास, संस्कृत चन्द्रिका, 7/1/1900
24- शास्त्री पं- xxk/kj] vfyfoykflly;ki%] 9@118
25- प्रसन्न लक्ष्मणसूरी, विप्रसन्देश, उत्तरभाग, 14
26- jkeukFk] foykiygjh] i- 81

27- ikyhoky gfjnRr] rjfx.kh] i- 51

28- व्योमशेखर, अग्निजा, पृ- 32

29- feJ jktUn] JfrEHkjk] i- 40

30- ik.M; egkjktnhu] ekuo/kh] i- 4

f}rh; v/;k;

Mk- g"kno ek/ko & 0;fDrRo ,o d`frRo

0;fDrRo &

^^u0; lonu% dk0;ojpkHkf³x lefUor%A
हर्षदो वागधिष्ठात्र्या हर्षदेवो न संशयः।।''

vk/kfud lLdr dfork e Mk- हर्षदेव माधव एक 'प्रयोगधर्मी', 'युगदृष्टा', 'नव्यशैली के प्रवर्तक', 'क्रांतिकारी', विश्व कविता के प्रवाहों को संस्कृत में प्रवाहित करने वाले सशक्त ^vxY;xx.;* ,o ,d ^efgek&ef.Mr* LFkku iku oky chloh lnh d ifrfuf/k ^foy{k.k* dfo gA

Mk- g"kno ek/ko dk thou&oÙk o ifjp; &

i[;kr vkpk;] e/kU; egkeuh"kh] vk/;kRejl dh lfjrk e viu dk fuefTtr dj nu oky rkfdd pØorh vkpk; g"kno ek/ko u bl olU/kjk ij vorh.k gkdj vudkud ifjfLFkfr;k l t>r g, lkjLor lk/kuk e lyXu jgr g, dk0; lfjrk e voxkgu dj lLdr txr dk mlh idkj vkdf"kr fd;k g] tl dkVk d chp f[kyrk gvk xykc ykxk dk vkdf"kr djrk g] tl iFoh rV ij cgu okyh lgL=k ufn;k d chp xxk dh /kkjk u tu&tu e viuk vuk[kk LFkku cuk fy;k g] mlh idkj ek/kothu ekuo thou d iokgk d chp viuk vf}rh; LFkku cuk;k gA

tUe &

एशियामध्य द्वीप पर अपने ज्ञान, कला और संस्कृति से सम्पन्न संपूर्ण विश्व को ज्ञान देने वाला भारत वर्ष नाम का देश है, जिसके पश्चिम में सौराष्ट्र नाम का क्षेत्र है जिसे आज गुजरात नाम l tkuk tkrk gA ^^lkjk"V Hkfe ifo= Hkfe] rikHkfe g] tk lr&egkRekvk dh vukfndky l fuokl LFkyh jgh g] ,lh ifo= lkjB Hkfe e vkpk; g"kno ek/ko dk tUe 20 vDVcj lu 1954 dk Hkkouxj ftyk d ,d NkV l xko ojrt e gvkA

शैशवकाल –

dfo tc pkj o"k d Fk rc mud firk Jh eul[kHkkb dk Loxokl gk x;k FkkA firk का सान्निध्य न होने से इनका शैशवकाल अत्यन्त कष्टप्रद व्यतीत हुआ, किन्तु आपने सभी कष्टों का /k;iod lkeuk djd lQyrk dk मार्ग प्रशस्त किया। माताजी ने प्राथमिक शाला में शिक्षिका के :i e lokdk; djr g, ekrk vkj firk th nkuk dh Hkfedk fuHkkbA

शिक्षा –

Jh g"kno ek/ko dk ikFkfed l ydj gk;j ld.Mjh rd dk v/;;u xko e gh gvkA vkfFkd ifjfLFkfr;k d dkj.k o vkगे पढ़ नहीं सके, किन्तु सौराष्ट्र विश्वविद्यालय में कला विभाग में स्व–अध्ययन की सुविधा थी। स्व–अध्ययन के बाद भी उन्होंने 1975 में 59 प्रतिशत के साथ lLdr fo"k; l Lukrd fd;kA ckn e ikyhrk.kk ¼xtjkr½ e VyhxkQ dk;ky; e dk; dju yxA 1981 e lkjk"V विश्वविद्यालय की एम-,- dh ijh{kk iFke J.kh o iFke LFkku d lkFk mRrh.k dhA Jh g"kno u ,e-,- d ckn VyhxkQ dh ukdjh NkM nh fQj vgenkckn dh कस्तूरबा गांधी हायर सेकेण्डरी स्कूल में शिक्षक के पद पर नियुक्त हुए, उन्होंने बी-,M- dh ijh{kk Hkh iFke J.kh e iFke LFkku l mRrh.k dh gA

1988 e vgenkckn d ,p- d- dyk egkfo|ky; e lLdr v/;kid g,A 1988 e mUgku ih,p-Mh- का कार्य शुरू किया और दो साल में नामांकित विद्वान डॉ- xkre iVy d

मार्गदर्शन में **'मुख्य पुराणों में शाप और उनका प्रभाव'** uked fo"k; e ih,p-Mh- dk dk; i.k कर डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की। श्री माधव के इस महानिबंध को विश्व के साहित्य कोष में स्थान feyk gA

ikfjokfjd ifjp; &

Jh g"kno ek/ko dh ekrk dk uke unucgu vkj firk th dk uke Jh eulq[kHkkb tkuh gA vkid tuknuHkkb tkuh vkj HkjrHkkb tkuh nkuk cM Hkkb vkj rhlj LFkku ij Jh g"kno ek/ko th gA vkidh NkVh cgu Mk- g"knk gA Jh ek/ko th dh iRuh dk uke Jfr cgu g] ftUgku ,e-,-] ch-,M- rd v/;;u fd;k gA g"kno ek/ko dk fookg lu 1985 e gvk FkkA

Jh g"kदेव माधव का मूल नाम हर्षवर्धन जानी था, किन्तु प्रियदर्शिका पढ़ते समय हर्षवर्धन का ^g"kno* mYy[k gku d dkj.k dfo u Lo; gh ^g"kno* miuke :fpdj le>kA ^ek/ko* miuke d ckj e dfo dgr g fd d-ek-eulh d ^iFohoYyHk* ^ek/ko dk l;e* bl idj.k e vku okyk ekyrh&ek/ko d mYy[k u ^ek/ko* miuke dh ij.kk nhA

शब्दकोष में 'माधव' शब्द के आठ अर्थ मिलते हैं –जिसमें माधव का अर्थ 'वैशाख मास' है, जो कवि के लिए उपयुक्त है, क्योंकि कवि वर्तमान समस्या को वैशाख मास के ताप की तरह कठिन शब्दों में व्यक्त करता है। कवि, ने 'माधव' शब्द को यत्र–तत्र काव्य में भी प्रयोग किया है –

dkyk;oue;kr ek/kok }k iykf;rk
iFke ek/kok okl|no% v/kuk ek/kok g"kno%AA
ek/ko! xfe";fl Do \ Ro J)kyek HkoA
iF0;k e;k·oykfdrk% dlk brLrr%AA

lEeku i= vkj fo}r lEeku &

1- Hkk- t- fo|kHkou }kjk lEeku i= ¼2007½

2- cgn xtjkr lLdfrifj"knLok ¼2007½ }kjk lUeku i=

3- ^vkurl lLdr lLdfr Lok/;k lLFkku* }kjk lUeku i= ¼2007½

4- 'ऑल इण्डिया ब्राह्मण फेडरेशन, सूरत द्वारा विद्वत् सम्मान (2007)

5- 'विशिष्ट सम्मान' पूज्यikn ekjkjh cki }kjk ¼2007½

6- mÙkj xtjkr ;fuofIVh }kjk fo}r lEeku i= ¼2007½

7- lLdr lok lfefr }kjk fo}r lEeku] lEeku i= ¼2007½

8- संकर्षण व्यास शताब्दी महोत्सव समिति उज्जैन की ओर सम्मानपत्र (वि-l- 2065½

9- कविस्पर्या – 'विशिष्ट कवि सम्मान' राष्ट्रीय संस्dr lLFkku ¼2 vxLr] 2009½

10- विद्वत् सम्मान – जगदगुरु शंकराचार्य कांची कामकोटिपीठ द्वारा (15 मई, 2010)

11- leLr vkfnP; cãlekt] vgenkckn }kjk fo}r lEeku ¼2010½

12- ^lkeukFk lLdr ;fuofIVh* }kjk fo}r lEeku ¼9 flrEcj 2010½

13- ^vf[ky Hkkjrh; dfo vH;puk* ukUnh lok lfefr ukUnh if=dk] okjk.klh
¼tuojh 2011½

14- ^cgn xtjkr lLdr ifj"kn* }kjk ^lkfgR;&onkUr&fo}ku lEeku*
¼23 tuojh 2012½

15- वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन द्वारा 'वेदज्ञ' सम्मान (22 मार्च 2014)

16- t; lfPpnkuUn l?k }kjk ^fo}r lEeku* ¼5 tu 2014½

ijLdkj &

1- 'Kalpavali' Award for Mrgaya - 1997

2- Akhil Bhartiya Kalidas Award for ‘Niskranthal Sarve’ 2001

3- Ramkrisna Sanskrit Award of Suraswati Vikas Canada for Contribution in Sankrit Language and Literature 1998

4- Central Sahitya Academic award ‘Tave Sparse Sparse’, 2006

5- Five Gujrat State Sanskrit Sahitya Academi Award’s for

   1- ex;k

   2- ykokjlfnX/kk% Lolue;k% iork%

   3- fu"ØkUrk% lo

   4- HkkofLFkjkf.k tuukUrj lkânkfu

   5- u[kfpUg

6- Virat Jage Paritosika second prize, 1980

7- Kaviloka Sisukavya Prize, 1979

8- Best Citizens of India Award, 1999

9- First Prize for the research paper “Tantra Sastroman Trikonanum pratika : In the context of Sakta Tantra by Saurastra Vistara Sanskrit Parisads, 1997

10- First Prize for research paper ‘Gayatri Mantra Sakta Drsti se’ by Ved Vigyana Academi, 1999

11- First Prize for the research paper ‘Kalividya : Srtiprasuta Brahmavidya, 2005

12- xtjkr jkT; xkjo ijLdkj] 2009

13- ^o.kk #<xfUFk%* dk vf[ky Hkkjrh; dkfynkl vokM ¼2011½

14- ^dkfynkluh eU= dfork* dk A.I.O.C. }kjk t;eUr feJ ikfjrkf"kd

15- ifMrjkt lEeku ¼2013½ vokphu lLdr ifj"kn] fnYyh

16- cãf"k vokM ¼2&2&14½ i- रमेशभाई ओझा द्वारा

17- m-i-lLdr lLFkku }kjk ^dkfynkl ijLdkj* o.kk :<xfUFk d fy, ¼2011½

vU; inkk ij inLFk &

1- President - Shri Vani Academy

2- Member and trustee - Sanskrit seva samiti since 1990

3- Member - Brhad Gujrat Sanskrit Parishad

dfrRo &

vk/kfud lLdr lkfgR; d egku euhf"k;k e vkpk; g"kno ek/ko dk uke cM vknj l fy;k tkrk gA vkiu viuh dk0; प्रतिभा से भारत वर्ष की ही नहीं अपितु विश्व की मूलभूत leL;kvk ij dye pykdj tk u;&u; y?kdk0;k dh jpuk dh g og lpep e ;FkkFkrk dk vuHko djkrh gA vkiu viuh dfork e lLdr dk0; ijEijk l gVdj uru fo"k;k ij jpuk, कर, एक नई दिशा का सूत्रपार fd;k g] ftll lEi.k txr e ,d ub Økfr vkb g] vkj u; ढंग की रचनाएँ होने लगी हैं। आपकी रचनाओं को पढ़कर लोग अपने जीवन की दिशा ही बदल देते हैं। इस प्रकार की नूतन काव्यधारा को प्रवाहित कर आपने 20वीं शताब्दी में महाकवि होने का xkjo ikIr fdया है। आपके संस्कृत भाषा में 26 काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। आपके संस्कृत के अतिरिक्त हिन्दी भाषा एवं गुजराती भाषा में 5 काव्यसंग्रह प्रकाशित हैं। इसके साथ ही अंग्रेजी में एक तथा अन्य विषयों से संबंधित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जो निम्न हैं &

lLdr dk0; lxg &

1- रथ्यासु जम्बूवर्णानां शिराणाम् (1985)

2- vyduUnk ¼1970½

3- शब्दानां निर्मक्षिकेषु ध्वंसावशेषुसु (1993)

4- ex;k ¼1994½ dYioYyh vokMZ ikIr ,o lLdr lkfgR; vdkneh ijLdkj

5- ykokjlfnX/kk Lolue;k iorkZ ¼1996½

6- cgéyk ¼egkdkO;[k.M½ ¼1966½

7- vklhPp e eufl ¼1996½

8- fu"ØkUrk lo ¼1997½ vf[ky Hkkjrh; dkfynkl ijLdkj ,o lLdr lkfgR; vdkneh ijLdkj ikIr

9- ijk ;= L=krk ¼1998½ lLdr lkfgR; vdkneh ijLdkj

10- dkyk·fLe ¼1999½

11- मृत्युशतकम् (1999)

12- l"kE.kk;k fueXuk ukdk ¼1999½

13- HkkofLFkjkf.k tuukUrjlkânkfu ¼2000½ lLdr lkfgR; vdkneh ijLdkj ikIr

14- d..kD;k f{kIr ekf.kD;uije ¼2000&2001½

15- l/kkflU/kke/; ¼2003½

16- eulk ufe"kkj.;e ¼2004½

17- तव स्पर्शे स्पर्शे (2004) केन्द्रीय साहित्य अकादमी अवार्ड प्राप्त

18- _"k {kC/k prfl ¼2004½

19- Hkkfr r Hkkjre ¼2007½

20- स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः (2006)

21- o.kk :<xfUFk% ¼2010½ vf[ky Hkkjrh; dkfynkl ijLdkj

22- rFkkLr ¼2012½

23- okldlTtk T;kRLuk ¼;U=LFk½

24- fiihfydk foi.kh xPNfr ¼ckydk0;lxg½ ¼2013½

25- fuoशः शैलानाम् (2015)

26- शिरीषपुष्पेषु वृष्टिबिन्दवः (2015)

lLdr ukV;lxg &

1- eR;j; dLrjhexk·fLr

2- dYio{k%

lLdr miU;kl &

1- edk jkefxfjHkRok ¼2008½

2- ;{kL; oklfjdk ¼2009½ xtjkrh vuokn

vk/kfud lLdr foopuxUFk &

1- u[kni.k% ¼2008½

आधुनिक संस्कृत अलंकार शास्त्र –

1- आधुनिकं काव्यशास्त्र

2- वागीश्वरीकण्ठसूत्रम् (2012)

l xfgr dfork l p; &

1- Head Lines Again (English) ¼1999½

2- i{kh d i[k ij xxu ¼fgUnh½ ¼1999½

3- vyduUnk vk vU;U; dfork ¼2004½ ¼vkfj;k½
l- foodkuUn ikf.kxgh

4- Lefr;k dh th.k JkoLrhuxjh e ¼fgUnh½ ¼2008½

5- c)L; fHk{kkik= ¼fgUnh½ ¼2008&09½ ¼2014½

6- c) jk [kl ije k; ¼jktLFkkuh½ ¼2011½

7- तारा स्पर्शे स्पर्शे (गुजराती) (2011)

8- मुखाकृतिग्रन्थे वैशालीपूर्णिमा (हिन्दी)

foopu l xg &

1- egkdfo ek?k ¼1993½ ¼2006½

2- ikjkf.kd dFkkvk vu vk[;kuk ¼1997½

3- lLdr ledkyhu dfork ¼1998½

4- u[kuk ikfMR;e ¼1998½

5- u[kfpUg ¼lLdr lkfgR; vdkneh ijLdkj½

6- eU=Hkk"kk vu eU=dfork ¼2013½

vu okn &

1- संस्कृतनुं भाषाशास्त्रीय अध्ययन

2- वागीश्वरीकण्ठसूत्रम् (गुजराती)

fgUnh dk0; laxzg &

1- तन्हाइयों की परवरिश (2008)

xqtjkrh dk0; laxzg &

1- gkFk QQkl vk/kGk lx/ku ¼1985½

2- पान–सरनामुं न जाणे झाडनुं आ देशमां (1997)

3- ekckbyu Hkkr ¼2006½

4- dYio{kuh y[k.k ybu ¼2006½

5- पोत पोतानी तरस (प्रकाश्य)

xqtjkrh dgkuh laxzg &

1- {k.kLolu ¼2000½

ofnd lkfgR; ij xzUFk &

1- विश्वना सर्वोत्तम ज्ञाननी वेबसाइट : वेदमन्त्रो (2012)

2- ज्ञाननुं 'गूगल' : वेदमन्त्रो (प्रकाश्य)

vkVZ vkWQ yhfoax ij xzUFk &

1- lQGrkuk eU=;kx ¼2012½ ¼2014½

lQyrk dk eU=;kx fgUnh Hkk"kk e ¼2014½

तन्त्रशास्त्र पर ग्रन्थ –

1- eU=uk jgL;k] eU=k}kj vu ;U=flf)vk ¼2003] 2010½

2- शाक्ततन्त्रमां श्रीविद्यानां रहस्यो (2006)

3- Jhlä] Jh;U= vu Jhfo|k ¼2007½ ¼2014½

4- प्रत्यक्षब्रह्मः विघ्नेश गणेश (2009) (2012)

5- नित्यकल्याणशीला बाला (2012)

6- Jhfo|k [kMxekyk ¼2012½

तन्त्रशास्त्र के ग्रन्थ का fgUnh vu|okn &

1- शाक्ततन्त्र में श्रीविद्या के रहस्य

2- Jhlä] Jh;U= vkj Jhfo|k ¼Mk- ioh.k iM;k }kjk vuokn½

विशिष्ट विषयों पर संपादन –

1- lLdr lkfgR;ek egkRek xk/kh ¼1999½ lLdr lkfgR; vdkneh] xk/khuxj

2- _rjkt olr] xtjkrh lkfgR; vdkneh ¼2006½

3- vki.kk o"kkdk0;k ¼2006½] xtjkrh lkfgR; vdkneh] xk/khuxj

4- iFohuk ieuk i;k;% iRuh ¼2008½

5- dfoHkkjrh% vk/kfud lLdr ltdk d gLrk{kj ,o lk{kkRdkj

6- कविवासरिका (प्रकाश्य)

7- ljkghek lkejl ¼2013½

8- द्राक्षावल्ली (प्रकाश्य)

9- परमतत्त्व शिव (2003½

10- opkfjd ØkfUruk ifji{;ek lLdr lkfgR; ¼2006½

11- lLdr lkfgR;ek pklB dykvk ¼2006½

12- lLdr lkfgR;ek vk/;kfRed pruk ¼1999½

13- lLdr lkfgR;ek lkekftd pruk ¼2009½

14- अमृतना स्वामी शिव (2013)

15- मेनेजमेन्टना स्वामी शिव (2013)

vu|okn&l:iknu &

1- अमरुशतकम् (1996)

2- dknEcjh ¼2000½

सम्भाषण, अध्ययन एवं अध्यापन के लिए विशिष्ट ग्रन्थ –

1- lLdruh vkckgokek ¼1992] 2005] 2010½

2- lLdruk ojlknek ¼1996] 2014½

3- lLdruk miouek ¼2001] 2011½

4- lLdruk uxjek ¼2001½

5- संस्कृतभाषाकौशल्यम् (2006]\ 2007½

6- lLdr okX;ogkj ¼2004] 2015½

7- e/kjHkk"kk lLdr] verHkk"kk lLdr ¼2012½

lLd`r0;kdj.k ij xzUFk &

1- 0;kogkfjd lLd`r 0;kdj.k ¼1995½

2- milx] fPo:i] uke/kkrq vu dnUrfopkj ¼1996½

3- dkjdfopkj ¼1998½

4- ydkjfopkj ¼2001½

5- lfU/k vu lekIfopkj ¼2003½

6- संस्कृत शिक्षिका (संपादन) 2008

7- d`Hk vu vlk uk i;kxk vu vui;kxk ¼2007] 2011½

बहुभाषी शब्दकोश –

1- पार्श्व पिक्चर डिक्शनरी (2000) (चार भाषाओं में)

2- श्रीवाणी चित्रकोश (2000) (चार भाषाओं में)

3- चित्रशब्दकोश (संस्कृत – fgUnh & vxzsth & jktLFkkuh½ ¼2010½

4- अमरकोश (2012) (चार भाषाओं में)

ज्ञानकोश (प्रकाश्य) अन्य के साथ –

ज्ञानविधि (प्रकाश्य) अन्य के साथ

संस्कृत शास्त्रों पर विवेचन एवं इतिहास (अन्य के साथ) –

1- धर्मशास्त्रनो परिचयात्मक इतिहास

2- Hkjru jlI=] :iduk idkjk] /ofufl)kUr vu /ofuuk idkjk

3- न्यायदर्शन (प्रकाश्य) (संपादन)

4- ifo"V vu vk/kfud lLdr lkfgR;uk bfrgkl ¼2000½

5- vk/kfud lLdr lkfgR;uk bfrgkl ¼2011½

lglaiknu] vuqokn &

1- काव्यप्रकाश (1990)

2- xxkygjh ¼1990½

3- u"k/kh;pfjre ¼iFke&f}rh; lxk½ ¼1991½

4- ऋग्वेद–दशम मंडल (1990)

5- d.kHkkje ¼1994½

6- c)pfjre & rrh; lx% ¼1993½

7- jRukoyh ¼1993½

8- lUnjdk.Me ¼1993½

9- dBkifu"kn ¼1994½

10- e.Mdkifu"kn ¼1994½

11- lkUnjuUne ¼rrh;&prFk lxk½ ¼1994½

12- euLefr% ¼"k"Bk·/;k;%½ ¼1997½

13- शान्तविलास अने करुणविलास (2001)

14- कादम्बरी–शुकनासोपदेशः (2004)

15- tkrdekyk ¼2005] 2006½

16- ofnd läe¥t"kk ¼2005½

17- Hkkjrikfjtkre ¼12&14 lxk½½

18- संस्कृतनुं सामान्य ज्ञान अने हेतुलक्षी प्रश्नो (2009) (प्रशिष्ट साहित्य)

19- Hkkegdr dk0;ky³dkjek dk0;nk"kk ¼2010½

20- संस्कृतनुं सामान्यज्ञान अने हेतुलक्षी प्रश्नो (वैदिकसाहित्य) (2010)

21- ipegkdk0; ¼2011½

22- पतंजलिनुं योगशास्त्र अने कौटिल्यनुं अर्थशास्त्र (2012)

23- नीतिशास्त्रकम् (2011)

24- Roefi Ro u ek fouk ¼Mk- xkre iVy dk dk0;lxg½

25- egkHkkjr lHkkio ¼2012½

26- #n v"Vk/;k;h ¼2014½

cky dk dfy, dgkuh lxg &

1- xkxjek lkxj ¼1999½

2- ijk.kkuh okrkvk ¼1999½

3- ,drk ftnkckn ¼2003½

4- Mkd.kuk Mj

ikB;xUFk liknu&y[ku &

vkBoh d{kk ¼2004½ lLdr

uoeh d{kk ¼2005½ lLdr

lEiknd eaMy esa &

1- nd if=dk ¼2004 l½

2- The Post Colonial Journal of India ¼2007½

3- lkcjerh ¼dkyst eSxthu½

4- शब्दसृष्टि (हिन्दी–मराठी)

5- ef.kHkkbZ itkifr vfHkuUnu xzUFk ¼2000½

6- Mk- ,e- oh- जोशी अभिनन्दन ग्रन्थ (1998)

7- J)k CISSN 2321 - 273 x 2012-13 परामर्शक मंडल esa

dfo dh dfrRo ij xzUFk &

1- Mk- रश्मिकान्त ध्रुव, सांप्रत संस्कृतमां आधुनिकतानो सन्दर्भ (2000) श्रीवाणी अकादमी, pkn[kMk

2- Mk- रीता त्रिवेदी, आधुनिक भावबोधनी कविता 'मृगया' (1999) पार्श्व पब्लिकेशन

3- Mk- रश्मिकान्त ध्रुव, आधुनिक काव्यवादो अने सLdr dforK ¼2006½

4- Jfr g"kno] lLdr esa vFki.k vfHkO;fä dh dforK ¼2004½ Jhok.kh vdkneh] pkn[kMk

5- Mk- lh- ch- okyl] ^lLdrek vk/kfudrkuk ixjo* vNknl dkO;ksa g"kno ek/kouh dforkuk ifji{;ek

6- eu l[k iVkfy;k] g"kno ek/kouk ekukbet LorU= lxgk ¼2011½ ih,p- Mh-

मार्गदर्शक के रूप में

विविध विश्वविद्यालयों में मार्गदर्शक –

xtjkr ;fuofl Vh] mÙkj ;fuofl Vh] Hkkouxj ;fuofl Vh] vcMdj vkiu ;fuofl Vh] dPN ;fuofl Vh ,o lkeukFk ;fuofl Vh e ifrHkk lEiUu fo}ku d :i e Nk=k dk lQyre मार्गदर्शन दिया है।

1- johUn dekj [kk.Mokyk

^onek=k xk;=h% eU=] rU= vu ;U=uk ifji{;ek ,d vH;kl* gepUnkpk; m- x- ;fuofl Vh] ¼2004½*

2- जातुष जोशी 'शाक्त तन्त्रता सन्दर्भमां सौन्दर्य लहरी : एक अभ्यास', भावनगर ;fuofl Vh] ¼2006½

3- स्नेहल जोशी, 'आधुनिक संस्कृत गजल : स्वरूप अने भाषाकर्म', (2008), भावनगर ;fuofl Vh

4- भरतकुमार परमार, 'संस्कृत रूपकोमां मानवसम्बन्धोः प्रशिष्ट मुख रूपकोना परिप्रेक्ष्यमां ,d vH;kl* ¼2009½] m- x- ;fuofl Vh

5- मनोज प्रजापति 'प्रशिष्ट संस्कृत :idkek ;)k vu ;)o.kuk% ,d vH;kl* ¼2009½] m- x- ;fuofl Vh

6- अशोक पटेल, 'सर्वशुक्लाना कवि डॉ- रमाकान्त शुक्ल' एक अध्ययन, (2010), उत्तर xtjkr ;fuofl Vh

7- ik#y pkgk.k] ^vk/kfud x|dk0;ek uok vk;kek & Mk- jk/kkoYyHk f=ikBh vu Mk- बनमाली विश्वालनी गद्यकृतिओना संदर्भमां एक अभ्यास' (उ-x- ;fuofl Vh½ ¼2010½

8- lHkk"k xjkfl;k] ^lLdr :idkek fookg iouk vu iNhuk i.k; lEcU/kk* ¼xtjkr ;fuofl Vh½ ¼2010½

9- क्षमा धोळकिया, 'समर्थ गद्यस्वामी कलानाथ शास्त्री : आधुनिक संस्कृत गद्य साहित्यमा देवर्षि कलानाथ शास्त्रीनुं प्रदान' (कच्छ युनिवर्सिटी) (2011)

10- t;flx xkfor] ^lLdr :idkek xk.kik=kuk fofu;kx* ¼2012½

11- प्रवीण पंड्या, 'काव्यशास्त्रे अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्र–अभिराजयशोभूषणयोः' प्रदेयम् ¼lkeukFk lLdr ;fuofl Vh] 2011½

12- foनोद पटेल, 'संस्कृत शास्त्रोमां चन्द्रनुं महत्त्व' (कच्छ युनिवर्सिटी) (2011) (2012)

13- दीपक जोशी, 'धर्मशास्त्र अने कामशास्त्रना परिप्रेक्ष्यमां 'काम' पुरुषार्थ' (गुजरात ;fuofl Vh½ ¼2013½

14- महेश जोशी, महावेदी लक्ष्मीः लक्ष्मी तन्त्रस्य विशेष–परिप्रेक्ष्ये एकम् अध्ययनम्

15- ik- हीना भोजक धर्मार्थ कामशास्त्रेषु अर्थ पुरुषार्थः

16- vkpk; lHkk"k cãHkê] ^i#"kkFk pr"kpuk lUnHkek* lLdr :id ¼Indology½

ikB;xUFkk ej &

1- d{kk 12oh ¼1985½] i- 27

2- d{kk 12oh ¼1994½] i- 30

3- eR;j; dLrjhexk-fLr l-i- ;fuofl Vh e nk o"k rd ,e-,- dk ikB;xUFk

4- #fpjk] 2010] dk0; N.C.E.R.T.

5- fnYyh ;fuofIVh ch-,- d vH;kIØe e gkbd ¼2015½

6- ^ex;k* Ikjk"V ;fuofIVh ch- ,- d vH;kI e ¼2009&2011½

7- ^;{kL; okIfjdk* n- xtjkr ;fuofIVh d ,e- Qhy- d ikB;xUFk d :i e ¼2012&2014½

8- dYio{k] dPN ;fuofIVh e ch- ,- d ikB;Øe e] ¼2013½

9- ^rFkkLr* SNDT Uni. d ch- ,- d ikB;Øe e ¼2015½

कवि के कृतित्व पर शोध –

1- Mk- रश्मिकान्त ध्रुव (1998), 'हर्षदेव माधवनी कविताओं' (पीएच-Mh-½ ¼1985 I 1994 rd½ Ijnkj iVy ;fuofIVh

2- Mk- jhrk f=onh ¼1997½ ¼,e-fQy½
^vk/kfud Hkkock/kuh ILdr dforkj] ^ex;k*

3- uhuk nokIdj ¼,e-fQy½
^vk/kfudrk vkj ex;k dh dfork*] Ikxj ;fuofIVh ¼1996½

4- Ih- ch- ckyI ¼ih,p-Mh-½ ¼2005½
^g"kno ek/kouh dfork* ¼1995&1999½ Ikjk"V ;fuofIVh

5- Mk- jhrk f=onh
'अंतिम दशकनी आधुनिक संस्कृत कविता (राजेन्द्र मिश्र – राधावल्लभ त्रिपाठी अने g"kno ek/kouh dforkuk InHkek ,d vH;kI½ Ikjk"V ;fuofIVh] ¼2006½

6- Mk- Lokfr dyJ"B

^xtjkr d LokrU«;kÙkj lLdr ukVd ¼2006½ vkxjk ;fuoflVh] ¼2009½

7- T;kfrcu Hkê

^vfHkjkt jktUn feJ vu g"kno ek/kouh dforkek i.k;fu:i.k*

¼lkjk"V ;fuoflVh] 2008½

8- ihfr xx ¼,e-fQy½

मृत्युशतकम् (2009), जोधपुर युनिवर्सिटी

9- eul[k iVkfy;k

^ekukbet dk0;Lo:i vu g"kno ek/kouh dfork] ¼ljnkj iVy ;fuoflVh½

¼ih,p-Mh- 2009½

10- g"kn itkifr ¼,e-fQy-) 'भाति ते भारतम्' में वास्तवदर्शन, सागर युनिवर्सिटी

¼2010½

11- उर्वशी अंकलेश्वरिया (एम-fQy½

^dYio{k* uk :idk] ¼nf{k.k xtjkr ;fuoflVh] 2012½

12- lJh Hkkouk lkuh ¼ih,p-Mh-½ ¼m-x-;fuoflVh½

^;{kL; okLfjdk* vk/kfud miU;kluh nf"V] ¼m-x-;fuoflVh½ ¼2015½

13- vjfon xkohr ^Hkkfr r Hkkjre* ek lkekftd pruk ¼n-x-;fuoflVh½

¼,e-fQy½ ¼2012½

14- सुश्री रीमा पटेल 'हर्षदेवमाधवकृत तलस्पर्शे स्पर्शो काव्यसंग्रहमां विषयवैविध्य अन

feFkdku leh{kkRed v/;;u* ¼,e-fQy- mRrj xtjkr½¼2014½

15- अशोक पाटीदार 'डॉ- हर्षदेव माधव कृत वागीश्वरी कण्ठसूत्रम्: एक समीक्षात्मक अध्ययन' मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

16- सुश्री सेजल जोशी, वैश्विक चेतनाना उद्गाता कवि श्री डॉ- g"kno ek/ko* mÙkj xtjkr ;fuoflVh

dk0; ladyuk e &

vxzsth & 1. Indian Literature 192 P.P. 8-28

2. Premier Poets (1988) California P. 141

3. Premier Poets (1986) P. 160

4. The Poes Colonial Journal of India Discourse (2007), P.P. 110-114

5. Kavyardhasati (1998) P. 18

6. Kavi Bharati 4 (2005) P.P. 28-29

7. Achhaandas (2008) P. 38

laLd`r ladyuk e &

1- षोडशी (1992) (साहित्य अकादमी), पृ- 140&155

2- v/kuk ¼1999½ i- 44&55

3- उशती (2000–2001)पृ- 36&38

4- laLdrokfXoykl] ¼2005½ i- 112&115

5- dविद्वादशी (World Sanskrit Confrence, Edinburg½ ¼2006½

6- विंशतिशताब्दिकाव्यामृतम् (2000)

7- dfoHkkLdjh] 2009

8- dfoHkkLdjh] 2012

9- dYioYyh ¼lkfgR; vdkneh½ ¼2013½

काश्मीर – tgkj ¼2003½] i- 51&53

rkj[k ucp rkj[k ek< i- 96&105

rsyxq & l³xR;e ¼2003½ i- 97

ejkBh & dk0;io ¼2003½] i- 203

fgUnh & ¼1½ Hkkjrh; dfork,¡ ¼1991½ i- 239

¼2½ flrkj /kjrh d

vksfj;k & ^xh"efuokj fulxrk* Hkkjrh; dfork lp; ¼2004½ i- 32

xqtjkrh lsdyuk es &

1- xhr lp; ¼1998½ i- 193

2- गजक शतक (1999) पृ- 99

3- xtjkrh ifrfuf/k xtyk ¼1996½] i- 149

4- LokrU«;kÙkj xtjkrh xhrlp; ¼2002½] i- 407

5- ck ykx ogkyh ¼2000½] i- 211

6- ekrnok Hko ¼2003½] i- 7

7- xtylp; ¼1998½] i- 203

8- xtyxfjek ¼2003½] i- 203

9- cgr dk0; lef) ¼2004½] i- 521

10- vklUk rkj.k ¼1985½] i- 18

11- >j.kk ¼1978½] i- 28

12- oklouuk Vgdk ¼1977½] i- 4

13- ekbØkoo ¼1984½] i- 47

14- dk¥po/k ¼\½] i- 8

15- eR;uk ekMo egfQy ¼1993½] i-126

16- jx egfQy ¼1986½] i- 244

17- lLdr dk0;l/kk ¼1992½] i- 15&18 ¼1982½

18- vkBek nk;dkuh dfork ¼1982½] i- 13

19- xtyu uo xty ¼1978½] i- 38

20- ifrc) ¼1991½] i- 93

21- xhfrdk ¼&½ i- 280

22- xtjkrh dfork p;u ¼1997½

23- एक मुट्ठी आकाश (1985), पृ- 52

24- uoek nk;dkuh dfork ¼1992½] i- 87

25- xtjkrh dfork p;u ¼1993½]i- 70

26- xtjkrh dfork p;u ¼1999½] i- 104

27- xtyxfjek ¼2001½] i- 19

28- ljnkj onuk] ¼2001½] i- 65

29- >GgGkV ¼1984½] i- 266

30- dk0;ktfy ¼2000½] i- 90

31- xtyxfjek ¼2004½] i- 121

32- नक्काशी नदी (2004), पृ- 85

33- निर्मिशीकरण गजलकारोनुं (2004)

34- i.k; dk0;lp; ¼1998½

35- vgenkckn ,Vy venkokn ¼2012½

36- ukjh ykyh yhyhNe D;kjh

37- dforkp;u ¼2011½

lfeukj lkxk"Bh dk l;ktd dk :i e &

1- ^opkfjd ØkfUr d lnHk e lLdr lkfgR;* jkT; d{kk dk ifjlokn ¼2008½

2- ^lLdr lkfgR; ,o pklB dyk,* ¼jkT;d{kk dk ifjlokn] 9&10 vxLr] 2005½

3- xtyio] 2010

4- xhok.k xtjh dfo leok;] lLdr lkfgR; vdkneh d rÙoko/kku e

fnukd 18&2&12

5- lLdruk egku vkpk;k & 1&2 ekp 2012

6- vf[ky Hkkjrh; dfo leok;] 3&12&2010] lkeukFk ;fuofIVh

7- संस्कृतमा जीवन उपयोगी शाL=k] f}fnoIh; ifjIokn] ,p-d-vkVI dky t]
11&12 tuojh 2010

8- lLdr lkfgR;ek lkekftd pruk ¼26&3&2008½ jkT; d{kkuk ifjIokn] ,p-d-vkVI dky t

lnHk xUFkk e &

1- lLdr lkfgR; ¼ chIoh Inh ^ I- jk/kkoYyHk f=ikBh] i- 44] 52] 162&167] 189] 209] 211

2- सागरिका आधुनिक संस्कृत साहित्य विशेषांक, पृ- 71] 311&323

3- ^i[;k* f}rh;¼ LiUn½] i- 55&60

4- vk/kfud lLdr lkfgR;] Mk- n;kuUn Hkkxo] i- 21] 42

5- आधुनिक संस्कृत साहित्य, एक दृष्टिपात, कलानाथ शास्त्री, पृ- 18] 24] 25

6- vokphu lLdत साहित्य दशा एवं दिशा सं- मञ्जुलता शर्मा, प्रमोद भारतीय, पृ- 6] 11] 34] 79] 83] 121] 134] 114] 181] 231] 233] 235] 332] 333 ifjey पब्लिकेशन, दिल्ली

7- lLdr ok³e; dk cgn bfrgkI] i- 203&206

8- Contribution of Gujrat to Sanskrit Literature, P.P. 337-341

9- Post Independence Sanskrit Literature, P.P. 337-341

10- आधुनिक संस्कृत साहित्येतिहास, देवर्षि कलानाथ शास्त्री, पृ- 157&158

11- lkjLorh;e] Mk- ,e- oh- जोशी, अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ- 168] 170] 197

12- dk0;kFk] vftr Bkdkj] i- 57&67

13- ^v?;* lkjk"V ;fuoflVh foLrkj lLdr v/;kid ifj"kn 1999] i 77] 82

14- xtjkrh xtyuh lkUn;l ehekalk] Mk- रशीद मीर, पृ- 210&211

15- शब्दाख्य ज्याति, डॉ- fot;k iM;k vfHkuUnu xUFk] i- 138&139] 170&174

16- xtjkru lkir lLdr lkfgR;] ¼1998½] i- 19&24

17- lLdr ledkyhu dforko] ¼1998½] i- 20] 39&41] 56&59

18- vk/kfud lLdr dk0; dh ifjØek] Mk- मंजुलता शर्मा,

विशिष्ट सेवा–

1- सरलसम्भाषणसंस्कृतकेन्द्रस्य 2007 तमे संवत्सरे एकवर्षपर्यन्तम् मार्गदर्शकोऽध्यापकः (विश्वविद्यालयअनुवादन–आयोगस्य आर्थिक साहाय्येन प्रचलितं dUne½

2- lLdr dUlYVUlh lUVj 2013 l------

0;k[;ku &

Mk- हर्षदेव माधव की भाषा शैली अनोखी है। जब वे व्याख्यान देते हैं तो एकनिष्ठ तपस्वी _f"k dh rjg fujUrj viu fo"k; ij ckyr jgr gA mud }kjk fn, x, 0;k[;ku l Jkrkvk को नई–नई दिशाएँ fey tkrh g] o u; fo"k;k ij dk; dju yxr gA Mk- g"kno ek/ko d fn; x; 0;k[;kuk dh lph fuEuku lkj g &

Ø-	l[;k	fo"k;	LFkku
1-	1	vk/kfud lLdr dk0; ¼lLdr e½	lLdr egkfo|ky; ,e-,l- ;fuoflVh 13&03&1990
2-	2	fdjkrktfu;e vkj g"kpfjre	vuLukrd foHkkx] ,u-ih- dyk vkj okf.kT; egk- dlkn 20&21 Qj- 1991
3-	1	vk/kfud lLdr lkfgR;	bMj egkfo|ky; 31&03&1993
4-	1	lLdr dfork	>fo;l egkfo|ky; 26&11&1994
5-	1	शिशुपालवधम्	ckVkndj egkfo|ky;] ckVkn] 17&01&1999
6-	1	Sanskrit Teaching and Textbook	B.D. Arts College of Edu. Modasa, 29-12-1998
7-	1	vk/kfud lLdr dfork& ubl /kkjk	xk/kh efgyk egkfo|ky; Hkkouxj] 28&08&1998
8-	1	lLdr dh vkckgok e	lnxuk dU;k egkfo|ky; 18&01&2000
9-	4	Modern Sanskrit literature (1) History (2) Ages	Reference course Academic sanskrit, Uni.

(3) Authours (4) Forms — staff college, Rajkot
Aug. 1999

10- 4 Vedic Lit. — Referesher
1- Mantra and Mysteries — Course at Academic staff
2- Mantra and Yantra — college, Sau. Uni.
3- Mantra and Tauntra — Sept. 2000
4- Vedanun upbrahama

11- 2 कामशास्त्र और आयुर्वेद — cjkMk lLdr egkfo|ky;]
26&06&2002

12- 1 मन्त्र, मन्त्रशक्ति vkj e=k)kj — Mk- ef.kHkkb itkifr
0;k[;kuekyk] mÙkj xtjkr
fo-fo- 18 tu- 2002

13- 4 1- on vkj eU= — vdknfed LVkQ
2- eU= d jgL; — egkfo|ky;] jktdkV
3- mifu"kn e ;U= vkj eU= — 21&03&2002
4- कामशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष — 22&03&2002
vkj rU=

14- 5 1- rU=&rkfU=d ok³e; e — ljnkj iVy fo-fo-
शाक्तदृष्टि
2- rU= vkj eU= — 25&04&2001 l
3- eU= dfork&lkUn;ygjh — 27&04&2001 rd

15-	1	21oh lnh vkj dkfynkl	fotkij efgyk dyk egkfo|ky;] 13&10&2001
16-	1	संस्कृत छन्द शिक्षण	oYyHkfo|kuxj 27&09&01
17-	4	xtjkr dk lLdr dk0; lkfgR;	vdknfed LVkQ dkyt jktdkV] 6&7 Qj- 2004
18-	1	lLdr dfork tukx< 08&10&2004	ljnkj iVy x:dy
19-	1	xtUn ek{k	शिवकुंज आश्रम, जालिया ¼lLdr lkfgR; vdkneh 26&12&2004½
20-	1	संस्कृत काव्य और काव्यशास्त्र	efgyk dyk egkfo|ky;] fgEeruxj
21-	2	Literary criticism and Research	Academic staff college & sau. uni. Rajkot 18-07-05
22-	1	कवि का शब्द	diMot egkfo|ky; 19-01-2005
23-	1	dk0; dh Hkk"kk	dyk egkfo|ky;] gkyky 19&01&2006
24-	1	dk0; dh ifjHkk"kk vkj कवि का शब्द	lV >fo;l dkyt] 2 flr- 2006

25-	1	vk/kfud lLdr dforke jk"Vh; pruk	,p-d-egkfo|ky; ¼lLdr lkfgR; vdknehh½
26-	1	dk0; e NUn vkj vydkj	,l-,l-egrk dyk egk- fgEeruxj] 18&12&2006
27-	1	dk0; e NUn	,e- ,u- egkfo|ky;] foluxj] 11&12&2006
28-	1	d- Hk- vkj vl d i;kx	,y- Mh- dyk egkfo|ky; 01&09&2007
29-	1	;f/kf"Bj	dkfynkl x:dy] egokj] 15&09&2007
30-	1	d- Hk vkj vl d i;kx	dyk egkfo|ky;] ckyflukj 25&09&2007
31-	1	शिशुपालवध और रत्नावली	irkih dyk egkfo|ky;] vejyh] 23&10&2007
32-	1	तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु	शेला भागवत् fo|kihB vgenkckn 08&03&08
33-	1	vf[ky Hkkjrh; cã lekt	ljr 20&04&08
34-	1	काव्य में शब्दार्थ, शब्दछाया और शब्दों की योग्यता	bMj dyk egkfo|ky; 11&09&2008
35-	1	सर्वशुक्ला सरस्वती	jk"Vh; lLdr lLFkku

		रमाकान्त शुक्ल	lLdr lxk"Bh 20&08&08
36-	1	lLdr lkfgR; e eu	,l-,l-egrk dyk egk- fgEeruxj] 26&09&08
37-	1	lLdr lkfgR; e gkL; jl	ujkMk dyk egkfo|ky; 27&09&2008
38&39	2	lkfgR; dh lonuk	vdknfed LVkQ dkyt jktdkV] 8&9 fnl- 2008
40-	1	'कविनो शब्द'	diMot vkVl dkyt 29&1&2005
41-	1	dk0;uh Hkk"kk	vkVl dkyt] gkyky] 19&01&2006
42-	1	dk0;uh ifjHkk"kk vu dfouk शब्द	lUV >fo;l dkyt 02&09&2006
43-		vk/kfud lLdr dforkek jk"Vh; pruk	,p-d-vkVl dkyt 08&09&2006
44-	1	dk0;ek Nn vu vydkj	,l-,l-egrk vkVl dkyt fgEeruxj] 18&12&06
45-	1	dk0;ek Nn	,e-,u-dkyt] foluxj 11&12&2006
46-	1	d] Hk] vl uk i;kxk	,y-Mh-vkVl dkyt]

			vgenkckn] 01&09&2007
47-	1	lR;oku ;f/kf"Bj	dykl x#dy] egok 15&09&2007
48-	1	d] Hk] vl uk i;kxk	vkVl dkyt ckykflukj 25&09&2007
49&50	2	शिशुपालवध अने रत्नावली	irkijk; vkVl dkyt vejyh] 23&10&2007

Mk- g"kno **माधव के शोधपत्र एवं संगोष्ठियाँ** –

1- dkfynkl vkj vk/kfudrk & dkfynkl lekjkg jk"Vh;
19&25 uoEcj] 1988

2- fo?u fouk;d xtifr dk Jki d fo?u & xtjkr fo-fo jkT;
शिक्षक संघ 14वाँ अधिवेशन कायावरोहण
¼G.S.U.C.S.T.A.) प्रकाशित सामीप्य में

3- fo".kLrfr vkj ikjkf.kd lUnHk & dkfynkl lekjkg] jk"Vh;
mTtu] 13 uoEcj] 1989

4- मुख्य पुराणों की श्रापकथाओं में अश्लीलता (G.S.U.C.S.T.A.½ jkT;
15वाँ अधिवेशन 23–25 दिसम्बर, 1989

5- enh;k dk0;;k=k ¼lLdr e½ & vk/kfud lLdr lkfgR; jk"Vh;
ifjlokn] lkxj fo-fo-, 5–7 दिसम्बर 1989, प्रकाशन –
nook.kh lokl] 1993

6- ykikenk & HkfDrl= xtjkrh lkfgR; ifj"kn] lkeukFk] jkT;
8&9 eb] 1989

7- ^mÙkjjkepfjre* ^xukg vkj ltk* ¼Crime and Punishment½ jkT;
ukVd d ifjlokn e & lLdr lok lfefr] vgenkckn
8&9 fnlEcj] 1989

'V' (D.P. Uni Pub.) Nov - Dec. pp 47-49

8- Mk- राधावल्लभव त्रिपाठी और केशवचन्द्र दाश – एक मूल्यांकन jk"Vh;
txUuk;kÙkj lLdr lkfgR; S.P. Uni. 28&29 tuojh 1991
vtJk ¼y[kuÅ½ ¼tykb&vDVcj&1983½ i- 33&38

9- Jhen Hkxon xhrk e lkFkd lEck/ku & lLdr lok lfefr] jk"Vh;
eEcb] 17&19 vDVcj] 1991

10- कालिदास और भारवी का शरद् रजत जयंती महोत्सव jkT;
lehukj & Hkkjrh; fo|k e.My ljr 25&26 vDVcj 1991
lkcjerh&99] i- 12&15 vuie dkfynkl
¼lLdr vdkneh xk/khuxj½ i- 249&254

11- dkfynkl dk vk/kfud dfork ij iHkko & dkfynkl lekjkg jk"Vh;
24&30 fnlEcj 1930

12- vk/kfud lLdr dfork e ekuo vkj ie dh vfHk0;fDr & jkT;
¼G.S.U.C.S.T.A.) 16वाँ अधिवेशन, 1–3 अप्रैल, साबरमती–97
i- 32&34

13- ^ejhfpdk* vk/kfud lLdr e xtjkr dk ,d vuk[kk ;kxnku jkT;

¼G.S.U.C.S.T.A.) 20वाँ अधिवेशन

14- Origin and development of the Divinity of Krishna in Bhagvatapuran in Bhagavata seminar by m.s. Uni. 18-20 March 1995 — jk"Vh;

15- vtuoeno& lLdr d uk/kik= foopd S.U.A.S.T. ifj"kn अधिवेशन 2–3 मार्च 1996 प्रकाशन – सामीप्य viy&flrEcj 1996] i- 78&80 — jkT;

16- Philosophy of curse in paranas - In A.I.O.C. 38th session 1-3 Nov. 1996 Published in pathik (Guj. Translation) Sept. 1996, P. 1-4 — jk"Vh;

17- vkpk; nhidjdr ^i"iktyh* & xk/kh jk"Vh; lfeukj & lLdr lkfgR; vdkneh] ikjcUnj] 7&9 tu- 1996 — jk"Vh;

18- vk/kfud lLdr dforkvk e ie dh vfHkO;fDr & Lokr«;kÙkj lLdr lkfgR; ifjlokn & bMj egk-] 4&5 vDV- 1997 — jkT;

19- तंत्रशास्त्रों में f=dk.k dk irhd & S.U.A.S.T. ifj"kn rhljk अधिवेशन 26–28 दिस-] 1987 lkehl; ¼B.J. Research Institute's Journal½ viy&flr- 1997] i- 63&65 — jkT;

20- तन्त्रशास्त्रों में गुरु–शिष्य और विद्या के बारे में विचार, संस्कृत शास्त्रों में निर्देश शिक्षण के आदर्श – अनुस्नातक विभाग, S.P. Uni. 30 uoEcj 1997 'V' if=dk] tuojh&viy 1998] i- 51&53] lkcjerh — jkT;

¼H.K.College Journal½ 1998] i- 31&33] lkehl; & vi;y 90

ekp 91] i- 24&26

21- शिवतांडवस्त्रोत – संस्कृत साहित्य में भगवान शिव 'परिसंवाद dkfynkl x#dy vkj lLdr lkfgR; vdkneh] egok 12&14 flrEcj] 1999 jkT;

22- ^xk;=heU=* rkfU=d nf"V l A.I.O.C. 39ok lk= cjkMk] 13&15 vDVcj] 1998 jk"Vh;

23- jE;k.kh oh{; & lkUn;Z dh xkn vuHkfr S.U.A.T.A. ifj"kn 5वाँ अधिवेशन, भावनगर 25–27 दिसम्बर 1999, प्रकाशन, vUo;] vDVcj 2000] i- 25&34 jkT;

24- Sanskrit in 21st century : Prospects and possibilities' Submitted paper in seminar of san. Lit. at Mainpuri (U.P.) 26-28 Nov. 99 Ftd. V. (Allahabad) pp 65-69, Indian Lit. 2000, 199th issue pp. 191-197 jk"Vh;

25- 'शिव का क्रोधाग्नि' Criticism of the first verse of Amaru satakam संस्कृत काव्यशास्त्र परिसंवाद S.P. Uni. 28–30 जनवरी 1999, प्रकाशित स्वाध्याय – 2000 jkT;

26- संस्कृत सम्भाषण – 'माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक शालाओं में संस्कृत शिक्षण' सेमीनार dyk egkfo|ky;] [kMcgk & lLdr lkfgR; vdkneh] 5 tuojh 1999 jkT;

27- Varnoane matrkao in the contect of sanskrit tantra lLdr jkT;

lehukj] lkjk"V fo-fo-] 24&26 Qjojh 2000

28- ईशा–केशवचन्द्र दास की कविता का मूल्यांकन (संस्कृत में) jk"Vh;

vk/kfud lLdr lxk"Bh] lkxj fo-fo-] 25&27 tykb 2000

सागरिका विशेषांक, 2000

29- 'श्रीकृष्ण शरणं मम्' भागवत परिसंवाद में तांत्रिक दृष्टि से – jkT;

dkfynkl x#dy 1&2 flr- 2000 Lok/;k; ¼M.S. Uni.½

भागवत विशेषांक, पृ- 70&90

30- ^eDrd vkj thou*] ifFkd] tu-&Qj-] 2002] i- 16&21 jkT;

ckVkn egkfo|ky;

31- Tantragamomtan siva-sivanun, Advaita (S.U.A.S.T.) jkT;

परिषद् तीसरा अधिवेशन, दिसम्बर, 1997

lkehl;&viy&ekp 98&99] i- 47&49

32- ^xhfr/khoje* vtJk bykgkckn] tu&vDV-] 1997] i- 78&81

^xhfr/khoje* & vk/kfud lonuk jthr jkxdk0;e* ik- Mk-

,e- oh- दोशी (Felictiation Volume 2000 pp. 223-225)

33- lLdr lkfgR; e vfHkuo i;kx% rkUdk dk0; ykx ikUtuk

Vol II 1997, pp. 127-130 lkeuL;e viy 1992] i- 6&8

34- 'सांप्रतिक संस्कृत काव्यशास्त्र आ/kfudr;k lnHk vUrjk"Vh;

Sanskrit confrence - Delhi 2002, Sagrika, 2002, pp. 58-71

35- ^mik[;kuekfydk* lkefon] eb 2000] i- 84&88

36- Modern sanskrit poetry of Gujrat upto the end of 20th century published in contribution of Gujrat to sanskrit Lit. (Dr. M.I. Prajapati Feliccation) volume 1998, pp. 337-342

37- oreku e vk/kfud lLdr dfork ,o xtjkr dk lLdr e ;kxnku] vkpk; Jh vfHkuUnu xUFk] 1998] नाग प्रकाशन, दिल्ली, पृ- 151&156

38- vk/kfud lLdr dk0; dh leh{kk dN pukfr;k & jk"Vh; lfeukj Modern sanskrit poetry and poetics lLdr foHkkx S.P. Uni.] ekp 2001 nd] ¼bykgkckn½ BN, pp 38-44 tykb&fnlEcj 2000 — jk"Vh;

39- ^rU= vkj xtjkr e mudk v/;;u* jk"Vh; lehukj Philosophy science culture and religion 5-7 Sep. 2000 — jk"Vh;

40- HkVV eFkjkukFk th dh xty & vf[ky Hkkjrh; fo|k lxk"Bh] t;ij] 3&4 viy 2004 — jk"Vh;

41- 'तन्त्र शास्त्र और सौन्दर्य शास्त्र सागर, 2005 — jk"Vh;

42- Haiku and saundaryasastra on the Traditional of Aesthetics in Indian literature and sastras, dept. of sanskrit Sagar uni. 7-8 feb. 2005 — jk"Vh;

43- Modern sanskrit poetry and Ramayana in national seminar on Impact of the Ramayana and Mahabharat, S.U.Uni. Rajkot, 24-25 Feb. 2005 — jk"Vh;

44- Jh l= & Jh fo|k & Jh ;U= & dkfynkl x#dy egok]jkT;
6&8 flrEcj 2005

45- 'चान्दनीना नवला रूप' संस्कृत कार्यशाला चारूत्तर jkT;
lLdr ifj"kn dMh] 28&29 tuojh] 2006

46- ^f=ijk Vhdk* lkUn;ygjh] lkjk"V fo-fo- jktdkV] lehukj jkT;
lLdr e] lkjk"V dk inku] 4&5 Qjojh] 2006

47- 'वैश्विकrk dh vkj lLdr dforkk*] nd if=dk

48- 'संस्कृतस्य साम्प्रतिक काले आवश्यकता', – सोमनाथ वि- fo- jkT;
20–21 जुलाई 2006, प्रकाशित सोमनाथ वि-fo- vxLr 2007

49- 'मेघदूत का आध्यात्मिक अर्थघटन' शोधपत्र कालिदास समारोह jk"Vh;
2&4 uoEcj] 2006

50- 'शिवसकल्प सूक्त' शोधपत्र कालिदास समारोह jk"Vh;
vgenkckn] 13&03&2007

51- 'सामाजिक चेतना और गुजरात और संस्कृत कविता' शोधपत्र jk"Vh;
fnYyh fo-fo-] 31&3&2007 l 02&04&2007

52- 'अम्बाजी का मन्त्रोद्धार और रहस्य' शोधपत्र संस्कृत संस्कृति jkT;
Lok/;k; lLFkku] vEckth] 3&9 ekp 2007

53- ^Loluokl onÙke & Lug dh ukuk cukb dk ukVd* Lok/;k;
प्रकाशित 1–4, अक्टूबर, 3 मई 2007

54- ^Loluokl onÙke* vk/;kfRed vFk?kVu & vf[ky Hkkjrh; jk"Vh;

ifj lokn ufM;kn] lLdr lok lfefr] 19 flrEcj 2007

55- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' तान्त्रिक दृष्टि से – शोधपत्र – अखिल jk"Vh;
Hkkjrh; dkfynkl lekjkg foØe fo-fo- 25&11&2007
प्रकाशित पुनर्वा

56- ^lLdr dfork e ifrikfnr ;x dk ;FkkFk] lkpkj ¼jkt-½ jkT;
26&12&2007

57- 'संस्कृत में परंपरा और आधुनिकता' शोधपत्र आधुनिd lLdr jk"Vh;
y[kd lEeyu] tk/kij fo-fo-] 27&28 tuojh 2008

58- ^Hkkl d :idk dk eukoKkfud vkj vk/;kfRed vFk?kVu* jkT;
शोधपत्र – प्रस्तुति O.H.P. lfØ; dyk egkfo|ky;]
ckVkn] 17&02&2008

59- शाक्तदर्शन – शोधपत्र – संस्कृत संस्कृति स्वाध्याय संस्Fkku jkT;
eglk.kk] 24&03&2008

60- शाक्त उपनिषदों – शोधपत्र – समर्पण महाविद्यालय jkT;
xk/khuxj 26&03&2008

61- 'स्त्रोत का विवेचन' शोधपत्र – म्यु- dyk vkj vcy egkfo|ky; jkT;
eglk.kk lLdr lLdfr Lok/;k; lLFkku] 30&03&2008

62- vk/kfudrkokn vkर सास्वतता – प्रकाशित दृक्, जुलाई से दिस- jkT;
i- 97&99

63- प्राचीन कृतियों में आधुनिक अर्थबोध, शोधपत्र 44वाँ A.I.O.C. jk"Vh;

d :{k=] tykb 28&03&2008

64- 'शाक्त तंत्र में भक्ति' शोधपत्र सेमीनार jkT;

Bhakti and Philosphy at St. xaviars college, Ahmedabad. Aug.23

65- 'रामायण और आधुनिक संस्कृत साहित्य – शोधपत्र jkT;

t-d-dkfV;k egkfo|ky;] dkuij 04&10&2008

66- ^lLdr ;FkkFkL; fu:i.ke* jk"Vh; lLdr lLFkku] jk"Vh;

t;ij e ^vk/kfud lLdr* ij vk;kftr lxk"Bh e

iस्तुत शोधपत्र, 10–11 जनवरी, 2009

67- ^ljy ykxrk Üykduk xgu vFk* Lok/;k;

Qjojh&uoEcj] 2007] i- 57&64

68- 'कामशास्त्र अने लग्नजीवन', 'लग्न एक पवित्र सायुज्य'

ग्रन्थ में प्रकाशित, 30–05–2009

69- ^dkfynkluh thoudyk* Lokeh foodkuUn lokn; cd jkT;

,T;dशन कॉलेज, मेहसाणा में प्रस्तुत शोधपत्र

13&09&2009 ,d cBd e lHkk/;{k

70- 'तन्त्रदर्शन के मूलस्त्रोत' खेरालु कॉलेज में एकदिवसीय jkT;

सेमिनार में प्रस्तुत शोधपत्र, 04–09–2010

71- ^xhrk vu eutelJV* vkur lLdr lLdfr Lok/;k; jkT;

lLFkku }kjk vायोजित 'गीतादर्शन सेमिनार' में प्रस्तुत

शोधपत्र उवारसद, 17–01–2010

72- ^vk/kfud lLdr x|* ij e-l-;fuoflVh e vk;kftr jk"Vh;

सेमीनार में प्रस्तुत शोधपत्र

73- 'प्रशिष्ट संस्कृत के सन्दर्भ में आधुनिक संस्कृत साहित्य' jk"Vh;

शामलाजी कॉलेज में आयाजित संगोष्ठी में शोधपत्र एवं

,d cBd e lHkk/;{k] 27&02&2010

74- 'तन्त्रशास्त्रमां गुजरातनुं योगदान' विजापुर आर्ट्स कॉलेज में jkT;

^xtjkrh fo}kuku lLdrek ;kxnku* fo"k; ij ifjlokn e

ie[k oä0;

75- 'तान्त्रिक दृष्टि से मन्त्र के अर्थ और वैश्विक दf"V l dY;k.k*

Journal of Gujrat Research Society Vol. IV No. 3-4

July-Dec. 2009, P.P. 24-27

76- ^dkfynkl dh eU=dfork* A.I.O.C. jk"Vh;

तिरुपति में प्रस्तुत शोधपत्र 2–4 जून 2010

t;eUrfeJ ikfjrkf"kd

77- ^dk{k.k ohf{kre* leh{kk jk"Vh; lLdr lLFkku] jk"Vh;

fnYyh 23&08&2010

78- ^«;Ecdeu= dk rkfU=d vFk?kVu* jk"Vh; on ifjlokn* jk"Vh;

गुजरात युनिवर्सिटी में प्रस्तुत शोधपत्र में 2010

79- ^lLdr lHkkf"krkek ykdpruk vkj gdkjkRed vfHkxe* jkT;

fgEeruxj vkVl dkyt lxk"Bh e iस्तुत शोधपत्र 4–12–2010

80- ^dkfynkl u lkfgR;* lkEir leL;kvkuk mdyuk lnHkek* jkT;

कपडवंज आर्ट्स कॉलेज में प्रस्तुत शोधपत्र, 05–02–2011

81- ^i;koj.ku vk/;kfRed Lo:i* 05&03&2011 jkT;

eglk.kk vkV l dkyt d ifjlj e vkur lLdr&lLdfr

Lok/;k; lLFkku ifjlokn e ie[k oä0; ¼Lok/;k; Qj- 2011½

82- 'नव्य काव्यशास्त्र' नरोडा आर्ट्स कॉलेज में आयोजित राष्ट्रीय jk"Vh;

ifjlokn e v/;{kh; iopu] 06&03&2011

83- ^ofnd eU=k dk rkfU=d vFk?kVu* lkeukFk VLV o ;fuofl Vh jk"Vh;

}kjk vk;ोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोधपत्र 3–5 सित- 2011

84- ^enh;k dk0;;k=k* jk"Vh; lLdr lLFkku] t;ij dh jk"Vh; jk"Vh;

संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र, एक बैठक की अध्यक्षता

12&14 vDVcj] 2011

85- ^vk/kfud lLdr ukVd* jk"Vh;

'Sanskrit plays of post Independence period'

fo"k; ij lxk"Bh e e[;kfrfFk d :i e

y[k&iLrfr 13&12&2011

86- 'आधुनिक संस्कृत कवितायाम् इन्द्रियग्राह्यता इन्द्रियव्यत्त्सयश्च' vUrjk"Vh;

विश्व संस्कृत सम्मेलन, दिल्ली, जर्मन युनि- से लेख प्रकाशित

5&10 tuojh] 2012

87- ^ePNdfVdu iueY;kdu* diMot vkV l dkyt] jkT;

04&12&2012

88- आधुनिक काव्यशास्त्र में कृतिनिष्ठ विवेचन jkT;

28&08&2012] l-i-;fuofl Vh] Hkk"kkHkou

89- ^Hkkjrh; ijk.kk* lrykl.kk dkyt ifjlokn e v/;{kh; iopu jkT;

90- 'प्रज्ञा' पूर्णप्रज्ञ संशोधन मन्दिर बेंगलुरु द्वारा प्रकाशित शोधपत्रिका

7, 2010 V(I) VII 978-93-81275-22-1 में पश्चन्तीवाण्याः कविः

dkfynkl¼ ¼PP 129-131½ ^x#efgEu¼ Üykd L; rU=kFk¼ ¼125&128½

दो शोधपत्र प्रकाशित

91- ओडीशा साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय संगोष्ठी jk"Vh;

'Kalidasa and Orissa' txUukFkijh 10&1&14 & 12&1&14 e

'कालिदास का ओरिस्सा के साथ सम्बन्ध' विषय पर शोधपत्र

92- lLdr lkfgR; vdkneh }kjk ,p-d-vkVl dkyt e jkT;

^lLdr lkfgR;ek jk"Vh; ldYiuk* fo"k; ij 27&1&14 vkj

28&1&14 f}fnolh; ifjlokn e rtK] e[koäk ,o v/;{k

'संस्कृत शास्त्रोमां राष्ट्रीय संकल्पना' विषय पर शोधपत्र

93- Journal of the Gujrat Research Society

Jan-June 2013 Vol. LV.III Issue 0374-8588 No.1-2

शोधपत्र 'मानव देहनो वैदिक संस्कृतिमां संदर्भ' शोधपत्र प्रकाशित

94- lkeukFk lLdr विश्वविद्यालय द्वारा अहमदाबाद में आयोजित jk"Vh;

संगोष्ठी में सत्यव्रत शास्त्रीजी का कवित्व विषय पर शोधपत्र

95- jk"Vh; lLdr lLFkku y[kuÅ ifjlj e ^vk/kfud lLdr jk"Vh;

कविता में सांप्रत समस्याएँ' विषय पर शोधपत्र दि-12&14 ekp]

2014] ,d l= dk v/;{k dk :i esa lok

96- वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन द्वारा आयोजित 'वेदों की गवेषण' jkT;

fo"k; ij vk;kftr laxks"Bh esa ^^ofnd ikdfr fpru vu

तृचभास्कर' विषय पर शोधपत्र

97- Journal of the Gujrat Research Society Vol. LV III

No. 3-4 July-Dec. 2013 ISSN 0374-8588 June 2014

^Hkxonxhrkuk lnHkksZ ePNdfVde* P.P. 93-96

98- 'Sraddha ISSN 2321-273 x 2012-13'

vk/kfud lLdr dforkvksa;ke bfUn;xkárk bfUn;

व्यत्ययश्च, पृ॰ 113–118, अगस्त 2014 में प्रकाशित

99- vk.kn vkVlZ dkyst esa laxks"Bh esa ^lLdr ,CIM ukVd* jkT;

Key note address

100- ,p-d- vkVlZ dkyst esa ^lLdr lkfgR;esa cky tUe] cky jkT;

mNj vu dGo.kh* fo"k;d ifjlokn esa ofnd lkfgR; esa

बाल जन्म, संवर्धन और शिक्षण पर 'Key note address'

101- lkfgR; vdknehs d }kjk diMot vkVlZ dkyst esa vk;kftr jk"Vh;

संगोष्ठी में 'विश्व बाजारवाद और संस्कृतकविता' पर शोधपत्र

ie[k oäk

102- ecbZ ,l-,u-Mh-Vh-;fuofIVh esa 23&02&2015 dh laxks"Bh esa jk"Vh;

'संस्कृत उपन्यासों का समाज के साथ सम्बन्ध' पर शोधपत्र

103- nho egkfo|ky; e 28 Qjojh 2015 dk e/;dkyhu Hkkjrh; jk"Vh; lkfgR; e ch t oä0;

प्रशस्ति पत्र –

vkpk; g"kno ek/ko dh dforkvk dk jl iku dju oky fo}kuk u mudh dk0; jpukvk d ckj e vudkud lfDr;k e viuk vuHko idV fd;k gA egku vkpk; Mk- jk/kkoYyHk f=ikBh u Mk- g"kno ek/ko d dk0; dk vkj mudh uru fopkj/kkjk dk ,d foy{k.k dfoRo crkr g, dgk g fd &

^^vU/kkLr do;k ;"kk iUFkk% {k..k% ijHkor
ij"kk r ;nkØkUr% iUFkkLr dfod¥tjk%AA

bfr uhyd.Bnhf{krlDR;lulkj.k loFkk dfod¥tjrk Lok iek.kf;r lUu)%A :<ekxifjR;kx :<huk /olk; leRlkg p loFkk vuu lLdrdk0;ijEijk ifjR;DrkA vr ,o ekfydk·; dfou ikjEikfjd%A

uruil;kxfop{k.kk ek/kodfofoy{k.k
do;fr] foy{k p fo?kr if.Mr tueAA

Mk- हर्षदेव माधव के काव्य में स्थान विशष या व्यक्ति विशेष के उल्लेख की डॉ- vfHkjkt राजेन्द्र मिश्र ने इस प्रकार प्रशंसा की है –

^^;{k Vh- ,l- इलियटमहोदयांगंगाहिमालय – प्रभृति भारतीय प्रतीकाहरणवशाल् आंग्लकविषु loFkk foy{k.kk x.;r rFko g"kno ek/kok·fi Hkkjrrj cgjk"VlonukfU Lok;Ùkhdor orekulLdrdk0;dkj"k foy{k.k ,o irh;r----------lok·fi cU/kk uok% lok vfHk0;Dr;k·fi uouok%A ifrin ifjy{;r dfodepkrjhA leYylfr ifrdfor ifrHkklelJe"k%A**

itkc d Mk- nonÙk Hkêh bl idkj dgr g &

नवं काव्यं नवं शिल्पं नवं oLrq uok fo|kA

नवं यशः नवं स्थानं प्रापस्यतीति दृढ़ा मतिः।।

काव्यरत्नमिदं नव्यं यशः शुभ्र तनोतु ते ।

euLlq lLd`rKkuk djkrq p emn i jkuAA

fnYyh d Mk- सत्यव्रत शास्त्री माधवजी की शैली के संदर्भ में इस प्रकार लिखते हैं–

v/kukrukhikphuPNUnkfवहीना शैली नैकाघुनिकव्यापारवदत्र भवतोपात्तेति शोभनतरम्। lLdrok³e; uohui;kxkH ikR lkguegfUrA rukL; lkodkfydRo lrjkeiknofyr HkofrA काव्यद्वये (अलकनन्दा – शब्दानां – संग्रहयोः) नानावैदेशिकग्रन्थानां तत्पात्राणां तत्सङ्गीतादीनां च यत्र तत्रोल्लेखवैशिष्ट; dk0;}; pk:rk n/kkfrA lLdrxFk"k ik;k urnoykD;r bfrA iujfi HkonH;k ukdku lk/koknku lei;u Hkork lofo/k e³xy p iHkpj.kkou/;k;u fojekE;geA

Mk- g"kno ek/ko d ex;k dk0;lxg d fo"k; e ^jk"Voh.kk* ekfld if=dk e Mk- ओमप्रकाश गुप्ता अपने शब्दों में इस प्रकार बताते हैं –"पिछले दो दशकों से संस्कृत एवं गुजराती dk0; jpuk e lfØ; dfo g"kno ek/ko dh ltu ;k=k dk prFk i"i g ^ex;k*A nkuk gh Hkk"kkvk d ifrf"Br lkef;dk e LFkku ikl ;g ;ok dfo xtjkr e lLdr dfork dk ekgky बनाने के लिए बराबर प्रयत्नशील है। परम्पराबद्ध संस्कृत कविता को आधुनिक वैश्विक सन्दर्भों से tkMu dk dfo dk dk0;&i#"kkFk lpep lkFkd gA**

vkpk; g"kno ek/ko dh dk0; ijEijk e vk/kfud nf"Vdk.k uru gA bld fo"k; ij oreku fo}kuk e okjk.klh d Mk- jokiz lkn f}onh dk er bl idkj g &

'अत्र भवतामूर्ज्जस्विनी रचना शब्दानां निर्मक्षिकेषु यथासमयं जनेतानेनावाषि। क्लैव्यस्य नान्दीति ;k jpuk rk ik.korh foHkko;kfeA lk;dky bfr jpuk;k--------------- i;kxkH irh;ekuPNk;kel.kkA

HkXuाशाः पर्यटका इयं या कृति अत्र या लक्षणा विच्छितिस्ता ध्वयनोऽपि नमस्कुर्वन्ति। इतिहासोऽपि bfr lR;fnX/kk jpukA ,r"kk ; Hkork dfode.k·Ttyhu c?uhe%A v|kfi Hkorke lk/kkj.kh क्षमतामनुभ्झूय ध्वंसावशेषमिमं सविशेषमेदूरं पश्यामः।'

vkpk;Z g"kZno ek/ko vokphu lLdr lkfgR; d lTtudkjk e l ,d gA ,lk जगन्नाथपुरी संस्कृत विश्वविद्यालय के अध्यक्ष श्री केशवचन्द्र दास लिखते हैं –

^^lLdrdk0;jpuk;k% lLdkj dke;ekuk ; do;% vx vkxrk% r"k vU;re% Mk-g"kno ek/ko%A dfoj; xtjHkk"kk;k cgfu dk0;kfu fuek; iflf)% iklrokuA lifr ijh{k.kfujh{k.kkRed शैल्यां संस्कृते काव्यानि निर्मातुं कृतसंकल्पो विद्यते।''

xtjkr e lLdr d fo}ku Mk- jktUn ukukoVh Hkh Mk- हर्षदेव माधव की प्रशंसा करते हुए fy[kr g & ^^bu lHkh dfo;k e ej fopkj l lLdr dk0; ijEijk dh nf"V l vf/kd महत्वपूर्ण और विशिष्ट कवि हैं हर्षदेव माधव। संस्कृत काव्यरचना की संपूर्ण परम्परा को हटाके ekMu dk icy i;kl g"kno ek/ko dh dfork e gA g"kno ;ok dfo g] xtjkrh e Hkh dk0; रचना करते हैं और आधुनिक विश्व कविता के प्रवाहों से परिच; cuk; j[kr gA blfy, mudh xtjkrh vkj lLdr nkuk dforkvk e vk/kfudrk d lHkh y{k.k icyrk l mHkjr g vkj lLdr e bl idkj dh jpuk, dju okyk ;g dnkfpr vdyk dfo gA**

r`rh; v/;k;
Mk- g"kZnso ek/ko d s dk0;k s e s fo"k;xr vk/kqfudrk

Mk- g"kZno ek/ko vk/kfud lLdr lkfgR; d ie[k vk/kkj LrEHk gA vk/kfud lLdr lkfgR; e Mk- माधव आधुनिक प्रगतिशील कवियों एवं समीक्षकों के मध्य निर्विवाद रूप से प्रतिष्ठित हैं। उनकी रचनाओं में आधुनिकता एवं नवीन प्रयोग का समावेश होता है। डा- ek/ko dh jpuk, v/kukre ekuo thou dh xgu lonukvk dk fp=.k djrh gA Mk- ek/ko viu dk0;k e u;&u; i;kx djr jgr gA oLrr% Mk- हर्षदेव माधव ऐसे अपारम्परिक कवि हैं जो पाश्चात्य thou ,o lekt l lUnHk ydj dfork x<r g Hky gh og ckr thou dk dMok lp gh D;k u gkA

oreku thou dh vk/kfud ifjfLFkfr;k ,o ekuo eu dh eukoKkfud nf"V dk Mk- ek/ko u mRd"V :i l viu dk0; e mrkjk gA nfud thou e ?kfVr gku okyh ?kVuk, vkj iofRr;k ftudk lkeuk ge ifrfnu djr g] budk fp=.k Mk- ek/ko u vR;Ur lgt Hkk"kk vkj vUnkt e iLrr fd;k gA

ik- jk/kkoYyHk f=ikBh dgr g fd ^^g"kno dh dfork d uiF;xg e ; lkjh ijEijk;] ekU;rk; o vo/kkj.kk; mifLFkr gA o uo&lf"V d fy, ;Fkkolj budk vkgokgu djr gA**[1]

?kj] iरिवार, समाज, देश, विदेश, पर्यावरण, राजनीति, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, धर्म, आध्यात्म, नारी संवेदना, मानवीय मूल्य, वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, औद्योगीकरण, इलेक्ट्रानिक उपकरण, lkekftd fonirk] o)koLFkk vkfn ,lk dkbl Hkh fo"k; ugh g ftl ij Mk- g"kno ek/ko dh y[kuh u pyh gkA iLrr v/;k; e Mk- ek/ko }kjk fofHkUu fo"k;k ij fy[kh xbl jpukvk dk lfEefyr fd;k x;k gA

¼1½ i;koj.k &

^ifjr% fLFkr vkoj.k i;koj.k* vFkkr gekj vklikl fLFkr idfrinÙk thou;kX; vkoj.k gh i;koj.k gA tcl eu"; u iFoh ij tUe fy;k g rc l mldk i;koj.k l u doy ?kfu"B lc/k jgk g] cfYd og i;koj.k e gh ft;k gA eu"; dk iR;d igy i;koj.k l tMk gvk g] idfr l tk ge iklr gkrk g ;Fkk & ok;] ty] enk] ikni] ik.kh lHkh lfEefyr :i l i;koj.k dh jpuk djr gA

पारिभाषिक रूप में 'पर्यावरण' शब्द जीवों की अनुक्रियाओं को प्रभावित करने वाली समस्त Hkkfrd rFkk tfod ifjfLFkfr;k dk ;kx g] bl tho e.My dgk tk ldrk gA i;koj.k e o lc iHkko vUrfufgr gkr g] ftudk vfLrRo ;fn eu"; dk iFoh l i.k :i l gVk fn;k जाय, तब भी बना रहता है। सामान्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि ''पर्यावरण उस सब को कहते g tk mle 0;kIr okrkoj.k dk fdUgh oLrvk dk fudV l ?kj g rFkk ml iR;{k :i l iHkkfor djrk gA**

le; d lkFk&lkFk i;koj.k dk {k= Hkh c<rk vkj cnyrk jgk gA vkfne ;x e पर्यावरण में पृथ्वी की भूमि, वायु और जल तथा जैविक समुदाय शामिल हुआ करते थे। जैसे–जैसे le; chrrk x;k blkuk u viuh lkekftd] vkfFkd rFkk jktuhfrd xfrfof/k;k l i;koj.k d {k= dk 0;kid cuk fn;k gA

tyok; ifjoru 21oh lnh dh lcl cMh tfVy pukfr;k e l ,d gA bld iHkko l कोई देश अछूता नहीं है तथा इससे जुड़ी चुनौतियों से कोई भी देश अकेले नहीं निपट सकता है। tyok; ifjoru dk fodkl] vkink vkj fu/kurk l iR;{k lc/k jgk है। सतत् और समावेशी fodkl e bldh Hkfedk egRoi.k gA

Mk- g"kno ek/ko dgr g fd ^^lenkz·fi thofr eu";orA**[2] तब वे वैश्विक व्यवस्था में gekj i;koj.k d ie[k vk/kkj iorkj ouk vkj ufn;k dk thfor ik.kh dk ntk inku djr gA Mk- ek/ko u Hkh len dh ryuk thfor eu"; l djr g, ekuo thou dh 0;oLFkk dk len d lkFk le:i crkr g, ;g Li"V fd;k g fd leL;k, doy ekuo thou e gh ugh g] cfYd ftl idkj dh leL;k, ekuo thou e gkrh g olh gh leL;k, bl idfr e Hkh vuUr o"kk l v[k.M pyh vk jgh g] fdUr bu lcd mijkr idfr dk vnHkr lketL; ekuo dk ijLij सामाजिक बनने के लिए हमेशा प्रेरित करता रहेगा। जैसे समुद्र का मानवीकरण यहाँ प्राप्त होता है, ol gh o.kk:<xfUFk e Mk- ek/ko u ekuo dk lenhdj.k fd;k g vkj ekuo thou dh fofHkUu leL;kvk dk len d ifji{; e mYyf[kr djr g, mud lek/kku iLrr fd, gA tlk fd o Li"V dgr g &

''हे समुद्र ! /इयद्भिर्वारिम्भिर्न लभेथाः/जलराशित्वम्।।
नदीनां जलानि/लुण्ठयित्वा/जलाराशिर्जातोऽयं शठः।''[3]

Hkkjr vHkh विकासशील देश ही है और अन्य अनेक देशों की तरह यह भी अनेक पर्यावरणीय leL;kvk l t> jgk gA vkfFkd fodkl vkj rduhdh Hkh ikdfrd l lk/kuk dk cjh rjg nkgu dj jg g] ftldk ifj.kke ;g gk jgk g fd ok;] ty vkj ukfHkdh; in"k.k c<rk tk jgk gA

Mk- ek/ko dgr g fd &

''सूर्यातपः/कूपमवर्तीय/पश्यति जले नववधोर्मुख्/
ficfr lr".kk@rL;k gkL;eA**[4]

यहाँ लेखक का तात्पर्य धूप की अतिशय उष्णता से है, किन्तु मुख्य रूप से जिसे लक्ष्य किया x;k g og g ekuohdr i;koj.k f[kyokM] D;kfd dkb Hkh dvk cuk;k tkrk g rk mldk

उद्देश्य होता है कि पीने योग्य जल की उपलब्धि, किन्तु मानव ने अपने हितैषी पर्यावरण को पिछले dN le; e bruk fNUu&fHkUu fd;k g fd dfo dh mijkDr ifDr;k iR;{k lh fn[kkb nu yxrh g vkj fQj Hkh ge nk"k mlI /ki dk gh nr g vkj ;g dgr g fd bl o"k l; fdruk तप रहा है। वस्तुतः हमने अपने जलाशयों को कितना छिन्न–भिन्न कर दिया है। यह हमारा दायित्व g fd ge mudk lj{k.k idfr d lkFk&lkFk djA

rQku] co.Mj dk ge idfrtfur ekur g] yfdu dfo dk dguk g fd ;g idfrtfur ugh g cfYd &

'एकश्चित्रशलभः/पुष्पौष्ठपानमग्नोः/वन वल्लीविश्रम्भकथाश्रवणव्यस्तोऽस्ति/

dnkfpr rL; pj.klY¥kpj.k@{kfHkrfpÙkk Hkon lkA**[5]

vFkkr lxf/kr en lehj dk foHkh"kd rQku e cnyu oky gee l gh dN gA tk ou e tkdj dBkjk?kkr l mudk fonh.k dj jg g] ftu iRrk l Ndj gok foJkfr dk nj dj nrh g] mlh gok l vi{kk dh tkrh g fd &

^^okgupkydk@u=jfggrkLlfUr@

पवनाय कथयतु यद्/गृहं प्रविशेत्तूष्णीं भूत्वेति।''[6]

ekuo dk dgr g fd lkekftd ik.kh g] fdUr bl i;koj.k d lkFk e eu"; u viuk lkekftd nkf;Ro dc fuHkk;k gA i;koj.k d ltx igjh o{kk dk ;fn fdlh u gkfu igpk;h g rk mldk lcl cMk nk"k ekuo dk gA tlk fd Mk- ek/ko u dgk g&

''यदा तक्षकस्तव शाखाच्छेदं करोति

rnk Ro ifjnouk djkf"kA**[7]

o{k d fcuk ou dh dYiuk ugh dh tk ldrh g vkj fcuk ou d ouokl doy ,d Lolu e iklr gku okyk vkun gh g] tlk fd Mk- ek/ko dh Hkh dYiuk ouokl dk n[krh g &

^^e;k á% Lolu n"Vs ;u

e;k ouokl% ikIr%A**[8]

वनों की बेतहाशा कटाई से दुःखी Mk- ek/ko dgrs gSa fd &

^^Lurg lsof/krk ykfyrk% ikfyrk%@ lk[;nkuu o{k/krk ekuok%A@

तु कुठौरः सदा नाशिताः पादपाः/स्वार्थमग्नं परैर्हन्यते भारतम्।''[9]

vk|kxhdj.k ,o uxjh;dj.k d uke ij oreku e dh tk jgh iMk dh dVkbZ Hkfo"; e xgjk ldV mRiUu dju okyh gA Mk- माधव इस दिशा में चिन्तित होकर कहते हैं कि –

^^bU/kukUo"k.kS o{k?kkrk% d rk@;U=o/|k ârk xke lonukA@

ekxfuekZ.kdk;s d"kefPNUrk@oU; thokUrd ?kkrd Hkkjre~A**[10]

vFkkr bU/ku d fy, fnu&ifrfnu ouk dh dVkbZ tkjh g] uxjh;dj.k dh ifØ;k d अन्तर्गत मार्ग–निर्माण हेतु कृषि भूमि को समाप्त किया जा रहा है, कृषि भूमि पर ही आलीशान अट्टालिकाएँ निर्मित की जा रही हैं। यह न सिर्फ इन्सान अपितु पशुओं एवं वन्य जीवों के लिए भी ?kkrd gA

ekuo dh fodkl ifØ;k, i;koj.k vkj ikfjfLFkfrdh d lHkh pØk dk iHkkfor dj jgh gA rth l c<rh tul[;k o vk|kxhdj.k d nkj e vf/kd l vf/kd lfo/kk vkj तकनीकी विकास प्राप्त करने के लिए मनुष्य प्रकृति का भरपूर दोहन कर रहा है, परन्तु हम निश्चित rkj ij ;g ugh dg ldr g fd gekjk LFkk;h fodkl gk jgk g] D;kfd ikfjfLFkfrdh r= e असंतुलन बहुत तेजी से हो रहा है। मनुष्य के बेतहाशा विकास के लोभ ने प्रकृति निर्मित ikfjfLFkfrdh r= ij ifrdy iHkko Mkyk gA ;g ifrdyu ijh nfu;k dk i;koj.k lryu fcxkM jgk gA

onk e Hkfe को ईश्वर का रुप माना गया है और पर्यावरण की रक्षा करना धर्म का ही एक vx FkkA vFkoon d vulkj &

^^;L; Hkfe% iek·Urfj{keqrknjeA

दिवंयश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।।''[11]

vFkkr Hkfe ftldh iknLFkkuh; vkj vUrfj{k mnj d leku g rFkk |ykd ftldk eLrd g] mu lcl cM cã dk ueLdkj gA

onk d vulkj idfr vkj i#"k dk lEcU/k ,d&nlj ij vkfJr gA _Xon e idfr को महत्व प्रदान करते हुए प्राकृतिक जीवन को ही सुख–शान्ति का आधार माना गया है। वेदों में i;koj.k dk ok;] ty] /ofu, खाद्य, मिट्टी, वनस्पति, वनसम्पदा आदि पर प्रकाश डाला गया है। ltho txr d fy, i;koj.k dh j{kk e ok; dh LoPNrk dk ie[k LFkku gA fcuk vkDlhtu d thou lHko ugh gA iM&ik/k dkcu Mkb vkDlkbM xg.k djd ge vkDlhtu inku djr g] tk gekj thou के लिए आवश्यक है। पृथ्वी के चारों ओर वायु है। हमारे शरीर के अंदर jDr&okfgfu;k e cgrk gvk jDr ckgj dh rjQ ncko Mkyrk jgrk g] ;fn bl lrfyr ugh किया जाय तो शरीर की सभी धमनियाँ फट जायेंगी तथा जीवन समाप्त हो जाएगा, पृथ्वी के चारों vkj dh ok; bl l gekjh j{kk djrh gA

gok e db idkj dh xlk dk feJ.k gkrk g ftud iFkd&iFkd x.k gkr g bue gh vkDlhtu Hkh g] _Xon e dgk g &

^^;nnk okr r xg·erL; fuf/kfgr%A

rrk uk nfg thol AA**[12]

vFkkr bl ok; d xg e tk ;g vejRo dh /kjkgj LFkkfir g] og gekj thou d fy, आवश्यक है। शुद्ध वायु कई रोगों के लिए औषधि का कार्य करती है। ऋग्वेद के अनुसार –

''आ त्वागमं शन्तातिभिरथो अरिष्टतातिभिः।

n{k r HknekHkk"k i jk ;{e l okfe rAA**[13]

अर्थात् शुद्ध वायु तifnd t l jkxk d fy, vk"kf/k gA

i;koj.k dh leL;k fIQ Hkkjr dh gh ugh g] cfYd ijh nfu;k bl leL;k l t> jgh g vkj mud lkeu lcl cMh pukrh g & gfjr ;k lkQ lFkjh rduhd dk fodkl vkj mldk vf/kd l vf/kd ipyuA bl nfu;k d lkeu vkt tk egRoi.k pukfr;k g mue i;koj.kh; ldV lcl egRoi.k gA bl leL;k u ekuo vfLrRo dk ldV e Mky fn;k gA मानव जाति का अटूट संबंध पर्यावरण से है। विकास और ऊर्जा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के fy, ikdfrd llk/kuk dk nkgu fujUrj fd;k tk jgk gA oreku e lHkh m|kx /k/kk dk foLrkj ikdfrd llk/kuk ij vk/kkfjr b/kuk ij fuHkj gA fodkl d bl edMtky d dkj.k दुनिया के सामने वैश्विक तपन की समस्या खड़ी हो गई है।

देश की प्रमुख पर्यावरणीय समस्याओं में जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आink,] feVVh vkj Hkfe dh nxfr] to&fofo/krk dk âkl] ok; ,o ty in"k.kA ; lHkh thor i;koj.k d lryu को विचलित कर रहे हैं। यह अनुभव रहा है कि मानव का शांतिपूर्ण अस्तित्व अब एक दिवास्वप्न मात्र रह गया है । आपदाओं का संभावित परिदृश्य हमारे अस्तित्व vkj /kjrh d fy, [krj dh yVdrh ryokj cu x;k gA ;g blfy, gk jgk g fd ge iprRo & ok;] ty] iFoh] vfXu vkj Hkfe d chp lg&vfLrRo vkj lryu dh dth [kk pd gA ;fn iprRo d chp lryu ;k lkE;koLFkk ugh jgxh rk gekjk vfLrRo [krj e iM tk,xkA iprRo e dN ifjoruk@fopyu d dkj.k gh ikdfrd vkink, ?kV jgh gA bu ikdfrd vkinkvk l cpu d fy, ekuo dk idfr d fy, iuthou dh jpuk djuk iMxh Bhd mlh idkj l tl i;lh d fdfpr i;kl ek= l gh uk;d iuthfor gk tkrk g ol gh gekj dN i;kl ek= l gh

idfr dk iuthou lHko gA i#"k vkj idfr ijLij ,d nlj dk iuthou nu e l{ke g] fdUr igyk i;kl i#"k dk djuk gkrk g] idfr dk ugh vkj i#"k ukf;dk dk vfHkyk"kh g और निश्चित रूप से यह मातृ शक्ति का दायित्व ह कि वह पर्यावरण संरक्षण के लिए विशेष प्रयत्न dj blhfy; Mk- ek/ko dgr g &

^^ek iu thou nkr@dknEcjhor iujfi i;PN e
olUrk··fo"dkj lpd pEcueA**[14]

phu vkj vefjdk d ckn Hkkjr dkcu Mkb vkDlkbM mRlftr dju okyk rhljk cMk देश हA

Xykcy okfex /kjrh d vklr rkieku e gku okyh of) g ftld QyLo:i tyok; ifjoru gkr jgr gA iFoh d rkieku e of) l o"kk foU;kl e cnyko d lkFk&lkFk len dk ty Lrj Hkh c< jgk gA ogh iM&ik/kk] ty&tUrvk vkj ekuo thou ij vyx&vyx rjg d iHkko gk jg gA tc oKkfud ekle e cnyko dh ppk djr g rk mudh e[; fprk dk fo"k; ekuoh; xfrfof/k;k d QyLo:i gku okyh Xykcy okfex l gkrk gA Xykcy okfex d dkj.k gku okyk tyok; ifjoru ,d cMk [krjk gA [kkldj gekj LokLF; d fy, D;kfd ज्यादा गरम तापमान वाले विश्व में मलेरिया, यलोफीवर जैसी बीमारियाँ तेजी से बढ़ती है, साथ ही db lØked chekfj;k d c<u dh lHkkouk Hkh jgrh gA c<r rkieku d dkj.k gekj mitkÅ bykd pjkb ;k [krh d ;kX; ugh jgx] bll nfu;k dh vkgkj vkifr dk [krjk gk ldrk gA

in"k.k l LokLF; ij iMu oky iHkko dh ryuk dik"k.k l gku oky iHkko l dh tk ldrh gA bldk mRiknd rk] LokLF; vkj thou dh x.koRrk ij dkQh iHkko iMrk gA LoPN i;ty vkj LoPNrk dk vHkko] ?kj d Hkhrj ok;q dh nf"kr x.koRrk dk fu/kurktfur [krjk l

सीधा संबंध होता है। सतही जल के प्रदूषण और जीवाणुओं के प्रसार में तेज शहरीकरण और सघन df"k dk cMk ;kxnku gA

Hkkjrh; euh"kk e vkfndky l gh idfr lj{k.k lc/kh fprk dh /kkjk miyC/k jgh gA भारतीय संस्कृति में प्राकृतिक शक्तियों को देवता स्वरूप माना गया है। सूर्य, चंद्रमा, वायु, अग्नि vkfn no g vkj ufn;k nfo;k g] /kjrh dk ekrk dgk x;k gA o{k nok d okl&LFky gA d, तालाब और बावड़ियों के धार्मिक–सांस्कृतिक महत्व हैं। पश&if{k;k vkj tkuojk dk Hkh blh rjg J"Brk inku dh xb gA eRL;ijk.k e ,d o{k dk nl i=k d cjkcj crk;k x;k gA bl lcdk lcl cMk ykHk ;g Fkk fd eu"; bu lcdh j{kk djuk viuk /ke le>rk FkkA

¼2½ jktuhfr rFkk Hk"Vkpkj &

jktuhfr &

oreku le; dh jktuhfr u fIQ Mk- ek/ko vfir ge lHkh d fy, fpUrk dk fo"k; gA vkt d le; e jkturkvk e lok Hkkouk d x.kk dh vi{kk LokFkijdrk] inykyirk ,o /ku dekuk gh e[; /;; gk x;k gA viuh bu egRokdk{kkvk d fy, og fdlh Hkh gn rd fxju dk r;kj gA

Mk- ek/ko i tkr= e jkturkvk d fy, turk d e[k l dgyokr g fd&

^^udur tuHkä n"V fprkdy lnk@Hk"Vkpkjegkg ;n vklu r
nnkE;geA@;kou fuokpu ur%! vfLFkjk Hko lonkA@vukFkk ukFkor
fr"B dyg"k lnk·fi;%A**[15]

;g lR; g fd fuokpu d le; urk turk d }kj ij okVk dh Hkh[k ekxu tkr g vkj mld ckn o ikp o"kk rd dHkh ykV d ugh vkr g] ;g ckr turk Lo; Hkh tkurh g] fdUr og dN dj ugh ldrh g] blfy, turk viuk veY; er ndj dgrh g fd g urk e

r> vud urkvk l Hkä] nf"kr] fpUrkdfyr] Hk"Vkpkj l ;Dr vklu n jgh gA blds lkFk gh turk urk l dgrh g fd g urk tc rd vxy fuokpu ugh gk rc rd re vfLFkj jgk rFkk lnk lln e dyg djr jgkA

vkt d jkturk puko d le; vFkkr ikp lky e turk d ikl tkr g vkj cMh&cMh ckr djd mUg yHkku dk i;kl djr gA bl fo"k; ij Mk- ek/ko dgr g fd &

"योजना योज्यते कर्गजेषु सदा/पश्च निर्वाचने सौश्ख्यमुद्धोष्यते।/

mP;r okDîeoÜp foLe;r@jkejkT;L; Lolu fi;Hkkjre AA**[16]

vkt dh jktuhfr ,o jkturkvk dk ;g dk; gk x;k g fd o puko d le; gh turk d le{k tk, vkj mul cM&cM okn dj] fofHkUu fodklkRed ;ktukvk dk mud lEe[k j[k और उन्हें सुख–सुविधाओं को देने के झूठे वादे करें। चुनाव हो जाने के पश्चात् ये urk turk l fd, g, oknk dk Hky tkr g vkj fdlh Hkh idkj l vkxkeh ikp o"kk rd turk dk ;kn ugh djr g] turk ;fn Hky&HkVd mud ikl igp Hkh tk, rk o mll feyr ugh g vkj mlI igpkur Hkh ugh gA bl fLFkfr dk turk Hkh tkurh g fdUrq वह भी विवश है।

vkt dh jktuhfr e lln dk efUnj dh rjg itk ugh tkrk g vkj lln e yMkb&>xM vkfn fd; tkr gA Mk- ek/ko bl voLFkk e dgr g fd &

"यत्र नास्त्यङ्कुशो वाचि वा मानसे/संसदि प्रत्यहं जायते डम्बरः।/

;L; ;f"Vefg";o rL;kfLr Hkो!/उल्लुभिर्लल्लुभिः शोभते भारतम्।"[17]

vFkkr tgk lln e eu ;k opu ij fdlh idkj dk fu;=.k fdlh Hkh urk e ugh रहता है, यही कारण है इन नेताओं की भाषाएँ भी अश्लील हो जाती हैं, निरन्तर वाद–विवाद चलता jgrk g vkj ;gk rd dh yMu&>xMu tlh fLFkfr Hkh gk tkrh gA Mk- ek/ko u bu urkvk dk bl LFkku ij mYyvk vkj yYyvk dh miek nh gA

jktuhfr vkt /ku deku] Hk"Vkpkj dju vkj viuh mfpr&vufpr egRokdk{kkvk dk i.k dju dk lk/ku ek= cu pdh gA bl lk/ku dh ikflr e mlI fdlh idkj dk 0;o/kku ugh gkrk gA Mk- ek/ko dgr g fd &

''शंकराचार्यदः प्रेषितो लीलया/श्रीजयेन्द्रः कठोर हि कारागृहे।/

(क्लीन्चिट् शुभ्रता) दोषमुक्तिः सदा नेतृभिः प्राप्यते/

पश्य सत्यप्रियं भूतले भारतम्।''[18]

Mk- ek/ko dgr g fd urkvk d fdlh Hkh vufpr ;k ve;kfnr dk; ij mUg fdlh idkj dh ltk ugh gkrh g vkj idM tku ij mUg Dyhufpv n nh tkrh g] tcfd bld विपरीत शंकराचार्य श्रीजयेन्द्र सरस्वती जी को आसानी से कठोर कारागर में भेज दिया जाता है।

jkturkvk }kjk viu in ij jgr g, mfpr&vufpr lHkh idkj l /ku dek;k tkrk g यहाँ तक कि वे अपने परिवार के लोगों, रिश्तेदारों और सगे–संबंधियों को भी मालामाल कर देते हैं। Mk- ek/ko dgr g fd &

^^ipo"kkiu lnL;kfÜprk% l lnk@orru thou yH;r lkIn%A@

uk fuoÙkk /ku orru ok/kd@lodkuk d r fu?k.k Hkkjre A**[19]

lR; g fd vkt jkturk cuu d ckn /ku dh deh ugh jgrh g] ;gk rd dh mud करीबी रिश्तेदार भी आनंदित रहते हैं। सांसद अपना पद छोड़ने के पश्चात् भी सुख सुविधाओं के साथ पेंशन प्राप्त करते हैं, किन्तु इसके विपरीत ईमाunkjh l turk dh lok dju oky ljdkjh depkfj;k dk bu vkfFkd lfo/kkvk dk ykHk ugh fey ikrk gA

^urukeLrk=e* e Mk- माधव ने आज के चरित्रहीन नेताओं को अनेक नामों से सुशोभित fd;k g &

^^Nk;kfp=i lUukRek oÙki=fi;k·fi;%@

&&&&&&&&&&&&&&&

erlu rlu nÙku jk"Vªlkj0;a iqylL;rA**[20]

छायाचित्रप्रसन्नात्मा, संवादपत्रप्रिय, अप्रिय, पत्रकारावृत, शत शत वार्ताहरावृत, सदा प्रियंवद, असत्यप्रिय, असत्यकर, अशुचि, सत्यासत्यविमूढ़ात्मा, सत्यासत्यवश, अवशी, भ्रष्टाचारव्रत, वाग्मी, धनसंचयतत्परः, शत शत भ्रष्टाचारfylr] Hk"Vkpkjijk;.k] i{kki{kfoi{kLFk] turkjäp"kd] i{k e"kdlpkj] fcPN] lidpd] ddyklLoHkko] ykdr= dk egkukV; e i{k ifjoru e l=/kkj और विदूषक, रामवेशधर, राम, विजित लोकरावण, मिथ्याभाषणनिष्णात, वाणीकापट्यपण्डित, dkjkxgokl e ifl), बन्धनप्रिय, न्यायालय में विमूढ़ात्मा, न्यायशासन को लंघन करने वाला, साक्ष्यनाशकार, दोषी, क्लीनचिट पदवी से युक्त, भाईलोक के आराध्य, अण्डरवर्ल्ड में आदृत, अपराध में समालिष्ट, अन्धकारमय मार्ग के आश्रित, राज्यनीति जिसके वश में है, कामुक, लोकवंचक, vuhfr vkj dyVk e vklDr] dlh vkj okjkxukvk dk ifr] tkfr vkfn vkj{k.k vkfn v/ke कोमवाद में हुताशनस्वरूप, काश्मीर–गोधरा हत्या सन्त्रास का मौन दर्शक, अपने व्याख्यान का कार्कश्य से भर्सित गधा, निर्वाचन के सहपाठियों के तीर्थ में तीर्थध्वांक्ष काक, दुःशासन, पाँच साल rd nX/kiku l of/kr lki] Lohl cd e xlr djd /ku teku okyk] ikp lkyk d fy, धनंजय, स्वदेश का धन लूटने वाला, विदेश ही गन्तव्य जिसका, अपने पक्ष के पताकादि सौभाग्यचिन्ह से चिन्हित है जिसका वाहन, अशान्तिवहि्नस्फुलिंग, शान्तिपाठप्रवाचक, नानाशल्यक्रिया के नke l प्राप्त विदेशसौख्यवाञ्छा करने वाला, जो पुँश्चलीयों की मतमंजूषा से निर्वाचन मैदान पार हुआ er ikFkh] erxkgh] llkj e erfHk{kd] erØrk] erkU/k] er l vftr inkUufr] turk dh ef"V e xg.k;kX; og rk ePNj g] vkj D;k T;knk dgx] mld cgr uke e ugh fxuk ik;k] D;kfd nok dk uke fxuk tkrk g] u rk ------A tk lekfgr gkdj ejk ,lk ukeL=kr ikB djxk] ernku d fnol og t:j ;kX; ikFkh dk ernku djxkA mld ernku l jk"V d l[k e of) gkxhA

राजनीति के वर्तमान परिदृश्य पर डॉ- ek/ko fy[kr g &

''नेतृणां कुत्सितानि मुखानि,/अभिनेत्रिणां बीभत्वं देहप्रदर्शनम्/

or`ekui=k.kka fod`rkfu dFkk%--]@lo`err` thoulkQY;L; i;k;rka xreA**[21]

लेखक के कथन का आशय है कि नेताओं का विरोधाभासी व्यवहार उनका मुख तक देखने e txlIk mRiUu djrk gA thou e dFkuh; vkj djuh; dk ,d tIk gkuk gh lEeku dk भागी बना सकता है। शक्ति या धन के माध्यम से खरीदा गया सम्मान आंतरिक सम्मान नहीं देता gA jktuhfr dN bl idkj dh gk xbi g fd jkturkvk dk vxyk dne D;k gkxk bl fo"k; में प्रजा सदैव संशय में jgrh gA jkrk&jkr ukVcnh vkj th-,l-Vh- ykx djuk bldk lcl vokphu mnkgj.k gA Mk- माधव के शब्दों में –

^^jktkKk i=rh{kr= lo= tuk%@rnk@

lekV onfrØhM;s lekfIr% xrkA**[22]

कुछ समय पहले तक नेता बड़ा ही सम्मानवाची शब्द होता था। आजादी की लड़kb e tk नेता होते थे वे जननेता होने के साथ–साथ शूचिता का भी पालन करते थे और नेता शब्द उनके lEeku e i;Dr gkrk FkkA tl Lokr«; ohj lHkk"kpUn ckl ^^urkth** d uke l gh tku tkr हैं, क्योंकि उन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के सशस्त्र गHkhj i;klk e l ,d egRoi.k i;kl vktkn fgUn Qkt d urRo d :i e fd;kA

''सिंहासनेषु / शृगाला विराजन्ते /स्वर्गस्थाः सिंहाः।''[23]

blh idkj

^^v= Üokuk·fi @ lo`dkj;ku"k @ ifjHkefUrA**[24]

यह दृश्य वहीं संभव है जहाँ भ्रष्ट राजनेता और अf/kdkfj;k dk xBtkM gkrk g D;kfd ifjJe d /ku dk dkb bl idkj l vi0;; ugh djrk gA

urkvk d fo"k; e Mk- ekk/ko fy[kr g &

''गोधूमकणान् / ददाति कुक्कुटाय / शौनिक–वधूः।''[25]

;g gkbd okLro e ,d lkdfrd 0;X; g] tl k fd n[ku e vkrk g fd puko d Bhd igy erkfHkyk"kh urkvk }kjk ernkrkvk dk fofHkUu idkj d iykHku fn; tkr g o Bhd mlh प्रकार के होते हैं जैसे कोई शिकारी बहेलिये की पत्नी मुर्गे को जाल में फँसाने के लिए जाल के lehi vukt fc[kjrh gA ^^flgklue** dfork bl idkj l ;u&du&idkj.k lRrk ikIr dju oky jktur kvk dk gh Li"V ldr djrh gA foØ;h dfork e urkvk }kjk ikfyr&ikf"kr और उनके सहयोगी अधिकारियों द्वारा उत्पादित भ्रष्टाचार के विभिन्न तरीकों पर विमर्श किया गया है &

^^v= yH;r foukk gVVi@^fdykk* feru Ø;.kku lg@lk/kfdykferk

o¥puk!@lodkjlokfu;DR;k lg@dk;pk;l foukk eY;e@vfi p@

उत्कोचलाभोऽपि निःशुल्कः संयुक्तोऽस्ति/निर्वाचने/विजयेन सह/

Hk"VkpkjL; orlr migkj;ktukA@ijh{kkiek.ki=% lg l³xrkfLr@

ofÙkikIR;Fk fpUrkA**[26]

^fojliuL; eR;%* dfork foni jktuhfr dk ,d pgjk g ft le dfo dk ekuoh; foyki g tc o fy[kr g &

^^lodkjL; lehi vU;i·fi fojliuk% lfUrA

शान्तं पापम–किन्तु नास्ति सान्तं पापम्।''[27]

jktuhfr dk nljk fp= fpf=r djr g, Mk- ek/ko oreku ifjfLFkfr d ckj e fy[kr g कि शांति का विमर्श शिखर वार्ताओं में करने के लिए वे लोग बैठे हैं जो स्वयं शांति के संहारक हैं। यद्यपि लेखक ने शांति को रूपजीवी कहा है –

''शान्तेर्वस्त्राहरणकर्तारः / जल्पन्ति शिखरपरिषत्सु, / अतः

शान्तिरपि रूपजीविनीप्रीतिसदृशी वर्तते !''[28]

किन्तु मैं अपने शब्दों में कहूँगी की वर्तमान परिदृश्य की राजनीति श्मशान में खिले पुष्प की तरह है जिसे ना तो देवआराधना में ना तो खूशबू के लिए और ना ही श्रृंगार के लिए उपयोग में fy;k tk ldrk g vFkkr lTtuk d fy, oreku jktuhfr loFkk R;kT; gk pdh gA

^^ere** uke l pkng ink okyh dfork fy[k dj Mk- माधव ने मत का महत्व दर्शाया है। मत ही वह शक्ति है जिसे प्राप्त करके शासन के तंत्र हासिल किये जा सकते हैं। शक्ति, सामर्थ्य vkj /ku bu rhuk dk lekxe gku d dkj.k er dk viuh vkj vkdf"kr djuk urkvk dk शगल बन चुका है।

^^erefLr@&&&&@ekxlP;ir%A**[29]

वर्तमान परिदृश्य में ही नहीं अपितु अति प्राचीनकाल से ही राज्य प्राप्ति की आकांक्षा इतनी icy jgh g fd dN mnkgj.kk dk NkMdj vU; lnHkk e jkT; dk gLrkrj.k fcuk jDrikr d ugh gvk gA bl lc/k e Mk- g"kno ek/ko fy[kr g &

^^flgkluL; o.kku@fefJrefLr@nhu tukuk #f/kje@flgkluL;
iPNn@ifrrk%@{kR{kked.BkukeJfcUno%!@flgkluL; jRu"k@
frjkfgrk Hkofr@vfd¥pukuk thou|fr%@lkeF;L; uiF;
पतितमस्ति / प्रजाचैतन्यशवम्।''[30]

bl idkj l jkT;kdk{kh dk jk{kl dgu e Hkh Mk- माधव को बिल्कुल भी संशय नहीं रहा gA

^^g LokrU«nfo!@jk{kl.kkiârk@jktnkfjdk eka@vkxr%@
jkti=% iHk"V%A@Hk³ä Loj jk{klk jkti=heA@

jktnkfjdkfi@jk{kleo eU;r@LoifreA**[31]

bIh idkj

^^gi erei t"ki !@jk{kIL; eLrdi fN|ri@fdUri

राक्षसौ नास्ति निर्वंशः/अतः/तव गर्भाशये नास्ति मे श्रद्धा।''[32]

jktuhfr dk ydj Mk- ek/ko u ,d Lor= irhdkRed dfork fy[kh g ftlei jktuhfr के वर्तमान परिदृश्य पर विवेचन प्राप्त होता है।[33] fnYyh dh jktuhfr dk irhd j[kdj Mk- ek/ko ने खुले–खुले शब्दों में राजनीति की वर्तमान स्थिति को मलोत्सर्ग क्रिया की तरह दर्शाया है।[34]

jktuhfr e lokf/kd egRo cger dk gh g cger d vHkko e ;kX; 0;fDr Hkh क्षमतारहित होकर एकाकी जीवन जीता है, शक्तिहीन हो जाता है, किन्तु बहुमत पkIr djd ,d अयोग्य व्यक्ति भी शक्तिसम्पन्न हो जाता है, किन्तु अपनी अयोग्यता के कारण वह प्रजा को लाभ ugh igpk ikrk g vkj db ckj rk og gkL; dk ik= Hkh cu tkrk gA[35]

Hk"Vkpkj &

भ्रष्टाचार शब्द दो शब्दों के मेल से बना है भ्रष्ट+आचरण । इसका सामान्य आj lh/kk अर्थ है ऐसा आचरण जो भ्रष्ट है और जिसकी सत्ता पर बैठे अधिकारी से आशा नहीं की जा सकती है । जहाँ सच्चरिता प्रशासन को आगे बढ़ाती है, उसे सुन्दर बनाती है, वहीं भ्रष्टाचार ठीक इसके उलट कार्य करता है । अन्य शब्दों में भ्रष्टाचार लोक पदाधिकारिया dk ,lk vkpj.k g ftle o viuh infLFkfr dk i;kx lkotfud fgr e u djd 0;fDrxr fgr e djr g A bl idkj d Hk"Vkpkj d db :i gk ldr g tl & ?kl yuk] ?kl fnyokuk] fofHkUu 0;olkf;d lxBuk l dk; dju d fy, egxh HkV Lohdkj djuk] cbekuh djuk] Hkkb&Hkrhtkokn d vk/kkj ij ukdjh fnyokuk bR;kfn A

कन्साइज ऑक्सफोर्ड शब्दकोष में भ्रष्टाचार का अर्थ इस प्रकार है 'रिश्वत अथवा अवैधानिक vkj vui;Dr lk/kuk l xyr ;k vufrd dk; dh vkj mUe[k gkuk rFkk lgh vkj ufrd dk;k l fojr gkuk Hk"Vkpkj g A*[36]

सामान्यतः भ्रष्टाचार दो प्रकार के व्यक्ति करते हैं – नौकरशाह (प्रशासनिक) और राजनेता (राजनीतिक) कहावत है ''यदि नौकरशाह भ्रष्ट होता है तो वह अकेला और स्वेच्छा से होता है yfdu ;fn jktsurk Hk"V gkrk g rk leg e lHkh lg;kfx;k d lkFk gkrk g A**[37]

jktufrd Hk"Vkpkj d lnHk e vkt tk lkekU; lh vo/kkj.kk fodflr gb g mld vUrxr ;g ekuk tku yxk g fd Lofgr dh ;u&du idkj.k ifr dh Hkkouk jktufrd dk;k dk vk/kkjHkr ij.kkL=kr g A ^^vkt dh Hkkjrh; jktuhfr e jktsurkvk d 0;fDrxr fgr l जुड़कर भारतीय राजनीति का सर्वाधिक स्वीकार्य अंग बन चुका है । इसने सम्पूर्ण सरकारी मशीनरी ij viuk opLo LFkkfir dj fy;k g rFkk ykd lodk l ydj jktsurkvk rd lHkh u bldk oj.k Hkh dj fy;k gA tgk rd Hk"Vkpkj dh ckr g lkekU;r% 0;ogkj e bl futh vkfFkd fgr gr ljdkjh in d n:i;kx d :i e n[kk tkrk g A**[38] in dk n:i;kx dj vkfFkd ykHk iklr dju dk gh Hk"Vkpkj ekuk tkrk g D;kfd ;g cgr Li"V fn[kkb nrk g rFkk mlse आम आदमी का जीवन शीघ्र प्रभावित gkrk g A ^^bl rjg og e=h] vf/kdkjh ;k ljdkjh depkjh Hk"V g] tk viuh ljdkjh fLFkfr dk ykHk mBkdj viu in dk n:i;kx djr g, vufpr vFkkiktu djrk g A**[39] vr,o mijkDr lnHk e Hk"Vkpkj dh ,d lkekU; lh ifjHkk"kk bl idkj nh tk ldrh g fd ^^fdlh lkoZtfud in ij vklhu fdlh 0;fDr }kjk viu futh vkfFkd fgrk dh ifr d fy, lÙkk dk n:i;kx djuk Hk"Vkpkj dgk tkrk g A**[40]

vkt lkekU;r% ;g n[kk tk jgk g fd lÙkk l tM ykx turk dh lok dh txg futh fgrk dh ifr dh Hkkouk l iHkkfor gk pd g A fdlh Hkh idkj /ku iklr rFkk viu jDr

lc/kk dk vkx c<kuk mudk ,dek= y{; cu pdk g A viu bu y{;k dh ifr d fy,
mfpr&vufpr dk fopkj djuk mud fy, egRoi.k ugh A lÙkk d vkd"k.k l iHkkfor ,l
jkturk viuh egRokdk{kkvk dh ifr d fy, lekt d vjktd rRok rFkk vijkf/k;k l Hkh
गठजोड़ करने में नहीं हिचकिचाते । परिणामस्वरूप धीरे–धीरे राजनीति अपराधियों की शरणस्थली
cu pdh g vkj bldk Hk;dj vijk/khdj.k gk pdk g ftld ifj.kkeLo:i vijk/k vkj
Hk"Vkpkj d chp ?kfu"B lc/k LFkkfir gk x, g A ; nkuk feydj ,l n"pØ dk fuek.k djr
g ftl rkMuk vklku ugh gkrk A

Hkkjr e puko i.kkyh cgr [kphyh g A pukok e /ku ikuh dh rjg cgk;k tkrk g A
;|fi dkuu }kjk puko e gku oky [kp dh vf/kdre lhek fu/kkfjr dh g vkj iR;d
mEehnokj dk puko d ckn puko e fd, [kp dk fglkc&fdrkc Hkh nuk iMrk g] ijUr
0;ogkj e vf/kdre lhek d dkuu dk dkb egRo ugh g A lHkh tkur g fd dkuu dk
lEeku mldk ikyu djd ugh cfYd mYy?ku djd fd;k tkrk g A ik;% lHkh jktuhfrd ny
puko yMu d fy, dEifu;k vkj i|thifr;k l /ku bdBBk djr g A

ny&cny dh iÑfr Hkkjrh; jktuhfr e Hk"Vkpkj dk ,d cgr f?kukuk :i gA
भारतीय राज–व्यवस्था संसदीय लोकतंत्र को प्रतिबिम्बित करती है । यहाँ शासन संचालन में सत्ता
iक्ष एवं विपक्ष की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् कुछ समय तक
तो विपक्ष की भूमिका सीमित संख्या के बल के बावजूद प्रशंसनीय रही किन्तु बाद के दिनों में विपक्षी
nyk d vud egRokdk{kh jktuhfrKk e lÙkk d ifr vkd"k.k dh rhork ifjyf{kr gku yxh A
egRokdk{kh jktuhfrK in] ifr"Bk ,o /ku dh ykylk e viu ey drO;k l foe[k gkdj
अनेक निर्णयात्मक अवसरों पर अपने दल के निर्देशों की अवहेलना करते हुए अनुशासन के विरूद्ध
जाकर कुछ निहित स्वार्थों के चलते सत्ता पक्ष अथवा शक्तिशाली सegk d lkFk tMdj mud lj

e lj feyku yx A turk }kjk fuokfpr ,l jktuhfrKk }kjk fd;k tku okyk ;g vkpj.k in] ifr"Bk ,o /ku ikfIr dh i"BHkfe ij vk/kkfjr gkrk g vr% bl Hk"Vkpkj d vfrfjDr vkj dN ugh dgk tk ldrk A

वर्तमान समय में सुशासन की स्थापना एक स्वप्न सा बनकर रह गया है, प्रत्येक शासन व्यवस्था बेईमानी, रिश्वतखोरी आदि समस्याओं से पीड़ित नजर आती है । सार्वजनिक धन की लूट–खसोट निरंतर कायम है और सभी अपने–अपने हितों को साधने में लगे हुए हैं। शासकीय 0;oLFkk dk dk;kZo;u lgh iकार से नहीं हो पा रहा है । आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक शासकीय कर्मचारी अपने उत्तरदायित्वों को समझे और सार्वजनिक हित को प्राथमिकता प्रदान करे ।

नौकरशाह भ्रष्ट होता है तो वह अकेला और स्वेच्छा से होता है, लेकिन यदि राजनेता भ्रष्ट gkrk g rk leg में सभी सहयोगियों के साथ होता है । इंदिरा गांधी ने लचकदार नौकरशाह की आवश्यकता महसूस की क्योंकि वह व्यक्तिगत नेतृत्व के प्रति प्रतिबद्धता चाहती थी । इसलिए जब भ्रष्टाचार पनपा तो नौकरशाहों को भेंट मिल गई । सामान्य व्यक्ति भी यह बात जानते हैं। वास्तव में नौकरशाहों का भ्रष्ट आचरण राजनेताओं के भ्रष्टाचार से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। यदि केवल नौकरशाह ईमानदार हो जाए तो राजनीतिक भ्रष्टाचार स्वतः नियंत्रित हो जाएगा।

Hkkjr e Hk"Vkpkj dk ,d u;k Lo:i nljh ipo"kh; ;ktuk d fØ;kUo;u d nkjku iklr gvk A bl ;ktuk e Hkkjh ieku ij lkotfud /ku d 0;; dk iko/kku Fkk ftlu Hkkjrh; इतिहास में पहली बार राजनीतिज्ञ, उद्योगपति और नौकरशाही को एक दूसरे के निकट ला खड़ा किया क्योंकि इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय आय में समुचित बुद्धि और उद्योग धंधों पर विशेष बल vkfn ckrk dk y{; cukdj dk; ikjHk fd;k x;k FkkA ^^Hkkjrh; jktuhfr d bfrgkl e ;g igyk अवसर था जब उद्योगपति, मंत्री और नौकरशाह का एक सुनहरा त्रिकोण उभरता हुआ देखा गया ftlu Hk"Vkpkj dk ,d u;k vk;ke fn;k A turk u mudk fdruk Hkh fojk/k D;k u fd;k gk

मंत्री, नौकरशाह और उद्योगपति ने अनेक तरीकों से एक दूसरे को समायोजित करना सीख लिया । 7वें दशक में इस गठजोड़ की प्रबलता अपनी चरम सीमा पर देखी गई ।''[41]

Mk- g"kno ek/ko dk dguk g fd Hk"Vkpkj ,lh leL;k g ftlls gj 0;fDr ihfMr g] fdUr, भ्रष्टाचार के बढ़ने का सबसे बड़ा कारण हम स्वयं हैं। स्पष्ट शब्दों में उन्होंने कहा है 'प्रभ्रष्टेषु lMxrk o;e*A[42] lR; Hkh g fd tc ge Lo; Hk"Vkpkj dk n[kr g ;k gekj lkFk e dkbZ Hk"Vkpkj gkrk g ml fLFkfr e Hk"Vkpkj :ih vijk/k dk ugh jkdu d dkj.k ge Hkh vijk/kh gk tkr g vr% Hk"Vkpkj jkdu d fy, lcl igyk dne ge Lo; dk mBkuk gkxkA Hk"Vkpkj dh पराकाष्ठा के विषय में भी स्पष्ट कहते हैं कि जब शासकीय वाहनों में कुत्ते घूम रहे हों और आम आदमी त्राहि त्राहि कर रहा है ऐसा शासन भष्ट है इसमें संशय ही नहीं करना चाहिए –

^^v= Üokuk·fi @ lodkj;kuf"k @ ifjHkefUrA**[43]

Mk- ek/ko Hk"Vkpkjtfur jktufrd ifjfLFkfr ij rt dlr g, fy[kr g &

''सिंहासनस्य/उच्चैः स्वर्ग एव दृश्यते/किन्तु/ अस्य नीचैः/तलरहितं

ikrkyefi orrs@;fLeu ifrrL;@u Jw;Urs phRdkjk vfiA**[44]

Mk- माधव का आशय है कि भ्रष्टाचार के द्वारा यद्यपि शक्ति संग्रह किया जा सकता है, किन्तु उस शक्ति संग्रह के पीछे कितने करूण क्रन्दन छिपे हैं, उन पर ध्यान नहीं जाता है, क्योंकि vlhfer vkdk{kk, Hk"Vkpkj dk tUe nrh g cfYd ikfyr ,o ikf"kr Hkh djrh gA

Hk"Vkpkj d dN mnkgj.k fy[kr g, ^^foØ;%** uked dfork Mk- g"kno ek/ko dh भावनाओं को शब्द प्रदान करती है।

^^v= yH;r foukgVV@-------@ofÙkikIR;Fkk fpUrkA**[45]

भ्रष्टाचार का दायरा केवल शासकीय कार्यालय तक ही सीमित नहीं g] cfYd bldk nk;jk जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में पसर चुका है। शासकीय कर्मचारियों के द्वारा कामचोरी तो एक आम बात हो गई है, रिश्वतखोरी भी प्रायः हर जगह दिखाई देती है। राजनीति भ्रष्टाचार से पूरी तरह लिप्त है और यहाँ तक कि अब तो हमारी शिक्षा व्यवस्था Hkh Hk"Vkpkj dh HkV p< pdh gA

db e?kkoh Nk= Hkh bl Hk"Vkpkj : ih jkM d dkj.k ofRr dk iklr ugh dj ikr gA bl idkj l ;g Hk"Vkpkj iR;d ekuo d ân; dk fonh.k dj jgk gA

^fojliuL; eR;q* dk0; e ;|fi Mk- ek/ko u fojliu d ckj e fy[kk g] fdUrq fojliu dk fojliu gkuk Hk"Vkpkj d dkj.k gh lHko gvk gA tlk fd Mk- ek/ko Lo; fy[kr g &

^^lo dkjL; lehi vU;k·fi fojliuk% lfUrA**[46]

;g ldr leLr Hk"V depkfj;k ij g vkj budh l[;k ,d] nk ;k vxyhx.; ugh g] vfir cgrायत में है और शासनतंत्र में इन सभी विरप्पनों को वीरगति अवश्य देनी चाहिए।

Mk- ek/ko u ^ere* dforkk e fy[kk g &

''येन क्रीतं मतम्,/स/विक्रेतुं शक्नुयात्/स्वमातरमपि।''[47]

lR; Hkh g tk 0;fDr er [kjhnu d fy, i;klj g og cger dk iklr djd mlI foØ; मूल्य और उसके लाभ को अर्जित करने का प्रयास अवश्य करता है। चूँकि उसका खर्च किया हुआ धन अत्यधिक मात्रा में है और उस धन को वह शीघ्र पाना चाहता है, इसलिए भ्रष्टाचार का vklj yrk g vkj ,l Hk"Vkpkjh dk tUe nu okyk dk ;fn ekr foØrk dgk tk, rk bl e कोई संशय नहीं है। सत्य भी है –

^^Hk"Vkpkj% @ er lgfr i kl; @ Hkofr urkA**[48]

bl fo"k; dk leF;e dforkk e y[kd vkx c<kr g, fy[kr g &

^^flgkluL; o.ku@fefJrefLr@nhu tukuk #f/kje@flgkluL;
iPNn@ifr rk%@{kR{kked.Bkuke J fcUno%!@flgkluL; jRu"k@
frjkfgrk Hkofr@vfd¥pukuk thou|fr%@lkeF;L; uiF;
पतितमस्ति/प्रजाचैतन्यशवम्।''[49]

लेखक का इस प्रकार लिखने का आशय यह है कि यदि जनता स्वयं भ्रष्टाचार को सहयोग djuk cUn dj n rk Hk"Vkpkj vkx ,d dne Hkh ugh py ldrk g fdUr tgk turk Lo; Hk"Vkpkj dk doy n[k jgh g ;FkkfLFkfr cuh jgu n jgh g ogk Hk"Vkpkj dk jk{kl viu fodjkydky xky dk c<krk tkrk gA

jk{kl% dfork e Mk- ek/ko u lokf/kd Hk"V jkti= dk fy[kk gA jktk ;k jkT;iklr jkturk Lo; vi{kkdr de Hk"Vkpkjh lHko g ctk; mld tk fd ml jkT; d Qy dk vuk;kl iklr dj tkrk g ftl dfo u jkti= dh lKk nh gA Hk"Vkpkjh dh vi{kk ,l भ्रष्टाचाररूपी विष–वृक्ष के फल से सावधान होना अधिक आवश्यक है।

प्रतीकात्मक काव्य राजनीतिशकटम् में भ्रष्टाचार से उत्पन्न होu oky fofHkUu cj iHkkok dk of.kr fd;k x;k gA[50] जब कोई भ्रष्टाचारी ज्ञान की बातें करता है, आदर्श के बारे में कहता है तब उसके वे आदर्श वाक्य बड़े ही घृणित लगते हैं। भ्रष्टाचारी नेताओं के भाषणों को घृणा उत्पादन dju oky dgr g, Mk- ek/ko fy[kr g&

''मलोत्सर्गक्रियासदृशानि/दिल्ली–नगर्याः प्रवचनानि
ef; ?k.kkeRikn;fUrA**[51]

Hk"Vkpkjh 0;fDr tc jkturk cu tkrk g rc og viu Hk"Vkpkj d cycr ij cger iklr djd tuifrfuf/k cudj lln vkfn e mRikr epkrk g vkj 0;oLFkkvk dk fNUu&fHkUu dj nrk g &

^^nnjk u dnr iYoy@fdUr
cger ikl;dnr llnhfiA**[52]

Hk"Vkpkj d fo"k; e fpfUrr Mk- g"kno ek/ko dgr g fd &

^^lklnLrftr ykdrU= lnk@/ku?kklk·fi d{kk drk urfHk%A@

Hk"Vrk tk;r pio lhekfrxk@fuR;ekIfUndkykyi HkkjreA**[53]

vkt d jkturkvk u Hk"Vkpkj dh Ii.k lhek, yk?k nh gA vkt d urkvk u ykdr= dh e;knkvk dk /kfey dj fn;k gA vkt Hk"Vkpkj dju d u,&u, volj dk <<k tkrk g vkj ;gk rd fd xk; d Hkktu ^?kkI* e Hkh Hk"Vkpkj djd xk; d iV I fudky dj viu पेट में भर लिया है। इसके पश्चात् भी उनकी रूपये–पैसे की भूख समाप्त नहीं हुई, अपितु वे पुनः IRrk e vku vkj Hk"Vkpkj dju d fujUrj i;kI djr jgr gA Mk- ek/ko dk Li"V Idr ;gk fcgkj d io e[;e=h ykyi Ikn ;kno I g] ftu ij vkt Hkh bI Ic/k e idj.k py jgk gA

^^;k·fLr Hk"Vk Hkork· Ik·fi r|"VLInk@fu/kul% dk·fi fuokfprk uk

भवेत्।/दुर्बलः पीवरो मूषको मल्लकः/शूकरः पल्वले राजतां भारते।''[54]

Mk- ek/ko fpUrke; 0;X; 0;Dr djr g, dgr g fd Hk"Vkpkjh dk gh Ino puko thruk pkfg,] fdIh Hkh fucy ;k fu/ku dk fuokfpr ugh gkuk pkfg,A bI idkj tk turk का शोषण कर, भ्रष्टाचार कर अधिक धनवान बन चुका है उसे और धनवान बनना चाहिए और fucy] fu/ku dk vkj vf/kd fu/ku gh jguk pkfg,A

Mk- ek/ko Hk"Vkpkj dh ijkdk"Bk 0;Dr djr g, dgr g fd vkt d jkturkvk dh /kuykyirk u Hk"Vkpkj dju d u,&u, rjhd viuk, gA

''शीबूसोरेनकल्पैर्यदा सांसदैरनास्ति/नास्ति हीना प्रजातन्त्रशोभा सखे!

सैन्यकोफीनकाण्डेऽस्ति सिद्धिः परा/पश्य मन्त्रीश्वरैः शाHkr HkkjreA**[55]

vkt d jkturkvk dk ufrd Lrj bruk fxj pdk g fd o ;) ;k vkrdh geyk e शहीद हुए सैनिकों हेतु क्रय किए गए ताबूतों में भी धन कमाने के अवसर ढूंढ लेते हैं। यह अत्यन्त gh fprk dk fo"k; g fd vkt d jkturkvk dh ekuoh; Ionuk, ijEijkxr Hkkjrh; eY; ,o

आदर्शों से कितनी विपरीत चली गई है कि वह न तो पशु–पक्षियों के भोजन को छोड़ते हैं और न ही देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने वाले शहीदों को छोड़ते है।

vkt d jkturkvk u viu Hk"V vkpj.k l itkr= d pkFk LrHk vFkkr i l dk Hkh [kjhn fy;k g o dgr g &

> **''नेतृणां भ्रष्टाचाराँश्छादयितुं द्रव्यराशिः**
> Lohdrk·fLr dfÜpr iR=dkj%A**[56]

Mk- ek/ko d vulkj vkt d jkturk viuh dkyh djrrk vkj Hk"V vkpj.k dk fNiku d fy, i l dk lgkjk yr gA vkt d jkturkvk }kjk dfri; i=dkjk dk Hkh Hk"Vkpkj l प्राप्त राशि का कुछ भाग देकर अपने पक्ष में मिला लिया जाता है, जिससे वे इन भ्रष्ट नेताओं के dkjukek dk turk d le{k iLrr ugh djr g] vfir mUg cpku dk i;kl djr gA ;g vR;Ur fpUrk dk fo"k; gA

bl h idkj Mk- हर्षदेव माधव राजनैतिक भ्रष्टाचार से अलग हटकर प्रशासनिक भ्रष्टाचार के fo"k; e dgr g fd &

> ^^mRdkp nRok@d"kfpr dk;ky;"k
> ikekf.kdtu% lodkjlok% ikIrk%A**[57]

;g lR; g fd vkt d le; Hk"Vkpkj u flQ jktufrd Lrj ij vfir प्रशासनिक स्तर ij Hkh mruh gh fprk dk fo"k; gA ;kX; 0;fDr dh vi{kk v;kX; 0;fDr Hk"Vkpkj d lgkj mPp ink ij igp tkrk g vkj ljdkjh ukdfj;k dk iklr dj yrk ogh ;kX; 0;fDr fiNM tkrk gA

¼3½ lkekftd fonirk rFkk lq/kkj &

eu"; ,d lkekftd izk.kh g] fcuk lekt d eu"; dk thou eu";or ugh jg ikrk gA ऐसी स्थिति में सामाजिकता के आदर्श प्रतिमान मानवता को बचाए रखने के लिए हमेशा आवश्यक gkr g le; le; ij lkekftdrk d ifrekuk e ifjoru gkr jg gA y{k.k] 0;oLFkk] vk; vkfn dkj.kk l bu ifrekuk e ifjoru n[ku dk fey g] fdUr lkekftdrk dh ey Hkkouk ijkidkj dh jgh g og dHkh Hkh ifjofrr ugh gb gA gekj ijk.kk e Hkh ijkidkj dk gh loJ"B lkekftd ifreku dgk x;k g &

"अष्टादशः पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
ijkidkj% iq.;k; ikik; ijihMue AA**

परोपकार के आरंभ, मध्य या अंत में कहीं न कहीं हमेशा स्वयं का उपकार भी शामिल होता gA ijkidkj ftruk J"B gkrk g] Lo; dk ykHk Hkh mld vuq lkj ifjof)r gkrk gA dN ofRr;k tk fd ijkidkjtfur 0;oLFkk dk vU; ofRr;k l lek;kftr dj yrh g o ofRr;k Hkh अन्ततः परोपकार और स्वयं के विशिष्ट लाभ की ओर ले जाती है। कभी–कभी परोपकार से संबंधित कुछ क्रियाएँ या विचार परम्परा का रूप धारण कर लेते हैं, किन्तु प्रकृति परिवर्तनशील है अतः वे lg;kxh fopkj ,o fØ;k, gमेशा तत्सम स्वरूप में अंगीकार नहीं की जा सकती है, उनमें le;kuqlkj ifjoru vif{kr gkrk g vU;Fkk o fonirk dk Lo:i /kkj.k dj yrh g] ftUg djhfr Hkh dgk tk ldrk gA lkekftd ifji{; e ,lh fonirk, ;k djhfr;k lkekftd fonirk dgh tkrh g] tk fd dBkjrk l ikyu dju ij ekuo dh lkekftdrk dk {kfr igpkrh g] tcfd okLro e o fdlh le; e ekuo dh lkekftdrk d fy, ykHknk;h jgh gkxhA vr% ekuo dk nkf;Ro g fd ,lh djhfr;k ;k lkekftd fonirkvk dk le;kuqlkj l/kkj djd lekt fgr"kh cuk,A

lekt e lonk dfri; djhfr;k jgh gA Mk- माधव इस संबंध में स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः e fy[kr g &

^^Jfedk;k% o{k%LFky@--------@eke------AA**[58]

bl 0;X; e Mk- ek/ko u lekt d ,d Øjre pgj dk mnHkkf"kr fd;k g ftld lnL; vki&ge lHkh g vkर हममें से कोई भी इससे अछूता नहीं है। वे प्रश्न करते हैं कि वीरता dh ifjHkk"kk D;k ogh g tgk ,d /ku vkj cy l lEiUu 0;fDr vU; fucy ij viuk cy i;kx djrk g \ ugh] oLrr% ohjrk dh ijh{kk lekt cy oky d lkFk ifrLi)k dju ij ikIr gkrh gA blfy, वीरता के झूठे अहंकार को प्रदर्शित करने वाले समस्त संसाधन विद्रूपता के जनक हैं और झूठी शान से बचना ही सही सामाजिक सुधार है।

^mi{kk^ e Mk- ek/ko ,d lkekU; ik< 0;fDr d ifjfLFkfr;k l Hkkxu dk fpf=r djr g, fy[kr g &

> **''पत्न्याः केशालकः श्वतीभवति/तदा/मित्रैः सह पश्याम्यश्लीलचित्रपटम्।/**
> **मार्गे/कुक्कुरशवं अदृष्ट्वैव/करोमि मन्दिरे श्रीकृष्णदर्शनम्/वर्तमानपत्रे/**
> **मृत्युवार्तायाः पत्राणि/परिवर्त्य/पश्यामि सिनेतारिकाणां चित्राणि।/जपमालां**
> **गृहीत्वा/ गृहकलहं/शृत्वाऽपि न श्रुतमिव कल्पयामि/नवानि वस्त्राणि**
> ØhRok@xki;kfe@ik<koLFkke@vg tkukfe lo efi]@fdUr@e"kdd¥pd
> ifj/kk;@thfor@0;lufeo l tkre cr !AA**[59]

एक सामान्य सामाजिक व्यक्ति कैसे अपनी शक्ति और सामर्थ्य के क्षीण होने पर विद्रूप हो जाता है, यह उन्होंने सीमित शब्दों में चिकोटी काटते हुए लिखा है। संवेदनाअk dk vHkko ekuo dk मशीन बना रहा है और मशीनों में सामाजिकता नहीं होती है। इसलिए मानव में वेदना होना अनिवार्य है। यदि केवल मानव, मानव के प्रति वेदना रखने लग जाए तो निश्चित रूप से यह मानव के द्वारा,

ekuo d fy, fd;k tku okyk lcl cMk lkekftd l/kkj lkfcr gkxkA tl lk fd Mk- ek/ko u fy[kk g &

^^fNUuo{k% LFkykfu okrk;ukfu]@#f/kjjf¥ t rk fHkÙk;%]@eR;|oinuk;k l|lrk

रथ्याः/लुप्तप्रकाशाः दीपस्तम्भाः/निवेदयिन्त/मौने शोकम्!/प्रातःकाले/

vkxfe";fUr@Nk;kfp=xkgdk okrkgjk%@vu|Hkrfunk l|[kk%

ifyrklkf/kdkfj.k%@rRioe@xfe";fr@br%@eu|";kr eu|";L; J)k !!**[60]

blh idkj

श्रद्धा–मार्गाधे/सिगरेटशकलः–/ओष्ठयोर्गाली।''[61]

0;lu fdlh ;ok d fy, ,d cgr cMk lkekftd nk"k gA 0;lu d v/khu 0;fDr dk vPN cj dk dkbZ Hkku ugh jgrk gA 0;lu ,d lkekftd djhfr g rFkk 0;lu efDr lPpk lkekftd l/kkjA lkekftd l/kkj d fo"k; e Mk- ek/ko fy[kr g &

^^d% Lefj";fr@okrkudfyr d{k@vfd¥pukukeJ|tye\@dk

jpf;";fr@eukjFkH;% ldYiku\@dk u Hkfo";fr@i|"iLrcd

निगूढशस्त्रहस्त\@ vfi l"V% dk·fi r**ादृशः/परमेश्वरेण/यस्य कृते/**

er e yHkr@;FkkFkrke **[62]

प्रत्येक व्यक्ति यह कहता है कि समाज सुधार होना चाहिए उच्चादर्शों की बातें सभी करते हैं, लेकिन पालन के विषय में महान् मौन हमेशा उपलब्ध रहता है। कोई भी व्यक्ति सकारात्मक सुधार d fy, vkx vkuk नहीं चाहता है हमेशा दूसरे से ही शिवाजी या महाराणा प्रताप बनने की अपेक्षा की जाती है, स्वयं प्रयत्नशील नहीं है यह एक बहुत बड़ी सामाजिक विद्रूपता है। जब उस कः (कौन)

प्रश्न के उत्तर में हम स्वयं को रख देते हैं तो वहाँ से सामाजिक सुधार आरंभ हो जाते हैं। इसी idkj l ^o;* e fy[kr g &

^^o;; Lokr«;fi;k%@--------@o;; d ufUofr dk tkukfr cr !**[63]

dgu dk rkRi; ;g g fd lkekftd fonirk, cuku e gekjk Hkh dkb de gkFk ugh g rk mld l/kkj dk nkf;Ro fdlh vkj d flj ij D;k e< \ D;k u vg vkj o; feydj bl dk; dk i.k lQyrk rd djr jg \

Hkk"kk vkj fyfi gekjh lkekftdrk d vg j{kd gA fdUr ge fodkl dh v/k nkM e bu nkuk dk ihN NkMr x, A ;g viR;{k :i l ,d cMk lkekftd foni.k gA Hkk"kk vkj fyfi dk lj{k.k ,d cgr cMk lkekftd l/kkj gA ;fn ge mnkgj.k y rk egkHkkjr egkdkO; d विषय में लिखा है ''यन्नभारते तन्नभारते।'' इस प्रकार से ज्ञान के मामले में विश्वगुरु की उपाधि से अलंकृत रहा भारत आज ज्ञान के लिए पश्चिमाभिमुख होकर विदेशों के सम्मुख शीर्षासन कर रहा है ble l/kkj vfuok; gA[64]

lLdfr lekt dk mPpre opkfjd ik;nku gkrh gA Mk- ek/ko fy[kr g&

^^ehVj&QhV&lfUVehVjjkfnifHkekku%@lLdfru eh;rA**[65]

rk fQj lLdfr d vfo/kku dk lk/ku D;k gk ldrk g \ निश्चित रूप से इस प्रश्न का mRrj lekt d fodkjk l cpk, j[kuk vkj lkLdfrd eY;k dk ikyu djuk gh gk ldrk gA

lek/kku d fo"k; e Mk- ek/ko u fnukd 20&11&2005 dk x# d ifr lefir viu काव्यांश में लिखा है –

''गुरुणा खड्गो दत्तः/मया हता वासनाः/गुरुणा शूलं दत्तम!/मया

fonk·g³·dkj%@x#.kk pØ inÙke@e;k fNUuk i:dfr%@ru lefi:r%

पाशः / मया बद्धः पशुभावः /आदिष्टं तेन खनित्रं ग्रहीतुम् /

e;kUefyrkLlLdkjk%@xjke;k ikIrk xnk@Å#Hk³x drk erk Øk/kL;A**[66]

xkxj e lkxj Hkj ; okD; lkekftd l/kkj d LFkk;h ifreku gA

ifjokj ,d egRoi.k lkekftd bdkb gA lkekftd fonirk, ik;% ifjokj l gh lekt e Qyrh g vkj mudk lek/kku Hkh ifjokj l gh iklr gkrk gA ^rFkkLr* e Mk- g"kno ek/ko u lIj vk/kkfjr v"Vd fy[kk g &

''सदनं मधुरं द्रविणं मधुरम्, अन्नं मधुरं शयनं मधkjeA

&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&

R;T;r dkUr;k uu fi;;k lg eknrAA**[67]

bl v"Vd e ge ikfjokfjd fonirkvk vkj lek/kkuk dk leok; iklr gkrk gA ;fn ge ikfjokfjd lc/kk e m".krk dk vHkko j[kr g rk o lc/k VV tkr g vkj ;fn vfrfjDr m".krk g rk o lc/k cnuke gk tkr gA blfy, ikfjokfjd lc/kk e mfpr leUo; gkuk lkekftd सुधार के लिए आवश्यक है। इसके अतिरिक्त वधूस्त्रोत व्यंग्य में डॉ- ek/ko u fL=;k dh lkekftd fonirk dk [kydj 0;fXkr fd;k g &

^^vylk dk;pkjk ;k enfi.Mfoof/kkrkA

&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&

rL;k lR;k lokflU;k o/;k rL;k uek ue%AA**[68]

bl 0;X; dk i<dj ,d ckj e gh tk fp= cu tkrk g og ,d cgr cMk lelkef;d lkekftd nk"k g] ftl e l/kkj d fy, fL=;k dk viu ufrd nkf;Rok dk le>uk gkxkA

o.kk:<xfUFk% e Mk- ek/ko u dgk g fd lLdfr d irhd _f"k;k dh db o"kk dh riLp;k vkj lk/kuk dk ifj.kke gA fdlh irhd dk vlfo/kk d dkj.k R;kxuk lehfpu ugh

g] D;kfd dN irhd ,I g ftud }kjk ILdfr bI iFoh ij mifLFkr yxrh g] tIk fd 'शाटी' कविता के एक मुक्तक में वे लिखते हैं –

''यदा/शाटी किंवदनती भविष्यति/तदा

IiLdfrjfi od.Bokfluh Hkfo";frA**[69]

ILdfr vkj Ikekftdrk ,d nIj ij vU;kU;kfJr g ,Ih fLFkfr e ge ILdfr dk od.Bokfluh gku I cpkuk gA

y?k foKkiuk d fo"k; e 0;X; fy[kr g, fofHkUu fo"k;k ij Mk- ek/ko dh y[kuh fy[krh g fd &

^^yfBrefLr@-------@egkfo|ky;&ik³x.k"k---------AA**[70]

vFkkr ik[k.M] vkMEcj ;k >Bk fn[kkok fn[kkdj foKkiu djuk gekj thou e oeuL; dk ?kky jgk gA n[k bI ckr dk ugh g fd IeL;k g] cfYd n[k bI ckr dk g fd bu IeL;kvk d Iek/kku {kh.k gkr tk jg g vkj Iek/kkuk dk i;kx dju oky m|kxjfgr gkdj cB gA

'अशक्तिः' विषय पर लिखते हुए डॉ- ek/ko dgr g &

''शक्नोम्यहम्/---------/स्मर्तुं नास्ति मे शक्तिः।''[71]

bI idkj I ge dgr g fd IkeF; d vuIkj dk; u djr g, vkj xyr ikFkfedrk Iph d vuIkj pyr g, Ikekftd fonirkvk e I/kkj djuk cMk gh dfBu dk; gk tkrk gA

^dke* d fo"k; ij fy[kr g, Mk- ek/ko dgr g fd &

^^Vh- oh- चैनल'' इत्याख्यः कामस्य स्तूपविक्रयः।/अल्पांशविक्रयं पश्य

IofoKkiu"k pAA@oÙki=kf.k oÙkkUrfÜp=Üpo áukor%A@IDILd.Myu&

bR;k[;: dofUr dkefod;eAA@ok;xkfHkHkrk of): dk.MeÜp

निरंकुशः।/जंगमदूरभाषेषु ह्यनतर्जालं मनोभुवः।।/कkek;k ;kfUr ekrRo

LoYi o;fl fuL=ieA@;kou ;kfUr ik<Ro njkpkjÜp dU;dk%AA@

ieh uo] ifruo áufHkKk ;ok l[kk%A@Hk³d ukfLr Hk; yTtk ukfLr

कामस्य शासनम्।''[72]

Mk- ek/ko u Vh- oh- puyk dk dke dk gkylyj Mhyj rFkk foKkiuk dk fjVyj lyj crk;k x;k gA fofHkUu idkj d loknk] fp=k d }kjk lokni= dkefoØ; dju oky lDlLd.My uked lokn dk vukoj.k djr g] blls fo;kxk dh fcØh c< tkrh g vkj कण्डोम निरंकुश हो जाता है। इसके साथ ही मोबाईल फोन को काम का अन्त्तर्जाल बतk;k g] njkpkj gr dU;k, dkekjkoLFkk e fuHk; gkdj vYi o;l e gh ekrRo dk ,o ;koukoLFkk e ik<Ro dk iklr djrh gA Mk- ek/ko dgr g fd vkt dh ukjh dk u rk ieh] u gh ifr vfir dkb vutku ;od Hkkx jgk gA vkt ukjh dk u rk Hk; g ,o u gh yTtk gA

oreku le; e 0;klr lkekftd fonirkvk dk Mk- ek/ko u ^fofo/kkipkjitk* e Li"V fd;k gA o fi;rek d fy, dgr g fd &

''प्राणेशीं परमां लुब्धां धनस्य व्ययकारिणीम्।

njHkk"k.k gkVy xUrekokg;kE;gAA**[73]

Mk- ek/ko कहते हैं, हे परम लोभी, धन की व्ययकारिणी, प्राणेशी, होटल जाने के लिये, rEgkjk Qku l vkgokgu djrk gA Mk- ek/ko vkt dh ukjh d pfj= dk Li"V djr g, dgr g fd vkt dh fi;rek ukjh /ku dh ykHkh g vkj fofo/k idkj l [kp djku dk vkrj jgrh gA

blh idkj vfHku=h d fy, Mk- g"kno ek/ko dgr g fd &

''रूपदर्शनप्रावीण्ये! प्रथिते! वासजोत्थिते।

vYikYioL=lEiUu! Nk;kfp=! fLFkjk HkoAA**[74]

vkt d le; e vfHkuf=;k fo[;kr gku d fy, dN Hkh dju dk r;kj jgrh gA viu रूप का प्रदर्शन करना तो उनका पेशा है ही इसके लिए वह छोटे–छोटे कपड़े पहन कर भी लोगों dk vkdf"kr dju dk i;kl djrh gA blh idkj Mk- ek/ko dgr g fd vkt lhrk ,o vfEcdk tlh nfo;k dh Lrfr ugh dh tkrh g] vfir vfHkuf=;k dk ituh; ekuk tkrk g vkj mudk Lej.k fd;k tkrk gA ykxk d eu&efLr"d e vfHkuf=;k dh rLohj jgrh g ftudk o Lej.k djr jgr g &

^^uo lhrk lnk ^ek/kjh* Le;lr@vfEcdk uo ^jkuh* iu% Lr;rA@
'प्रीति जिण्टा' 'विपाशामयी सभ्यता/यौवनोचछङ्खलं तावकं भारतम्।''[75]

Mk- ek/ko lkekftd fonirk d vUrxr oreku e 0;klr dke&okluk l ihfMr i#"k d mRlkg dk 0;Dr djr g, dgr g fd &

^^;kL;R;| firxg u nf;rk g"k.k 0;klr eu%@n"V dkefi dkfeuh fg
uxj lokf/kdkjkk u e@gkVy fotu] l[khe iou uhRok fluekxg@dk
dk oh{; iu% iuÜp fojg dp uohukRloeA**[76]

Mk- ek/ko dgr g fd iRuh vkt viu firk d ?kj vFkkr ek;d tk jgh g] bl fLFkfr e ifr dk fdlh idkj dh dfBukb ugh gk jgh g] vfir og g"k l ifji.k g] D;kfd ?kj e iRuh d u gku ij vc og fdlh Hkh vU; L=h dk n[ku d fy, Lor= g] ml jkdu&Vkdu okyh vc ugh gA bl le; vU; L=h dk og gkVy] fluekgky ,o cxhp e y tkuk pkgrk gA

सरकार द्वारा प्रदत्त आरक्षण सामाजिक विद्रूपता का एक बड़ा कारण है। किसी वर्ग विशेष dk lekt dh e[;/kkjk में लाने का अवसर निश्चित ही दिया जाना चाहिए पर इसकी कोई

समय–सीमा भी निर्धारित होनी चाहिए, जो समय–सीमा संविधान के अन्तर्गत निश्चित की गई थी, उसे राजनेताओं द्वारा स्वार्थवश समय–समय पर बढ़ा दिया जाता है। डॉ- g"kno ek/ko dgr g fd &

^^;kX;rk fd u \ tkR;k in ikI;r@jktuhR;k p ekukUufr tk;r@
योग्यता दृश्यते कुत्र तेजस्विनां/शिक्षितैस्तैर्निराशैर्युतं भारतम्।''[77]

vkj{k.k d dkj.k ;kX;rk dk dkb vkfpR; ugh jg x;k g] D;kfd vkt d le; ukdjh ,o in ;kX;rk dk n[kdj ugh vfir tkfr dk n[kdj मिलता है। उच्च शिक्षित युवाओं की तुलना में अल्प शिक्षित व्यक्ति को जातिगत आधार पर शीघ्र नौकरी प्राप्त होती है। डॉ- ek/ko dgr g fd &

^^;= ykHkk; Ik[;r Irk fN|r@;= tkR;kfnfHk;kX;rk ikI;rA@
Hk.kgR;k fL=;k tk;r yhy;k@Hkry Hkkfr rÙkkod HkkjreA**[78]

आज प्रभावी लोगों ने सज्जनों का जीना मुश्किल कर दिया है, आए दिन गुण्डे–बदमाशों द्वारा सज्जन लोगों को परेशान किया जाता है। आज हम उस समाज में रहते हैं जहाँ स्त्रियों की Hk.kgR;k vkjke I dh tkrh gA

¼4½ vkrdokn &

vkrdokn oreku lekt dh ,d iR;{k vkj fojkV cjkb gA oLrr% vkrdokn u doy भारतवर्ष बल्कि समग्र विश्व में ही क्षति पहुँचा रहा है। डॉ- g"kno ek/ko viuh idfr d vuIkj ledkyhu fo"k;k dk foopu djr gA bI foopu d Øe e mUgku vkrdokn dk Hkh viuh ikFkfed Iph e j[kk gA Mk- ek/ko d vuIkj vkrdokn dk jkdu dk ,d cf<;k Ik/ku ;fn कहा जाए तो वह है आतंकवाद में उपयोग होने वाले संहारक अस्त्र–शस्त्र को रोकना। जैसा कि भारतवर्ष में स्वतंत्रता के पश्चात् हाल ही के कुछ वर्षों में जितनी आतंकी घटनाएँ हुई हैं, उनमें से

vf/kdrj e ce lcl cMk lk/ku jgk gA dgh Hkh] fdlh Hkh vkrdh ?kVuk dk ce l gVkdj देखना बड़ा मुश्किल है। इसी बम को डॉ- ek/ko u viu dk0; e LFkku fn;k g A

^^Jfedk;k o{kLFky@--------@eke--------AA**[79]

उपरोक्त कविता में वीरता पर प्रश्नचिन्ह लगाते g, Mk- माधव कहते हैं कि किसी बलशाली चाहे वह धन, शक्ति, पराक्रम, योग्यता, कौशल या किसी भी रूप में हो, उसका उपयोग करके हमेशा detkj ij Hkkjh iMrk gA ce tl Li"V :i l ujlgkjd lk/ku d ckj e o dgr g fd tk ce Qd ¼pyk½ ldrk g] og jk{kl gA Li"V :i l ce pyku oky dh jk{kl lKk ndj y[kd ;g Li"V djuk pkgr g fd fdlh dk Hk;kØkr dju d fy, ;k vkrdokn dk mRiUu करने के लिए किसी विनाशक साधन का होना उसकी भयोत्पादन क्षमता को बहुगुणित कर देता है। किसी सामान्य निर्मम व्यक्ति को यदि विनाशक बम का साथ मिल जाए तो निश्चित रूप से उसका iFk&Hk"V gkuk vkrdokn dk tud gA bl idkj l Mk- ek/ko fuee vkj foijhr cf);k dk नखदंतविहिन शेर बनाकर उनकी समाज में हास्यास्पद स्थिति बनाने को आतंकवाद के शमन के रूप e n[kr gA

viu o.kk:<xfUFk e Mk- ek/ko bl fo"k; dk vkj foLrkj nr g, dgr g fd&

''उपहारसंपुटे/उपाहारेण सह विगूढः/श्रीमान बोम्बः/सहसैव/ प्रातराशं करोति जनानाम्।/अवतरति निशीथे/कृष्णवन्नगरम्/किन्तु कवलीकरोति/ गोकुल–बालकान्।/अन्धकारे जातो बॉम्बमहाशयो/नगरे सूर्यातपे@ dkyjk=h सृजति।/द्विचक्रिकायां, मृत्तैलयाने/स्कूटरयाने, लोयाने/सुप्तोऽसौ/ शान्तिचक्रं नाशयति, संसारचक्रं रूणद्धि/जीवनचक्रं मृत्युपङ्कलगं करोति।/ बॉम्बमहाभागः सभां प्रविशति,/ तत्र शोकसभा भवति/बॉम्बमहर्षभो बॉम्बकुञ्जरा बॉम्बसिंह,

JhJhJhckEcjk tk@ukn dRok Lofifr&ijujfi fpjfunk;ke@------@

ân;efLr] ukfLr okA**[80]

स्पष्ट है कि वर्तमान में घटित कतिपय विशिष्ट घटनाएँ जिनमें टिफिनबॉक्स बम, साइकिल पर रखा बम, प्रेशर कूकर बम, स्कूटर बम, कार बम, रेल में रखे बम के द्वारा हुई घटनाओं को इंगित djr g] ftue कि बड़ी मात्रा में जन और धन की हानि हुई है। शासकीय एवं व्यक्तिगत संपत्तियों dk {kj.k gvk gA db funk"k 0;fDr dky dofyr g,] fdru gh cPp vkj efgyk, dky d गाल में समा गए। सुबह उठने से लगाकर नाश्ते, भोजन, कार्यालय जाते हुए, स्कूल जाते हुए, विवाह vkr शवयात्रा तक एक ही प्रकार का दृश्य जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की आँखों में भय व्याप्त हुआ। वह इसी बम महाशय की देन है, जो कि अपनी एक नाद से कई लोगों को चिरनिद्रा में सुला चुका है। इस बम की विनाशकता के बारे में लेखक कहते हैं कि यह हृदयहीन होता है और जो bl pykr g o Hkh ân;ghu gh gkr gA bldk mnkgj.k viu dk0;lxg rFkkLr e Hkkjr d vf/kokfNr ,o 1992 eEcb ce /kekdk d ie[k vkjkih nkÅn d ckj e fy[kk g &

^^ljk ihRok /ku âRok ;L; uk 0;Fkr euA@--------@

Hkkbiykd lnk HkäÓk Hkko;e lnk fi;kAA**[81]

;gk nkÅnHkä ,d ldr ek= g] oLrr ;g vkrdokn Qyku oky fdlh vkrdoknh की मनःस्थिति, उसकी कार्यशैली और उद्देश्य को व्यक्त करता है। न केवल आम लोगों में बल्कि विभिन्न प्रकार से प्रशंसित और अपने—अपने कार्यों में दक्ष लोगा dk viu dk; l foe[k djuk vkj ,d ek= Hk; d okrkoj.k e thu d fy, ck/; djuk gh budk y{; gkrk gA ;g y{; किसी आत्मिक संतुष्टि के लिए नहीं होता है, बल्कि एक प्रकार का नशा है, जो कि नशीली वस्तुओं vkj dlxfr l mitrk gA bl idkj l vkrdokn d eylkr d ckj e Mk- माधव नशीली वस्तुओं कुसंगति और गलत विचारधारा को कारण मानते हैं। हमेशा समस्या के समाधान के लिए

mId eyIkr ij gh igkj djuk pkfg,] bI fopkj d vuIkj vkrdokn dk u"V dju d fy, fdIh vkrdoknh dk ty Hktu ;k QkIh nu dh vi{kk vkrd d ey dkj.kk dk u"V djuk ikFkfedrk I dgr gA

Mk- माधव स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः में शांति की व्याख्या करते हुए कहते हैं

''शान्तिरस्ति/अणुबोम्बस्य बाह्यवटलम्।।''[82]

oLrr% ftI ce dk o vkrdokn dk dkjd ekur g og ce tkfr] o.k] 0;fDr ;k fopkj/kkjk dk Hkn ugh djrk gA mId IkFk fd;k x;k fopyu mIdh foLQkVdrk dk उद्घाटित कर देता है। इसलिए उस विनाशकारी साधन बम के विस्तृतम स्वरूप अणुबम के बाह्यपटल पर अप्रतिम और असीम शांति बनाए रखना अनिवार्य होती है, क्योंकि वहाँ का विचलन vkrdवाद के पोषक को भी सर्वदा के लिए शांत कर सकता है।

बम के अतिरिक्त मशीनगन को संकेत करके समस्त उन साधनों को आतंकवाद का कारक कहते हैं जिनमें जीवित मानव को शव बनाने की क्षमता है। वहाँ भी अप्रतिम शांति विलास करती है।

''या शान्तिः/मशिनगनवक्षसि स्वपिfrA''**[83]

इसके पश्चात् अखिल विश्व में शांति का ढोंग करने वाले और मुख्य रूप से आतंकवाद के ik"kd ox ij dVk{k djr g, dgr g &

''शान्तेर्वस्त्राहरणकर्तारः/जल्पन्ति/शिखरपरिषत्सु/अतः

शान्तिरपि/रूपजीविनीप्रीतिसदृशी वर्तते।''[84]

वस्तुतः शांति घृणित नहीं है, किन्तु भय के पोषक अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए शांति का ढोंग djr g vkj fgIk dk cuk, j[kr gA ogn Iekt tk fd vkrdokn I ihfMr g mudk fy, शांति बनाए रखने का प्रयास करने का ढोंग या पाखंड उनकी जीविका है। इसलिए शांति का ढोंग करने वाले छद्म शातिदूत जो कि वस्तुतः कट्टर आतंकवादी हैं, वे न केवल भारतवर्ष बल्कि विश्व

dh lex ekuo tkfr d fy, gkfudkjd g] mud okLrfod Lo:i dk mtkxj dju l gh vkrdokn ley u"V gk ldrk gA

(5) वैश्वीकरण व उपभोक्तावाद –

वैश्वीकरण का अर्थ ''वैश्विक सांस्कृतिक व्यवस्था** dh mRifRr l yxk;k tkrk gA ;g ,d ''वैश्विक संस्कृति'' है जो अनेक प्रकार के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रगतियों के परिणामस्वरूप mRiUu gkrk gA bl lkekftd ,o lkLdfrd fodkl d vUrxr db phtk vkrh g] tl & mixg vk/kkfjr lpuk rduhd dk vfLrRo] miHkkx ,वं उपभोक्तावाद की वैश्विक पद्धति का जन्म, विश्वव्यापी जीवन–पद्धति का परिष्करण, फुटबॉल एवं क्रिकेट विश्वकप जैसे विश्व स्तर के खेलों का आयोजन, पर्यटन का विस्तार, राष्ट्र–राज्य की संप्रभुता का ह्रास, एड्स जैसी विश्व–व्यापी LokLF; leL;k] l;Dr jk"Vl?k ,o lcl T;knk egRoiर्ण है वह है ''वैश्विक ग्राम'' के जैसी वैश्विक चेतना का प्रसार। इस प्रकार वैश्वीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें सामाजिक एवं lkLdfrd 0;oLFkk ij Hkkxkfyd lhekvk dk egRo de gk tkrk g rFkk ykx Hkh bl ckr dk ijh rjg l le> jg gkr gA

oreku vUrjk"Vीय परिदृश्य में भारतीय संस्कृति की ''वसुधैवकुटुम्बकम्'' की अवधारणा भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण के रूप में गुंजायमान है । यह एक पूँजीवादी क्रांति है, जो पूँजीवाद एवं साम्राज्यवाद से ऊपर की अवधारणा है जिसमें संपूर्ण विश्व सिमट कर ''ग्लोबल विलेज'' d :i में परिणित हो रहा है । वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक देश की अर्थव्यवस्था को वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत किया जाता है, जिसके आधार पर सीमाहीन विश्व का निर्माण हो सके एवं संपूर्ण विश्व एक ही अर्थव्यवस्था एवं एक ही बाजार के रूप में कार्य कर सक A

वैश्वीकरण के कारण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे हैं । तकनीकी के क्षेत्र में क्रांतिकारी युग की शुरूआत हुई है । संचार की क्रांति, यातायात के साधनों का द्रुतगति से

fodkl ,o cktkj e miyC/krk] ehfM;k] dEI;Vj ,o bUVjuV dk Qyrk tk jgr जाल विश्व को तेजी से जोड़ रहा है, इससे वैश्विक दूरियाँ कम हुई हैं, सीमाहीन विश्व का निर्माण हुआ है । भूमण्डलीकरण की नई सभ्यता एवं संस्कृति विश्व में स्थापित हो रही है, फास्टफूड, पॉप संगीत, जीन्स–टीशर्ट, टेलीविजन संस्कृति, फिल्म, सेटेलाइट आदि ने बाजारीकरण dk ikRlkfgr fd;k g] हर विज्ञापन में नारी है, तात्पर्य विज्ञापन का आधार नहीं बन रहा है, उपभोक्तावाद वैश्विक संस्कृति के रूप में उभरा है । शिक्षा का वैश्वीकरण हुआ है, श्रम का भी वैश्वीकरण हुआ है । प्रतिभाओं का iyk;u i th iokg dh rjg gk x;k g A cgjk"Vh; dEifu;k d {k=kf/kdkj e vfHkof) gk jgh g tk ,d lEiHk jk"V dh uhfr;k dk iHkkfor gh ugh dj jgh g] oju io uhfr;k e vkey&py ifjoru dj jgh g A tku jkYl dk uo mnkjokn mfnr gk jgk g liHk jk"Vk dh iHklRrk ij dBkjk?kkr gk jgk g A

वैश्वीकरण के द्वारा विकसित देशों की विकसित तकनीक का प्रवाह विकासशील देशों में किया जा रहा है । इससे विकासशील देशों में नवीन तकनीकों का प्रयोग हुआ है, जिससे उनकी उत्पादन क्षमता का विस्तार हुआ है । औद्योगीकरण का विकास विश्वव्यापी हो रहा gA mRiknu ,o miHkkx e vUrj iVrk tk jgk g A de dher ij J"B oLrvk dh miyC/krk tu&lkekU; dk gk jgh g A lkLdfrd vknku&inku d {k= e Hkh 0;kid ifjoru gk jg g A ekuo d lrfyr विकास में वैश्वीकरण का योगदान अतुलनीय है, लोक कल्याणकारी सुविधाओं में शिक्षा के अतिरिक्त स्वास्थ्य के लिए अस्पतालों में चिकित्सा जगत का लोकव्यापीकरण विश्व में देखने को मिल रहा है । tu lkekU; d l[k lef) ,o oHko e ifjoru gvk g A

वैश्वीकरण ने नई राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था को जन्म दिया है । इससे अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुईं हैं । राष्ट्रों की स्वतंत्र व आत्मनिर्भर नीतियाँ प्रभावित हुईं हैं, विश्व को एक /koh; cuku ij tkj fn;k tk jgk g A 0;kikfjd nf"V l lH;rk, ikl vk jgh g] fdUr jk"Vk

e nfj;k c< jgh g A lLdfr dk LFkkuh;dj.k gk jgk g A ijEijkxr m|kx&/kU/k] cgjk"Vh; dEifu;k d dkj.k pkiV gk jg g] y?k ,o dfVj m|kx vfUre lkl fxu jg g] egxkb ,o भ्रष्टाचार का विश्व व्यापीकरण हुआ है । पुराने मूल्य एवं आदर्श समाप्त हो रहे हैं । महिला सशक्तिकरण के साथ महिलाओं पर अत्याचार, vukpkj] ikikpkj c<k g A ckt kjokn u eky lLdfr dk tUe fn;k g] tgk ck.M fcdrk g] ykdrkf=d fu.k; ifØ;k iHkkfor gk jgh g] मानव को उसकी भौतिक आवश्यकताओं के आधार पर परिभाषित किया जा रहा है, जो मानव का vieku g] ifrjk/k gj jk"V dj jहा है, वैश्वीकरण की अनेक चुनौतियाँ हैं, उन्हें विकसित व विकासशील दोनों राष्ट्रों को समझना होगा अन्यथा विश्व सैम्यूअल हन्टिंग्टन के अनुसार सभ्यताओं d e/; l?k"k dh vkj c< jgk g A

rduhdh ØkfUr d dkj.k Hkkjrh; lekt e Hkh cMk ifjoru vk;k g A ol/kodVEcde की अवधारणा व्यक्तिवादिता के आगे हार रही है। वैश्वीकरण ने तकनीकी विशेषताओं के रोजगार की उपलब्धता में वृद्धि की है वहीं श्रमिकों के लिए आजीविका हेतु विकट leL;k mRiUu dj nh gA cM m|kxk d c<u l NkV m|kx ihN gVr py tk jg g] tk u; m|kx vk jg g mue vxj ,d dk jktxkj feyrk g rk mld ihN mUkrh l ykxk dk jktxkj खत्म हो जाता है । इसी को इंगित करते हुए स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः में डॉ- ek/ko dk ,d ifl) gkbd g &

^^foØhrkr {k=kr@;kfr d"kd% & v{.kk%@i;knk fjäk%A**[85]

ge viu vklikl e n[kr g fd df"k;kX; mRre Hkfe ij cM cM vkoklh; ,o 0;kolkf;d ifr"Bku cu x; gA dgh m|kx yxk fn; x; g ;g lc miHkkDrkokn dh nu gA वैश्वीकरण ने समस्त विश्व को उपभोक्तामूलक बना दिया है और उपभोक्ता भी विज्ञkiu vkj ipkj से यह तय करता है कि उसे क्या लेना है और क्या नहीं। उपभोक्ता को आवश्यकताओं से हटाकर

ckTkj e viuh vkj vkdf"kr dj fn;k gA ,d gh dk; dk dju d fy, ckTkj e db oLrvk की भरमार वैश्वीकरण की देन है। एक समय था जब पहले कोयला, नीम अkj ccy dh nkru l ही दाँत साफ हो जाते थे और 80–85 वर्ष की आयु तक साथ देते थे वहीं आज वैश्वीकरण की देन g fd db dEifu;k VFkikmMj vkj VFkiLV cukrh g fQj Hkh cPpk d gh nkr lM jg g A iR;d ;ok fdlh nUr fpfdRld dk ?kfu"B gk pdk gA ik<koLFkk d ckn udyh nkrk dk vkJ; yuk iMrk gA tcfd ipkj ;g fd;k tkrk g fd rFkkdfFkr VFkikmMj ;k VFkiLV l nkr lkQ] etcr vkj pedhy ,o jkxk.kjfgr jgxA e[k dh nxU/k] dhM lekIr gk tk;x] tcfd okLrfodrk bll dkIk nj gA blh idkj l ftl df"k l d"kd dk vk; gk jgh Fkh उसी को वैश्वीकरण के चक्कर में उलझा कर बिकवा दिया और कृषक के रोते रोते आँसू तक सूख गये। वस्तुतः बुरा वैश्वीकरण नहीं है बल्कि धन कमाने की असीमित लालसा इस वैश्वीकरण को बुरा cuk jgh gA Mk- ek/ko dgr g &

> ^^v= yH;r foukk gVV@^fdyk* feyu Ø;.ku lg@
>
> lk/kfdykferk o¥pukA**[86]

blh idkj

> ^^Hkoku tkukR;o ;r@ekuork;k ukfLr eY;e@vr%@
>
> foØ;dky f{kIrk lk ekxl----@;fn Hkor #fprk L;kr---AA**[87]

;fn ge cjkb d dkj.k dk nj djx rk cjkb Lo; nj gk tk;xhA

Mk- ek/ko dgr g &

> ^fyfifLVd* dy f"kr fcEcQye----/मुखचूर्ण शिष्टं त्वया विना।[88]

Mk- माधव कहते हैं कि जिन वस्तुओं की हमें आवश्यकता नहीं है उन वस्तुओं को घर में भरकर उनका उपयोग करके हम अपने जीवन की मूल आवश्यकताओं की पfr dju e leFk ugh हो पा रहे हैं और अपेक्षित शांति से दूर होते जा रहे हैं।

नेहरु युग में हिन्दी चीनी भाई–भाई और पंचशील के आदर्शों का अनुमान लगाकर हमने चीन के साथ मित्रता की किन्तु चीन ने जिस प्रकार से धोखा दिया उसी प्रकार से शुष्क आदशो d ekx पर चलते हुए हम जिस वैश्वीकरण के गुणगान गाते हैं वह वस्तुतः धोखा देने वाला है। डॉ- ek/ko dgr g fd &

^^;nk tkxfe rnk&@okLroe;h ^pfx t[kku*@ y.Bfr lokefi A**[89]

bl idkj l Li"V gkrk g fd fdlh Hkh fu.k; dk dju l igy i{k vkj foi{k nkuk का विमर्श कर लेना चाहिए अन्यथा अन्त में दुःख उठाना पड़ता है।

वैश्वीकरण की एक हानि के ऊपर डॉ- माधव विशेष रूप से ध्यान दिलाते हैं। वे कहते हैं कि भाषा के नष्ट होने से हम अपना गर्विला इतिहास भूल जाते हैं। हमारे आदर्श हमारी संस्कृति, हमारे mPpre मानदंड विस्मृत हो जाते हैं। वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव के फलस्वरूप हमारे भारतीय समाज e vxth Hkk"kk dk iHkRo bruk vf/kd gk x;k g fd ge viuh ekrHkk"kk vkj jk"VHkk"kk nkuk dk दूसरे और तीसरे पायदान पर रखने लग गये हैं। कुछ समय के पश्चात् कुछ भk"kk, vui;kxh gkdj mi;kxdrkvk dh irh{kk djr djr futho gk tk;xh vkj ge dgx &

''स्थितोऽस्मि / मम भाषायाः शवमुत्खातुं / कदाचित्----AA**[90]

संस्कृत की मूल लिपि जिसे अब केवल शिलालेखों और ताम्रपत्रों और कुछ पाण्डुलिपियों में gh n[kk tk lकता है। उसकी यह स्थिति वैश्वीकरण का परिणाम ही है। हमें वैश्वीकरण में केवल खरीदना या अपनाना नहीं है, बल्कि वैश्वीकरण की उपयोगिता वास्तव में तब है जबकि हम अपनी

वस्तु भाषा, विचार आदि समग्र विश्व की ओर प्रेषित करे, अन्यथा वैश्वीकरण जैसे हमें रूला रहा है oSl gh vkx Hkh pyrk jgxk vkj ge ;gh dgx fd&

^^bl lohlui okl.kk dfr dfr lioRl jk.kk@Hkk"kk

ekui;f³ ddk;k i¥pRo xrk·fLrA**[91]

blh idkj

''ध्वंसावशेषेषु/भाषा दग्धा/लिपिर्निमज्जिता/प्रीतिः खण्डिता/वेदना मृष्टा/

Hkkouk jtkfefyrk@lkUn;lyhyk i.k"Vk@J)k erk·fLr@vkLFkk p

च्युताऽस्ति/ अधुना/सर्वेष्वेतेषु ध्वंसावशेषेषु/इतिहासपृष्ठेषु/

अकालमृतसंस्कृतेर्गाथा शिष्टाऽस्ति/ किंवदन्त्या जीवितं कल्पितमस्ति/

Lolukukerhrdkyk tfYirk·fLrAA**[92]

वैश्वीकरण के इस दौर में हर वस्तु या सेवा का व्यापार जुएँ को तरह हो गया है। शेयर ckt kj vkfn dN 0;kikj rk lh/k lh/k tvk dg tkr gA bl fo"k; e Mk- ek/ko dgr g fd &

''कपटं विना विजयो न शक्यः/अशक्य एव।''[93]

0;kikj {k= e ge yxkrkj n[k jg g fd fdlh oLr dh miyC/krk de gku ij mldh dher c<rh है और उसका उत्पादन बढ़ाने से पहले ही चारों दिशाओं से उसकी आपूर्ति करके dher dk dN le; ckn tek[kkjk }kjk fxjk fn;k tkrk g Bhd blh idkj l i;klr mRiknu okyh oLrvk d lkFk e Hkh gkrk gA vHkh dN gh fnuk igy Hkkjr d vx.kh d"kd jkT;k d कृषकों द्वारा शासन के विरोध में किया गया आन्दोलन एवं कृषकों की आत्महत्या इसी का परिचायक gA

Mk- ek/ko u bl lEcU/k e fy[kk g fd &

''वराको मार्गदर्शकः/-----@;r% ;kf=dkuk pj.k/ou;% ifrfuorUr------A**[94]

वैश्वीकरण के इस दौर में जहाँ एक ओर हम अपने प्राचीन यशोगान करते हुए वास्तुकला की अप्रतिम रचनाओं को समग्र विश्व के दर्शन के लिए खोल रहे हैं वहीं इस कविता के माध्यम से डॉ- हर्षदेव माधव ने वैश्वीकरण की हानि के संबंध में लिखते हुए समाज में यह संकेत किया है कि वैश्वीकरण के लायक अभी हम नहीं हुए हैं। वैश्वीकरण से लाभ लेने का तात्पर्य केवल यह नहीं है कि हम धनार्जन करें, बल्कि वैश्वीकरण का तात्पर्य यह है कि विश्व की समस्त वस्तुओं पर प्रत्येक ekuo dk leku :i l vf/kdkj gk vkj viu thou dk og ij lEeku d lkFk th ld] fdUr tc ,lh fLFkfr curh g कि धन तो मिले किन्तु सम्मान चला जाए तो वह धन भी नाश का कारण gh curk gA tlk fd Mk- g"kno ek/ko fy[kr g &

^^v= [kf.Mrk feÙk;%@HkXuik"kk.kkuk dFkk ifj/kk; fr"BfUr@

rUrqukHktky[k.M"k@v[k.M uHk% ‘शतधा भवति/----------

भग्नाशाः पर्यटकk% ifrfuoo`UrA**[95]

अतीतात्मा कविता के माध्यम से विदेशी पर्यटक और मार्गदर्शक की दृश्यावली को चित्रित djr g, Mk- हर्षदेव माधव संकेत करना चाहते हैं कि हम वैश्वीकरण के सहभागी अवश्य बने, miHkkDrkokn d fy, gekj ikl cgr dN g] fdUr fcuk fdlh r;kjh d mlk lkeu ykuk gekj fy; gkfuin vkj gkL;kLin Hkh gkxkA

स्पष्ट शब्दों में डॉ- ek/ko fy[kr g fd &

“विदेशीपर्यटकः/भग्नतोरणद्वारं पश्यति।/मार्गदर्शकः/विजयानां/ संवत्सरान्

tYifrA@dkfpn~ ;qorh@jädjk tfyu ifjk;@--------@ vrhrL;kUrjkRek

cohfrA**[96]

vFार्त् हम क्या दिखाना चाहते हैं और जाने–अनजाने में क्या दिखा देते हैं। वैश्वीकरण बुरा नहीं है, लेकिन वैश्वीकरण एवं उपभोक्तावाद के इस दौर में हमें अपनी गरिमा का रक्षण करना भी vfuok; gA

वैश्वीकरण के इस युग में संपूर्ण विश्व एक गाँव बनकर रह गया है। विदशों में कार्य करने dh bPNk vkt d ;okvk dk vf/kd jgrh gA Mk- ek/ko dgr g fd &

^^Mkyj&ekfguh ukjh n"Bk nkyk;r eu%@Mkyj fglk dk n0;k

ज्ञानविज्ञाननाशनम्/ विदेशेषु महागोप्ता डोलरोऽस्ति महाप्रभुः।।/ असत्यमुच्यते

fuR;k ^fo tk* xg.kdkf{kभिः**।/त्यज्यते स्वं कुलं शीघ्रं धर्मो विस्मर्यते**

पुनः/स्वदेशगौरवं त्यत्तवा मातृभाषा च क्षिप्यते।''[97]

डॉलर में रूपया कमाना उनके लिए एक सुखद स्वप्न की भांति है। विदेश जाने के लिए व्यक्ति झूठ बोलता है, अपने देश के गौरव को धूमिल करता है तथा हीन कार्य करते g, Hkh Mkyj कमाने को वशीभूत होता है। डॉ- ek/ko dgr g fd

''आर्यभट्टं वियन्मण्डले स्थापयन्/नैव रोद्धुं क्षमं तान् विदेशं प्रति।/

स्वस्य वैज्ञानिकान् वृत्तिलाभे गतान्/प्रातिभे दर्शने निर्धनं भारतम्।''[98]

Hkkjr e ifrHkkvk dh deh ugh g] iR;d {k= e Hkkjr u viuh J"Brk fl) dh gA आकाश में आर्यभट्ट उपग्रह स्थापित करने के पश्चात् भी भारत के युवा धन के लालच में विदेश जाने को लालायित रहते हैं। विज्ञान के क्षेत्र में आज भारत दुनिया के गिने–चुने देशों की श्रेणी में g] fdUr vkt Hkh ;gk l uo&oKkfudk dk iyk;u gk jgk g] bldk ,dek= dkj.k /ku dh ykyl k gA

¼6½ by:DVªkfud midj.k &

ekuo thou dh lcl cMh [kkt vkx dgh tkrh g] vkx l gh ekuo thou e क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। वहीं पहिया या चक्का विज्ञान की प्रथम आधारशिला है जब से मानव ने ifg; dk vkfo"dkj fd;k g rc l yxkrkj thou e lfo/kk, c<rh gh tk jgh gA ifg;k ekuoh; foKku dk iFke lkiku g ftlI foKku vkjHk gkrk gA ekuo bfrgkl e foKku लगातार प्रगति करता रहा और समय–समय पर समय विशेष को किसी विज्ञान के द्वारा प्रदत्त migkj l ukekfकित किया गया है। वर्तमान समय को इलेक्ट्रॉनिक युग कहने में कोई संशय नहीं है। मानव मात्र चाहे वह विकसित देश का धनाढ्य व्यक्ति हो या फिर किसी दरिद्र समाज का साधारण व्यक्ति, वह निश्चित रूप से अपने दैनन्दिन जीवन में इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग अवश्य करता है। प्रा;% ;g Hkh dgk tk ldrk g fd gekjh fuHkjrk byDVkfud midj.kk ij आावश्यकता से भी अधिक हो गई है और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हमारी जीवनचर्या का अनिवार्य fgLlk cu pdk gA

Mk- हर्षदेव माधव ने स्पर्शलज्जा में चित्रपट[99] शब्द का प्रयोग किया है जिसमें सिने rkfjdkvk d fp= n[ku dk o.ku ikIr gkrk gA ;|fi fp=iV ;k fluek i.k:i.k byDVkfud ugh g] fdUr oreku le; e fluek yxHkx i.kr;k byDVkfud Lo:i dk ikIr dj pdk gA निर्माण के साथ–साथ प्रसारण एवं प्रदर्शन में भी इलेक्ट्रॉनिक साधनों का बहrk;r e i;kx fd;k जाता है। छायाचित्र शब्द जो कि इसी ग्रंथ में प्रयोग किया गया है वह साधन भी कुछ समय पूर्व तक इलेक्ट्रानिक नहीं था किन्तु वर्तमान समय में सारे छायाचित्र कर्शक (कैमरे) न केवल byDVkfud cfYd Mh-,l-,y-vkj- Hkh gku yx x; gA lLdfr;k dk le; d lkFk LkkFk ifjoru gkrk jgk g ;g ifjoru db dkj.kk l gvk gA db ckj gekjh nf"V ,o lkp dh lhek l ij Hkh dN dkj.k ,l gkr g ftud dkj.k ,d lH;rk dkydofyr gb vkj nljh सभ्यता का उदय हुआ। उस पराभव को प्राप्त कर चुकी सभ्यता का निदशu dju d fy, gekj पास में केवल उनके ध्वंसावशेष हैं। इन ध्वंसावशेषों से तात्कालीन सभ्यता का चित्र बनाना

आसान नहीं होता है कुछ विशेषज्ञ ही इस कार्य को कर सकते हैं। उन विशेषज्ञों की आँखें कैमरे की तरह होती हैं जो कि उस तात्कालीन सभ्यता के दृश्य का rRle Lo:i e n[kdj mld ckj e lekt e vueku ,o iek.k iLrr djr gA Mk- g"kno ek/ko u bl ckr dk crku d fy, fy[kk g fd&

''इतिहासविदो नेत्रयो/'केमेरा' फ्लेशलाइट–चकिता इव/केवलमुपहसन्ति।''[100]

Mk- माधव के कहने का उद्देश्य यह है कि जिस पdkj l ,d dejk doy fn[kk, tku oky Lo:i dk n[k ldrk g mldk Hkko ugh le> ldrk g mldk ey vFk ugh le> सकता है वैसे ही मृत संस्कृति के बारे में उसके अवशेषों से केवल अनुमान लगाया जा सकता है लेकिन उन प्राप्त ध्वंसावशेषों से संकेतित होने वाली मूल बात सतह पर आ जाए यह निश्चित नहीं कह सकते। क्योंकि उस भाव को पढ़ना किसी व्यक्ति के लिए आसान नहीं है, जबकि विशेषज्ञ भी doy vueku d lgkj gh vkx c<r gA bl idkj l Mk- ek/ko dejk] Nk;kfp= ,o ,Dlj d ek/;e l byDVkfud midj.kk dh lgt mi;kfxrk dk lfpr djr gA

oreku fpfdRlk i)fr e vfLFk lc/kh fodkjk d fy, vfuok; :i l ,Dlj uked परीक्षण किया जाता है। यह एक्सरे मशीन पूर्णतया इलेक्ट्रॉनिक पद्धति से संचालित होती है एक्सरे l ikLr fiV ¼Nfo½ d }kjk jkx d lc/k e fu/kkj.k gkrk gA ;g jkx doy jkx gh ugh g cfYd n?kVuk okyh fLFkfr e bl ikFkfedrk l fd;k tkrk gA bl lc/k e Mk- ek/ko Lo; dh jpukvk d fo"k; e dgr g fd &

^^i"iL;@ ^{k&fdj.k* ¼X-Ray½&PNfo lek@vfLr@ee dforkAA**[101]

;gk Li"V g fd y[kd Mk- g"kno ek/ko ,Dlj dh i)fr l ijh rjg fHkK gA

,d egRoi.k byDVkfud midj.k tk fd ekuo thou e yxHkx ?kyfey lk x;k g mld fo"k; e Mk- g"kno ek/ko u ,d mRd"V 0;X; rFkkLr e ekckby d fo"k; e ukjn vkj

ukjk;.k d e/; ,d dfYir okrkyki[102] fy[kr g fd ;g lk/ku ijLij ckr dju d fy, ,d lkekU; mi;kxh lk/ku cu pdk gA ekckby d db ykHkn;h mi;kx g tl njLFk 0;fDr dk लिखित या मौखिक संदेश भेजना स्वयं अपनी आवाज सुनाना एवं जिससे बात कर रहे हैं उसकी ckr luuk] dh xb ckrphr dk jf{kr djuk ,o ckn e Hkh ml luuk bld vfrfjDr u, idkj d ekckby ;=k e vl[; lpkj lc/kh lfo/kk, ikIr gkrh g bruk gh ugh cfYd ?kMh] Vkp] अलार्म, केलेण्डर, केलक्यूलेटर आदि साधनों और विविध एप्लीकेशन्स के माध्यमों से कई साधनों को gkFk d vUnj lhfer dj fn;k gA tu lkekU; d fy, ekckby d mi;kx l vU; db oLr, vui;kxh gk xb gA ogh bl byDVkfud ;= d nx.kk dk fxukr g, Mk- ek/ko dgr g fd >B ckyuk] Bxuk] /kr rk] vkj opuk l ;Dr gku l ;g ekckby db ckj n%[k dk dkj.k Hkh cu tkrk gA lekt e Hkh ge n[kr g fd tgk ,d ekckby d vku l ijLij lc/k n< हुए हैं, व्यापार में गुणात्मक परिवर्तन हुए हैं वहीं निकटता के होने पर भी दूरी का अनुभव, नैराश्य, Bxh vkj >B ckyuk vkfn nx.k Hkh ;fn ;g dg fd ekckby dh nu g rk xyr ugh gkxkA ;|fi ; lHkh igy l fo|eku jg g] fdUr budh mifLFkfr lhfer gkrh Fkh] ogh ekckby u iR;d ekckby/kkjd dk >Bk cuk fn;k g ble dkb lUng ugh gA oLrr% foKku v/kk gkrk g] mldk ft/kj eg dj nk m/kj pyk tkrk g] ge viu nfud thou e vfuok; bu byDVkfud midj.kk dk cMk gh lkp le> dj i;kx djuk pkfg,] ;gh Mk- माधव के कथन का उद्देश्य gA

Mk- g"kno ek/ko u Vh-oh- dk Hkh mYy[k byDVkfud :i e fd;k gA bld Hkh ykHk ,o gkfu jkeyhyk vkj jklyhyk djd ldr fd; g &

^^Vh- fo- ;U=s l[k! jkeyhykle@jktuhfr;Fkk jklyhyk;rkA@

'वाकिलाः' 'पोलिसाः' न्यायनाट्ये नटाः/पश्य निर्वाचने वञ्चितं भारतम्।''[103]

Mk- ek/ko u o.kk :<xfUFk e ,d egRoi.k byDVkfud midj.k dEI;Vj dk ekuo thou d lkFk ryukRed Lo:i e j[kk g &

^^vfHkyk"ke;i e"kdi@--------@dk;kf.k Øe okA**[104]

dEI;Vj oLrr% db byDVkfud midj.kk dk leok; g ftle l iR;d lgk;d midj.k tl ekml] LØhu vkj Ldu d vfrfjDr byDVkfud lpkj ,o lj{k.k d ek/;e tl Qkbल, स्टोर सेक्शन, विन्डो, कर्सर, सॉफ्टवेयर, इमेल एड्रेस आदि का उल्लेख करते हुए जीवन के fofHkUu vo;ok dh bul ryuk dh gA ;g ryuk bruh ltho Hkkf"kr gkrh g fd tl gekjk शरीर ही स्वयं एक संगणक हो, जिसमें नेत्र आदि अंग सहायक उपकरण और मानसिक एवं आत्मीय विचरण विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक संदेश प्रेरक एवं संग्राहक का कार्य करते हैं। वस्तुतः डॉ- ek/ko dk bl idkj l ryuk djuk bl egRoi.k byDVkfud midj.kk dk ekuo thou e vfuok; LFkku दर्शाता है। आजकल कम्प्यूटर का एक और परिवर्द्धित स्वरूप भी अधिकांश मात्रा में pklr gkrk g ftl yiVki dgr g] ble dEI;Vj d lkj vo;o ,o lgk;d midj.k lekfgr g] bl vklkuh l fdlh nlj LFkku ij y tk;k tk ldrk g rFkk de fo|r ,o vU; [kp fd, g, dEI;Vj dh rjg gh lpkfyr fd;k tk ldrk gA Mk- माधव के कथन का आशय यह ह fd ge ज्ञात से अज्ञात के सूत्र के अनुसार शिक्षा एवं विकास के क्रम को समझना चाहिए।[105]

'संगणकलीला' इस शीर्षक पर लिखे मुक्तक में डॉ- g"kno ek/ko iu% ml Kkr ,o lHkh d }kjk lkekU; :i l mi;kx fd; tku oky byDVkfud ek/;e dEI;Vj d }kjk thou thu dk rjhdk crkr g &

^^e"kdi nf"Vi fLFkjhd`ri i;r@rnk@Le`rh fjädkpiVyk;r@ okrk;u
eep?kkVf;ri lkgli djkfe@rnk@rLekr iyk;r euq%A@vUr tkiy@

ro lidire vUo"V; dke;@rnk@fo|RiokgPNnk Hkofr@---------

@fo"k; lfojokf/k rÙoe A**[106]

tc dkb y[kd viuh ckr dk crku d fy, vkIkuh l miyC/k rFkk lHkh d }kjk ik;% उपयोग किये जाने वाले साधन का उदाहरण के रूप में उपयोग करता है तो वह काव्य निश्चित रूप से जनसामान्य में प्रिय होकर संकेतित विषय को शीघ्र ही हृदयंगं कर देता है। हमें व्यवहार में भी bl ckr dk /;ku j[kuk pkfg, fd ;fn fdlh dk viuh ckr Li"V djd crkuh g rk mnkgj.k ,lk nuk pkfg, tk Jkrk dh vkIikl dh ifjfLFkfr;k l vkIkuh l miyC/k gkA

bl idkj Mk- हर्षदेव माधव लेखकों के लिए एक प्रकार से मार्गदर्शन करते हैं कि यदि हमें viuh ckr foLrr lenk; e igpkuh g rk ge le>ku d fy, mu mnkgj.kk dk vkj mikyEck dk mi;kx djuk pkfg, tk fd ml lenk; e vkIkuh l miyC/k rFkk yf{kr ox d }kjk ik;% mi;kx fd, tku oky gkA

¼7½ ufrd eY; ,o vi lLdfr &

'मूल्य' शब्द संस्कृr dh ^ey* /kkr e ^;r* iR;; yxku l cuk g ftldk vFk ^dher* या 'मजदूरी' होता है। मूल्य शब्द अंग्रेजी के VALUE शब्द से बना है जो लैटिन भाषा का शब्द हैं ftldk vFk lUnj ^oy* gkrk gA vFkkr tk Hkh bfPNr g ogh eY; g] blfy, dN fo}ku वेल्यूज शब्द के लिए संस्कृत के इष्ट शब्द को समानार्थी मानते हैं।

Mk- gdepUn d vulkj ^^thou dk lE;d ,o l;fer <x l pyku d fy, fopkjdk u ,lk vuHkko fd;k g fd thou d fy, dN ekun.M jguk pkfg,A mUgh d vk/kkj ij eY;k dh ckr dh tku yxh vkj thou dh आंतरिक एवं बाह्य आवश्यकताओं के आधार पर कुछ dlkfV;k cukb xbA ; dlkfV;k ;k ekU;rk, gh eY; gA**[107]

प्राचीन भारतीय चिंतकों ने विधिवत् मूल्य–विवेचन नहीं किया है। पुरूषार्थों और आदर्शों को ydj fd, x, fpru dk eY;&eheklk d :i e Lohdkj fd;k tk ldrk gA ik- कृ".kukFk u ‘मूल्य’ की परिभाषा के सिलसिले में ‘शुक्रनीति’ की कुछ पंक्तियों को उद्धृत किया है। शुक्राचार्य ने ftu ckrk dk vkfFkd ^eY;* d lc/k e dgk g] o dkQh gn rd ^thoueY;* d fy, Hkh ykx हो सकती हैं। शुक्रनीति के vulkj&^^tk dN Hkh vifre g] ctkM g] og jRu tlk gh gA lc मनुष्यों का मूल देश–काल के अनुसार तय होना चाहिए। जो गुणहीन है और व्यवहार के योग्य नहीं है, उनका कोई मूल्य नहीं है। कामना के अनुसार पदार्थों का मोलहीन या अधिक कमोबेश होता है। ik- कृष्णनाथ ने मूल्य की परिभाषा देते हुऐ उपनिषदों का शाकक्ष भी दिया है । ’’जो है’’, वह तो rF; g vkj ^^tk gkuk pkfg,** og eY; dgk tkrk gA bl idkj tk J;Ldj g] dY;k.kdkjh g og Hkh eY; g vkj tk ihfrdj g] :fpdj g] og Hkh eY; gA lR;e] शिवम, और सुन्दरम की Lohकृfr Hkh blh dFku dk iekf.kr djrh gA vk/kfud Hkkjrh; fopkjdk e Mk- jk/kkdey e[kth] Mk- देवराज, यशदेव शल्य, संघमलाल पाण्डेय आदि ने भी मूल्य के स्वरूप पर विचार किया है। राधाकमल मुखर्जी ने अपने मूल्य विवेचन में पाश्चात्य विचाjdk dk Hkjij mi;kx fd;k g vkj उनका विवेचन मुख्यतः समाजशास्त्रीय है।

eY; ,d ih<h dk viuh ioorh ih<h l fojklr d :i e iklr gkr gA ,d ih<h l nljh ih<h e eY; v0;Dr :i l gLrkrfjr gkr jgr g fdUr o tl vkj ftl :i e ioorh ih<h e gkr g Bhd mUgh Lo:ik e vxyh ih<h e lØfer ugh gkrA vf/kdrj ifjfLFkfr;k d cnyko d dkj.k] ub leL;kvk d ink gku d dkj.k vkj lekt dh ekufldrk e ifjoru d dkj.k eY;k e ifjoru gkrk g tk ub ih<h d fy, lgt Lohdk; gkA tl&tl ge आधुनिक युग में प्रवेश करते गये वैसे–वैसे इन मानवोपरि सत्ता का अवमूल्यन होने लगा। फलतः हमारे चरम लक्ष्य और उद्देश्य में तथा जीवन की सार्थकता की सोच में भी परिवर्तन हुए। मानव fu;fr dk fu;rk vc og vykfdd lRrk ugh g vfir bl oKkfud ;x e eu"; Lo; viuh fu;fr dk fu;rk cu x;k gA bld db n"ifj.kke Hkh LokHkkfod :i l lekt e mRiUu g,A ufrd ekU;rkvk d ifreku /oLr gku yx vkj mud LFkku ij LoPNkpkfjrk c<u yxhA ijkuh e;knk, Hkh /oLr gku yxhA

vkt ijku vkj u; eY;k d chp l?k"k tkjh gA ^^,d ;x ej jgk g ij nljk tUe लेने में असमर्थ है।'' ''शीघ्रता से मूल्य टूट तो रहे हैं, पर उनका स्थान नवीन मूल्य नहीं ले पा रहे gA ;gh fnXHke dh fLFkfr gA bl l cpu d fy, ge Hkfo"; e ftu ekuoh; eY;k d fodkl dk Lolu n[kr g mUg blh {k.k vkpj.k vkj thou i)fr e ifrf"Br djuk gkxkA**[108] vkt dk ;x fujUrj ek= ilo ihMk d d"V dk >y jgk g] D;kfd eY; dk vFk ek= ^vFk* gh eku fy;k x;k gA ;g Bhd g fd vkt d Hkkfrdoknh ;x e vFk dk cgr egRo g fdUr vFk gh सब कुछ तो नहीं। बस यहीं पर व्यक्ति भौतिकता के वशीकरण में अपने को असहाय पा रहा है। vkt ^vFk* dk gh ^vFk* ekuk tk jgk g ckfd 0;Fk ekuk tk jgk gA ^ijku vkj u; d l?k"k e rh{.krk vk xb gA tc ijku eY;k dk ijh rjg 0;oLFkk ugh fey jgh g vkj u; eY;k dk ijh rjg vkLFkk ugh fey jgh gA**[109]

नैतिक मूल्य प्रायः धर्म सापेक्ष होते हैं। भगवान में उनका विश्वास होता है। यह विश्वास ही उन्हें स्थायी आधार एवं शाश्वत रूप प्रदान करता है, जो परिवेश और परिस्थिति के साथ नहीं cnyrk g। धर्म निरपेक्ष, नैतिक मूल्य, मूल्य परिवेश और परिस्थिति के साथ बदलते रहते हैं। mfpr&vufpr dk fopkj ;gk Hkh dUn e jgrk g] yfdu mldk fu"d"k ,d tlk ugh jgrkA blhfy; ufrd eY;k d leFkd mUg /ke Hkkouk d lkFk tkM nr g vkj /ke fuji{k ufrd eY;k dh lRrk dk Lohdkj ugh djrA mudk ekuuk g fd vkpkj&fopkj d vfLFkj ifreku eY; :i e Lohdkj ugh fd; tk ldr gA bld foijhr nlj i{k dk rd g fd tc Lo; समाज का ही रूप परिवर्तनशील है, तो इसकी अवधारणा कैसे स्थिर हो सकती है \

ufrd eY; uhfr d vUrxr vkr g] tk 0;fDr d fpUru] pfj= vkj 0;ogkj dk निर्देशित करती है। समाज में व्यक्ति अपनी समस्याओं का नैतिक मूल्यों की शरण में समाधान ikrk gA tc 0;fDr vletl e gkrk g ;k /keldV dh fLFkfr ink gkrh g rk ufrd eY;

gh mldh enn djr gA lkekftd] vkfFkd] jktufrd eY;k e fHkUurk {k=h; ;k vU;kU; vk/kkjk ij gk ldrh g ijUr ufrd eY; og iy dk dk; djr g tk nk fHkUu rÙok dk आपस में जोड़ते हैं। विशेष रूप से जहाँ विभिन्नता अथवा अनेकता हो, वहाँ एकता की felky ufrd eY;k d dkj.k gh lHko gk ldrh gA ufrd eY;k dk iru ;fn gkrk g rk og ekuork dk iru gh dgyk;xkA

नैतिक मूल्यों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सभी मूल्यों में इसकी उपस्थिति अनिवार्य gkrh g vFkkr eY; dHkh vufrd ugh gk ldrA tgk vufrdrk g ogk eY; dh Lohdk;rk gk] ;g lHko ugh gA tl /kkfed eY; vufrd gk] jktufrd eY; vufrd gk] ;g lHko ugh gA धार्मिक मूल्यों की शिक्षा में नैतिक मूल्य तो होते ही हैं। वस्तुतः धर्म शब्द निश्चित व संपूर्ण अर्थ में lkotfud ugh gk पाया है। आज भी वह धर्म विशेष के रूप में ही स्थापित है। हम शिक्षा के क्षेत्र में 'धार्मिक शिक्षा दी जानी चाहिए' जोड़ दें तो यह वाक्य समाज में संशय की स्थिति को जन्म देगा और विवाद का रूप ले लेगा, परन्तु धार्मिक शिक्षा के स्थान पर नैतिक शिक्षा शब्द हो तो ;g okD; fufookn gkxk D;kfd ufrd eY; ijh mnkjrk d lkFk viu 0;kid vFk e ekuoh; i{k d lkFk ही पूर्ण स्थापित हैं। नैतिक मूल्यों में अनिश्चितता की कोई बात नहीं होती। उचित, अनुचित का बोध uhfr d vUrxr cMh Li"Vrk d lkFk gkrk gA ufrd eY; fpUru] pfj= vkj 0;ogkj dk निर्देशित करते हैं। अतः नैतिक मूल्यों को शाश्वत भी माना जा सकता है और समष्टिगत भी। जैसे /ke lukru gkrk g ol gh uhfr ijkruA tk ru e luk gvk gk ftl idkj vkV e ued feyk gkrk g tk ,d :i gk tkrk g mlh idkj tk eu"; d d.k d.k e lek;k gvk gk] ogh सनातन है। वैसे ही नीति अपने पुरातन स्वरूप को स्पष्ट करते हुए अपने स्थायी, शाश्वत व lef"Vxr eY;k dk ck/k djkrh gA

oLrr% ufrd eY; ,d vx d :i e lkekftd] lkLdfrd] /kkfed] vk/;kfRed eY;k l vofPNUu :i l जुड़े हुए हैं। हमारे नैतिक मूल्यों में धर्म एवं आध्यात्म महत्वपूर्ण हैं। ''हमारे देश की यह परम्परा रही है कि सदा ही नैतिक मूल्यों को धर्म और दर्शन के अंग में रूप में स्वीकार किया x;k gA ifj.kker% ln vkj vln iki vkj i.; vkfn dk fu.k; ufrd ekU;rkvk d vk/kkj ij gkrk jgk gA** blh ekuorkoknh ufrdrk dk l= rylh ge nr g tc o ^^ijfgr tlk i.; और परपीड़ा जैसा पाप'' कोई दूसरा नहीं बताते, तब ईश्वर और मनुष्य के बीच नैतिक मूल्य का सेतु lU/kku gh djr gA**[110]

ufrd eY; eu"; d thou e leL;k dk lek/kku ,o /keldV dk fujkdj.k djr g] अनिश्चय भ्रम, संदेह, शंका का निवारण करते हैं, व्यक्ति को संयम की प्रेरणा व उसके आत्मिक व Hkkfrd fodkl e lgk;d cudj lekt d fy, mi;kxh fl) gkr gA ufrd eY;k e विवेकशीलता का संबल लेकर चलना चाहिएA

^^vkt ekuo dh mUufr dk lk/ku ;U= g] fdUr ;U= ufrd ugh gA ekuo ;U= d lgkj mUufr djrk g vkj ;U= dk ufrdrk l dkb eryc ugh] ijUr bldk rkRi; ;g ugh fd ekuo Hkh ufrdrk l dkb lEcU/k u j[kA ekuo uhfr&vuhfr d cU/ku l eDr ugh gk ldrk og ;U=or gk tk; ;g dHkh lEHko ugh gkxkA** vkt eu"; viu Lo; dk LFkkfir dju e lkefgd eY;k dh fryktfy n jgk g] bl lnHk e ;g eY;k dk âkl gh gA vkt 0;fDrxr vkj lkefgd eY;k dk l?k"k tkjh gA

oreku le; e 0;kolkf;d ifrLi)k dk nkj lo= 0;klr g] pkg og xkeh.k {k= gk ;k शहरी सभी स्थानों पर मनुष्य अर्थ के पीछे दौड़ता हुआ दिखाई देता है। इस अंधी दौड़ में वह अपने ijEijkxr eY;k ,o lLdfr dk Hkyrk tk jgk gA ;gk rd fd ekuoh; lonukvk dk Hkh âkl gk jgk gA 0;kolkf;d ifrLi)k u fl{k ifjokj d ckgj cfYd ifjokj d vUnj Hkh n[ku dk

मिल रही है। पिता–पुत्र, भाई–भाई के मध्य भी व्यावसायिक प्रतिस्पर्द्धा बनी रहती है, निश्चित ही इन lc fLFkfr;k d dkj.k ijEijkxr ekuoh; eY;k e lØe.k dh fLFkfr fufer gkrh gA

Nne vk/kfudrk d uke ij gekj lekt dk cgr ufrd iru gk pdk g A gekj iotk के द्वारा स्थापित उच्च नैतिक एवं सात्विक आदर्शों को हमने रूढ़ीवाद एवं पिछड़ेपन का नाम दे fn;k gA /ke d ifr gee vukLFkk dk Hkko vk x;k g A viuh ikphu lLdfr d ifr gekjh vklfDr ugh jg xb g vkj lcl vge ckr g fd ekuo e Hkxoku ,o iki d ifr Hk; ugh jg x;k gA ekuo Hkkfrd ixfr dh vkj l i.kr% mnklhu gk x;k g blfy; Hkh lekt e व्यभिचार, अपहरण, बलात्कार, वेश्यावृत्ति, शीलभंग की घटनाओं में वृद्धि होती जा jgh gA ekuo e rkelh iofRr;k T;knk fodflr gk jgh gA T;k&T;k ge ic) gkr x, gekjh dkey ,o ekuoh; Hkkouk, ejrh xb vkj jk{klh iofRr;k c<rh xbA vkt geu mPN[kyrk] mnn.Mrk एवं अशालीनता को ही स्वतंत्रता एवं आधुनिकता का पर्याय मान लि;k g A fouerk] vkKkdkfjrk] सज्जनता एवं शालीनता आज पोंगोपन एवं उपहास का कारण बन गई है । निष्ठा, श्रद्धा, सम्मान, nyHk x.k gk jg g A

उच्च मध्यमवर्गीय एवं उच्चवर्गीय समाज में पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण की प्रतिस्पर्द्धा ने Hkkfrdoknh lLdfr dk fodkl fd;k है । संतोष धन को सर्वोच्च धन मानने वाले देश में भौतिक llk/kuk d ,d=hdj.k dh gkM lh yxh gb gA ifj.kkeLo:i yTtk dk vkHk"k.k ekuu okyh Hkkjrh; ukjh viuh e;knk dh y{e.k j[kk dk mYy?ku dj viuh mPp egRokdk{kkvk dk ;u&du&idkj.k i.k dju gr rRij gk mBh A

Mk- माधव नैतिक मूल्य के विषय में स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः ग्रंथ के 'उपेक्षा' नामक कविता e ,d ik< 0;fDr dk lgt fp= iLrr djr g, lekt dh ufrdrk d vilLdfr dh vkj ?keu dk yf{kr djr g &

''पत्न्याः केशालकः श्वेतीभवति/तदा/मित्रेः सह पश्याम्यश्लीलचित्रपटम्।/ मार्गे/कुकुरशवं अदृष्टैव/ करोमि मन्दिरे श्रीकृष्णदर्शनम्।/---------@ 0; lufeo l¥tkre] crA**[111]

वासना की पूर्ति के अभाव में व्यक्ति अन्य दिशाओं में संचरण करता है। पूर्ति के अभाव के ,dkf/kd dkj.k gks ldrs g] bu dkj.kk dk fn[kkrs g, y[kd dgr g fd tc 0;fDr dh lkeF; de gks tkrh g] okLrukifr ds lk/ku {kh.k gksu yxr g fdUrq rjfxr eu lno uru dh vfHkyk"kk e fnfXnxkUr e lpj.k djrk jgrk gA ,d vkj rks og viu lLdkfjr gksu dk ifjp; nrk g nljh vkj okl gh vU; volj mifLFkr gksu ij ufrd eY;k dk frykatyh देकर अपसंस्कृति की ओर मुड़ने लग जाता है। प्रौढ़ावस्था में मित्रों के साथ में अश्लील चित्र lkfgR; ,o fluek dh vkj ioRr gksuk mlds ;okoLFkk e iky x; l;e dk foni Lo:i gA blh idkj lu केवल व्यक्ति विशेष अपितु हमारे संचार के माध्यम भी जब किसी शहीद के विवरण dh vi{kk flurkfjdkvk dk ikFkfedrk nr g rc o lpkj ds ek/;e Hkh gekjh fxjrh lLdfr ds ifjpk;d cu tkr gA vkfLrdrk dk >Bk ifjp; tiekyk ydj vU; fo"k;k ij dku yxkuk dku lh lLdfr g \ bl fo"k; e Mk- g"kno ek/ko fy[kr g &

^^o;eo i.kf;u%@tuk|ku dkefi je.kh n"Vok@pfyrekulk%A@ o;
/kkfe dk%@diVlf¥prnfo.kkikftri.;ok¥Ndk%A@o; lkUn;fi;k%@
fodflr QYyi= dle xYekr@vofpUe%] ?kkRok u"V deA**[112]

vFkkr nkf"k;k e ge Hkh gA ge l/kjx tc l/kjxk] ge cnyx tc cnyxkA oLrr% Mk- माधव के शब्दों में ही कहें तो नये कपड़े खरीद कर प्रौढ़ावस्था को छिपाने का वर्तमान प्रयास ufrd voeY;u dk dkj.k curk gA

^^J)k&ekxk/k@सिगरेटशकलः–/ओष्ठयोर्गाली।''[113]

;g gkbd lekt d ;okvk dh oreku fLFkfr dk bfxr djrk gA lR; Hkh g fd tlk हम परिदृश्य देख रहे हैं इसमें श्रद्धा तो सहयात्रिणी होकर न जाने कहाँ छूट गई और युवाओं के हाथ में सिगरेट के टूकड़े और होठों पर अपशब्द हमारी संस्कृति के कुरूप चेहरे को प्रदर्शित कर रहे gA

ckTkj dh fLFkfr d ckj e Mk- g"kno ek/ko fy[kr g fd &

^^v= yH;r foukgVV@^fdyk feru Ø;.kku lg@lk/kfdykferk
o¥puk!@ lodkjlokfu;DR;k lg@dk;pk; fouk eY;e] vfi p
mRdkpykek·पि निःशुल्कः संयुक्तोऽस्ति।/निर्वाचने/विजयेन सह/भ्रष्टाचारस्य
orlr migkj;ktukA@ ijh{kkiek.ki=% lg@lxrkfLr@ofÙkiklR;Fk
fpUrkA@Hkoku tkukR;o ;r@ ekuork;k ukfLr eY;e@vr%@foØ;dky
f{klrk lk ekxi@;fn Hkor #fprk L;kr-------AA**[114]

okLro e ckजार नैतिक मूल्यों के ह्रास का सबसे बड़ा केन्द्र बन चुका है। लेखक के शब्दों l vkx c< rk 0;ogkj e Hkh ge n[kr g fd ,d fpll d idV e vk/k l T;knk gok Hkjh gkrh g yfdu foKkiu vkj pednkj ifdx d ek/;e l Hkfer djd foØrk ,o fuekrk] xkgd dk fun;rk l yV jg gA fdlh Hkh dk;ky; e dke gkrk ugh g vkj ;fn dke djokuk g rk बिना रिश्वत के संभव नहीं। वस्तुतः इस स्थिति का कारण बेरोजगारी है और बेरोजगारी के जनकों e ufrdrk dk âkl Hkh ,d g vly e ; nkuk vkil e ,d nlj l l;Dr gA vkfFkd fo"kerk d dkj.k l ;g nkuk pht curh gA cjktxkj ;ok viu Lo; d ,o ifjokj d Hkj.k&ik"k.k d fy, ;u&du&idkj.k /ku pkgrk g vkj /ku ykyi /kfud viu vlhfer HkMkj dk vkj c<kuk pkgrk gA /ku dh dHkh u feVu okyh ;g vkdk{kk ufrd eY;k dk etkd mMkrh lh irhr gkrh g vkj vc rk ;g gekjh dk;lLdfr dk ,d vfuok; fgLlk cu pdk

gA ufrd voeY;u dk vc ge lgt vkj vfuok; ekudj >yu yx x; g vkj yxkrkj >y tku d dkj.k bldk Lo:i vkj fcxMrk tk jgk gA bl gVku dk ;gh mik; g fd ge bu voeY;uk dk ftruk tYnh gk mruk tYnh gVkr tk, vkj yxkrkj ufrdrk d iFk ij viu dnek dk n< cuk, j[kA

^^dk nkL;fr@uxjk; e@xyekgjii"ilkUn;le \@d% dfj";fr@ ekuorka;k

chtkuk oiue@Å"kjâr{k=:"k \@d% Lefj";fr@okrkudfyr d{k@

vfd¥pukukeJ tye\@dk jpf;";fr@eukjFkH;% ldYiku\@dk u

भविष्यति/पुष्पस्तबके निगूढशस्त्रहस्तः\@vfi l"V% dk·fi

तादृशः/परमेश्वरेण/यस्य कृते/मतं मे लभेत/यथार्थताम्\@ vU;Fkk@

मतपत्रकमिदं नश्येत्/मम हृदयवत्/ रिक्तम्।''[115]

ge ftl itkr= e jgr g ogk ,d cf)thoh vkj ,d n"Vcf) nkuk d er dk eY; ,d leku gA dVVjiFk ,o tkfrokn lkFk gh ,l vud dkj.k g tk fd ,d cM er leg dk viuh vkj vkdf"kr djd mldk ykHk mBkr g ckn e ml cM er leg dk vkdf"kr dju d fy, fd, x, [kp dk oly Hkh djr gA bl leL;k dk lek/kku djr g, Mk- ek/ko fy[kr g &

''यत्र मतं जागर्ति/तत्र देशो न मूर्च्छति।''[116]

lR; Hkh g fd tur= e ernkrk dk tkxr gkuk lekt e vif{kr ifjoru yk ldrk gA ;g i;kl vkidk vkj ge lHkh dk djuk g vkj vku okyh ih<h dk bld fo"k; e tkxr करना है। सुप्रसिद्ध कवि सुरेन्द्र शर्मा का एक सार्वजनिक मंच से कहना है कि हम दलों को मत देने dh vi{kk vPN 0;fDr;k dk er nx rk vPNk 0;fDr dHkh Hkh ugh gkjxk vkj bl h l ykdr= dh thr lHko है। हमारी वह दिव्य और सनातन संस्कृति जिसका यशोगान संपूर्ण विश्व में होता है

वह पुनर्जीवित होकर भारत को विश्वगुरु के पथ पर आरूढ़ कर सकती है। अपसंस्कृति के ifjpk;d ufrd eY;k dk âkl bl fo"k; e Mk- g"kno ek/ko dgr g fd &

^^eu"; LFkkojk jkfir%@ tukuk e/; lLdr re@
fdUr ifj.kke foijhrekxreA**[117]

lR; Hkh g ck;k cht ccy dk vke dgk l gk;A

lLdfr d voeY;u e ,d cMk dkj.k Hkk"kk dk fnoxr gkuk Hkh gA ,d le; Hkkjrh; समाज में संस्कृत जनभाषा थी। विश्व की समस्त भाषाओं में lLdr ,dek= ,lh Hkk"kk g ftle गाली शब्द नहीं है। यद्यपि अन्य भाषाओं के स्वयंभू विद्वानों ने संस्कृत भाषा में भी गाली शब्दों की रचना कर दी है किन्तु वे शब्द संस्कृत के तत्सम शब्द नहीं हैं। इस तरह भाषा का दिवंगत होना lkLdfrd eY;k d âkl dk ,d egRoi.k dkj.k gA ,d ifl) mfDr g ^HkkjrL; ifr"B} संस्कृतम् संस्कृतिस्तथा' विश्वगुरु भारत की प्रतिष्ठा के उपरोक्त दोनों साधन संस्कृत और संस्कृति वे ey :i l Hkkjrh; ufrd eY;k d lpkjd jg gA bl okD; dk vkj vkx c<k; rk dg ldr g ^lLdfr% lLdrkfJrk*A lR; Hkh g gekjk leLr Hkkjrh; ok³e; lLdr Hkk"kk e gh fufgr g fdlh dk Hkh ge viuh lLdfr ;k mPp ufrd fopkjk d ckj e crkr g rk e[k l lLdr d श्लोक पुराण इतिहास की कथाएँ पंचतंत्र जैसे साहित्यों की शिक्षाप्रद कहानियाँ सहज ही cgu yxrh gA fdUr tc l Lo; dh Hkk"kk nj gku yxh ge Kku d ml vijhfer HkkMkj l ofpr gku yx x;A gekjh Hkk"kk ij bld vkx vkj Hkh vkØe.k gk jg gA vktdy d cPp vkj mud ikyd viuh ekrHkk"kk e 0;ogkj djuk vieku tud ekuu yx gA ,lh fLFkfr e Hkk"kkvk के विपुल साहित्य पाठकों और लेखकों के अभाव में शव की तरह हो चुके हैं कदाचिद् कोई bfrgkldkj Hkfo"; e bl [kktdj bl lLdfr dk iu% iu% LFkkfir dj ik, ;g vi{kk jgxhA

y[kd d dFku dk ;g rkRi; g fd ge viu ufrd eY;k d vfHkj{k.k d fy, Hkk"kk ij Hkh /;ku nuk vfuok; gA

मृत्यु के ध्वंसावशेषों की इस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए द्युतक्रीडा के बारे में डॉ- g"kno ek/ko fy[kr g fd &

''मृत्युध्वंसावशेषौ/दीव्यतः।/मृत्युः शकुनिवत् कुटिलं हसति।/ तस्य समीपे/

okR;k l kjo"kk··r iHkkd ifo|r ikrkuk orUr@cgfu pkr;kf.kA@ vfi p

कालाक्षैः क्रीडा/क्रियते।/ध्वंसावशेषः/ युधिष्ठिरवन् न जानाति कपटम्।/

अपि च/ कपटं विना विजयो न शक्यः/अशक्य एव।''[118]

Mk- माधव के इन शब्दों में झूठ का लेशमात्र भी नहीं है। इसी द्युतक्रीडा ने इतिहास के सामर्थ्यशाली कुरूवंश के भाईयों में आपस में ही वैमनस्य पैदा किया और भारत के इतिहास के सबसे nnkUr ;) egkHkkjr dk tUe fn;k A vkt Hkh bl t, u Bhd }kij dh rjg diV d fcuk thr dk vlHko cuk j[kk g vkj tgk diV gkrk g ogk ufrd eY; ugh fVd ldr g vkj संस्कृति पलायन कर जाती है। समाज को सही दिशा देने के लिए जुआँ को हर स्थिति में त्यागना gh vfuok; gA

Mk- ek/ko orekU le; e lLdfr d âkl d fy, Vyhfotu dk lokf/kd mRrjnk;h ekur g, dgr g fd &

^^;L= xg"k Vh- oh- lnk jktr@lLd**तेर्नाशकं धर्मविध्वंसकम्।/**

^fQYe* dYi tuthou i{;r@lLdrk fodr% ik"kd Hkkjre AA**[119]

Li"V g fd ijEijkxr Hkkjrh; lLdfr e ifjokj dh efgyk, ,o cg, i#"kk d lkFk e नहीं बैठती थी, किन्तु इस टेलीविजन के हमारे घरों में प्रवेश करने l ikphu lLdfr dk âkl gvk g] cPpk e Hkh vkKkdkfjrk dh Hkkouk vi{kkdr de gb gA

^uXurk* ;= fp=koyh lLrrk@^lDl* xhrLojlxh; r okluk@

oÙki=k.;fi R;äyTtkfu p@^Vh- fo- puYe;* dked HkkjreA*[120]

blh Vyhfotu dk ifjokj d lHkh ykx ,d साथ बैठकर नग्न दृश्यों एवं द्विअर्थीय संवादों dk n[kdj g lr&eLdjkr jgr g] tgk uXurk ,o okluk;Dr ;ku&xhr lno ijkl tkr gA bl idkj ufrd eY;k dk iru rho xfr l gk jgk g vkj ge lc feydj viuh lLdfr dk viukr tk jg gA

oreku le; e ;ok ox e Qy jgh vilLdfr ,o ufrd eY;k d iru d ckj e dgr g fd &

''नाभिजात्यं न विद्या न भक्तिस्तथा/नैव विद्यारतिर्नैव शास्त्रे गतिः।/

r fg ^dky t* m|ku&Hk³xk% l[k!@/;;ghuk ;okuk fg r HkkjrAA**[121]

vFkkr vkt d ;okvk d ikl fdlh idkj dk y{; ugh gA u rk fdlh idkj dk Kku रखते हैं और न ही उनमें सीखने की अभिलाषा है। युवा वर्ग कॉलेज तो जाता है, किन्तु शिक्षा एवं Kku vtu dju dh vi{kk og ?ke&fQj dj okil ?kj ij vk tkrk gA

blh idkj vilLdfr dk mnkgj.k ¼tk vkt ge vklkuh l n[ku vkj luu dk fey tkr g½ nr g, dfo dgr g fd &

^^ukfLr HkÙkk·u tk uo i=LrFkk@ieikVpj% dk·= uk;k leeA@

dkj;kuu yTtk fouk HkkE;fr@Hkkjrh;k·fLr ukjh l[k ! HkkjrAA**[122]

आज की युवतियाँ भी नैतिक मूल्यों एवं नारीयोचित शke dk Hky dj ij&i#"k d lkFk ie e jr jgrh gA ij&i#"k d lkFk mldk mBuk&cBuk] ?keuk&fQjuk yxk jgrk g vkj mle fdlh idkj dk yTtk&Hkko Hkh ugh jgrk gA vkt dh ;ofr;k dk cxhpk e] jLVkjUV]

flUekgky] fidfud LFky vkfn LFkkuk ij vkIkuh I n[kk tk Idrk gA bI idkj lekt e Qy jgh bI viILdfr dk Mk- ek/ko u ie[krk I iLrr fd;k g o dgr g fd &

^^dke dfyfLRo;k iR;g o/kr@ieyhyk ii¥pko;r fu?k.keA@

यस्य कामो विदेशैस्समालिङ्गितः / IDI xÙk fueXu fi;k HkkjreA**[123]

vFkkr vkt d lekt e ie&jkx fnu&ifrfnu c< jgk g] ykxk e dke&okluk vR;f/kd icy gkrh tk jgh gA ;ku bPNkvk ij fu;=.k ugh gk ik jgk g vkj lekt viuh दिशा भटकता जा रहा है। इस सम्बन्ध में डॉ- ek/ko dgr g fd &

''**यत्र देशान्तरं** ifLFkr oYyHk@njHkk"k 0;Fkk ifjrk HkkfeuhA@

oh{; ^fQYe* iu;kfr o ^gkVy*@foiyHHkkEc/kk iykfor HkkjreA**[124]

आज के समय में पति के विदेश जाने पर पत्नी को किसी प्रकार का दुःख नहीं होता है। विदेश में गए पति से वह फोन पर अत्यधिक दुःखी स्वर e okrkyki djrh g] fdUr okLrfod fLFkfr ;g gkrh g fd og fQYe n[ku vkj gkVyk e [kkuk [kku e 0;Lr jgrh gA

परम्परागत भारतीय संस्कृति को वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति अत्यधिक प्रभावित कर रही है। पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर हम हमारे मूल्यों ,o ijEijkvk dk [kkr tk jg gA ILdfr dk voeY; fujUrj gkrk tk jgk g ble lekt dk iR;d ox IfEefyr gA vkt dkb Hkh ox ऐसा नहीं है जो पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से मुक्त हो। डॉ- g"kno ek/ko dgr g fd &

^^/keoR;k rFkk e|ikuu o@**स्वैरिणी दर्शयन्ती प्रभुत्वं गृहे।/**

क्रोधपूर्णा चपेटां ददात्येव सा/स्वामिने सभ्यता पश्चिमा भारते।''[125]

tgk e|iku ,o /keiku tI 0;luk I i#"k ox iHkkfor g] ogh efgyk, Hkh ble ihN ugh g] vkt dh efgyk, i#"kk d leku gh 0;lu dju yxh g mUg Hkh ?kj ij e|lou ,o

धूमपान की आवश्यकता पड़ने लगी है। यहाँ तक कि वे नशे की अवस्था में अपने पति को चाँटा ekju l Hkh ijgst ugh djrh gA

^eR;k% lokdUne* uked dfork e Mk- ek/ko u thou e fd, tku oky iki&i.;] /ke&v/ke dk 0;xkRed :i e iLrr fd;k gA Mk- ek/ko u bl ijh dfork dk vk/kfud ekuo jfgr dEl;VjkbTM okrkyki l tkMk g &

^^;fn Ro t j;k i¥pRo xr%@xrk@------@

iujfi iFoh xUr; i³Drk fr"BA**[126]

प्रस्तुत कविता में मृत्यु के पश्चात् होने वाली स्थिति को iLrr fd;k g ftle dfo dguk pkgr g fd thou e fd, iki&i.;] /ke&v/ke d dk;k l ek{k dh ikflr lHko gA ;fn bl thou e vPN dk; fd, tk, rk ek{k dh ikflr lHko g] ugh rk iu%&iu% bl /kjrh ij tUe yr jguk gA /ke&v/ke] iki&i.; d 0;ogkj gekj lLdkjk l ifjyf{kr gkr g] ; o lLdkj एवं नैतिक मूल्य होते हैं जिनकी शिक्षा बालक को बचपन में ही परिवारों में माता–पिता एवं परिवार d vU; o;ko) lnL;k }kjk inku dh tkrh gA

समाचार–पत्रों में प्रकाशित खबरों के सम्बन्ध में कवि की कविता 'समाचारपत्रेष्वप्रकाशिताः काश्चिद् वार्ताः' में कवि ने आज के समय में व्याप्त नैतिक मूल्यों के ह्रास को प्रकट किया है –

''शिक्षकानां दुष्टप्रमादात्/नष्टं भावि तेजस्विनां परीक्षार्थिनाम्।/किन्तु तेषां नामानि अनुत्तीर्णत्वात् अप्रकाशितानि/येस्साहित्यकारैः पुरस्कारा लब्धा–/स्तेभ्यः श्रेष्ठतरा आसन्/केषाञ्चित् प्रकाशिताश्चाप्रकाशिताश्च jpuk%A**[127]

सत्य ही है कि आज के समय न सिर्फ शिष्य अपितु शिक्षक भी अपनी गरिमा खोते जा रहे हैं वे भी शिक्षा को अब व्यवसाय की दृष्टि से देखने लगे हैं यही कारण है कि वे इस व्यवसायिक होM

में योग्य शिष्यों की भी अनदेखी करते हैं जिसके कारण वे अनुत्तीर्ण हो जाते हैं। इसी प्रकार योग्य lkfgR;dkjk dh Hkh vogyuk lekt e gk jgh gA lekpkj i=& if=dkvk e mUgh lkfgR;dkjk dk LFkku feyrk g ftudk iHkko lkfgR; d vfrfjDr vU; dk;k e vf/kd gk ,o bUgh lkfgR;dkjk dk ijLdkj l Hkh lEekfur fd;k tkrk g] tcfd bu rFkkdfFkr lkfgR;dkjk l J"B jpuk, vU; lkfgR;dkjk dh gkrh g] fdUr mudk iHkko vf/kd ugh gkrk g bl dkj.k l mudh jpukvk dk dkb egRo ugh fn;k tkrk g] ;g ufrd eY;k dh ijkdk"Bk gA

Mk- ek/ko u viuh dfork ^^dfri;{k.kioeo** e dfo u oreku le; e ?kfVr gku okyh gR;kvk ,o n?kVukvk dk bfxr fd;k g &

^^dfri;{k.kioeo@-------@iujfi dnkfpr A**[128]

dfo u vkt dh okLrfod fLFkfr dk fp=.k fd;k g fd vkt d le; gku okyh हत्याओं एवं दुर्घटनाओं पश्चात् किस प्रकार की स्थिति बनती है और लोगों, जिम्मेदार vf/kdkfj;k ,o ljdkjh 0;oLFkk dh ifrfØ;k, fdl rjg gkrh g vkj fdl rjg ;g lc lekIr gk tkrk gA

^eu";L; l³xfr* uked dfork e dfo u crk;k g fd vkt d le; e LokFk l वशीभूत व्यक्ति की भरमार है। मनुष्य की संगति किसी उच्च आदर्शों, संस्कारों, नैतिक मूल्यों से न होकर स्वार्थवश होती है –

^^eu";.k lg eu";L; l³x%@u i.;u Hkofr]@fdUr Hkofr LokFk
साधयितुम्।/देशस्य/धमL;@lLdr%@tkr%@Hkk"kk;k%@ d¥pdkLlfUrA@
व्यवहारे दम्भस्य शिष्टाचारो वर्तते/वेदना मूका भवन्ति/ दुःखानि
निरालम्बानि/ अतो भाषा भवति भावशून्या।''[129]

वर्तमान समय में देश, धर्म, संस्कृति, भाषा एवं जाति को कम महत्व दिया जाता है, अपितु viu LokFk dk vf/kd egRo fn;k tkrk gA eu";k d ,d nlj l feyu e Hkh viuk LokFk loiFke jgrk gA

eu";% uked dforK e Mk- ek/ko u vkt d le; e eu";k }kjk fd, tk jg vufrd 0;ogkjk dk iLrr fd;k g &

''मनुष्यस्य वक्षसि/निवसति शृगालः/दृष्ट्यां भ्रमfr o'dk%]@ ok.;k LiUnr

f}ftgok%@ân;l ØhMfr 0;k?k%@foy Ifr eufI okuj%@xy

ब्रवीति/साहङ्कारं कौशिकः/शिश्नेरमते कुक्कुरः/मुखनेपथ्ये कुटिलं हसति

बिडालः।/अतः/प्राणिनं दृष्ट्वा कमपि/तस्मिन्/पश्याम्यहं मनुष्यांशसय

ifrfcEceA**[130]

vkt d le; e ekuork dk fnu&ifrfnu rth l âkI gkrk tk jgk gA 0;fDr dh lonuk, ,o ekuokfpr x.k lekIr gkr tk jg gA vkt dh ifrLi)k e ykx ,d&nlj l vkx fudyu d fy, fdlh Hkh gn rd viu eY;k] lLdkjk] Hkkoukvk vkj lLdfr dk fxjku l Hkh ugh pdr gA Mk- ek/ko vkt d eu"; dh bl fLFkfr dk n[kr g, mldh ryuk tkuoj l djr g, dgr g fd tc e fdlh ik.kh dk n[krk g rk mle e> vkt d eu"; dk ifrfcEc fn[kkb nrk gA

¼8½ ikfjokfjd lEcU/k &

lekt dh lcl NkVh bdkb ifjokj gA fdlh ifjokj e ckyd] r:.k] ;ok] ik< vkj वृद्ध इन समस्त जीवन के महत्वपूर्ण भागों का समावेश प्रायः प्राप्त होता है। सामान्यतया किसी ifjokj e dfri; ?kfu"B lc/k gkr gA ifjokj d lnL; viu iFkd&iFkd dk;k dk djr g, Hkh ,d lkFk ,d gh Nr d uhp jgdj l[k&n[k e lgHkkxh gkr gA ifjokj e lcl egRoi.k

bdkb ifr vkj iRuh gkr gA ;okoLFkk d ifr&iRuh] cVk cg d :i e rk o)koLFkk d ifr&iRuh] ekrk&firk vkj nknk&nknh d :i e tku tkr gA thou dh xkMh d ; nkuk egRoi.k ifg; ijLij lketL; l ifjokj dk xfr inku djr gA ifjokj ik;% nk Jf.k;k e foHkDr fd; tk ldr gA igyk l;Dr ifjokj ftle ifjokj d lnL;k dh l[;k vi{kkdr vf/kd gkrh g iFke ekrk&firk] mudh liRuhd lrku vkj mu lrkuk dh Hkh lrku bld vfrfjDr Hkh vU; lnL; bl idkj d ifjokj e lfEefyr gkr gA nlj idkj d ifjokj ,dkdh ifjokj gkr g ftue ifr iRuh vkj mud cPp lfEefyr gkr gA ,l ifjokj ik;% NkV ifjokj Hkh dg tk ldr gA dHkh&dHkh bl idkj d ifjokjk e dkb o) ekrk] firk ;k vU; एकाकी रिश्तेदार भी सम्मिलित होता है।

Mk- ek/ko u ifjokj dh egRoi.k dMh L=h d ckj e dfork fy[kh g ^0;k/kRo e* ,d L=h tk fd ifjokj e ek] iRuh vkj cg bu rhuk Hkfedkvk d vfrfjDr ;fn m|kx;Drk g rk viu dk;{k= dk dk; lHkkyr g, fnu d vR;f/kd ifjJe l ml fLFkfr dk ikIr gk tkrh g कि वह अपने शरीर को हिला भी नहीं पाती है। उस स्त्री की स्थिति को चित्रित करते हुए डॉ- ek/ko fy[kr g fd &

> **''पत्नी क्षिपति शयनकक्षे/वध्यप्राणिवत–स्वशरीरम्।/पत्नी स्निह्यति/अतः/**
> nklhor deltky 0;kirkA@ rL;k% Lugk Hkofr@i;k;%@ ikjrU«;L;!@
> **तस्या नेत्रे परितः/श्यामचिह्नानि दृश्यन्ते/ते सन्ति/दग्धस्वप्नाः।/**
> **उपालम्भवचनानि श्रुत्वा/न कम्पते तस्या रोमाग्रमपि!/पत्नीं धूपशलाकामिव**
> **दृष्ट्वा/अहं/भवातम/ देवत्वहीनः पाषाणखण्डः!/पत्नी शरीरं क्षिपति/**
> **शयनक**{k@ rnk@DyC;Roe|ifr@0;k/kRo e@¼o/; tho% iyk;u u djkfr
> rnk d vkuUnk cr ! ex;k;k%AA**[131]

ijLij Lug dju oky ifr iRuh e vkilh lEcU/k vR;Ur n< gksrk g fdUrq dN रूढ़ियाँ इस प्रेम को प्रदर्शित करने से रोक देती हैं । इसी विषय को अभिसूचित करते g, y[kd स्वयं को उस परिश्रमशिथिला स्त्री पर अत्याचार करने वाले पुरुष के रूप में गिनते हैं।

प्रौढ़ावस्था के एक सामान्य दृश्य को चित्रित करते हुए लेखक लिखते हैं कि –

''पत्न्या केशालकः श्वेतीभवति/तदा /मित्रैः सह पश्याम्यश्लीलचित्रपटम्।''[132]

;okoLFkk e dfj;j cuku dh vR;f/kd mRdBk u thou d okLrfod vkunk d ihN NV जाने पर और प्रौढ़ावस्था में शरीर की शक्ति का ह्रास होने का अनुभव होने पर मानव स्वभाव किस idkj l fopfyr gkrk g ml fo"k; e Mk- माधव का यह पद्यांश पति पत्नी के स्नेह के अपेक्षाकृत fxjr Lrj dk प्रदर्शित करता है।

वर्तमान परिदृश्य में जहाँ चलचित्र (टी-oh-½ d fofHkUu vUrghu J[kykvk l ;Dr /kkjkokfgdk e tgk iR;d ifjokj e dkb u dkb "kM;= yxkrkj pyrk fn[kkb nrk g ml fLFkfr ij 0;X; djr g, Mk- ek/ko dk rh{.k rhj gkbd bl idkj l g&

^^lkHkkX;orh@ØhMkiqÙkfydk;k @ **गृहस्य शोभा।''**[133]

ऐसे परिदृश्य निश्चित रूप से यह दर्शाते हैं कि वे स्त्रियाँ जिनकी प्राथमिकता परिवार नहीं है उनसे घर की शोभा तनिक भी नहीं है उनसे अच्छी तो वह गुड़ियाँ हैं जो कि सौभाग्य चिन्हों को तो de l de /kkj.k djrh gA

ikfjokfjd Lug ijLij enrk d âkl d fo"k; e Mk- ek/ko dgr g fd

''स्नेहः सिनेमागृहस्य फिल्मचित्रफलकवत् /प्रतिशुक्रवारं परिवर्त्यते।''[134]

u doy ifr iRuh vfir ifjokj d vU; lEcU/kk e ?kfu"Brk ftl rth l nj gkrh tk jgh g] gekjh संस्कृति के मूल विधायी तत्व जिस तीव्रता से क्षरण को प्राप्त हो रहे हैं उस दृश्य को

;gk thfor djr g, Mk- ek/ko u ikfjokfjd lEcU/kk e Hkh ijLij Lug cU/ku dh vi{kk LokFk dh ikFkfedrk ij fpUrk 0;Dr dh gA

dHkh dHkh 0;fDr ijLij ie vkj Lug dh vkdk{kk djrk g , lh fLFkfr e mld e[k l Lor% xku fudyrk g &

^^ee@d|Vhj@Ro Hko%A@ro d|Vhj okg Hko;e!@d|Vhj Hkon ok&@

d|VhjkHkko%A@vr% d|Vhj foLeR;@Hko 0;ke@;r%@Roeknk lhU; yHkFkk%@

dL;kfi@xeukxeu i fr!!@d|Vhjkn cfg%@pjUR;pfdrk exk%A@

vUr%@l|lrk·fLr ex%@d|Vhjkn cfgj@vLr xrk·fLr ex%!@d|Vhjkn

cfgj@vLr xrk·fLr l;%@ vUr%@i l rk·fLr l;krki%A@d|Vhj@or r

LorU= 0;ke@d|Vhj or r@HkXuk ?kV%A**[135]

किन्तु कभी कभी परिस्थितिवश वह स्नेह दीर्घजीवी नहीं हो पाता है उस fLFkfr e db ckj ml ifjfLFkfr l le>krk djd thou 0;rhr djuk gkrk gA

यद्यपि पति–पत्नी का परस्पर स्नेह अत्यन्त आदर्श है, किन्तु भारतवर्ष में सर्वाधिक हास्य पति–पत्नी के परस्पर छोटे–छोटे झगड़ों पर ही होता है जिनमें पुरुष को स्त्री के अधीन दर्शाना vR;f/kd n[kk x;k gA Mk- ek/ko Hkh vfHkjkt jktUn feJ d xhfr dk0; d ifrdk0; e fy[kr g fd &

^^;Uu lf¥pr e;k rn 0;;hdr Ro;k

&&&&&&&&&&&&&&&&&&

enxg p thfor lodhdr Ro;kAA**[136]

ifr&iRuh d e/; lkekU; l gku okyh bu ?kVukvk dk ftUg ydj ik;% gl k tkrk g mud ckj e fy[kk gvk ;g ,d J"B lp; iklr gkrk gA

Hkkjrh; lkfgR; e o)k dk cMk gh lEeku fd;k x;k g] fQj o pkg vk; o) gk ;k Kku o) fdlh ifjokj e o) 0;fDr ml ifjokj dk lcl vf/kd vk; ,o lcl vf/kd vuHkolEiUu 0;fDr gkrk gA xPNrk dkyu o)k dh fLFkfr yxkrkj fcxMrh tk jgh g] mud lEeku e fujUrj deh gkrh tk jgh g vkj viu ifjJe l cuk; x; Loluxg e gh o o) viu vkidk ,dkdh lk vuHko djr gA Mk- ek/ko dh ^o)%* uke dh dfork bl fo"k; dk bfxr djrh g &

^^yrk[kkfnrxUFkk HkRok@fLFkrk·fLr l%@u dk·fi okp;fr reAA@
o)k·Fkkr d".kk³xkjrk xrk ofà%AA@----------@ijr% fLFkrk **'शून्यां भित्तिं**
पश्यन् अर्धनिमीलिलताक्षः/स जागरितः/अथ च भित्तिर्विगलिता।''[137]

;g gekjk ije nkf;Ro g fd ge viu ifjokj d Kku vkj vk;o)k dk mudk ;Fkkfpr सम्मान दें, उनके एकाकीपन को दूर करें, उनके जीवन को भार न समझ कर ईश्वर का आशीर्वाद समझें, क्योंकि एक निश्चित समयांतराल के बाद प्रत्येक व्यक्ति को उस वृद्धावस्था में जाना ही है। पिछले कुछ समय से विदेशा e lgt miyC/k gku okyh o)kJe uke dh lLdfr Hkkjr e Hkh rth l ij ilkj jgh gA o)k dh lok djuk vPNh ckr g] fdUr ifjokj d o)k dh Lo; lok u dj iku d dkj.k o)kJek e NkMuk ;k mul dyg djuk ikfjokfjd fo?kVu dk ,d lcl cMk vkj lबसे घातक पहलू है। इसलिए परिवार में हमेशा बड़ों का आदर–सत्कार एवं मान–सम्मान करना ही चाहिए, क्योंकि उनका आशीर्वाद आपके जीवन को अनपेक्षित लाभ दिलाने में समर्थ है।

o.kk :<xfUFk e Mk- हर्षदेव माधव ने परिवार की श्रृंखला में दो विशिष्ट पदों का उल्y[k किया है भाई और जमाई। इन दोनों की कुशलक्षेम की अपेक्षा करते हुए लेखक ने किसी परिवार के इन दोनों प्रकार के सदस्यों की अनिवार्यता को दर्शाया है –

''दिल्यां बॉम्बविस्फोटा जाताः।/मम भ्राता कुशलो वर्तते/जयपुरे

lU=klokfnfHkjkr³d% l"V%A@vLekd% tkekrk@,dgkjkioks r=ksoorr%

Le@ fn"V;k l jf{krk nsouA**[138]

इनमें से भी विशेष रूप से भाई के प्रति आकर्षण बाल्यकाल से ही उत्पादित हो जाता है जो कि मूल रूप से परिवार के अन्य सदस्यों के मार्गदर्शन के अनुसार चलते चलते घनिष्ठता को प्राप्त gksrk gSA Mk- माधव ने प्रत्येक माँ के मुख से निकलने वाले वाक्य को ठीक उन्हीं शब्दों में लिखा है &

^^g;Ec;k dfFkr% ;n@Hkk=k lg dygks uSo drO; bfrA**[139]

vkt ds le; esa ifr&iRuh ds lc/kks esa ize de vkSj okn&fookn T;knk gksrs gSA vkt dh O;Lrre fnup;kZ vkSj विशेषकर शहरों की दिनचर्या और उसमें पति के साथ–साथ पत्नी के भी कार्यरत होने की दशा में समयाभाव दोनों के ही पास रहता है, जिसका परिणाम आपसी मनमुटाव, ruko vkSj okn&fookn gksrk gSA Mk- ek/ko ifr&iRuh ds bl izdkj ds okn&fookn vkSj yMkbZ&>xMks dk ihfr&;q) dh lKk nsrs gSa, dgrs gSa fd &

^^;= ukjhtuks·lks fookns jrkss @oSYyuh okfi fpRok p lEeksatuheA@

gLriknizgkjSueqZefUr ifr% @ihfr;q)kfejs rkoda Hkkjrs·A**[140]

आज की नारी अधिकांशतः विवादरत रहती है और यह विवाद पति के साथ और भी भयानक gks tkrk gSA Mk- ek/ko dgrs gSa fd fookfnrk ukjh ifr dks cyu ;k >kMw Qsddj ,o gkFk&iSjksa ls ekjdj ifr dks ueLdkj djrh gSA

Mk- माधव सास एवं बहू के नाजुक रिश्ते पर भी अपने विचार व्यक्त करते हैं। सास एवं बहू का रिश्ता सामान्यतः एकदम सहज नहीं रहता है। सास–बह ds chp rdjkj vkSj ,d nljs dk

J"B fl) dju dh gkM yxh jgrh gA blh fLFkfr dk O;Dr djr g, Mk- g"kno ek/ko dgr g fd &

^^;L; xg"k ÜoJ% lnk oØHk%@rRifrÜpkfi thoUer% dklrA@

त्रासदो देवरो सा ननान्दा शठा/सद्म जामातृकं पोषितं भारतम्।''[141]

cg llj ky dh fLFkfr dk o.ku djr g, dgrh g fd mldh lkl dfVy uu okyh g] उसके श्वसुर मर्म को पीड़ा देते हुए खाँस रहे हैं, परिवार में देवर है और अविवाहित ननद भी है।

Mk- माधव ने सास एवं बहू के रिश्तों पर 'श्वश्रूकृतं वधूस्तोत्रम' एवं 'पुत्रवधूकृतं श्वश्रूस्तोत्रम' की रचना की है जिसमें इन रिश्तों पर विस्तृत रूप से लिखा है ''पुत्रवधूकृतं श्वश्रूस्तोत्रम्'' के vUrxr Mk- ek/ko dgr g fd tk lHkh ukfj;k e n"V] lnk n"Vk pf.Mdk g] ml ueLdkj g] उसे नमस्कार, बार बार नमस्कार। व्यवहार में जो क्रुद्धा है, उपदेश परा;.k g] vkylh g] Hkl d leku] ml ueLdkj] ckj ckj ueLdkjA cHk{kk e od d leku] ckyu e dkd d leku] funk के समय शय्या में मछली के समान है, उसे नमस्कार, बार बार नमस्कार है। रूप में निश्चय शूर्पणखा है, शरीर में स्थूल हाथी के समान, घर में बाघ के leku] ckgj dfr;k d leku nj l ml नमस्कार, बार बार नमस्कार। जिसके हाथ में जपमाला है और मन रसोईशाला में है, रोगी के बहाने से खाट पर लेटी है उसे नमस्कार, बार बार नमस्कार। जिससे मेरे स्वामी वशीभूत हैं, छल से पैशुन्य okd ckyrh g] tk lnk ukjdh; yhyk jpu okyh uVh g] ml ueLdkj] ckj ckj ueLdkjA ikn lokgu d fy; ftlu Lo; llj dk fu;Dr fd;k g] uuUn ftldh xlrpj g] ml lkl noh dk ueLdkj] ckj ckj ueLdkjA efUnj e lHkh o)kvk l fuUnk ckn ijk;.k vkj feF;kHkfäii¥p e tk fui.kk g] ml ueLdkj] ckj ckj ueLdkjA n[ku e tk lnk :{k g] दान में शुष्क तपस्विनी है, सिनेमादर्शक में तुष्टा है, ऐसी कर्कश को नमस्कार, बार बार नमस्कार। वचन में स्निग्ध, हृदय में स्वार्थ, दोषदर्शन में पण्डित है, ठगने में निपुण, साध्वी, वचन में

feF;koknh lrh] dd;h d समान मति जिसकी, परव्यवहारकारिणी, अशुभा, मन्थरा के समान सदा dk; e 0;x g] ml ueLdkj] ckj ckj ueLdkjA e"kd d leku dfVy] ektkjh d leku ppy] ân; e tk fu"d#.k g] ml lkl noh dk ueLdkj] ckj ckj ueLdkjA ?kj dk l[k gju okyh] /ku gj.k dju okyh को बार बार नमस्कार। पुत्रों का हर्ष नाश करके, शोक बढ़ाने वाली को नमस्कार, बार बार नमस्कार। उपहास मय इस स्तोत्र का पाठ करके जो सर्वदा शुभ भाव में पुण्यमयी lkl ek ?kj e okl djxh] ml dk ueLdkjA[142]

bl h idkj lkl viuh o/k d fy, dgrh g fd tk vkylh] dkepkj] enfi.M l foof/kr] e< vkj cf)ghu g] ml o/k dk ueLdkjA tk njHkk"k e lnk vklä g] xgdk; l fojä g] nHkkX;;äk vkj n%[knkrk g ml o/k dk ueLdkjA e/;Hkkx iFky g] oØ nf"V g] dfVyHk okyh g] tk lk{kkr {k/kk:i g ml o/k noh dk ueLdkjA fpÙk vU;= g vkj उल्टापुल्टा कुछ कर रही है, जो कठोर है, सेवा में शिथिल है, उस को नमस्कार। बाजार घूमने में n{k] fluek n[ku e ioh.k] lkfFk;k d lkFk vkyki e ixYHkk g] ml dk ueLdkjA ikmMj&:t&vkfne[kp.k l xkjkxh jkt Lon l nf"kr g] fyfifLVd vkfn vk"Bjkx l बिम्बोष्ठी और विरूप है, उस को नमस्कार। जो श्यामल तथा मिश्रित वर्ण के केशवाली, ब्यूटी पार्लर tku okyh] tk viu vki dk lUnjh ekurh g] ,l d:ik dk ueLdkjA opu e uhe Qy dk Lokn g vkj ân; e djyk /kkj.k djrh g] 0;ogkj e yo.k g] eyh d Lo:i ml dk ueLdkjA Dyc ikVh vkfn xkf"B;k e vfr vkufUnr] LoPNkpkfj.kh] vkuUn l] i#"k cU/kvk l vkoRr] e=h e Bxuokyh dk ueLdkjA tk 0;;fi;k lnk Lokeh d ikdV l /ku gj yrh g vkj dN Hkh [kjhn yrh g] ml uhp efr okyh dk ueLdkjA vkfQl e tk fcuk dk; d gLr हुए घूम रही है, चाटु वाक्य से अध्यक्ष को खुश कर देती है, उस को बार बार नमस्कार। लीला से viu Lugtky l Lokeh dk lEekfgr djd tk n"V Lok/khu ifr dh rjg ?ke jgh g] ml o/k dk ueLdkjA lkQk e vkjke l cB dj Vh-oh- n[krh gb tk lfodk dk MkV jgh g] og

u"dE; dh fl);kfxuh gA lnk MkDVjk dk n[ku d fy; bPNd fuR; jkfx.kh] xgdk; e अशक्त है, ऐसी नीरोग को नमस्कार। मायका सर्वदा स्वर्ग के समान है और ससुराल दुःखदायक और ijk;k eku dj tk okl dj jgh g] mldk ueLdkj dj jgk gA bl Lrk= dk ikB djd tk वधू साध्वी बनती है, जिससे सुख, शान्ति, घर में स्वर्ग सुख मिलता है, उस सती सुवासिनी वधू को ueLdkjA[143]

^^llj dk lc dN lUnj g** dfork d vUrxr cg d fopkjk dk 0;Dr djr g, dgr हैं कि ससुर का घर मधुर है, धन मधुर है, अन्न मधुर है, शयन मधुर है, चित्त भ्रमित हो रहा है, llj dk lc dN lUnj gA lkl vU/kh g] lkyh [kt g] lkyk dk.kk g] dkUrk dfVy g] opu efyu g] xeu efyu g] llj dk lc dN d#.k gA NMh e/kj g] nf"V Ø)k g] nk gkFk [kkyh g] yC/kk ofÙk g] e/kj g] e.M lQn gk x;k g] dFku dfVy g] llj dk lc dN कुटिल है। घर में मच्छर है, शरीर में रोग है, शय्या में मत्कुणों की क्रीडा मधुर है, डाल में पानी, lCth e yo.k g] llj dk ân; dfVy है। खाने में काक के समान, शयन में वृषभ, गमन में कुक्कुर, धन में नाग, घर में वीर, नगर में शशक, ससुर का चरित्र कुटिल है। जीव आलसी है, हृदय में क्रोध है, वचन में मिथ्या, करण में क्रूरता है, रूप में विकटत्व है, शरीर में विकार है, ससुर का सब dN fodV gA gkl e /kk"V;rk g] opu e /kkR; g] l[; e /kk"Bk g] dj.k e /kk"B; g] lc कुछ जम्बुक के चरित के समान है, ससुर का सब कुछ धौष्ठर्य है। साले सब लोभी है, श्याली क्षुब्धा है, सास शुष्क है, कान्ता रूक्ष है, जमाई का पकेट निश्चित भावे वन्द है, ससुर का सब कुछ fody gA[144]

Mk- ek/ko ^iRuhdope* dh jpuk djr g, fy[kr g tk ukjh lHkh ukfj;k d Hkhrj /keiRuh dgykrh g] mlh e ckj ckj ueLdkj djrk gA bfUn;k dh tk vf/k"Bk=h g vkj Lokeh dh Hkh Lokfeuh g] mlh e ckj ckj ueLdkj djrk gA io fnx e iRuh ejh j{kk dj] vkXu;

कोण में गृहदेवता रक्षा करे, दक्षिणे चण्डी मेरी रक्षा करे, नैऋतकोण में कलहप्रिया, पश्चिम में दारुणा मेरी रक्षा करे, वायव्य कोण में क्रूरदर्शना, उत्तर में खरोष्ठी मेरी रक्षा करे, ऐशान्य कोण में शीघ्रकोपना, वृकोदरी ऊर्ध्व की रक्षा कर, धनहारिणी अघःप्रदेश की रक्षा करे, ऐसे क्रुद्ध गृहस्वामिनी दश दिशाओं की रक्षा करे। वेल्लनी मेरे शिर की रक्षा करे, यष्टि पादों की रक्षा करे, झाडू हाथों की j{kk dj] Qdk x;k ik= ejh ru dh j{kk djA foMkyk{kh ?kj dh j{kk dj] gfLruh dy dh j{kk करे, शखिनी श्वसुर से मेरी रक्षा करे, श्वसुरनन्दिनी श्याल से मेरी रक्षा करे। अलसा अतिथियों से ejh j{kk dj] dVHkkf"k.kh fe=k l j{kk dj] tokyke[kh ej ik.kk dh j{kk dj] efg"kh l[kh l[k की रक्षा करे। शूर्पणखा गले की रक्षा करे, रूक्षदर्शना वक्ष की रक्षा करे, ;)fi;k e[k dh j{kk dj] कदन्नपाचिका दन्तों की रक्षा करे, यदि खुद का शुभ चाहते हो तो कवच पाठ बिना एक पद भी vxlj ugh gkuk pkfg,A iRuh dk dop ikB djd tgk dgk Hkh tk ldr gkA ogk fi;k dk ykHk gkxk] ifr n;k dk ik= cuxkA tk LFkku iRuh ghu g] Hkk;k l oftr g] mldh l iRuh ;k fi;k mldh j{kk djA tk d#.kkLin 0;fDr bl iRuh dk dop dk i<xk] og t:j iRuh R;kxu ij Hkh fi;k d fy; lyHk gkxkA[145]

¼9½ ukjh mRihMu &

euLefr e dgk x;k g fd ^^;= uk;Lr iT;Ur jeUr r= nork** vFkkr tgk fL=;k dk lEeku gkrk g ogh nork fuokl djr g A blh Hkkouk dk /;ku e j[kdj gh ikphu Hkkjrh; lekt e efgykvk dk vR;f/kd lEeku fn;k tkrk Fkk vkj mUg vknj dh nf"V l n[kk tkrk FkkA efgykvk d ifr lEeku vkj mudh mPp fLFkfr dk gh lpd g fd lef) o lEiUu d bu rhuk vk/kkjk dh irhd mlI le; l ljLorh] y{eh vkj nxk :ih fL=;k gh ekuh x;h g A

भारतीय समाज और संस्कृति में महिलाओं को ''या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता'' कहकर जहाँ विशेष आदरणीय स्थान दिया गया है। शारीfjd d"V] fujUrj dk; dju dh iofRr]

fnu&jkr ifjJe dju dh Hkkouk L=h ân; dh vio /kjkgj g A okRlY; ie dh xxk] vieku सहन करने की हिमालय सदृश्य प्रचंड शक्ति, पृथ्वी की सी क्षमता, सूर्य जैसा तेज, चन्द्रमा के समान शीतलता, समुद्र के समान धीर गंभीरता, पर्वतों की भाँति मानसिकता, धीरज और आदर्श यह सब x.k L=h tkfr e nf"Vxkpj gkr g A og eu"; d thou dh tUenk=h g A uj vkj ukjh ,d nlj d ijd g A Hkkjrh; ukjh e mPp pfj=] dkVfEcd R;kx vkj lknxh l jgu dh अभिव्यक्ति विश्व प्रसिद्ध है । इसलिए नारी को cgeY; jRu dgk tkrk g A

ofnd xFkk e Hkh ukjh dh egRrk d lc/k e egf"k je.k u dgk g ^^ifr d fy, pfj=] संतान के लिए ममता, समाज के लिए शील, विश्व के लिए छाया तथा जीवमात्र के लिए करूणा l tku okyh egkdfr dk uke ukjh g A** fu%lng ukjh ekrk] iRuh] Hkfxuh] i=h d :i e उत्कृष्ट संवेदनाओं का अमृतकोष है जिसके अभाव में यह विश्व कुरूपता और कर्कशता का भंडार jg tkrk g A

ekuo tkfr d fodklØe e i#"kk d lkFk&lkFk efgykvk dk Hkh veY; ;kxnku jgk g vkj vkt Hkh l)kfrd rkj ij efgykvk dk i#"kk d leku Lrj ugh fey ik;k g] ftldh o vf/kdkfj.kh g A lH; lekt dh vo/kkj.kk e efgykvk dk lEeku tud LFkku fn;k tkuk ,d अनिवार्य शर्त है, किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि महिलाओं के प्रति अपराध का प्रतिशत दिन–प्रतिदिन c<rk gh tk jgk g। हमारे समाज में ही नहीं बल्कि अखिल विश्व में भी आज भी परम्परागत मूल्यों dh gh i/kkurk g] fdUr vkfndky l vkt rd Hkh efgykvk d ifr dBkjrk dk gh 0;ogkj fd;k tk jgk g A

i#"k i/kku lekt e efgykvk d vf/kdkjk d fy, cu dkuuk d mijkUr vkt Hkh महिलाओं का एक बड़ा वर्ग समाज और पुरुषों के अत्याचार तथा शोषण के शिकंजे में कैद है। blfy, ngt d dkj.k gku okyh gR;kvk] vkRegR;kvk] ukckfyx fookg] ukckfyx cPph l

cykRdkj] ng 0;kikj] ifr }kjk iRuh dh gR;k] irkMuk] xko dh xfy;k rFkk lMdk ij efgyk dk uXu dj ?keku] NMNkM dju dh [kcj v[kckjk vkj if=dkvk e vk, fnu i<u dk feyrh gA

आज नारी का अर्थ बदल गया है। आज इसका अर्थ शोषित, दमित, अपमानित अस्तित्व के :i e n[kk tk ldrk gA ,d gd] ,d rMi] dld] vlgk;rk] ,d सिसकता–धधकता–धड़कता अस्तित्व नारी का बन चुका है, हर क्षेत्र, हर जगह नारी शोषित, दमित तथा अपमानित हो रही है। इनके अन्तरात्मा से एक विशेष प्रकार की चीत्कार, आह निकल रही है फिर भी उन पर पुरुष प्रधान समाज द्वारा शोषण जारी है।[146]

vkt d le; e ?kj l ckgj ukjh dk vieku rk ckn e gkrk g] igy ?kj e gh अपमानित और शोषित होती है। महिलाओं का शोषण तो गर्भ में से प्रारंभ हो जाता है जो भ्रूण हत्या के रूप में देखा जा सकता है। भ्रूण हत्या की घटनाएँ लगभग देश के सभी क्षेत्रों में देखी tk ldrh है। भ्रूण हत्या की समस्या ने आज इतना विकराल रूप ले लिया है कि यदि शिक्षित समाज का ध्यान इस ओर नहीं गया तो असंख्य निरपराध शिशु अपने ही जन्मदाता द्वारा गर्भ में ही अपनी आयु समाप्त होने का दंश झेलते रहेंगे। भ्रूण हत्या माता–पिता द्वारा सांसारिक सुख–सfo/kk iklr dju dh vi{kk ldh.k Hkkoukvk e my> jgu d dkj.k vkj vf/kd c<rh tk jgh gA Hk.k ijh{k.k o Hk.k gR;k l dU;kvk dh l[;k fujUrj de gk jgh g] ftll li.k ekuo tkfr [krj e iMrh gb fn[kkb n jgh gA vkt dh ifjfLFkfr e xHkLFk dU;k dh gR;k dh lkp dk tUe nu okyh सामाजिक कुरीतियाँ दहेज, अशिक्षा आदि को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

भारत में प्रदर्शित विभिन्न आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक सूचकांक यह प्रदर्शित करते हैं कि efgykvk d lkFk lkekftd] LokLF;] vkfFkd] शैक्षणिक एवं पौष्टिक आहार आदि दृष्टिकोणों से vlekurk dk 0;ogkj fd;k tkrk g A cVk dh pkg cfV;k d ifr foHknkRed uhfr dk gh

परिचायक है । दहेज प्रथा, हत्या, आत्महत्या, वेश्यावृत्ति, बलात्कार आदि महिलाओं के उत्पीड़न की ToyUr leL;k, efgykvk d xfjeki.k thou dh lo/kkfud@fof/kd 0;oLFkk gekj le{k प्रश्नचिन्ह प्रस्तुत करती है \ fu% lng bu ifjfLFkfr;k dk fuekrk eu"; Lo; g vkj bldk nk"k e[; :i l gekjh i#"k&i/kku fopkj/kkjk dk fn;k tk ldrk g] D;kfd cV dh rjg cVh Hkh ekrk&firk dh gh lrku g] fdUr ,d l vR;f/kd Lug Hky gh og n%[k n vkj nlj dk अपेक्षाकृत कमतर समझना यह हमारे सामाजिक परिदृश्य का दोष है, किसी व्यक्ति विशेष को इसमें nk"kh Bgjkuk Bhd ugh gA ukjh mRihMu d lc/k e ge 0;fDr;k d fopkjk dk ifjekftr djuk gkxk vkj djhfr;k dk :f<;k dk cnyuk gkxkA :f<;k dk cny fcuk ukjh mRihMu dk jkduk fdlh Hkh idkj l lHko ugh gA

महात्मा गांधी के अनुसार –''हमारे समाज में कोई सबसे अधिक हताश हुआ है तो वे स्त्रियाँ gh g vkj blh dkj.k l gekjk v/k%iru Hkh gvk g A tc L=h i#"k d e/; vUrj idfr d igy l g vkj ftl [kyh vk[kk l n[kk tk ldrk g] mld vykok e fdlh idkj d vUrj dk ugh tkurk A**[147]

Hkkjr e efgykvk dh l[;k dy vkcknh d yxHkx vk/k fgLl d leku g] fdUr vkfndkल से ही महिलाएँ, पुरूषों के अत्याचार, अन्याय तथा शोषण के प्रसार के उपरान्त अब जीवन d iR;d dk;{k= e i:"kk d led{k utj vk jgh g A ,lh fLFkfr e efgykvk dh leL;k, ub dk; 0;oLFkk d vulkj ifjofrr gk xb g vkj vc igy dh vi{kk de gku d ctk; dN vf/kd gk xb g A

कार्य स्थलों पर यौन उत्पीड़न, बलात्कार, अश्लील हरकतें और अनावश्यक टीका–टिप्पणी bR;kfn rFkk cl] jyxkfM;k] ckt kjk] eyk ,o vU; lkekftd LFkyk ij efgykvk dk rFkkdfFkr i:"k i/kku lekt dh vU;k;dkjh ?kVuk, ihfMr djrh gA

परिवार समाज की प्रथम पाठशाला है जहाँ बच्चे जन्म से ही अच्छा सामाजीकरण कर योग्य 0;fDr cuk;k tkrk gA ;kX; 0;fDrRo d fuek.k d fy, ifjokj dk fyxHkn l jfgr gkuk vfr

आवश्यक है । परिवार को सुसंस्कारवान तथा घरेलू हिंसा से दूर रहना होगाA pfd ?kjy fgl k ,d ऐसा अभिशाप है जो परिवार की सुख–शांति छीन लेता है और परिवार के विकास में अवरोध पैदा djrk gA ftl ifjokj e efgyk irkfMr gkrh jgrh g] ml ifjokj d lEi.k lnL; fodkl d ekx l fopfyr gk tkr g rFkk ml ifjokj dk fodkl vo:) gk tkrk gA bl irkMuk dk lh/kk iHkko ifjokj t lh egRoi.k lLFkk d fo?kVu ij iMrk gA ifjokj d fo?kVu l u केवल परिवार के बच्चे बल्कि परिवार के सदस्यों तथा पड़ोस के लोगों और रिश्तेदारों पर भी इसका n"iHkko iMrk g A lkekftd 0;oLFkk; VVu yxrh gA cPpk d ykyu&ikyu e Hkh db leL;k, mRiUu gk tkrh g A ifjokj d cPp ghu Hkkouk rFkk volkn xLr] ekufld :i l कमजोर, मनोरोगी, शंकालु स्वभाव आदि से ग्रसित हो जाते हैं तथा उनका विकास अवरूद्ध हो जाता gA

lekt e efgykvk dh fLFkfr l/kkju rFkk mudk ekuokf/kdkj inku dj mud lefpr विकास तथा उत्थान के लिए कई शासकीय व अशासकीय प्रयास किए गये हैं, किन्तु जनचेतना के अभाव में वह आदर्श का एक टुकड़ा बनकर रह गये हैं या रह जाते हैं व्यवहारिक जीवन में कहीं mudk vfLrRo nf"Vxkpj ugh होता । महिलाओं के सशक्तिकरण एवं उनकी सुरक्षा हेतु le;≤ ij fofHkUu dkuuk dk fuek.k fd;k x;k g] ;g dkuu okLro e efgykvk d सशक्तिकरण एवं सुरक्षा हेतु पर्याप्त हैं, किन्तु इनका पूर्णतः पालन नहीं किया जाता है, इस कारण l efgykvk d ifr vijk/k dju oky 0;fDr;k dk bldk Mj ugh jgrk g A ;|fi dN mnkgj.k , l Hkh g ftue efgykvk u bu dkuuk dk n#i;kx fd;k g vkj viuh LokFkifr dh gA fQj Hkh bu dkuuk dk vkj vf/kd leFk gkuk ukjh mRihMu dk jkdu d fy, lekt e vfuok; gA

Mk- g"kno ek/ko viuh vifre dfr ^o.kk :<xfUFk* e ukjh mRihMu dk ldfrr djr g, dgr g fd &

^^g thouohekifrfu/k !@vfi nkr ‘शक्नोषि/जीवनवीमायोजनालाभं/ प्रदूषणेषु i:<k; o{kk; \ vI;fLr fdf¥pTthouIj{kkdop@ uxjekxZ"k fg.MekuH;%@{kR{kked.BH;% dDdjH;% **[148]

पीड़ित स्त्री चाहे वह घर कार्यालय, मार्ग, बाजार या कहीं भी हो उसके जीवन का नैराश्य 0;Dr djr g, dgr g fd gj txg okIuk d Hk[k&I;kI dRrk I thou Ij{kk dop fnykus okyh dkb thouchek ;ktuk ;fn gk rk crkvk \ IkFk gh foni vi{kkvk I inf"kr bI ukjh ru :ih o{k dk Hkh dkb thouchek ;ktuk dk ykHk fnyk Idr gk D;k \ ;gk ukjh dk vf/kd उत्पीड़न होने से उत्पन्न नैराश्य व्यक्त होता है जिसे कहीं भी किसी भी प्रकार की सुरक्षा प्राप्त नहीं gk ikrh gA ckgj vkj ?kj में हर जगह वहशी नजरें जहाँ पीछा करती रहती हैं वहीं कार्य की vf/kdrk vkj vi;kIr Hkktu vkj IEeku dk vHkko mIdh thftfo"kk dk ekj nrk gA ftIdk dkb Hkh ifrQy mI ikIr ugh gkrk gA

शाटी कविता लिखते हुए स्त्री स्वातंत्र्य की हत्या के बारे में कवि ने बहुr dN dgk g fdUr IkMh ftI idkj I ILdkjk dk irhd g mI gekjh mRd"V ILdfr d vHkko e vkj mId ikyu e deh dju I fL=;k mRihfMr gkrh gA Lo; Mk- माधव के शब्दों में कहते हैं –

''यदा/शाटी किंवदन्ती भविष्यति/तदा

ILdfrjfi odk.Bokf luh Hkfo";frA**[149]

fuLIng ILdfr dh j{kk dk cgr cMk nkf;Ro fL=;k dk g vr% fL=;k dh j{kk I ILdfr dk Ik"Bo c<k;k tk Idrk gA bId foijhr tIk fd ^rFkkLr* e o fy[kr g &

^^;= uk;%Z IgUr foiRI gfr@funl; náekuk tuKkfrfHk%A@

fHkÙk;k uo Ük.ofUr rkIk dFkk@शक्तिभक्तिच्युतं निर्दयं भारतम्।''[150]

vFkkr Hkkjrh; lLdfr d j{k.k d fy, lcl igy ?kj e gh ukjh dk mRihMu l eDr बनाकर सक्षम और सम्माननीय बनाना होगा तभी हम भारत को पुनः विश्वगुरू के पद पर आसीन dj ldr gA fdUr Hkkjr dk nHkkX; g fd oreku ifjfLFkfr;k ml dN bl idkj dh दृश्यावली से चित्रित कर रही हैं –

^^uXurk ;= fp=koyh lLrjrk@lDlxhrLojxhr;r okluk@

oÙki=k.;fi R;äyTtkfu p@Vh- fo- puYe;l dkedk Hkkjre~A**[151]

ऐसी स्थिति शोचनीय है और नारी उत्पीड़न की चमdrh&nedrh ijkdk"Bk gA L=h Lokr«; dk ohHkRl Lo:i gA

oreku e Hkkjro"k e L=h&i#"k fyxkuikr 927%1000 gA Hkkjr d fofHkUu jkT;k e bldh fLFkfr fHkUu&fHkUu g vkj dgh&dgh fyxkuikr d vkdM fprktud fLFkfr e gA ,lh fLFkfr e ;fn lekt e iu% Hk.kgR;k gkrh g rk ;g fLFkfr vR;Ur fopkj.kh; g fQj Hkh ge n[kr g fd &

^^Hk.kgR;k fL=;k tk;r yhy;k

Hkry Hkkfr rÙkkod Hkkjre~AA**[152]

अर्थात् भ्रूण हत्या एक ऐसा दंश है जो स्त्री को जन्म लेने से पहले ही उत्पीड़ित करना शुरू dर देता है और उसका अन्त करके ही रहता है इस सुन्दर धरा के दृश्य से उसे वंचित कर देता gA

ngt d dkj.k gku okyh gR;k, vkj ngt iirkMuk nkuk gh ,l nk"k g tk Hkkjr dk HkkjrRo l ofpr djr g tlk fd Mk- g"kno ek/ko dgr g fd &

^;kr d ir[kk|kil.k dkr d@xgHkfe% lnk ;= foØh;r@

सत्यधर्मात् क्रियाकाण्ड एव प्रीति–/र्धर्मभीतं मया दृश्यते भारतम् ।''[153]

vFkkr ngt mRihMu vkj mIdh ifj.kfr gR;k ;k vkRegR;k ukjh mRihMu dh ije ijkdk"Bk gA

ge ,I lekt dk ifrfuf/kRo djr g ftle nk 0;fDr;k d fookn e Hkh xkfy;k fL=;k dk yf{kr djd nh tkrh g &

^^j.Mk Mkfduh@ljrØhMk@djkfr@cãjk{kIu rnk-----@ fprkfXu%

शयनकक्षदीपायते / अस्थिशकलाः प्रसूनायन्ते / शवरुधिरं मैरेयायते।''[154]

,Ih ifjfLFkfr e ukjh mRihMu jkduk Igt ugh gA IkfgR; lekt dk vkbuk gkrk g vkj viu IkfgR; e Mk- माधव स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः में लिखते हैं कि –

''वर्तमानपत्रवार्तामय्यः कुब्जा वेश्याः / कुर्वन्ति / जीवनसत्यम् उच्छङ्खलम्।''[155]

वस्तुतः कोई ऊपर से कितना भी स्त्रीवादी बन ले किन्तु वर्तमान सामाजिक परिदृश्य कहीं u dgh L=h mRihMu dk fn[kkb nrk gA

''श्रमिकाया वक्षःस्थलं / स्वामिनो हस्तः स्पृशेत् / तत्र / काऽस्ति वीरता **[156]

dk;{k= e ukjh mRihMu dk thrk&tkxrk mnkgj.k gA u doy Jfed cfYd iR;d dk;{k= e vk[kk I] ckrk I ;k gkFk I ukjh dk mRihMu ,d IkekU; Ih ckr u gkdj ohjrk dk irhd Ik gk x;k gA tgk ,d vkj bI mPN[kyrk dh Li"V vfHk0;fDr g ogh nIjh vkj &

^^tyokfgU;k e'xu«;k%@?kV@uh;eku tyi@?kVLFk;k ikI;@

कपोतोदरकोमलयोः कुचयोः कम्पो भूत्वा / उच्छलति / तदा / तयोः प्रविशति

tyL; nyfyrRoefiA**[157]

इस प्रकार से मन के अवचेतन में श्लिष्ट शब्दों के साथ बहती धारा भी नारी को उत्पीड़ित करती है। किन्तु यह प्रश्नचिन्ह है कि इसमें कौन सी वीरता है \ ;|fi dk;{k= ij fL=;k dk

व्यवहार भी कुछ इस प्रकार का है आवश्यकता से अधिक स्वातन्त्र्य प्राप्त करना स्त्री d fy, Hkh nk"kHkk t d gA

^^le|n xPNUrh unh@LokRegR;k dfj";frA**[158]

bl h idkj

''अभिनेत्रीणां बीभत्सं देहप्रदर्शनम् !''[159]

fdUr bl ifjfLFkfr dk dkj.k Hkh i#"k dh L=h d ifr HkkX;oknh lkp gh gA ge fL=;k dk doy vkj{k.k ;k lEeku ugh nuk g] cfYd mud ifr bl lkp dk ifjofrr djuk g rHkh ukjh mRihMu jkdk tk ldrk gA

v/kk/k/k dekb d bl nkj e tc gekjh ikFkfedrk doy /ku dekuk gkrk g rc dN ,lh fLFkfr yxHkx iR;d ?kj e curh g &

''पत्नी क्षिपति शयनकक्षे/वध्यप्राणिवत–स्वशरीरम्।/पत्नी स्निह्यति/अतः/

nklhor delltky 0;ki rkA@ rL;k% Lugk Hkofr@i;k;%@ ikjrU«;L;!@

तस्या नेत्रे परितः/श्यामचिह्नानि दृश्यन्ते/ते सन्ति/दग्धस्वप्नाः।/

उपालम्भवचनानि श्रुत्वा/न कम्पते तस्या रोमाग्रमपि!/पत्नीं धूपशलाकामिव

n"Vok@vg@Hkokre@ nioRoghu% iाषाणखण्डः!/पत्नी शरीरं क्षिपति/

शयनकक्षे/ तदा/क्लैब्यत्वमुपैति/व्याधत्वं मे/(वध्यजीवः पलायनं न करोति

rnk d vkuUnk cr ! ex;k;k%AA**[160]

thou d eyHkr vkunk dh mi{kk djd ge vkHkklh vkunk dh vi{kk e yx tkr g rc ;g thou thu d yk;d ugh jgrा है, बल्कि हम किसी शिकारी के सामने बंधे हुए शिकार dh rjg Lo; dk vuHko djr g] fdUr tc bl fLFkfr dk ikj dj tkr g rc rd thou आशा ही क्षीण हो जाती है, समय बीत जाता है –

''पत्न्याः केशालकः बेतीभवति/तदा/

मित्रैः सह पश्याम्यश्लीलचित्रपटम्।''[161]

rk D;k og L=h tk vkidh thou lfxuh g og doy HkkX;k g] vkun iklr dju dh oLr g] ugh] fcYdy ugh] ge bl fLFkfr dk cnyuk gh gkxk] D;kfd L=h vk/kk lekt gkrh gA bld igy thou dh ;okoLFkk e ftudk fpUru ,lk gk &

^^rkEcqy jkx%@;uk ân;≧@xf.kdk&xkueA**[162]

mudk Hkfo"; v/kdkje; gkrk g] D;kfd mud fy, fL=;k doy HkkX;k jg tkrh g vkj tc og L=h o) gk tkrh g rc mldk mRihMu vyx idkj l gkrk g&

^^iky;fr Le@vHkdku% iky;fr@o)kEck jkxkuAA**[163]

;g fLFkfr Hkh L=h d fy, vR;Ur n;uh; gA dN fnuk igy gh geu n[kk g fd eEcb में रहने वाली एक विधवा एवं रोगी महिला जिसका बेटा विदेश में धन कमाने में लगा है वह अपनी ,dkdh ek l rhu&pkj o"kk e ,d ckj gh ckr djrk g vkj tc viu 0;fDrxr dk; l viu ?kj vkrk है तो एक बड़े से फ्लेट में एकाकी रह रही माँ का शरीर और आत्मा अलग–अलग हो चुके हैं, इतना ही नहीं बल्कि शरीर कंकाल बन चुका है। वह माँ जिसने अपने बेटे को नौ महीने तक कोख में पाला वह बेटा अपनी अवसाद से ग्रस्त होकर जीवन छोड़ चुकी माँ के शरीर की vfUre fØया भी नहीं कर पाता है। नारी उत्पीड़न का यह एक वीभत्स और विद्रूप दृश्य है।

Hkkjr e ukjh mRihMu dk ydj ,d vkj tgk tkx:drk ugh g ogh gkL; 0;X; e ukjh dk lEeku nu oky i#"k dk tk: dk xyke dgdj tx glkb dh tkrh gA ijLij gkL; e Hkh fL=;k dk i#"kk d ifr neudkjh dgk x;k gA tlk fd vfHkjkt jktUn feJ d xhfrdkO; d ifrdkO; ^Ro;k* vkj ^ikf"krHkk;L; xhre* e Mk- ek/ko dgr g &

^^;Uu lf¥pr e;k rn 0;;hdr Ro;kA @-----@

enxg p thfor lodhd r Ro;kA**[164]

tcfd okLro e , lk fcYdy Hkh ugh gA

¼10½ vk/;kRe &

ijEijkxr Hkkjrh; lekt /ke i/kku lekt jgk g A tgk /ke dk iR;d {k= e egRrk iklr jgh gA /ke] 0;fDr] ifjokj vkj lekt d thou dk vxf.kr :ik e iHkkfor djrk jgk g A Hkkjrh; lekt e Hkkfrd l[k ikflr dk thou dk ije y{; ugh ekudj /ke lp; dk i/kkurk nh x;h g A Hkkjrh; lkekftd 0;oLFkk eyr% /ke ij vk/kkfjr gA /ke d vk/kkj ij thou d leLr dk;k dh 0;oLFkk dju dk i;kl fd;k x;k gA Hkkjrh; lekt e 0;fDr Kku] HkfDr] de d }kjk ijमेश्वर के स्वरूप को समझने का प्रयत्न करता रहा है । वह सच्चित और आनन्द की प्राप्ति का प्रयास तथा जीवन के परम सत्य को जानने की कोशिश करता रहा है ।

Mk- jk/kkd".ku u fy[kk g] ^^/ke dh /kkj.kk d vUrxr fgUn mu lc vu"Bkuk vkj xfrfof/k;k dk y vkrk g] tk ekuoh; thou dk x<rh vkj cuk; j[krh g A gekj पृथक–पृथक हित होते हैं, विभिन्न इच्छाएँ होती हैं और विरोधी आवश्यकताएँ होती हैं, जो बढ़ती हैं और बढ़ने की दिशा में ही परिवर्तित भी हो जाती है । उन सबको घेर–घार कर एक समूचे रूप में iLrr dj nuk /ke dk i;ktu g A /ke dk fl)kUr ge vk/;kfRed okLrfodrkvk dk ekU;rk nu d ifr ltx djrk g] llkj l fojDr gku d }kjk ugh] vfir bld thou e bld व्यवसाय (अर्थ) और इसके आनन्दों (काम) में आध्यात्मिक विश्वास की नियंत्रक शक्ति का प्रवेश djku d }kjk A thou ,d g vkj ble ikjykfdd ¼ifo=½ vkj ,fgd ¼lklkfjd½ dk dkb Hkn ugh g A HkfDr vkj efDr ,d nlj d fojk/kh ugh g A /ke] vFk vkj dke lkFk gh jgr g A nfud thou d lkekU; 0;olk; lPp vFkk e Hkxoku dh lok g A lkekU; dR; Hkh mru gh iHkkoh g ftruk dh efu;k dh lk/kuk g A**

Li"V g fd vk/;kRe fgUnvk d thou dk tUe l ydj eR; rd vud :ik l प्रभावित करता रहा है । भारतीय समाज में आध्यात्म की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसका विविध Lo:i g A Hkkjrh; xkeh.k lenk; ,d vkj ogn fgUn ijEijkvk dk Lohdkj djr g, ogn भारतीय समाज का अंग है तो दूसरी ओर इसमें अनेक स्थानीय विश्वास और धार्मिक ekU;rkvk dk vfLrRo bl ,d iFkd vfLrRo Hkh inku djrk g A

Mk- g"kno ek/ko vk/;kRe d nk स्वरूपों को मान्यता देते हैं एक तो वह जिसमें शुद्ध आध्यात्म विराजित है और दूसरा वह जिसमें पाखण्ड है। शुद्ध आध्यात्म निश्छल, कपट रहित एवं ईश्वराभिमुख है, जिसका मूल उद्देश्य मानवता है, जिसके बारे में डॉ- ek/ko dk dFku g fd tc rd eu"; d ifr eu"; dh J)k ugh curh rc rd gh l=kl g&

^^xfe";fr @ br% @ J)kA**[165]

tcfd ik[k.M doy bu lcdk <kx djrk g ftlds ckj e Mk- ek/ko fy[kr g&

^^tiekyk xghRok@ xgdyg
शृत्वाऽपि न श्रुतमिव कल्पयामि।''[166]

,o

^^f[kLrefUnj@flDFkofr% & oir
iki ân;A**[167]

xty dk0; d :i e ^Lefrefnjk* e Mk- ek/ko i; vkj i;lh d ek/;e l Hkkjr dh vk/;kRe ijEijk ftld okgd ehjk vkj rylhnkl] ljnkl] dchj] ukud] jnkl] ,o vud lQh lr jg g mldk o.ku djr g, fy[kr g&

^^fjärk e Hkk"k;k x;k Hkor@--------@
RoPNfojJfHkjky[;k HkorA**[168]

Mk- g"kno ek/ko u dchjnkl th d ifl) nkg &

^^x| : xkfoUn nkÅ [kM dkd ykx| ik;

cfygkjh x| : vki dh xkfoUn fn;k crk;A**

की अवधारणा के अनुसार स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः ग्रंथ का एक खण्ड gh x#ifu"kn d नाम से लिखा है। गुरु की महत्ता को महत्तर रखते हुए इसे न केवल ईश्वर प्राप्ति अपितु सामाजिक सोपानों के आरोहण में परम् सहायक बताया है। विशेष रूप से

''गुरुणा खड्गो दत्तः/मया हता वासनाः/गुरुणा शूलं दत्तम्/मया

fonk·g³ dkj%@x|#.kk pØ inÙke@e;k fNUuk id fr%@r u lef i r%

पाशः/मया बद्धः पशुभावः/आदिष्टं तेन खनित्रं ग्रहीतुम्/

e;kUefyrkL lLdkjk%@x|jke ;k ikIrk xnk@Å#Hkx d rk e;k Øk/kL;@x|#.kk

शरो निर्दिष्टः/अधुना लक्ष्ये लीनोऽस्ति।''[169]

स्पष्ट है कि यदि शिष्य गुरु के मार्गदर्शu dk lE;d vul j.k djrk g rk og yxkrkj सफलता को प्राप्त करता जाएगा, किन्तु यदि गुरुप्रदत्त शक्तियों का दुरूपयोग करता है तो पराभव को भी प्राप्त कर सकता है, क्योंकि गुरु ईश्वर का अभिधान है, ईश्वर का मानवीकरण है। डॉ- ek/ko thou dk vkjHk gh ugh] cfYd vfUre y{; i;Ur x# dk lkfUu/; vif{kr ekur g t lk fd o fy[kr g &

^^g lk HkRok@------@

g lkUr jk.kke----A**[170]

आत्म शब्द का परमहंस के साथ में उल्लेख करते हुए डॉ- ek/ko u vk/;kRe d mPp मानदंडों को इन शब्दों में लिखा है –

^^l ;L;@|frer fl gk lu@fojk t r@

ijegl vkRek---A**[171]

thou dk vfUre lR; eR; g ^^/kok gh tkrL; ej.k**A bl lR; d fo"k; e Mk- g"kno ek/ko u fy[kk g &

''प्रतिमनुष्यं पश्याम्यहं भित्तिमेकाम्,/यामुलंगय/स गन्तुं न शक्नोति/

अतः/शनैः शनैः/प्रतिमनुष्यं प्राहति/शवः।।''[172]

आध्यात्म के इस विशिष्ट मुक्तक में डॉ- ek/ko u u doy thou d ije lR; dk mn/kr fd;k g] vfir thou e vku okyh LokHkkfod dfBukb;k dk Hkh bfxr fd;k g fd fdl idkj से जीवन के अनिवार्य छोटे–छोटे विषय जैसे शरीर, परिवार, मान–सEeku vkfn ekuo dk vk/;kRe की ओर बढ़ने के मार्ग में रोड़े लगाते हैं और इन सब में घिरा हुआ प्रत्येक मनुष्य शनैः–शनैः मृत्यु का आलिंगन कर रहा है। यदि लम्बे समय तक यश और कीर्ति के माध्यम से जीवित रहना है तो eu"; dk viuh ltukRedrk ij /;ku nuk gkxk rHkh og firkeg cãkth dh lPph lrku gku dk mRrjkf/kdkj iklr dj ik,xkA

vkfLrdrk d fo"k; e Mk- माधव के विचार पूर्णतः स्पष्ट है। शिवलिंग केवल एक प्रतिमा नहीं अपितु एक ऐसी दिव्य शक्ति के रूप में माना गया है जो कि जीवन के विभिन्न प्रश्नों का mRrj gA Mk- माधव ने शिवलिंग पर एक विस्तृत रचना लिखी है –

''शिवलिंगस्य स्फटिके/-------@

HkLeuÜprU;eAA**[173]

इस प्रकार न केवल शिवलिंग, बल्कि हिन्दू देवताओं में अन्यतम एवं चौंसठ कलाओं से ifji.k Jhd".k ij Hkh Mk- ek/ko dh vU;rek J)k foykl djrh g&

^^द्वारिकाधीशस्नेहेन या लालिता/सोमनाथेन या रक्षिता–पालिता।/

vfEcdk&cgpjknf"Vlk[;kfUork@xtjh rk uekek o;e³xykeA@

पादलिप्तेश्वरा यत्र जैनालये/ज्ञानमार्गं परं दर्शयन्ति मुदा/

यत्र शत्रुञ्जये शान्तिराध्यात्मिकी/गुर्जरीं तां स्मरामो वयं सादरम्।।

jordjE;rk ;k**गिभिर्दृश्यते/यत्र नवनाथदिव्यासनं राजते।/**

O;ke iFO;k lgkykieXu ;Fkk@xtjh rk Hktkek o; lonkA**[174]

ईश्वर केवल व्यक्ति विशेष की बपौती नहीं, किन्तु फिर भी व्यक्ति विशेष के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर है जहाँ एक ओर शिवलिंग में अपनी सजल श्रद्धा को व्यक्त करते g, viuh leLr dfe;k को शिवलिंग की ओर भेज दिया वहीं भगवान श्रीराम की मुखर अभिव्यक्ति जिसमें वे लक्ष्मण से dgr g fd bl /ku /kkU; l T;knk :fpdj e> og Hkfe g tgk ejk tUe gvk g og ekrk g ftlu e> tUe fn;k g] ftlu e> jke cuk;k gA blh idkj Mk- ek/ko lkjk"V dh xtj Hkfe को नमन करते हुए कहते हैं कि द्वारिकाधीश, सोमनाथ, अम्बिका, जैन और योगियों का वह स्थान tgk mUg ;g lkj mieku iklr g, g ;k ftl LFkku ij o bu miekuk dk vftr dj ik, g og Hkfe fuR; i.kE; gA

vk/;kRe d Lo:i ifjoru ij Hkh Mk- ek/ko fpfUrr g] pyr&pyr jkg e blu पथभ्रष्ट कर दिया इस प्रश्न का उत्तर प्रत्येक भटके हुए मन को उद्वेलित कर देता है। श्रद्धा का प्रकटीकरण केवल स्थान विशेष पर हो यह अनिवार्य नहीं है तथापि हमारे अध्यात्म के दैदिप्यमान u{k= tgk ij viuh iरम् आध्यात्मिकता से भारतवर्ष को प्रकाशित कर चुके हैं उस स्थान पर डॉ- ek/ko dh lgt J)k vfHkO;Dr gkrh g&

"रामजन्मभूमिवत्/केन मे विश्वासस्य मन्दिरं–/मस्जिदरूपेण/

ifjofrre\@du e J)k[k.Mk ifrcfU/krk·fLr **[175]

vk/;kfRedrk d âkl dk ,d cMk dkj.k bPNkशक्तिहीन होना भी रहा है जहाँ हमारा lei.k de gk tkrk g rc gekjh vk/;kfRedrk ylr gku yx tkrh gA vk/;kfRedrk

d idVhdj.k d lk/ku th.k gku yx tkr g vkj ,lk dju okyk viuh vk/;kfRedrk dk Fkkiu yx tkr gA Fkkih xb vk/;kfRedrk dHkh भी शांति नहीं बनाती है, इसलिए आध्यात्मिकता ogh gkuh pkfg, tk ân; d vUrjre l ey Lo:i e mnxhr gk vFkok ijEijk dk ikyu करते हुए अपने आप्तवाक्यों के अनुसार अपने प्राचीन ग्रंथों एवं मार्गदर्शकों का अविच्छिन्न अनुसरण djuk pkfg, u fd /ke ifjoruA जब जब भी आध्यात्म बंधन में आया है तब एक सहज शिशु के प्रश्न प्रकट होते हैं जिन्हें डॉ॰ माधव ने अपने शब्द दिये हैं –

> ^^ekr%! dLekn v;a flgk i¥pjs·fLr@vfi xgefLr ykgo¥ tja rL;\@
>
> dLekr rkydu fifgr }kje \@ekr%! ,rs tuk%@flg rL; ekrLlehis
>
> xUr;/ **कस्माद् निवारयन्ति! किं पञ्जरे वर्तते सिंहस्य पाठशाला\@flgks u**
>
> **पठत्यतः/तस्य शिक्षकेन रुद्धोऽयम्** \@ ekr%!@flgu fda ifBr0;e
>
> @ekr%@fda onfl \ dk·fi rs u ikB;rhfr \@rfg@vgefi
>
> flgks Hkfo";kfe@fdUrq ekrk i¥tja eg;a u jkspr@Roa eka i¥tja
>
> {kIL;fl fde **[176]

ऐसी स्थिति में ईश्वर भी पाषाण मात्र हो जाता है जैसा कि उस बालक के प्रश्न हैं कि मैं भी अविच्छिन्न आकाश में उड़ना चाहता हूँ अथवा सिंह की तरह वन में राज्य करना चाहता हूँ, किन्तु fitjk e> ml xfr l ml Lor=rk l ml jkT; l fojDr dj jgk g rk dik djd ml आध्यात्म के लक्षणों से बंधे हुए पिंजरे को खोल दो अन्यथा ईश्वर में श्रद्धा और आस्था दोनों का foy; gk tk;xkA tl k fd Mk- ek/ko u fy[kk g &

> **''ईश्वरोऽपि/मन्दिरकक्षे/युगपुरातनेन विवित्क–शणस्यूते/**
>
> LokRekuekPNk|@r".khdLlofifr@n;kjfgr%A**[177]

vk/;kfRed ykfdd Lo:i dk tc lekt vf/kd ekU;rk n nrk g vkj ey Lo:i l विस्मृत होने लग जाता है तब वह पाखण्ड की ओर बढ़ने लगता है । कोई व्यक्ति विशेष ही समाज dh ey vk/;kfRedrk l lekt dk nj dju okyk dkjd ugh g] cfYd lex lekt gh tc li.k d, e Hkkx dh rjg Hkfer gk jgk gk rc dkb ,d 0;fDr vkdj D;k dj ldrk g \ tc rd ge Lo; dk ugh l/kkjx nlj e l/kkj dh vi{kk ugh dj ldr gA ik[k.M d lkxj e xkr yxkr g, okluk l Hkhx g, vkj ;gk rd fd fdlh nlj d /ku l i.; deku d bPNd ge vk/;kfRed dHkh ugh gk ldr g ik[k.Mh gh dg tk;x] ftl Mk- g"kno ek/ko bl idkj l fy[kr g &

> ''वयमेव प्रणयिनः/पशून पशुसंग्रहालये वद्धवा/हसन्तः पश्यामः/ वयमेवापरं
> uj dkjkxkj f{kIRok@U;k;k d|e%@o;a n;kly|reku lk%&@fHk{k|dku ifr
> }h=hf.k d#.kk i|o|opukfu f{kIRok l|r|"Vk Hkoke%@okrkudfyr Hkk tuky;A
> o;e|o i|.kf;u%@ tuk|ku dkefi je.kh n"Vok@pfyyeku lk%@o;a
> /kkfe|dk%@diVlf¥prnfo.kkikftrp|.;ok¥N|dk%A**[178]

ईश्वर के मूल स्वरूप का वर्णन करते हुए डॉ॰ eाधव ने सहज सरल और सरस शब्दों में कविता लिखी है जिसका शीर्षक है 'ईश्वर'।

> ''ईश्वरः/--------@
> ईश्वरत्वस्य परिभाषाम्।''[179]

ईश्वर के प्रति अनन्य श्रद्धा का यह प्रकटीकरण आध्यात्म की पराकाष्ठा का स्पर्श करता है। इसी प्रकार से 'ओंकारः' कविता में शब्दब्रह्म की अवधारणा को शब्दशः स्वीकार करते हुए ईश्वर का vfHk/kku fd;k x;k gA[180] किन्तु कतिपय परिस्थितियाँ ईश्वर की सत्ता का परिहास करती हुई fn[kkb nrh gA tlk fd &

''प्रत्यवबेधम्/स्वप्नानां ध्वंसावशेषोऽस्ति/प्रत्येकः शिशिरः/प्रकृतिर्हरितिम्नः

शवोऽस्ति/प्रत्युच्छ्वासम्/एक एकः श्वासो विनश्यति/प्रतिशीर्णपुष्पं/

l|jfHkyh|;r@ i|frc)k"Bi|V@i|.k;L;kLohdkjk| or|r@i|frekue@vdfFkrk

व्यथा पञ्चत्वंव गच्छति/प्रतिमृत्यु/जीवितनिर्झरः शोषमुपैति/प्रत्येको 'नेति'

शब्दः/मम मानसे/ ईश्वरस्य युगशतपुरातनं ध्वंसावशेषमेव/सृजति----A**[181]

वस्तुतः यह ईश्वरत्व का अभाव नहीं है, अपितु व्यक्ति स्वयं अपने कर्मों का फल भोग रहा है, fdUr| ekuo LoHkko g| fd og viu| ddek| dk tkudj Hkh vutkuk dj nrk g] n[kdj Hkh निःस्पृह हो जाता है, किन्तु जब उसका फल सामने आता है तो उसका दोषारोपण ईश्oj dh lRrk ij djrk gA blh idkj Mk- ek/ko dgr g|

^;= ek{kL; ekx| Hk.kuR;xek&@Lr= HkkxL; ekx| xrkLlk/ko%@

n0;eklr| euh"kk fØ;k| o| fouk@HkkX;okn| Hktn| Hkko|d| HkkjreA**[182]

0;fDr vkt ek{k d| ekx l| HkVd dj Hkkx d| ekx dk viukrk tk jgk gA ek{k&ikflr का मार्ग सिर्फ शास्त्रों एवं धार्मिक ग्रंथों की बात बनकर रह गई है। आज भौतिक सुख–सुविधाओं dk vR;f/kd ikFkfedrk nh tk jgh gA Hkkfrd l[k&lk/kuk dh ikflr d| fy, gkM lh eph gb| g vkj bld| fy, fdlh Hkh idkj l| i|lk dek;k tk jgk g bld| fy, pkg vufpr rjhdk Hkh D;k u viukuk iMA Mk- ek/ko dgr| g| fd u flQ vkt lkekU; ykx vfir| lk/k&ox Hkh Hkkfrd l[k&lfo/kkvk ,o Hkkxoknh iofRr l| xflr gA

Mk- ek/ko dgr| g fd vk/;kRe d| ifr ykxk dh ekufldrk ifjofr|r gk jgh gA viu सनातन धर्मपालन में भी उसने पाश्चात्य शैली का मिश्रण कर दिया है। वे कहते हैं –

^;= jkek; ^jkek gj* dF;r|@;f) ^fØ"uk gj* dhr|;UuR;frA@

;= ^;kxk* u| ;kxk; l|dF;r|@vk³XyI|Ldkju"V| l[k| ! HkkjreA**[183]

vFkkr vkt gj jke d fy, ^jkek gj* dgk tkrk g] ;kx d fy, ^;kxk* dgk tkrk g और 'क्रिष्ना हरे' की धुन पर लोग जोर–जोर से नाचते हैं, यह सब पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव gA

Mk- g"kno ek/ko dgr g fd &

^^T;k;kÜpr de.k% Jheu er% lUu;kl ,o fgA@-----@

lUu;klh Ro p ;kxh Ro ikIrflf)Hkkfo";frA**[184]

vFkkr vkt d eu"; e f}fo/k /kkfed fu"Bk gA lk/kvk dh lU;kl e fu"Bk dk crkr g, o dgr g fd vkt d le; e ;fn dkbl ukdjh&pkdjh ugh feyrh g] 0;olk; ugh dj ikr g vkj /ku deku dh bPNk g rk lk/k cuuk lcl J"B dk; gA lk/k cuu ij nku ikflr vklkuh l gk ldxh] efUnj fuek.k e /ku dek ldr g] noh&norkvk d peRdkj l ykxk dk Hkfer dj /ku dek;k tk ldrk g] dFkk&okpu dj /ku vftr fd;k tk ldrk gA blds vfrfjDr lHkh idkj d ik[k.M tk /ke d uke ij vkt py jg g o fd; tk ldr g vkj ykxk dk Bx dj /ku iklr fd;k tk ldrk gA Mk- ek/ko dgr g fd efUnj LFkkiuk d fy, gh lk/k tUe yr gA iR;d eB e foykl] LoxnyHk Hkkx tk iklr gk jgk g] mlI pkjh ugh dg ldr g] vfir यह तो धर्म व्यापार का कौशल है –

''मन्दिरस्थापनार्थं च सम्भवन्ति हि साधवः।/मठे मठे विलासाश्च भोगाः

स्वर्गस्य दुर्लभाः/प्राप्यन्ते नैन चौर्यं सद् धर्मव्यापारकौशलम्।।''[185]

blh idkj Mk- g"kno ek/ko dgr g fd &

^^;Pp rhFk"k dkykgy jkd y@yC/k&i.Mk&tuo¥pd% lk/kfHk%@

/keik[k.MfnX/k tuHkf{kr@/kkfedo¥pr yf.Br HkkjreAA**[186]

vFkkr vkt lHkh rhFkLFkyk ij ykHkh i.Mk] Bxk vkj lk/kvk dh mifLFkfr jgrh g tk ;u&du&idkj.k vkfLrd ykxk dk /ke d uke ij Mjk&/kedk dj Bxr jgr gA

^dk dFkk] cr !* uked dfork e Mk- हर्षदेव माधव ने ईश्वर की उपस्थिति को व्यक्त djr g, dgk g &

''ईश्वरो न जानाति/माम्/अहं न पृच्छामि/तस्य संकेतम्/कदाचिद्/

o;i ekxk/k fefy";ko%@Hkfo";fr dnkfpn@vilukIL;

स्पर्शः/तदा/'क्षम्यताम्* bR;DRok@lk/kf;";ko%@vifjfpru lg@dk dFkk]

cr **[187]

ईश्वर की उपस्थिति सर्वत्र व्याप्त है, ईश्वर हम सब मनुष्यों में ही रहता है, किन्तु हम उसे igpku ugh ikr gA ;fn ekx e og gel Vdjk Hkh tk, rk Hkh mlI {kek ekx dj vkx fudy tkr gA

¼11½ fu/kurk &

हमारे देश की जनसंख्या का एक बड़ा भाग गरीबी रेखा के नीचे जीवन–यापन करने को बाध्य हैं। पेट की भूख एवं बच्चों की पीड़ा कभी–कभी उसे देह व्यापार एवं वैश्यावृत्ति के लिए बाध्य कर देती है। यहीं से शुरू होता है उसके दैहिक शोषण का एक अंतहीन सिलसिला। हमाj सामाजिक दुर्व्यसन जैसे शराबखोरी, जुआँखोरी भी उसे इस अंधेरे गर्त में ढकेलने के लिए उत्तरदायी है। गरीबी सबसे बड़ा अभिशाप है। आदमी अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी बड़े से बड़ा दुराचार करने को विवश हो जाता है । हमारे देश के अशिक्षित ,o vfodflr {k=k e efgykvk ij gku oky vR;kpkjk dk ,d ie[k dkj.k vkfFkd foiUurk Hkh gA

fu/kurk vly e /ku dk vleku forj.k g tgk ,d vkj eVBhHkj fxu pu ykxk d ikl e llkj dk vk/k l vf/kd /ku fu:i;kxh cuk iMk g ogh nljh vkj nfu;k dh yxHkx

चालीस प्रतिशत जनसंख्या मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भी सक्षम नहीं है। समाजवाद को fu/kurk d mUeyu e ie[k lgk;d d :i e ekuk tk ldrk g fdUr lektokn d leFkd gh i thokn d ikyd vkj ik"kd gk x; gA ,lh fLFkfr e ^xjhch gVkvk* doy ,d ukjk cu कर रह गया है, जमीनी हकीकत नहीं। निर्धनता के कारण जहाँ एक ओर स्वास्थ्य और शिक्षा का अभाव होता है वहीं दूसरी ओर इन स्वास्थ्य और शिक्षा के अभाव से ही निर्धनता अपने पैर पसारती gA oLrr% bu nkuk e ijLij vU;kU; lc/k gA blfy, fu/kurk dk nj dju d fy, vkj{k.k या निर्धनों को मुफ्त में सेवाएँ उपलब्ध कराने की अपेक्षा स्वास्थ्य और शिक्षा का सुव्यवस्थित ipkj&ilkj gh fu/kurk dk nj dj ldrk gA nHkkX; l Hkkjro"k d lnHk e ge n[kr g fd uhfr&fu;Urk vkj{k.k vkj e¶r[kkjh d icy leFkd gkdj ek= okVk dh jktuhfr djr g] जबकि हमें समाज में भिक्षावृत्ति के स्थान पर कौशल का संवर्द्धन करना चाहिए जो कि निर्धन 0;fDr;k dk u doy vkfFkd lgk;rk miyC/k djk,xk] cfYd mue vkRelEeku ,o vkRexkjo Hkh LFkkfir djxkA bl lnHk e Mk- g"kno ek/ko fu/kurk d fofHkUu d:i e[kkVk dk fn[kkr g, dgr g &

^^cHkf{krpkj@igjfUr@/kfudx`gLFkk%A**[188]

,lh fLFkfr cuxh gh] fdlh fu/ku ifjokj e ifjokj fo/kk;h rRo {kh.k gkr g, fn[kkb nr g tlk fd &

''**पत्नी क्षिपति शयनकक्षे/--------@**

d vkuUnk cr ! ex;k;k% **[189]

bl ifjfLFkfr dk dkj.k ;g ugh g fd 0;fDr efrHk"V g] cfYd /ku l iklr gku okyh gj oLr vkt mld thou dk l[ke; cuk jgh gA vr% og viu nkfjn; dk nj dju d fy, viu thou d vifre vkun l Hkh nj gkrk tk jgk gA lR; gh dgr g&

''**दारिद्यम्/अस्ति/सुखीतरा चतुष्के/शैलप्रतिता!**''[190]

vFkkr tc n[kr g fd fdlh /kfud 0;fDr dh ifrek pkjkg ij yxk nh tkrh g rc fu/ku lkprk g fd /ku l iklr gku okyk l[k fdruk cMk g vkj fu/kurk fdruk cMk अभिशाप है –

''विक्रीणन्त्येते / खण्डशः कारं कारं / फलदं तरुम् ।''[191]

tc fu/kruk d dkj.k viuh fdlh vR;Ur fi; oLr l fo;kx gkrk g rk cuu okyh fLFkfr dN ,lh gkrh g &

^^foØhrkr {k=kr@;kfr d"kd%&v{.kk%@i;knk fjäk%A**[192]

lgh g vk[k d vkl Hkh jkr jkr l[k tkr gA

fu/kurk d cM dkj.kk e Hk"Vkpkj dk Hkh fxuk x;k g &

^^lo'dkjlokfu;DR;k lg@dk;pk;l fouk eY;e@vfi p@

उत्कोचलाभोऽपि निःशुल्कः संयुक्तोऽस्ति / निर्वाचने / विजयेन सह /

Hk"VkpkjL; orr migkj;ktukA@ijh{kkiek.ki=% lg l³xrkfLr@

ofÙkiklR;Fk fpUrkA@Hkoku tkukR;o ;r@ekuorк;k ukfLr eY;e@

vr% foØ;dky f{kIrk lk ekx@;fn Hkor #fprk L;krA**[193]

भ्रष्टाचार केवल शासकीय कार्यक्षेत्र में नहीं होता बल्कि प्रत्येक वह व्यक्ति जिसके पास में dN vfrfjDr nu d fy, g og dj ldrk gA vr% Hk"Vkpkj dk fdlh ,d lhfer nk;j e रखना बड़ा मुश्किल है। जबकि भ्रष्टाचार को रोकने से निर्धनता को रोकना बहुत संभव है। निर्धन 0;fDr d Lolu vkj iekyki nkfjn; l Hkj gkr gA tlk fd Mk- g"kno ek/ko dgr g &

^^dVhj Hkon ok@------@HkXuk ?kV%A**[194]

vFkkr fu/kurk 0;fDr dk nk;jk ifjofrr dj nrh gA Hk"Vkpkj d vfrfjDr jktuhfr Hkh fu/kfudk dk neu djrh g tk fd Mk- ek/ko d vulkj &

^^y³dkf/kifr%@_"kh.kk jäfcUnu ikl;@jko.kk cHkko@Hk"Vkpkj%@er lgfr

ikl;@Hkofr urkAA**[195]

lR; gh g fd Hk"V vkpj.k gh okVk dk ckgY; iklr dj urk dk Lo:i iklr dj yrk है और यह राजनीति निर्धन को पुनः पुनः पददलित करती रहती है। जैसा कि स्पष्ट शब्दों में डॉ॰ g"kno ek/ko u fy[kk g &

^^flgkluL; o.ku@fefJefLr@nhu tukuk #f/kje@flgkluL;

iPNn@ifrrk%@{kR{kked.BkukeJfcUno%A**[196]

fu/ku 0;fDr jktuhfr d lkeu fHk[kkjh gk tkrk g vkj fHk[kkjh dh th.k onuk dk dkb ugh le>rk g] gj dkb nRdkjrk g &

^^fHk{kdL;&th.koL=@dk onuk fu{klr ekf"k";frA**[197]

fu/kurk dk ,d cMk dkj.k ifjokj e ,d gh 0;fDr d }kjk vi;klr ek=k e lhfer vk; gkuk Hkh gA dbZ ifjokj ,l gkr g ftue ,d gh 0;fDr dekrk g vkj ifjokj d ckdh lnL; fdlh u fdlh dkj.k tl fdlh jkx ;k v/;;u d dkj.k /ku deku e vleFk g] जबकि उनके ऊपर किया जाने वाला खर्च हमेशा बना रहता है। ऐसी स्थिति में उस एकाकी व्यक्ति d }kjk thou dk i;klr vkuUn ugh ft;k tkrk gA mlI ,dkdh vkthfodk lEiUu 0;fDr d द्वारा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रोजगार के अभाव e tc vU; fdlh LFkku ij tkdj /ku deku dk i;kl fd;k tkrk g vkj dN le; rd tc ?kj ij /ku ugh Hkt ikrk g rc ?kj dh fLFkfr dk o.ku djr g, Mk- g"kno ek/ko fy[kr g fd &

^^cHkf{krk eRd.kk%@-------@fcykrA**[198]

ân; fonkjd ,lk o.ku i<dj निश्चित रूप से नेत्र अश्रुबिन्दुओं से परिपूर्ण हो जाते हैं vkj lgt gh n;k dk Hkko eu e tkxr gkrk g fQj Hkh bl ifjfLFkfr l xtju oky dbZ

ykx g vkj mud ifr lkpu oky lkeF;okuk dh l[;k cgr lhfer g blfy, fu/kurk fpj&LFkk;h dh rjg vkfn&vukfदकाल से आज तक विद्यमान है, आशा करते हैं कि आगे से यह fu/kurk :ih Jki vi{kkdr {kh.k gkdj ol/kodVEcde dh Hkkouk l ,dkRe ekuookn dk i"V djA vfr fu/kurk okyh fLFkfr ,d mikyEc g ftl d ckj e Mk- ek/ko fy[kr g &

^^v/ke r%@v/k tkxfjr%

;Fkk dk·fi fHk{kd% LofifrA**[199]

nfjnrk ,d Jki g bldh if"V djr g, Mk- ek/ko u ^jko.kjkT;e* uke l ,d eDrd fy[kk g &

^^y³dk;k lhrk;k% doyeldokj g;igj.k tkre@

--------@vklhrA**[200]

tc ekuork dk âkl gkrk g rk lef) nj gku yx tkrh g vr% ekuork dk lj{k.k करना ही चाहिए इस विषय को मानचित्र बनाकर पूरण प्रश्नों के माध्यम से कवि ने बताया है कि –

‘‘भारतस्य मानचित्रे निम्नसूचितवस्तूनि दर्शयन्तु –/

---------@0;oLFkkrU=eA**[201]

(साम्प्रदायिक सद्भाव, नेताओं का वचनपालन, ईमानदार शिक्ष.k lLFkk,] ukxfjdk dh प्रामाणिकता, रिश्वतखोरी रहित व्यवस्थातन्त्र, भूखे दरिद्रनाथरहित स्थान, भ्रष्टाचार रहित स्थान) इसमें पूछे गये सारे प्रश्न जनमानस को उद्वेलित करते हैं, किन्तु भूखे दरिद्रनारायण रहित स्थान का प्रश्न lh/k&lh/k fu/kurk l tMk g vkj ;ह किसी भारतीय के लिए बड़े ही शर्म की बात है कि भारत के मानचित्र में ऐसा स्थान ढूंढ पाना वर्तमान परिदृश्य में संभव नहीं है।

fu/kurk fdlh ,d 0;fDr rd lhfer gk rc rk lHkh feydj ml fu/kurk dk nj dju dk i;kl dj ldr g] fdUr ml fu/kurk dk {k= vR;Ur 0;kid crkrk g tl&

''पश्यतु भो महाभाग! सर्वान् बन्धूनवस्थितान्।/जलहीनाँस्तथा ग्रामान्

fo|nghuku dekxdkuAA@{kfIrikIkdyku ykdku m|kxjfgrk%

i|tk%@fe=kf.k ekryku Hkru Kkfroxku I[khLrFkkA**[202]

bI 0;X; d ek/;e I Mk- ek/ko ;g dguk pkgr g fd oreku /kkrjk"Vh; 0;oLFkk ftIe n"Vk vkj drk nkuk fHkUu vkj vde.; g ogk fu/kurk ,d egkekjh dh rjg viuh सीमा को लगातार बढ़ाए जा रही है। इससे निपटने के लिए कर्मशील होना पड़ेगा, किन्तु जवाबदार urk tk fd urk gku d IkFk IkFk tek[kkj Hkh g o ugh pkgr g fd Hkkjr d ekFk ij yxk fu/kurk dk dyf"kr dyd nj gk &

^^;nnfjno;Fkk grie)k"k;r@[kk|eY;"k of) Ink dk³{krA@

gfUr neY;rk nhuI¥thforA@jkejkT;kJ; Lofluy Hkkjre A**[203]

bu ifDr;k d ek/;e I Mk- ek/ko jkturkvk dh uxh IPpkb dk mtkxj djr g vkj tc rd bu ifjfLFkfr;k I ikj ugh ik;k tk Idrk rc rd xjhch gVkvk dk ukjk Ink जीवित रहेगा और गरीब भी हमेशा बना रहेगा। ऐसी स्थिति में कौन उद्धारकर्ता हो उसे पहचानना Hkh cMk dfBu g tIk fd iu% Lo; Mk- माधव के शब्दों में –

^^thonkLr u tkukfe dLek|xkr@fu/kuRo·fi thoUer efPNreA@

thou uo tkukfr eR;| ;Fkk@fHk{kd th.koL=kor HkkjreA**[204]

जब जीवन और मृत्यु का संक्रांतिकाल हो मृत्यु बाँहे फैलाये खड़ी हो और जीवन की आशk बिना तेल के दीपक की तरह लगातार क्षीण होती जा रही हो ऐसी स्थिति में जीवन आशा दिलाने dk fu/ku dI igpku Idrk g vkj bIh idkj I ,d I{ke vkj Infopkj;Dr urRo dk अभाव निर्धन बन्धु के चिन्तन को हमेशा नैराश्य की ओर ले जाता है।

oreku urRo हमेशा सत्ता को स्वयं या अपने घनिष्ठ के हाथों में ही रखना चाहता है उसके fpUru dk Mk- माधव सीधे–सीधे शब्दों में कहते हैं –

^^fu/kZu% dk·fi fuokZfprks uks Hkor~A**[205]

D;kfd ;fn fu/ku fuokZfpr gks x;k rks og fu/kuksa d vudy ;kstuk,¡ cukdj mu ij vey djxk vkj /kfudksa dk lkekT; Mkoy tk,xkA oLrr% xjhch gVkvk doy ckyu d fy, g] बलवान, सत्ताधीश, धनिक यह चाहते हैं कि जिस स्थान पर हमें अपना व्यापार या निवास बनाना है ogk l xjhcksa dks gVk;k tk, u dh xjhch dksA Hkkjr e fu/kurk bl lhek rd c< pdh g fd Hkkjr Lo; fu/ku jk"Vk dh J.kh e [kMk gks pdk g ftl dHkh lku dh fpfM;k dgk tkrk Fkk &

^^dk{kr% thous eSfäeök= ;r@fdUrq nkfj|;|ä lnk oRrA@

विश्वबैक प्रति प्रार्थनातत्परं/द्वारि भिक्षार्थि किं पामरं भारतम्।''[206]

Mk- माधव के यह शब्द भारत की वर्तमान दारिद्र्यपूर्ण स्थिति दर्शाते हैं जिसमें इतने निर्धन gks pd g fd lkjk Hkkjr gh fu/ku dgk tku yxk gA

व्यवहार में भी हम देखते हैं कि राजा भर्तृहरि ने 'नीतिशतकम्' और 'मृच्छकटिकम्' में राजा शूद्रक ने लिखा है कि निर्धन होना जहाँ एक अभिशाप है वहीं धनवान व्यक्ति का हर कार्य एक आदर्श की तरह समाज में प्रस्तुत किया जाता है । इसका सबसे बड़ा कारण निर्धन के लिए धन dh vi{kk vkj /kfud d ikl e /ku dh vf/kdrk g ftld ne ij og /kfud viuk lkekT; LFkkfir djd mu fu/kuksa dk FkkMk&cgr nku djd eku&lEeku d lkFk&lkFk rFkkdfFkr i.; dk vtu Hkh djuk pkgrk gA gkykfd xjhcksa d [ku dk pldj mUg dHkh&dHkh dN [kku dk Qy] nokb;k] dEcy vkj vU; oLrvk d lkFk FkkMk&cgr uxn nku dj nuk fdl i.; dk nrk gkxk ;g fopkj.kh; gA

lanHkZ & v/;k; r`rh;

1- f=ikBh Mk- jk/kkoYyHk] lc dN dk fu"Øe.k % g"kno ek/ko dh dforkk] i- 1

2- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 4

3- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 139

4- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 94

5- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 95

6- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 95

7- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 95

8- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 131

9- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 147

10- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 166

11- vFkoon] 10@7@32

12- _Xon] 10@186@3

13- _Xon] 10@137@4

14- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 123

15- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 23

16- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 134

17- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 84

18- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 97

19- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 124

20- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 56&57

21- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 3

22- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 8

23- ek/ko Mk- gर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 12

24- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 13

25- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 13

26- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 16

27- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 26

28- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 31

29- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 42&44

30- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 45

31- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 58

32- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलTtkdkeyk Lefr%] i- 59

33- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 73

34- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 81

35- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 110

36- कन्साइज ऑक्सफोर्ड शब्द कोश, पृ- 45

37- Mk- fcgkjh ilkn vxoky] Hk"Vkpkj dh vo/kkj.kk ,o ifreku] Hkkjrh; jktuhfr e भ्रष्टाचार, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ- 23

38- Encyclopeadia of Americana, Vol. 8 p.22

39- /ke;x] vxLr 16] 1994] i- 12

40- Hkkxok th- ,l-] ikfyfVdy djIlu bu bf.M;k] ikiyj cd lfolt] ub fnYyh] i- 1

41- माहेश्वरी एम-vkj-] Hk"Vkpkj lekt dk dlj] ikfyfVDl bf.M;k] i- 16

42- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 9

43- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 13

44- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला Lefr%] i- 15

45- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 16

46- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 26

47- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 44

48- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 44

49- ek/ko Mk- g"knव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 45

50- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 73

51- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 81

52- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 110

53- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 89

54- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 119

55- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 142

56- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 41

57- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 41

58- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 3

59- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमलk Lefr%] i- 7

60- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 11

61- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 12

62- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 42
63- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 97
64- ek/ko Mk- g"knव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 163&165
65- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 197
66- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 224
67- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 68
68- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 70&71
69- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 25
70- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 30&31
71- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 34
72- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 3
73- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 22
74- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 22
75- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 95
76- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 44
77- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 154
78- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 165
79- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 3
80- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 16&17
81- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 38
82- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 30
83- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 30
84- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 31
85- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, i- 14
86- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 16
87- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 16
88- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 27
89- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 46
90- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पशyTtkdkeyk Lefr] i- 164
91- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 165

92- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 166

93- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 192

94- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 194

95- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 195

96- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 204

97- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 66

98- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 156

99- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 7] 18] 41

100- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 165

101- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 99

102- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 65

103- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 116

104- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk¨] i- 21&22

105- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk¨] i- 21

106- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk¨] i- 43&44

107- Lokr=;kRrj fgUnh miU;kl e ekuo eY; vkj miyfC/k;k] i- 26

108- ikujh Mk- geUn dekj] LokrU=;kRrj fgUnh miU;kl] eY; lØe.k] i- 25

109- vjkjk fouhrk] lkBkRrjh dgkuh e ekuoh; eY;] i- 174

110- nofy;k Mk- eukgj] lEiknd uxh Mk- ljUnfIg] ufrd eY;k dh iklfxdrk] i- 74

111- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 7

112- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 97

113- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 12

114- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 16

115- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 42

116- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 43

117- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकाeyk Lefr¨] i- 105

118- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 192

119- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 149

120- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 91

121- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 150

122- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 151

123- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 161

124- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 112

125- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 152

126- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 23&24

127- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 41

128- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 52

129- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 78

130- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 85

131- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 5

132- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 7

133- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाdkeyk Lefr%] i- 13

134- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 18

135- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 20

136- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 23

137- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 62&63

138- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 38

139- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 40

140- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 83

141- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 120

142- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 73

143- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 71

144- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 69

145- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 12

146- bfrgkl ck/k] tuojh&tu 2009] o"k 19] lLdfr] dy vkt vkj dy] i- 99

147- HkVV byk] ge lfork & bfrgkl ijk.k d vkbu e] i- 96

148- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 11

149- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 25

150- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 101

151- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 91

152- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 165

153- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 100

154- ek/ko Mk- g"kदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 60&61

155- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 2

156- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 3

157- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 52&53

158- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः] i- 78

159- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 3

160- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 5

161- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 7

162- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 12

163- ek/ko Mk- g"kno] Lपर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 14

164- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 23

165- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 11

166- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 7

167- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 12

168- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 14

169- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 224

170- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 237

171- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 15

172- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जkdkeyk Lefr`] i- 33

173- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 56&57

174- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 70

175- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 81

176- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 82

177- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 83

178- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 97

179- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 154

180- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 161&162

181- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्tkdkeyk Lefr%] i- 171

182- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 162

183- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 168

184- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 13

185- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 18

186- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 79

187- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 89

188- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 5

189- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 3

190- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 13

191- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 13

192- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 14

193- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 16

194- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 20

195- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 44

196- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला Lefr%] i- 45

197- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 80

198- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 20

199- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 81

200- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 160

201- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 166

202- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 35

203- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 92

204- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 113

205- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 119

206- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 167

pr|Fk| v/;k;

Mk- g"kno ekधव के काव्यों की शिल्पगत आधुनिकता

Mk- g"kno ek/ko ijEijkxr dk0; fo/kk dk NkMdj vikjEifjd dfo d :i e tku tkr gA ikphu dfoijEijk l bud dk0; dk lkeatL; ge n[ku dk ugh feyrk gA vkid dk0;k e xgjh irhdkRedrk] fo{kkHk ;k fojk/k rFkk vfr;FkkFkokn fn[kkb nrk gA ik- Mk- jk/kkoYyHk त्रिपाठी कहते हैं कि ''माधव संस्कृत कवियों में सर्वाधिक प्रयोगशील भी कहे जा सकते हैं। उन्होंने बंगाल के बाउल गीतों को मुक्त छन्द के संस्कृत काव्य में उतारा है, शिजो, तांका और हाइकू जैसी विदेशी fo/kkvk e foiy dk0; jpk g] xty vkj ykdxhrk dh Hkfe ij Hkh in j[k gA mudh dN dfork, xkQk] ekufp=k ;k fp=kdfr;k rd e fy[kh xbZ g] tk lLdr dh fp=dk0; ijEijk dk vk/kfud Hkkock/k d lkFk uokorkj gA**[1]

Mk- g"kno ek/ko u viuh dforkvk e ik;% mu fo"k;k dk lfEefyr fd;k g] tk oreku e gekj vkt tuthou l ljkdkj j[kr g vkj ftu ij dkb Hkh lLdr dfo viuh y[kuh ugh pyk ikrk gA bl idkj Mk- ek/ko dh dfork, oreku le; dh iklfxdrk dk gekj le{k 0;Dr djrh gA

Mk- हर्षदेव माधव ने संस्कृत कविता को कई नई विधाएँ और शैलियाँ दी हैं। इनमें एक नई शैली एकबिंब काव्य की है। ''वस्तुतः माधव की कविता अनुभवों, बिम्बों और प्रतीकों का विराट् संसार mifLFkr djrh gA mldk iR;d ,dfcEch; dk0; HkkLoj ef.k dh rjg vud mifcc leV dj viuk vkHkkykd jprk gA ble ykdthou] ;kjkih; eu] Hkkjrh; iKk lHkh d vuHko viuh ikjLifjdrk e ldy vkj ldh.k gk tkr gA**[2]

ik- हरिदत्त शर्मा कहते हैं कि डॉ- हर्षदेव माधव छन्दोमुक्तता एवं निरंकुशता के कारण उनकी dfork vkरम्भ में पारम्परिक संस्कृतपण्डितों के मध्य अस्वीकार्य रही, जबकि आधुनिक प्रगतिशील dfo;k vkj leh{kdk d e/; o vfxe ifDr e loLohdk; jghA tk Hkh gk] g"k dfo dk y[ku गहन है, विशाल है और अपनी तरह का विलक्षण भी। उनकी कविता में संस्कृत कविता का vk/kfudhdj.k ,o vUrjk"Vh;dj.k gA Hkko gk ;k NUn] mudh dfork ,d u;k i;kx gA o ,d शक्तिशाली एवं प्रभावशाली लेखक हैं। वे अपने विचार नये–नये बिम्बों एवं प्रतीकों के माध्यम से vfHk0;Dr djr g vkj og Hkh vfr l{ki e A mudh vfHk0;fDr vU;kfä d }kjk vf/kd gkrh gA वे विश्व मानवता के वाचक एवं मानवीय संवेदनाओं के गायक हैं।''[3]

Mk- g"kno ek/ko le;kudy dF; dk eDrNUn dh dforkvk d ek/;e l idV dju d vfrfjDr vud u0; dk0; :ik dk ifjp; lLdr dfork l djkr gA Hkk"kk dh nf"V l Mk- ek/kव का साहित्य बहुत समृद्ध है। उन्होंने अन्य भाषाओं के अनेकों शब्दों को अपने काव्य में स्थान दिया है। कवि की भाषा में सामान्य बोलचाल के शब्दों का समावेश रहता है जो कि आम पाठकों को vkdf"kr djrk gA

bl idkj viuh fuR; uohu dk0; fo/kkvk l lLdr dk0; Hk.Mkj dk Mk- g"kno ek/ko ikf"kr ,o Qfyr dj jg gA viu dk0; e Mk- ek/ko u irhdk dk Hkh Hkjij i;kx fd;k gA ik- jk/kkoYyHk f=ikBh g"kno ek/ko dh dk0;lk/kuk d fo"k; e fy[kr g fd g"kno ek/ko tl dN gh lLdr dfo irhdk dk bl rjg dfork e lQyrk l <ky ld gA g"kno ek/ko dk dk0; tfVy irhdk dk [kkl k tekoMk g] mUgku viuh ijEijkvk l irhd mBk; g vkj mUg ub vFkoÙkk nh gA

Hkk"kk &

नूतन शब्द प्रयोग –

Mk- हर्षदेव माधव ने अंग्रेजी भाषा के शब्दों के लिए संस्कृत में नवीन शब्द गढ़े हैं जैसे 'बोनस' के लिए 'लाभांश', 'पेट्रोलपम्प' के लिए 'इन्धनपूरणस्थानं', 'स्क्रीन' के लिए 'काचपटलं', ^oclkbV* d fy, ^tkyiVkr*] ^lk¶Vo;j* d fy, ^enil.kkY;k*] ^fel dky* d fy, ^ek?kk0gku*] ^MLVfcu* d fy, ^vodfjdk* vादि अनेकानेक शब्दों का उन्होंने संस्कृत में अनुवाद किया है। कुछ शब्द बिना किसी परिवर्तन के ज्यों के त्यों ग्रहण कर लिये हैं जैसे रेल्वे, प्लास्टिक पुष्प, एन्टीमेटर, सोक्रेटिसाय। कुछ अन्य भाषाओं के शब्द जैसे 'त्वमसि' के लिए अनलहक्क, कफ़न, फातिहा आदि भी i;kx fdये हैं। संस्कृत में कुछ अप्रचलित शब्दों जैसे नंगुरिका (चूड़ी), मदयन्तिका (मेंहदी) आदि के i;kx feyr gA

'स्पर्शलज्जा कोमला स्मृतिः' में 'स्पर्शलज्जा' शब्द हर्षदेव माधव ने 'छुईमुई' के लिए रखा है। स्मृतियों के लिए 'स्पर्शलज्जा' और 'कोमला' इन दो लाक्षणिd ink dk i;kx thou e Lefr dh Hkfedk dk idV djrk gA

^ØhMki=* ¼Playing Cards)[4] शब्द का प्रयोग करते हुए लेखक ने ताश को सूचित किया gA blh dfork e ^ok;xk* ¼ik#"kikfllrdkfjdk½ xkfydk fy[kdj oreku lekt e ipfyr oLr d lnHk e llfpr fd;k gA[5] तोल के परिमाण 'किलो' शब्द को तत्सम स्वरूप में डॉ- ek/ko u foØ; dfork e i;Dr fd;k gA[6] 'सिनेमागृह' शब्द के प्रयोग के साथ फिल्मचित्रफलक शब्द का i;kx Hkh Mk- ek/ko u HkdEikRrje dfork e fd;k gA[7] fotkrh; fdUr lekt e ik;% ipfyr ^dcस्थान' शब्द का प्रयोग भी तत्सम स्वरूप में बिना किसी संकोच के कवि ने किया है।[8] v/kjk"V jkx d :i e ipfyr yi ftl vxth e ^fyfifLVd* dgk tkrk g] mldk i;kx Hkh ifrdk0;xhr e Mk- ek/ko u fd;k gA[9]

शान्तिरस्ति ——— बाह्यपटलम्।' एवं 'मशीनगनवक्षfl* bu nkuk i;kxk e Mk- ek/ko u युद्ध की स्थिति का वर्णन करते हुए युद्ध में प्रयुक्त होने वाले मशीनगन एवं अणुबम का यथारूप

mYy[k fd;k gA[10] 'ईसुख्रिस्त शब्द का प्रयोग करते हुए लेखक ने ईसाई धर्म के बारे में Idr fd;k gA[11] bIh d IkFk lyक्स्टिकपुष्पकस्तबक शब्द का प्रयोग करते हुए पूजा में ईश्वर के ifr opuk dk Hkh 0;Dr fd;k gA[12] 'पत्रभार' पत्रभार शब्द का प्रयोग लेखक ने 'पेपरवेट' के संबंध e fd;k gA[13] 'थुवर' शब्द का प्रयोग कैक्टस नामक वनस्पति के लिए किया गया है।[14] bIh d साथ 'थुवर' शीर्षक I ,d dfork dh jpuk Hkh dh xb g A[15] 'शफरी' और 'शफरीयति' शब्दों का प्रयोग मन के वस्तुस्थिति को प्रकट करने के लिए किया गया है जिस प्रकार से शफरी अर्थात् छोटी eNyh vR;Ur ppy gkrh g mIh idkj I eu Hkh vR;Ur ppy gkrk g A[16] 'चामचिटिका' शब्द dk i;ोग भी नवीन शब्द की तरह प्रयुक्त हुआ है।[17] 'मस्जिद' शब्द का प्रयोग म्लेच्छ मंदिर के रूप e Mk- ek/ko u fd;k gA[18] 'हिन्दोल' शब्द का प्रयोग झूल के पर्यायवाची हिन्डोले का तद्भव है।[19] ^{k fdj.k PNfoIek* vFkkr ,DIj fjikV tk fd oreku fpfdRIk i)fr e jkx vUo"k.k dk ,d IkekU; ipfyr rjhdk g] bIdk Hkh y[kd u i;kx fd;k gA[20] 'छुपे रूस्तम' शब्द एक मुहावरे और विशेषण के रूप में हिन्दी साहित्य में प्रचलित है जिसका अर्थ उस व्यक्ति से है जिसके वास्तविक बल और सामर्थ्य को समझ पाना अपेक्षाकृत मुश्किल है।[21] ^cxfjdk' शब्द वलय या चूड़ी d :i e y[kd u i;kx fd;k gA[22] ^v³xfyenk* i;kx oreku e ipfyr fQxj fiV d :i e i;kx fd;k x;k gA[23] ^dfyMkLdki* ;= dk rRIe Lo:i e gh i;kx fd;k x;k gA[24] 'ओलम्पिक' शब्द का प्रयोग वर्तमान समय में होने वाले विfHkUu [kyk d IcI cM vUrjk"Vh; vk;ktu dk Ifpr djrk gA[25] 'बिन्दी' शब्द हिन्दी भाषा से लिया गया है।[26] ^jCcjenk* LVkEiiM d vFk e ipfyr Hkk"kk d vuIkj i;Dr fd;k x;k gA[27] 'डिनोसोर' शब्द का प्रयोग पृथ्वी के लुप्त प्रजाति के प्राचीन विशालdk; thok d :i e i;kx fd;k x;k gA[28] bIh d IkFk 'ग्रेनाइटस्तम्भ' शब्द का प्रयोग करके ग्रेनाइट नामक पत्थर से निर्मित स्तम्भ का उल्लेख डॉ- ek/ko u fd;k g A[29] ^Vkoj?kfVdk;U=* ^DykdVkoj* d oreku d InHk e i;Dr fd;k x;k gA[30] 'केमेरा' 'फ्लेशलाइट* dk i;kx rRIe :i e ikIr gkrk gA[31] ^gMRdk* vFkkr gDdk ik;%

jktLFkku {k= e bIdk i;kx /keiku d fy, fd;k tkrk gA[32] ^Qkfrgk* tk fd eR; ij आत्मशान्ति के लिए गाया जाने वाला गीत है।[33] ^dkinoh* ,d Qfj;I uked xhd noh gA[34] ^>I* ^vikलो' 'अेफ्रोडाइट' 'मेईया' 'डेल्फी' 'अेरिस' आदि शब्द विभिन्न ग्रीकदेवताओं को संबोधित djr gA[35] इसके अतिरिक्त विभिन्न विदेशी देवी देवताओं और संज्ञाओं का प्रयोग भी यथारूप में अपनी कविताओं में किया है। मीटर, फूट, सेन्टीमीटर इत्यादि वर्तमान दशमलव व्यoLFkk d vUrxr प्रचलित लम्बाई के माप हैं एवं दूरदर्शक जिसे बायनाकूलर यंत्र के लिए प्रयोग किया गया है।[36] 'पर्यङ्िका' शब्द का प्रयोग बच्चे के झूले के रूप में किया गया है।[37] iLrr InHk e i;kx fd;k गया शब्द 'ट्रोय–हय' (Trojan Horse½ ,d idkj dk gkfudkjd dEI;Vj ikxke g tk fd fILVe dk {kfr igpkrk gA

व्रणो रूढग्रन्थिः में प्रयुक्त नवीन शब्द जीवनवीमा एवं समुदायवीमा शब्दों का प्रयोग वर्तमान में ipfyr chek 0;oLFkk dk Idr djrk g ftIdk rkRi; fdIh Hkh idkj dh gkfu dh fLFkfr e IdYi&i= d vuIkj {kfrिपूर्ति की राशि प्रदान की जाती है।[38] ^:X.kokfguh* dk rkRi; jkxh dk vLirky rd y tku okyh ,EcyUI d :i e i;Dr fd;k x;k gA[39] bU/kuij.kLFkku vFkkr iVkyii vkj ^xR;ojk/kd* vFkkr xfr vojk/kd :ih mBko ^ifjorh* vFkkr ekM ^fdykehVj* vFkkत् दूरी का परिमाप इन शब्दों को प्रयोग करते हुए यातायात संबंधी सामान्य व्यवहार को व्यक्त fd;k g A[40]

Mk- माधव ने जीवितसंगणके कविता में विभिन्न कम्प्यूटर संबंधी तकनीकी शब्दों का संस्कृत में vuokn djr g, fy[kk g ftIe ekÅI dk eId] LØhu dk dkpiVy] ocIkbM dk tkyiV] फाइल को पंजिका, स्टोर सेक्शन को संग्रहक्षेत्र, विन्डो को वातायन, कर्सर को ध्यानाकर्षक–शरमिथुन, साफ्टवेयर को मृदुप्रणाली, इ–मेल एड्रेस को विद्युत संकेत, स्केनिंग को ifrfyfi] ikxkEI dk lodk;Øe fy[kk x;k g A[41] bId vfrfjDr njHkk"k;U= d uVod e

ugh gku dk ^e;knk{k=kn cfg* fy[kk gA[42] fluekxg ,o foKkiuQyd vFkkr ,MoMVkbteV बोर्ड शब्दों का प्रयोग भी किया है।[43] LFkku d fo"k; e fy[kr g ^fxtfLFkrfijkfeM* vFkkr fxtk d fijkfeM] vtUrk&bykjk* vFkkr vtUrk ,o एलोरा की गुफाएँ जैसे शब्दों का प्रयोग किया gA[44] rktegky;%] bftIr lfUr fijkfeMxkFkk] iukek&dY;k] cchykuL; iekn|ku] phuL; भित्ति, 'एम्पायर स्टेट' भवनं 'पिजा'या उन्नतशिखरं इत्यादि विश्व के सात महान आश्चर्यों को तत्सम :i e fy[kk gA[45]

^ckEcfoLQkट, सन्त्रासवादिभिरातङ्क, शब्दों का प्रयोग वर्तमान के आतंकवाद के परिणामों के :i e fd;k x;k gA[46] पूर्व में प्रयुक्त विभिन्न कम्प्यूटर शब्दों के तकनीकी शब्दों के अतिरिक्त इंटरनेट के लिए अन्तरजाल, डाउनलोड के लिए गृहीतभार, पेस्ट के लिए श्लिष्यति, पेन्टिंगब्रश के fy, fp=rfydk] dlj d fy, d"kd] ok;jl d fy, vufHkK&fo"kjl vkj ,Vhok;jl d fy, विषरस विरोधी शब्दों के साथ–साथ दूरभाष संबंधी तकनीक शब्दों में रांगनंबर के लिए अलिकाङ्क, सायलेन्ट मोड के लिए तूष्णीभावावस्था, मिसकॉल के लिए मोघाह्वानं आदि शबnk dk i;kx[47] dkVDVI vdlid] fjflOMdky dk Lohdr njHkk"k Idr] ,I,e,I d fy, लघुसन्देश, मीडिया के लिए माध्यम, मिसकॉल के लिए मोघदूरभाषाङ्क, आर्गेनाइजर के लिए ?kVukfoU;kl dk i;kx fd;k x;k gA[48]

अवकारिका शब्द का प्रयोग डस्टबीन के संदर्भ मे fd;k x;k gA[49] Vdpkydh dk i;kx Vd uked okgu d pkyd d fy, fd;k x;k gA[50] वायग्रा वटी का प्रयोग पौरुषशक्तिवर्द्धक दवा dh lKk d :i e fd;k x;k gA[51] ^fdekuk* vFkkr tkikuh ifj/kku] ^VkD;kVkojL;* ,d LFkku dk uke] ^fcxcu* ynu dk ?kVhLrEHk] ^jkeuxjf[kLrefUnj* vFkkr ifl) jke dk गिरिजाघर, 'गेइशा' अर्थात् गणिका, 'शेम्पेइनचषक' अर्थात् एक विशेष प्रकार की मदिरा का गिलास, रेलवेस्थानक अर्थात् रेलवेस्टेशन का प्रयोग भी डॉ- ek/ko u rnHko :i e fd;k gA[52] ^fi,rk*

शिल्प, सन्तपिटर, खिस्तरूपिणि, शब्दों का प्रयोग भी प्राप्त होता है। 'अनहलक' अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ उपनिषदों के 'त्वमसि' शब्द का पर्याय है ।[53] 'हत्या' शब्द हिन्दी का जिसे तत्सम :i e gh i;Dr fd;k g A[54] dy.Mj d fy, fnuk³di= dk i;kx gvk gA[55] ^fcg*] ^ekfguhvVVe* vkfn uR; d fofHkUu idkj g bud vfrfjDr ^>Mj jkr rkekj vfHkIkj* x#no johUnukFk Vxkj dk ifl) cxkyh Hkk"kk dk xhr[k.M g] vk"kk< dk ,d fnu] ,d fgUnh dgkuh का शीर्षक है।[56]

^Vk;?kkVd* dk dEI;Vj ok;jI d :i e fy;k x;k gA[57] n?kVuk d fy, vR;fgr शब्द का प्रयोग किया है।[58] डाक संबंधी विशेषण जैसे लिफाफे के लिए पत्रवेष्टन, स्टाम्प के लिए fpfVdk] ,MI d fy, Idr dk i;kx fd;k x;k gA[59] मेहंदी के लिए मदयन्तिका शब्द का i;kx fd;k x;k gA[60] 'कोलगर्ल्स' अर्थात् वेश्या एवं 'कफनं अर्थात् शववस्त्र vkj Qkfrgk vFkkr eR; d volj ij dh tku okyh J)ktfy] VLVV;c vFkkr ij[kuyh dk i;kx gvk gA[61] ग्रंथसाहेब पंजाबी भाषा का शब्द है और मस्जिदनिमाज मस्जिद और नमाज के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द है।[62] xjhch gVkvk Hkkjr dk ,d pfpr ukjk jgk g ftI io i/kkue=h bfUnjk xk/kh ने दिया था, बैंक अकाउंट शब्द का प्रयोग बैंक में खाते के लिए किया गया है।[63]

Mk- हर्षदेव माधव अपनी कविताओं में नवीन शब्दों का प्रयोग निरन्तर करते रहे हैं। 'दुर्गदर्शनम्' कविता में 'रङ्गमहालय' शब्द का प्रयोग किया गया है, tk fd ILdr dfork e ipfyr inkoyh dk Hkkx ugh gA ;g jxegy dk ILdfrdj.k gA bIh dfork e Vd d fy, शतघ्नी शब्द का प्रयोग किया गया है। लघुवातायन भी यहीं पर इसी तरह का शब्द है। 'प्रतीक्षानौकया सह' शीर्षक कविता में पाल के लिये वस्त्रपट, कम्पास के लिये दिशासूचकयन्त्र, पतवार के लिए नौदण्ड आदि इसी प्रकार के शब्द हैं। इसी प्रकार 'वेदना' नामक कविता में चैक के

लिए धनादेश शब्द का डॉ- g"kno ek/ko u i ;kx fd;k g] tk fgUnh e euhvkMj d fy; py iMk gA xty d cU/k e lykfLVdi"i tl in dk Hkh Mk- g"kno ek/ko mi;kx e y yr gA

'प्रकाशोपनिषत्' के 31वें बन्ध में 'यत्रतः' और 'तत्रतः' का प्रयोग किया गया है, जबकि इनके स्थान पर क्रमशः 'यतः' और 'ततः' का प्रयोग किया जा सकता था। इसी प्रकार 'तमिस्त्रायाः' के LFkku ij ^rfeóL;* dk i;kx fd;k x;k gA ^iकाशोपनिषत्' में डॉ- g"kno ek/ko dh oruh xtjkrh l Hkh iHkkfor gb g] tl gfjfrek ;k vifjehrrke A pexknM d fy, ^vftui=kk* शब्द बनाया गया है, जबकि संस्कृत में इसे 'चर्मचर' कहा जाता है।

तथास्तु' में बर्गर एवं पिजा शब्द का प्रयोग किया गया है।[64]

निश्चित रूप से डॉ- g"kno ek/ko dh dfork dh Hkk"kk jpukRedrk dh tfVy pukfr;k l t>r ,d ledkyhu lLdr dfo dh Hkk"kk gA ikjEifjd lLdr dfork e ,d inRr inkoyh dk nkgjko yxrk gA Mk- g"kno ek/ko u viu dk0; e vud LFkkuk ij ikphu lLdr dk0; l vk; g, ink dk i;kx u dj d u; ink] egkojk vkj vfHk0;fDr;k dk i;kx fd;k gA

fu"d"kr% ^^g"kno dh Hkk"kk jpukRedrk dh tfVy pukfr;k l t>r ,d ledkyhu dfo dh Hkk"kk gA g"kno u viu dk0; e vud= ikphu lLdr dk0; e vk; g, ink dk i;kx u dj d u; ink] egkojk vkj vfHk0;fDr;k dk l/kku fd;k gA**[65]

bl idkj Mk- g"kno ek/ko dh dfork ledkyhu lLdr Hkk"kk dh u;h i;kx/kehh dfork g tk thou d l?k"k o HkVdko d e/; lQyrk d u; vFk [kktrh gA ijEijkxr cU/kuk l मुक्त वह वैश्विकता के उस धरातल पर पहुँचना चाहती है जहाँ देश, जाति, धर्म—सम्प्रदाय की कोई सीमा न हो, जहाँ सृष्टि का रम्य प्रकाश व वरेण्य तेज हो। संवेदनशील कवि की यही कविता यात्रा ml ledkyhu gh ugh] lkodkfyd Hkh cukrh gA

uohu fcEc fo/kku &

vxth Hkk"kk e ^bet* vkj ^beftTe* d uke l ipfyr lKkvk dk fgUnh e ^fcEc* vkj 'बिम्बवाद' कहा गया है। एकबिम्बीय काव्य पाश्चात्य विधा है जिसका प्रयोग संस्कृत साहित्य में किया tku yxk gA ik- jk/kkoYyHk f=ikBh dk dFku g fd ^vokphu lLdr lkfgR; e ,dfcEch; काव्य की प्रतिष्ठा में श्री हर्षदेव माधव का ही विशिष्ट योगदान है।''[66] viu jpuk lLkj e नव–नव रूपों, प्रयोगों और विदेशी तथा देशज काव्यविधाओं को प्रस्थापित करके मानो उन्होंने lLdr Hkk"kk vkj lkfgR; dk ijc e tkiku l ydj nf{k.k dkरिया होते हुए, पश्चिम में इंग्लैंड और अमेरिका तक पूरे विश्व के साथ जोड़ दिया है।

Mk- g"kno ek/ko dk ,dfcEch; dk0; fo/kk e egRoi.k ;kxnku jgk gA vdy ^nhi* dk irhd cukdj dfo u ipkl l Hkh vf/kd fcEckRed dk0; iLrr fd; gA[67] eR; rFkk Hkूत–प्रेतों को बिम्बत्व प्रदान करके दोनों के ऊपर शताधिक कविताएँ लिखकर 'मृत्युशतकम्' और 'भूत–प्रेतशतकम्' संग्रहों का प्रकाशन किया है। मृत्युशतकम् में

eR;k !

&&&&&&&&

कस्माद् युद्धकौशल्यं न दर्शितमिति सुप्रसिद्धमेव।[68]

इसी प्रकार मृत्युशतकम् में y?k dYiukvk dh iLrfr dh xbl g &

QyxHk

dhVdk HkRok

eke [kknfr eR;kA[69]

blh idkj

g ik.kir³xkk !

xPNUr

l|xU/kL; i|"i.k lg lEcU/kk u"Vk·fLrA[70]

,d fcEce;h dforkvk e ^rV* dk dfo u vud nf"Vdk.kk l iLrr fd;k gA dkfynkl u tl ^fodkjgrk lfr fofØ;Ur ;"kk u prkfl r ,o /khjk*[71] dgdj /khj dh ifjHkk"kk nh g] Bhd ol gh ek/ko th u rV dh ifjHkk"kk iLrr dh g &

tyL;

प्रतिक्षणं परिवर्तनशीलं रूपं प्रेक्ष्य

u dEir

vr ,o rVLFkk·fLr rV%A[72]

bl idkj vud fo"k;k dk uohu fcEck d lkFk iLrr dj lLdr dfork dk u;k स्वरूप प्रदान किया है। 'राशिचक्रस्य भविष्यदर्शनम्' कविता में बारह राशियों के माध्यम से कवि ने जीवन के अवरोधों व कुटिलताओं के मध्य अभिशप्त जीवन जीते मनुष्य और जीवन की सार्थकता rFkk Hkाग्य की बलवत्ता पर भी बल दिया है। कुम्भराशि पर कवि लिखते हैं –

d|EHk%@di fueTtfr@fdUr|@

ty r| d|EHkferelo ikl;r bfr@

lR;elo@ok tUeif=dk;k% lkjk orrA[73]

^tkiku ;k=k Lrcd* e tkiku dk lkUn;] pjh Qyk dh rjg tkikuh dU;kvk dk gkL; gरिणों की गति को मात करती उनकी चाल और क्वेटो रेल्वे स्टेशन से लौटते समय का कवि ने cgr gh lUnj fcEc iLrr fd;k g &

कादम्बर्याः शुकशिशुसदृशं मनः/प्रतिमाशून्यंय बौद्धमन्दिरं भूत्वा

fLFkrefLr ân;@D;kVk jYo&LFkkud@le;kn fo;|äeA[74]

o.kk :<xfUFk* d ^vyduUnk* [k.M e Hkh lenk] miu=e] je.k] vk"B] fldrk] ik"kk.k] सन्त्रासवाल, पादौ, वातायनम्, हस्तः, सागरम्, ईश्वरः आदि कवितायें लघुकल्पनकाव्यं की एकबिम्बमयी dfork, gA

& vkl fldrkl

du len.k

LokRegR;k drkA[75]

bl jr e fdl len u vkRegR;k dh gA

& fldrkl

गर्भस्थशिशुवत् समुद्र श्वसिति।[76]

रेत में गर्भस्थ शिशु की तरह समुद्र श्वास लेता है।

& c)LFk fHk{kkik=

fuefT t re

v.kckEc nX/k uxjeA[77]

बुद्ध के भिक्षापात्र अर्थात् जापान देश में अणुबम से दग्ध नगर डूब गया।

& b**श्वरस्य सहस्त्रहस्ता सन्ति/सहस्त्रनेत्राणि/**

सन्ति मुखानि शतानि/किंतु कर्णस्तु नास्ति।[78]

ईश्वर के हजारों हाथ हैं, हजारों आँखें हैं, सैकड़ों मुख हैं किन्तु कान नहीं हैं।

& **ईश्वरोऽस्त्यमियुक्तोऽस्ति/तैनेव कृतं/काममोहितं क्रौंचमैथुनं**

दर्शितं च/निषादाय।[79]

ईश्oj ,d vijk/kh ;k vfHk;Dr g ftle fu"kkn dk dkeekfgr Økp fn[kk;k FkkA

bl idkj ,dfcEch; dk0;fo/kk dk lLdr e i;kx dj dfo g"kno ek/ko u ikphure lLdr dh /kkjk dk ,d uohu ekx inku fd;k gA

i rhdkRedrk &

xkfoUn >k fy[kr g fd ^^irhd d rhj pykul e dfo ekuk vij vtu gA lQy irhd i;kx fu"lng bu dforkvk dk vlk/kkj.k mRd"k fcUn ij igpkrk gA**[80]

मनुष्य का अस्तित्व पीड़ा का पर्याय व उसका पंचेन्द्रिय बोध संवेदना शून्य हो गया है। इस fLFkfr dk dfo u irhdk d ek/;e l 0;Dr fd;k g &

o .kkgr euk@dhydc) oRld HkRok@u LiUnr@

बधिरा त्वक्चीत्कारशून्या जाता/निर्वीयो जातः उत्साहः/

:<xfUFkol.kk HkofUuely%@fdUr@rL; fpguef³dr Hkfo";fr

तत्रैव/मनसा/तदा/दशमुखो व्रणः/हसिष्यति कुटिलताया।[81]

शाटी एक छोटी सी कविता मे कम, नपे–तुले शब्दों में धूल धूसरित साड़ी के माध्यम से ekrRo dh xfjek dk idV dj viuh vnHkr HkkokfHk0;tdrk dk mnkgj.k iLrr fd;k g &

शिशुचरणधूलिधूसरां शाटीं विलोक्य

रजोभिरस्पृष्टा स्वचछा शाटी

jkfnfrA[82]

इसी प्रकार 'अवकरिका', तटः, शकr] l;kri%] vkfoyi.kkyh] dkp:ih] vkfn fo"k;k dk vud irhdk d ek/;e l dfo u o.ku fd;k g &

vodfjdk ou/;k@ek eU;Lo]

vlkofi ilr@thork ^ckEckljku*A[83]

dpj d fMCck l fudyr ^ckEc* tgk oreku e vkrdokn] Hk; o l=kl dh fLFkfr;k को दर्शाते हैं, वहाँ कवि अवकरिका में से 'चन्द्रशकल' निकाल लेता है –

प्राप्तोऽयं चन्द्रशकलो

fjäk dRok

rfeL=k·odfjdkeA[84]

viuh Nk;k dk cyxkMh vkj ijk dk mle tr cy dgdj Mk- ek/ko u ng vkj vopru d lEcU/kk dk u; :i e mtkxj fd;k gA fQj bUgh ijk dk ?kMh d dkVk l miek ndj ng vkj dky d lEcU/k dk bfxr djr gA gkFk dk ukxQuh vkj ng dk /kjrh l mifer djd fQj eu"; d 0;fDrRo dk ,d vyx fp= j[kr g vkj vUr e gkFk og vfXu gk tkr g] ftl e dfo vkgfr nuk pkgrk g &

''थुवरसदृशौ हस्तौ वर्तेते/मम शरीरस्य/

m"kjHkfo@v;i gLrk·LR;fXu%@gLrk; LokgkA**[85]

शैली –

0;X; i/kkurk &

fdlh 0;fDr dk ldr djd cjk&Hkyk dguk] fdUr iR;{k e dN u dguk fQj Hkh dg x; dk vFk Li"V gk tkuk 0;X; dgykrk g। सीधे शब्दों में कहें तो वही अर्थ निकालते हुए बात को घुमा फिरा कर कहना व्यंग्य है। किसी काव्य में व्यंग्य की प्रधानता को कई काव्यशास्त्रियों ने dk0; dk i/kku y{k.k ekuk gA

Mk- g"kno ek/ko dh y[kuh e 0;X; le;≤ ij idV gkrk g vkj viuh mifLFkfr nt djkdj d iu% vkxkeh ;k=k dh vkj ifLFkr gk tkrk gA Mk- ek/ko u स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः की प्रथम कविता भयम में लिखा है

^^ik#"k@iyk;r@Dyhcd¥p|d ifj/kk;@

शतध्नीमिः रक्ष्यते नगरमित्तिः/न वीरताया अक्षतयोनिः/

gVV"k| foØh;Ur@^ok;xk*@¼ik#"kikfirdkjdk½xkfydk¾@

किन्तु/मशकानां कुत्र वर्तते पौरुषम *[86]

ble o ik#"k ij 0;X; djr g, fy[kr g fd ik#"k dk i#"kRo Hkh fDycRo d ifj/kku dk igudj iyk;u djrk g ,lh fLFkfr e ohjrk Hkh lfnX/k gk tkrh g vkj i#"kRo vU; cyo/ku nokvk tl fo;kxk vkfn ij vkfJr gk tkrk gA ;g i#"kRo ij lh/kk lh/kk 0;X; gA

^^f[kLrefUnj

flDFkofr¾ & oir

iki ân;A**[87]

इस हाइकू के अनुसार कलयुग अर्थात् वर्तमान समय में मानवीय व्यवहार ईश्वर एवं स्वयं के ifr fpf=r djr g, okLrfodrk dk lk{kkRdkj fy[kk x;k gA ik;% efUnj e J)k d lkFk व्यक्ति जाता है। दीपक या मोमबत्ती जलाकर के ईश्वर के प्रति अपना समर्पण रखते हुए पुण्य के अर्जन की अभिलाषा करता है, किन्तु उसका मन जिसने शुभ संकल्पों से युक्त होना चाहिए वह पाप l Hkjk gvk gA ;g doy <kx g ftld Åij Mk- ek/ko }kjk jfpr ;g gkbd 0;X; i/kkurk dk दर्शाता है।

foØ;% uked dforkk e Mk- ek/ko u fy[kk g &

^^v= yH;r foouk gVV@-----@

;fn Hkor #fprk L;krA**[88]

दुकानदार, शासकीय सेवक, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी आदि के बार e fy[kr g, ekuo dh rFkkdfFkr ekuork ij ;g 0;X; [kjk [kjk gA

^Lolu%@l tfr@i{enil.k@ifneU;k :ie@

सृजति मनःशिलायां/यक्षकान्ताम्/सृजति विषादजडे

fofoä fDy;kiiV'k;k% ie@fdUr ;nk tkxfel rnk&

okLroe;% pfx t[kku@y.Bfr lolefi@------@

iujfi ty iijrk xUreA*[89]

;g 0;X; ekuo d ckj ckj Bkdj [kku oky yfdu fQj Hkh ugh l/kju oky LoHkko dk दर्शाता है। शब्दः[90] dfork e Mk- माधव ने शब्द के कई विशेषण एवं व्याख्याएँ लिखी हैं जब वे शब्द को मुखरूपी बाम्बी में बैठा हुए केकड़ा या pkfj tkr i"; dk fo"kfcUn ;k jLlh d fcuk ?kkMk अथवा निरंकुश गज कहते हैं तो यह मुख्य रूप से शब्द के प्रति नहीं अपितु शब्द बोलने वाले की ekufld fLFkfr dk 0;X; djr g, dgr gA

fdlh o) dh fLFkfr dk foLrr fp=.k djr g, Mk- ek/ko fy[kr g &

^^yrk[kkfnrxUFkk HkkRok@------@

vFk p fHkfRrfolxfyrkA**[91]

bl dfork e Mk- माधव ने वृद्ध की करुणामय स्थिति दर्शाते हुए व्यंग्य किया है कि जो व्यक्ति अपने माता पिता या सास ससुर या परिवार के अन्य किसी बड़े को दुर्दशा में पहुँचा रहा है mldk Hkh o)dky vkने वाला है अतः उसने वृद्धों को परेशान करने की अपेक्षा उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने का प्रयास करना चाहिए ताकि कुछ समय के अन्तराल के पश्चात् जब o Lo; Hkh o) gkx rc ;gh lkj mik; ;gh lkj lk/ku vkj llk/ku mld fy, mi;kxh gkxA

do;ko;e[92] dforк e Mk- ek/ko u dfo d ckj e cgr dN fy[kk gA ,d ckj i<u पर यह कविता कवि के उन्नत व्यक्तित्व को दर्शाती है किन्तु ध्यान से पढ़ने पर यह कविता उस dfo lenk; d fy, 0;X; g tk fd Lo; dh lkeF; dk Hkydj pkVdkj dh rjg lRrk vkj सत्ताधीशों के आगे पीछे ?ke jgk gA

bnefLr ik=e

ry ukfLr

g x#o;! fd f{kifl rfLeu \[93]

;g 0;X; lgt gh 0;X; dh vuHkfr djku okyk gA ,l mnkgj.k gekj vkl ikl e कोई न कोई अवश्य मिल जाते हैं, इसलिए इस प्रकार के उदाहरण को व्यंग्य में सम्मिलित करना lgt gh lHko gk tkrk gA blh idkj l Mk- ek/ko u fnYyh d urkvk ij dVk{k djr g, fy[kk g &

'मलोत्सर्गक्रियासदृशानि

fnYgh & ux;kW iopukfu

ef; ?k.kkeRikn;fUrA*[94]

सत्य भी है कि जहाँ कथनी और करनी में भेद हो और ऐसा व्यक्ति जब आदर्श dh ckr dj rk og ckr gLh dk ik= cu tkrh g u doy gLh cfYd yxkrkj ,Lh ?kVukvk dh iujkofRr dk gkuk ?k.kk dk dkj.k Hkh cu tkrk gA vr% ,l 0;fDrRo ij 0;X; djuk dkb cjh ckr ugh gA

,d ckyd d e[k l tc MkDVj ek/ko fy[kr g &

^vgefi fLgk Hkfo";kfe --------

fdUr ekrk i¥tj eg; u jkpr

Ro eka i¥tj {kslL;fl fde *[95]

यह प्रश्न किसी बालक के मन में सहज ही उत्पन्न हो जाता है क्योंकि शिशु भगवान का :i gkr gA o tlk n[kr vkj le>r g olk cky nr gA vr% ckyd d e[k l viuh ek d प्रति पिंजरे में फेंकने के बारे में प्रश्न करना वर्तमान शिक्षण पद्धति एवं शिशुओं से बड़ी सफलता की आशा करने वाले माता–पिता पर यह एक करारा व्यंग्य है।

हर्षदेव माधव ने अपनी कविता 'संक्षिप्त संदेश सेवा' में शिक्षण प्रणाली पर व्यंग्य करते ह, dgr g &

''हे कालिदास !/पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं/शिरीषपुण्यं/

न पुनः पतत्त्रिणः, किन्तु/अत्र/शिरीषकोमलपुष्पेषु/

fufgrk@Kku&lapuk&xzUFkio.rk%A**[96]

vkt dh fLFkfr l 0;fFkr dfo eu vkt dh vi{kk jko.k jkT; dk J"B ekurk gA jko.kjkt e lef) Fkh] blls rjg xjhch ugh FkhA jko.k d fLolcd e [kkr Hkh ugh Fk] jko.k u ,d gh ckj lhrk dk gj.k fd;k Fkk] jko.k d jkT; e jko.k tUe&Hkfe fookn Hkh ugh Fkk तथा विदेश यात्रा पर रावण के साथ मंदोदरियाँ भी नहीं जाती थीं और सत्य का पक्षपाती एक foHkीषण भी था। मन्दोदर्यः शब्द बहुवचन में प्रयोग कर कवि ने वर्तमान नेताओं पर करारा व्यंग्य fd;k g &

^^yMdk;ka lhrk;k% dfoyedokjs g;igj.ka tkreA@

--------@vklhr~A**[97]

fp=kRedrk &

Mk- हर्षदेव माधव ने व्रणो रूढग्रन्थिः में 'मानचित्र पूरण – प्रश्नः' कविrk d vUrxr Hkkjr d मानचित्र के आधार पर देश में व्याप्त समस्याओं को सुन्दर ढंग से चित्रित किया है–

^^lkEinkf;d% lnHkko@-------@
0;oLFkkrU=e A[98]

Mk- हर्षदेव माधव ने संस्कृत की अनेक विधाओं में अपनी रचनाओं का प्रकाशन किया है, bue tkikuh Nn gkbd o rkUdk] ekukbet] y?kdYiu dfork;] VkbikxkQh] gkL; 0;X; jpuk;a vkj Mk;jh fy[kus d ckn vc ckydk d fy, ^fiiihfydk foi.kh xPNfr* dh jpuk dh gA bl ckyxhr lxg e dy 18 xhr g vkj iR;d xhr e jxhu fp= rFkk vUr e ckydk dk xhr l प्राप्त होने वाली शिक्षा दी है। ''गीत जहाँ बालकों का मनोरंजन करने में सफल हैं वहाँ रंगीन चित्र n[kdj ckyd dk xhr d ifr :fp Hkh idV gkrh g vkj og lgtrk o ljyrk l mls le> भी लेता है और अन्त में शिक्षाप्रद टिप्पणी बालक को जीवन के लिए सही दिशा निर्देश देकर उनका मार्ग भी प्रशस्त करती है।''[99]

bl xhr lxg dk iFke xhr ^iHk"Vk iÙkfydk* gA ble cPpk d ey e tku] >yk >yu] vkblØhe [kku] xCckj o feVVh d f[kyku [kjhnu vkfn dk o.ku fd;k x;k g &

lo'ckydk% Øh.kUR;o@------@
mPp% mDRok ykdkuA

'वनदेव्या वरदानम्' गीत के माध्यम से कवि ने वन व पेड़–पौधों की रक्षा का संदेश दिया है। पेड़–पौधों का महत्व बताते हुए कवि कहते हैं कि वन हमें पुष्प, फल व शुद्ध वातावरण देते हैं अतः पेड़ों को नहीं काटना चाहिए। वनदेवी का यह संदेश बालकk dk o{kkjki.k dh ij.kk nrk g] o{kk l eu";k dk vkthfodk feyrh g vkj /kjrh Hkh ljE;k o Qyorh gkrh g &

jki; lo/k; o{kku Ro@-----@
o'{kikyu dRokA

‘आहतः भास्करशशकः’ बालगीत में शैतान बालक के रूप में ‘मीत’ नामक वानर का च;u किया है जो वट की शाखाओं पर क्रीडा करते हुए ‘भास्कर’ नामक खरगोश पर गिर जाता है, इससे उसे चोट लगती है। इस पर वन के सभी पशु–पक्षी एकत्रित हो जाते हैं। कोयल फोन करके 108 ,Ecyl cyk yrh g vkj ^cyoUr* uked okuj ^HkkLdj* dk LVpj ij fpfdRld d ikl y tkrk g &

uo dq:"o dnkfi ØhMk@-----@

;u HkoPp ohMkA

NUn &

eqDr NUn &

eDr NUn dh LoPNn iofÙk dk ifjgkl djr g, bl jcM Nn] dpvk] dxk: Nn bR;kfn uke fn; x; gA eDr NUn rk og g tk NUn dh Hkfe e jgdj Hkh eDr gA eDr NUn के लिए कहा गया है कि यह पश्चिमी बीज का पूर्वी अंकुर है। इस कथन में बहुत कुछ सत्य है, क्योंकि पश्चिमी मुक्त छन्द की कविताओं ने आधुनिक भारतीय कविता के रूप विधान को अवश्य iHkkfor fd;k gA Mk- g"kno ek/ko dh jpukvk e eDr NUn 0;kid :i l n[ku dk feyrk gA

g thouohek ifrfuf/k !@-----@

ro lehiA[100]

mDr eDr NUn e Mk- g"kno ek/ko u oreku le; e 0;kIr lkekftd ,o vU; leL;kvk dk ^^g thouohek&ifrfu/k** dfork e iLrr fd;k gA

migkj l iV@--------@

ân;efLr] ukfLr okA[101]

fdl rjg l vkrdokfn;k }kjk ce dk i;kx fd;k tkrk g vkj cxukg 0;fDr;k dk अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है, कवि अन्त में कहता है कि क्या बम निर्माताओं के शरीर में हृदय Hkh g ;k ugh \

;fn Ro t j;k i¥pRo xr%@xrk@----@
i|ujfi iFoh xUr| i³Drk fr"BA[102]

‘मृत्योः सेवाकेन्द्रम’ नामक कविता में मृत्यु के पश्चात् अपने पाप–पुण्य कर्मों का लेखाजोखा iLrr djd Lox d ekx dk jkLrk crku dk i;kl fd;k g] fdUr vkt d bl ;x e 0;fDr;k d i.;k dh vi{kk iki vf/kd ek=k e gk jg g] bl h dkj.k vUr e dfo dgr g fd rEgkj iki&i.; dh lpuk iklr gk xb gA iu% iFoh ij tku d fy, ifDr e [kM jgA

Ro d roku@-------@
Rof;-----------AA[103]

^fojliuL; eR;%* dfork dk eDr NUn e Mk- g"kno ek/ko u iLrr fd;k g ftle vkt d le; dh jktuhfr dk crku dk i;kl fd;k gA

^^vufHkKk·fLr erlLdrfyfi%A@----@
doyeig lfUrA**[104]

Mk- माधव के कहने का उद्देश्य यह है कि जिस प्रकार से एक कैमरा केवल दिखाए जाने oky Lo:i dk n[k ldrk g mldk Hkko ugh le> ldrk g mldk ey vFk ugh le> सकता है वैसे ही मृत संस्कृति के बारे में उसके अवशेषों से केवल अनुमान लगाया जा सकता है।

विदेशी छन्द –

oreku le; d lLdr Hkk"kk d loxkgh jpukdkj e Mk- g"kno ek/ko dk uke ie[krk l fy;k tkrk gA Hkkjrh; NUn lEifRr cgत विशाल है, केवल छन्द को ही लेकर छन्दोमंजरी,

NUnkfofpr vkfn iLrd fy[kh tk pdh g] ftle NUn dh jpuk] x.k] y{k.k vkfn dk foLrr विवेचन प्राप्त होता है। यह कहने में भी कोई संशय नहीं है कि विश्व में किसी भाषा में जितने भी NUn g mue lokf/kd l[;k lLdr Hkk"kk d NUnk dh gA ikphudkyhu vu"Vi] f="Vi vkj xk;=h NUnk d vfrfjDr oreku le; e ipfyr eDrd vkj gkbd rd lHkh idkj d NUn Hkkjrh; fo}kuk }kjk i;kx e fy; x; gA ;|fi oreku le; e NUn d cU/kuk dh vi{kk eDrd dfork, fy[kuk vf/kd ipyu e gk pdk g rFkkfi NUnk dk egRo mudh x;rk d dkj.k mud foU;kl d dkj.k v{k..k cuk jgxkA

विदेशी छन्द के संबंध में डॉ- माधव ने स्वतंत्र विदेशी छन्दों का आनयन करने की अपेक्षा विदेशी काव्यों का संस्कृत भाषा में अनुवाद किया है जैसा कि स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः ग्रन्थ में tkikuh Hkk"kk d gkbd NUnk dk vuokn fd;k gA ;|fi ;g vuokn i.kr;k gkbd ugh dgk जा सकता है इसे हाइकूवत कहना अधिक उचित होगा। 17 हाइकुओं का संग्रह ''जापानदेशीया gkbddkO;kuoknk** uked dfork e Mk- ek/ko fy[kr g &

''शिशिरसन्ध्या/----@

fp=i rxL;**[105]

इस प्रसिद्ध जापान के कवि एत्सुजिन का शिशिर संध्या, वाबुसूइ का सूर्य को उपालम्भ, dhU;k dk ilUu idfr] nkUlb dk fdlku] tkgkd dk lehj] X;kIku dk pjho{k] pk"k dk pUnek dh ty e ijNkb] चीगोत्सु–नी का शलभ पक्षी पर, चीयो–नी का चन्द्रमा और मछली के तुलनात्मक, शो–हा का तितली, राइझान के कृषक युवती के गीत, किकाकु का संदेशवाहक, मीची झाने का फाल्गुन, क्रोतोमीची का चन्द्रमा, बाशो का शिशिर सन्ध्या एवं शीकी का यात्रा में तितली के lkgp; dk mYy[k ikIr gkrk gA

लघु काव्य शीर्षक से स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर, अभिनेत्री मीराकुमारी, प्रसिद्ध शहनाईवादक बिस्मिल्लाह खान, चलचित्र निर्देशक सत्यजीत रॉय एवं शिवरंजनी राग के प्रति जो लघु व्याख्या fy[kh g og xkxj e Hkj g, lkxj dh rjg foLrr foopu rk djrh g lkFk gh bu lHkh e NUnk dk fdlh idkj dk cU/ku iklr ugh gkrk gA vr% bUg lLdr Hkk"kk d NUnk l brj NUn कहने में कोई संशय नहीं है।[106]

jkbuj ekfj;k jhYd uked dfo d i|[k.M dk lLdr Hkk"kk e ifjorfu djr g, Mk- ek/ko fy[kr g &

vfi@-----@ukfLrA[107]

यह छन्द भी संस्कृत का सामान्य छन्द नहीं है। इसी प्रकार से बोदलेर नामक फ्रांसदेशीय कवि के नगर दर्शन को भी डॉ- ek/ko u lLdr e mlh idkj l vufnr fd;k g tl k cknyj कवि ने लिखा है यहाँ पर भी भारतीय शास्त्रीय छन्दों की प्राप्ति नही gkrh gA

li.k dk0;lxg e Mk- ek/ko u c/ku oky NUnk dk i;kx ugh fd;k gA dN LFkkuk ij ifrdk0;] xhfrdk0;] gkbd ,o xty xhfrdk dk mYy[k feyrk g vU;= lHkh LFkkuk ij eDrd NUn gh fcuk fdlh ifrc/k d i;kx fd; x; gA

ifrdfork &

vfHkjkt jktUn feJ d ;r i;kfpre uked ifl) xhfrdk0; d ifrdk0; Ro;k e Mk- ek/ko fy[kr g &

^^;Uu lf¥pr e;k rn 0;;hdr Ro;kA@----@

enxg p thfor lodhdr Ro;kAA**[108]

;g ifrdk0; fgUnh Hkk"kk d lkekU; gkL; dfo lEeyuk dh Hkk"kk dh rjg gA bl idkj dh dfork lLdr lkfgR; e ik;% miy/k ugh gkrh gA

bl h idkj ^ikf"krHkk;L; xhre* uked dfork Hkh vfHkjkt jktUn feJ dh dfork ^^u fg txnfr#fpj Ro;k fouk** l yh xb g &

vf; txnfr#fpj Ro;k fouk@------

fLFkjefLr u nO;k Ro;k foukA[109]

vy dkj &

uru mieku &

fdl h fo"k; oLr dk vf/kd Li"V dju d fy, mnkgj.kk dk vkJ; fy;k tkrk g ,o ;g mnkgj.k tc vfrl kekU; gkdj viuh rY;rk d dkj.k miek vFk dk xg.k djr gA ;g mnkgj.k gh mieku dg tkr gA u, mieku l rkRi; g ,l mieku ftudk mi;kx io e ik;% ugh fd;k x;k g ,o loFkk u, lnHk e rY;rk idV dh xb gA Mk- g"kno ek/ko bl विषय में स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः ग्रन्थ में नूतन उपमान का निदर्शन इस प्रकार कराते हैं। वे लिखते g &

^^cgHkfedk% ikl knk%@fuirfUr lgl o@

ØhMki=k.kk@egky;k HkRokA**[110]

bl h idkj

^^gVV"k foØh;Ur@^ok;xk* ¼ik#"kikfIrdkfjdk½ xkfydk%

किन्तु/मशकानां कुत्र वर्तते पौरुषम्।''[111]

बहुमंजिला भवनों का ताश के पत्तों की तरह ढेर होना हिन्दी साहित्य का प्रचलित उपमान g] fdUr lLdr lkfgR; e ;g vyH;ik;% gA bl h idkj l i#"kRo dh ryuk ePNjk l djuk ik;% miyC/k ugh gA vFkkr ;g nkuk mieku fgUnh Hkk"kk l fy; x; gA

^^tyi;f³ddk;k@oMokuy Lokif;Rok

lenk·fi thofr@eu|";or!**[112]

iLrr i| [k.M e Mk- माधव का बडवानल (समुद्राग्नि) का शयनस्थान जलपर्यंकिका अर्थात् ty d iyx ij gkuk dgk x;k gA ;g mieku Hkh lLdr lkfgR; e ik;% iklr ugh gkrk g vr% bl lLdr {k= e uohu mieku dgk tk ldrk gA

''पत्नीं/धूपशलाकामिव दृष्ट्वा/अहं/

Hkokeh@noRoghu% ik"kk.k[k.M%!**[113]

bl mnkgj.k e Mk- माधव के कथन का आशय परिवार में परिश्रम से श्रांत पत्नी के विषय में लिखा गया है कि श्रांत पत्नी को धूपशलाका अर्थात सुगंधित अगरबत्ती की तरह अपने सामने [kMk gvk n[kdj e Lo; dk noRo l ghu ik"kk.k[k.M dh rjg vuHko djrk g vFkkr mld ifjJe dk mldk ifrQy ugh n ldu okyh fLFkfr e Lo; dk vuHko djrk gA ml L=h d ifjJe vkj Lo; dh fddr0;e<rk dk fu%ldkp uru mieku dgk tk ldrk gA

निराशा के भाव को एक वाक्य में समेटते हुए डॉ- ek/ko fy[kr g &

^^iToyfr rfel lfr@e;k
fuokfirk·fLr nhi%A**[114]

इसका आशय है कि एक निराश व्यक्ति जिसका प्रत्येक कार्य असफल हो रहा है, उसके किए गए कार्य हमेशा विपरीत फल प्रदान कर रहे हैं। वह व्यक्ति अन्दर से इतना निराश हो चुका है fd Qy v/kj e जल रहा एकमात्र प्रकाश का साधन दीप भी उसने बुझा दिया है। यह अत्यन्त नवीन उपमान है किसी निराश व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रदर्शित करने के लिए जिससे कि यह स्पष्ट होता है कि वह शारीरिक रूप से तो उपस्थित है किन्तु मानसिक रूप से उसकी उपस्थिति vU;= dgh gA

vfHkjkt jktUn feJ d ;r i;kfpre uked ifl) xhfrdk0; d ifrdk0; Ro;k e Mk- ek/ko fy[kr g

^^;Uu lf¥pr e;k rn 0; ;hd r Ro;kA@---@

enxg p thfor lodhd r Ro;kAA**[115]

;g ifrdk0; fgUnh Hkk"kk d lkekU; gkL; dfo lEeyuk dh Hkk"kk dh rjg gA bl idkj dh dfork lLdr lkfgR; e ik;% miyC/k ugh gkrh gA ifr iRuh e iRuh d }kjk ifr d LokfeRo oky l lk/kuk ij vf/kdkj tekuk ,o ifr ij rFkkdfFkr :i l vR;kpkj djuk ,lh dfork, fgUnh Hkk"kk d dfo lEeyuk e gh gkrh g Lrjh; lkfgR; e budk vHkko g] fdUr Mk- ek/ko u dk0;{k= e viuh lo0;kidrk dk fl) djr g, bl idkj d uohu mnkgj.k ,o iRuh d ifr i#"k d rFkk iRuhihfMr i#"k d }kjk Lo; d fy[k x; mieku lLdr lkfgR; e loFkk uru mieku d :i e Lohdkj fd; tk,xA

''भारस्तु सम एव/आवयोः पृष्ठदेशे/जनास्तुभ्यं/

^xnHk* bR;fe/kku nnfr@eg;@g"kno ek/ko bfrA**[116]

bl idkj l fy[kr g, Mk ek/ko u Lo; dh ryuk x/k l dh gA ik;% fdlh nlj 0;fDr dk x/k dh lKk nuk cMk vklku gkrk g ,o cf) d i;kZr mi;kx ugh dju oky 0;fDr dk x/k dh lKk nh tkrh gA /kkch dk x/kk Hkh ,d ifl) mieku gA ;g ftl fn;k tkrk g og lHkh txg l nRdkjk gvk 0;fDr gkrk gA fdUr ;gk ij Mk- ek/ko u x/k dk Hkh u; lnHk e vkj Lo; dk Hkh mll ryuk djd fy[kk g fd ge nkuk dh ihB ij Hkkj cjkcj g] rEgkjh ihB ij tk Hkkj j[kk g og rEgkj fy; mi;kxh ugh g] fdlh vU; d fy; g vkj वह भार वजन के रूप में है, जबकि मेरी पीठ पर जो भार रखा हुआ है वह शारीरिक न होकर ekufld ,o vkfFkd gA db ckj ;g Hkkj Hkh ej fy; vui;kxh gk tkrk g] yfdu fQj Hkh

fdlh vkj d fy, e> bl Hkkj dk <kuk gh gkrk gA bl idkj ek/ko u x/k ,o Lo; d fy, uohu mieku dk i;kx fd;k gA

व्रणो रूढग्रन्थिः में 'शाटी' नामक कविता में साड़ी के विषय में लिखते हुए डॉ- ek/ko u ,d uohu mieku dk ltu fd;k gA tlk fd o fy[kr g &

''यदा/शाटी किंवदन्ती भविष्यति/

rnk@ lLdfrjfi odk.Bokfluh Hkfo";frA**[117]

भारतीय संस्कृति का विधायी लक्षण साड़ी को माना गया है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी ,o vVd l ydj dVd rd Hkkरत में सर्वत्र महिलाओं का शालीन परिधान साड़ी माना गया है। lkMh dk iguu d db rjhd g u doy iR;d ikUr vfir ikUr d vUrxr vku oky iR;d {k= e Hkh lkMh iguu d vyx&vyx rjhd ipfyr gA bl idkj l lkMh Hkkjrh; lLdfr dh vudrk e ,drा को भी दर्शाती है। लेखक का आशय यहाँ इस प्रकार से है कि जिस प्रकार l rth l lkMh dk ipyu de gkrk tk jgk g mlh rth l lLdfr dk Hkh âkl gkrk tk jgk है अतः वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि जब साड़ी का प्रयोग पूरी तरह से समाप्त होकर साड़ी एक fdonfr d :i e gh thfor jgxh rc gekjh fpjuohuk lukruk lLdfr Hkh odBokfluh gk जाएगी अर्थात् मानवों के द्वारा उसका पालन नहीं किया जाएगा उसकी स्मृतिशेष ही मानसपटल पर vfdr gkdj jg tk,xhA bl idkj l lkMh vkj lLdfr d vkilh lc/k e uohu mieku ikIr gkrk gA

Mk- ek/ko u ^^;"ekdeuHkr lR;e* dfork e uohu mieku dk i;kx fd;k gA ufe"kkj.; tk fd fgUn /ke dh J)k dk ,d icy dUn g mld ckj e fy[kr g &

^^J)ke;s ufe"kkj.;s

vg iHk"V%A**[118]

ufe"kkj.; tgk ij Hkkjrh; tuekul e lcl xgjh iB cuk pdk ijk.k JhenHkkxor लिखा गया है जहाँ पर शुकदेव मुनि ने पहली बार राजा परीक्षित को सुनाया है उस पवित्र स्थान ij tlk fd ekU;rk g fd bl ijk.k dk Jo.k djuk ek{knk;d g ,o jktk ijhf{kr dk bldh ikflr gb Hkh g mld ckj e Mk- ek/ko fy[kr g &

^^g ufe"kkj.;eu;%@ijk.kdFkkJo.ku@u ek{kk Hkfo';fr

;"ekde@J);k u Hkfo";fr dkO;kuHkfr%@vn'<kfHkukdkfe&@

र्न भविष्यति पारं गमनम्/न भविष्यति भालोकदर्शनम्।''[119]

bl idkj l Mk- ek/ko u ufe"kkj.; d fy, ik;% ipfyr miekuk dk R;kx djd ,o मोक्षप्राप्ति के साधन पुराणकथाश्रवण पर प्रश्नचिन्ह उपस्थित करके नूतन कल्पना रची है। श्रद्धा जिसे कि सर्वसाध्य माना जाता है उस पर भी संशय व्यक्त करते हुए काव्यानुभूति के मार्ग में अवरोधक कहा गया है और भालोकदर्शन अर्थात् प्रकाशमय लोक की ikflr d ekx e i;kxghu lk/ku d :i e of.kr fd;k gA bl idkj l Mk- ek/ko uohu miekuk n jg gA

^iknk* dfork e pj.kk dk bfxr djr g, y[kd fy[kr g &

''विप्रयोगसमये मया ज्ञातं यत्/मम पादयो/श्शैला अपि सन्ति।/

iknk·fi xnHkk;r@----@;n ;ok ekxHk"Vkfofr A**[120]

;gk ij y[kd u ijk dk fofHkUu lKkvk l lEckf/kr fd;k gA ,d LFkku ij o fy[kr g fd tc ejk le; foijhr Fkk rc e> irk pyk fd ej ij e pfØdk ugh cfYd ior c/k हुए हैं जो कि सफलता की दिशा में मेरी गति dk doy eFkj gh ugh djr cfYd i.kr;k jkd nr gA dHkh dHkh ej ij x/k dh rjg gk tkr g tk doy fu:i;kxh Hkkj dk <k jg gkr gA ogh cf)ghu x/k dh vi{kk dHkh dHkh ej ij Kkuh gku dk Hkh ldr djr g ftul dh e> ekx d dVdk dk Kku iklr gkrk gA bruk gh ugh u=ghu d u= ij gh g vkj o e>

मार्गभ्रष्ट होने की सूचना भी प्रदान करते हैं। लेखक का आशय यह है कि जब जब भी आप ekxP;r g, g vkid ij vkidh vUrjkRek dh rjg 0;ogkj dju yxr g] tc mudh xfr lgt gkrh g तब ये चरण सही मार्ग पर हैं ऐसा कहना संशययुक्त नहीं है, जबकि जब पैरों की गति असहज हो जाती है तब वे ही पैर हमारा मार्गदर्शन करते हुए हमें सफलता के पथ पर संचरित djr gA ijk d bru idkj d mieku ,o ; lHkh mieku loFkk uohu gku l Mk- ek/ko dh ;kX;rk dk idV djr gA

Mk- ek/ko u fy[kk g &

^^vgefi@vfnfror@

f}rh;: l ;:@xHk: /kkjf;r| dke;A**[121]

यह पद्यांश कुन्ती की सूर्य के प्रति उक्ति को दर्शाता है साहित्य के किसी भी संग्रह में कुन्ती dh l; d ifr ,lh vfHkyk"kk ugh n[kh xb g tl h dh Mk- ek/ko u ;gk ij fy[kh g vr% ;g ,d uru mieku gA

ekuohdj.k &

mnkgj.k d }kjk fdlh fo"k; oLr dk le>uk cMk gh vklku gkrk gA fdlh ekuo d लिए उदाहरण में यदि मानवीय स्वभाव व्यक्ति विशेष या मानवीय संरचना हो तो उस विषय को le>uk vR;न्त सरल हो जाता है। इस प्रकार से विषय विशेष के उदाहरण को मानव से संबंधित करना ही मानवीकरण कहलाता है। मानवीकरण के विषय में भारतीय साहित्य ही नहीं अपितु विश्व lkfgR; e Hkh foiy mnkgj.k iklr gkr g vfr ikphu le; l ekuohdj.k d mnkgj.k lo= lyHk gA

Mk- माधव अपने ग्रंथ स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः में मानवीकरण के कई उपमान प्रस्तुत करते हैं। समुद्र नामक कविता में उन्होंने समुद्र को ही मानवीकृत किया है। विशाल जलराशि के संग्रहणकर्ता len d fo"k; e o fy[kr g &

^lenk·fi thofr

eu";orA*[122]

bldk o bruk dgdj ugh :dr g cfYd ;g okD; lex dk0; dk vfUre fu"d"k g bl fu"d"k l io Mk- ek/ko u len lc/kh fofHkUu fØ;kdykik dk ekuo l lcf/kr fd;k gA o fy[kr g &

^^Åfeekykuk ekukUeknL; i"B@----@

eR;jgL;ekfäde mik;fudjkfrA**[123]

blh idkj

''उद्यानकक्षे/स्पर्शलज्जा!मम/शैशवसखी/

olUrnrh@iyifr&cf/kjk@uxj tukA**[124]

bl idkj fy[kdj Mk- माधव ने छुईमूई नामक औषधि जिसे स्पर्शलज्जा कहते हैं उसे शैशवसखी और वसंत के लक्षणों को वसंतदूती कहकर संckf/kr fd;k gA ;g nkuk mnkgj.k Nbeb vkj olr d y{k.kk dk ekuohdj.k gA

Mk- ek/ko u ior e Hkh ekuo dk fo/kku fd;k g &

^^xxu pfEcr fePNu iorA@u tk;fr ;r@

rL; iknk?kA lfUr@xgukA dUnjkA@

;kLr u u KkrkA**[125]

vkj

^^;nk@ eu% iorrk; r@rnk@ iy ;ok;jfi

भवति शान्तः/यदा/पवतश्चित्तायते/तदा

iy ;%A**[126]

bl h idkj l fogx% dfork e &

´´मनोविचारसदृशा विहगाः

xxu & eLrdA**[127]

विहग अर्थात् पक्षी को मानव के मन से सादृश्य स्थापित किया गया है। इनके अनुसार पक्षी idfr d eLrd vFkkr xxu e ft l idkj l fopkj Lor= :i l [kyr g mlh idkj l i{kh Hkh xxu e fogkl djr gA

Mk- ek/ko fy[kr g &

^^dd jL; iPN oh{;

Lejkfe

ekuoLoHkkoeA*[128]

इस पद्यांश में डॉ- ek/ko u doy ekuohdj.k ugh fd;k g vfir lkFk lkFk ,d rh{.k 0;X; dk dVk{k Hkh ekuo LoHkko dh vkj fn;k gA ik;% ekuohdj.k e oLrvk dh ryuk ekuo l dh tkrh g] fdUr ;gk ekuo LoHkko dk bl idkj l fpf=r fd;k g fd mldh ryuk oLr विशेष से हो रही है बड़े ही सटीक एवं सीमित शब्दा e Mk- ek/ko fy[kr g fd dRr dh iN dk n[kdj ekuo LoHkko ;kn vk tkrk gA Mk- ek/ko d }kjk dRr dh iN dk bl idkj l ekuohdj.k djuk eu dk vkUnkfyr dj nrk gA

^nnj%* dfork e Mk- ek/ko u nnj vFkkr e<d dk Hkkjrh; jktr= dk urk dgk g vkj सत्य ही है वर्तमान प्रजातांत्रिक व्यवस्था में अधिकांश राजनेता मेंढक की तरह ही व्यवहार करते हैं।

dHkh o bl ny l ml ny e dnr g, ny cnyr g rk dHkh fdlh fo"k; dk ydj lln ,o tulHkkvk e 0;Fk VjVjkr g vkj tc puko vkrk g rc o"kk d e<d dh rjg xyh xyh e ,l LokFkh urkvk dh Hkjekj gk tkrh gA Mk- ek/ko u e<d dh ;g ryuk jkturkvk l djd e<d dk ekuohdj.k fd;k gA[129]

Mk- माधव ने मृत्युशतक में वैद्यराज को यमराज का सहोदर कहकर मृत्यु के अधिष्ठा यमराज dk ekuohdj.k fd;k g &

^^o|jkt ;ejkt lgknj% dF;r@----@
o|k·fi tkukfrA**[130]

bld vfrfjDr Mk- ek/ko u ;) vFkkr j.k dk Å".kdy= fy[kdj ;) dk Hkh ekuohdj.k dj fn;k gA ;g mnkgj.k ik;% fdlh Hkh Hkk"kk d vU; lkfgR; e iklr ugh gkrk g vFkkr Mk- ek/ko u ekuohdj.k d fo"k; e ,d uohu mieku dh jpuk ^^j.kefLrm".kdy=e**[131] fy[kdj dh gA

dUnjk dfork e Mk- ek/ko u ior vkj iorh; dUnjk nkuk dk ekuohdj.k fd;k gA o fy[kr g &

^^rH;@iorkfe/kkuk nkr@dkee!@
vg dUnjk Hkkfo";kfe@----------@
पातालगामिनी निराशा।''[132]

,d vkj rk o ior e e/;ei#"k dk vfHk/kku djr g vkj Lo; e dUnjk dk ogh nljh vkj ior e i#"kRo vkj dUnjk e L=hRo dk vfHk/kku Hkh djr gA lkFk gh dUnjk dk mUur मस्तक वाले पर्वतशिखर की निराशा क :i e Hkh ekuohdr djr g, ekuohdj.k e u, miekuk dh jpuk dh gA

व्रणोरूढ़ग्रन्थि ग्रन्थ में डॉ माधव ने बॉम्ब महाशय नामक कविता लिखी है –

^^migkjlaiV@--------@

ân;efLr ukfLr okA**[133]

यहाँ लेखक ने बम को महाशय शब्द से संबोधित करते ह, mldk ekuohdj.k fd;k g] tk कि एक राक्षस की तरह किसी भी स्थान पर जाकर के विनाश की संरचना कर सकता है। कविता d vUr e Mk- माधव लिखते हैं कि बॉम्ब महाशय एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जो कि हृदयहीन हैं अर्थात् ce dk fdlh ekuo d n%[k l dkb yuk nuk ugh gA blidkj l bl dfork e Mk- ek/ko u futho ekuo lgkjd ce dk l tho ekuo mikf/k l vydr fd;k gA

शाटी नामक कविता में डॉ- ek/ko u lkMh vkj lLdfr nkuk dk ekuohdr fd;k g &

''शिशुचरणधूलिधूसरां शाटीं विलोक्य/रजोभिरस्पृष्टा स्वच्छा शाटी/

रोदिति।/यदा शाटी किंवदन्ती भविष्यति/तदा/

lLdfrjfi okd.Bokfluh Hkfo";frA**[134]

lkMh dk ekuohdj.k djr g, nk lkfM;k e ijLij Mkg ¼tyu½ ftle fd ,d lkMh बालकों के चरणधुली से गंदी और दूसरी साड़ी रजस्वला स्त्री के स्पर्श से स्वच्छ होकर भी nk"k;Dr gA mudk ijLij Mkg of.kr fd;k g ogh lLdfr d Hkfo"; dk odBxkfeuh fy[kdj lLdfr dk Hkh eu";k dh rjg Hkfo"; fy[kr g, lLdfr dk ekuohdj.k fd;k x;k gA

ekuohdj.k dk foijhr Lo:i Hkh Mk- ek/ko dh dfork e ikIr gkrk g tcfd o ekuo के विभिन्न अवयवों को विभिन्न पशुओं के रूप में लिखते हैं। डॉ- ek/ko d vulkj

''मनुष्यस्य वक्षसि/निवसति शृगालः/दृष्ट्यां भ्रमति वृकः/वाण्यां

LiUnr f}ftgo%@ân;s ØhMfr 0;k?k%@foylfr eufl okuj%@

गले ब्रवीति/साहङ्कारं कौशिकः/शिश्ने रमते कुक्करः/मुखkuiF;s

d|fVy g l f r fcMky½@v r½@i kf.ku n"Vok defi@rfLeu@

पश्याम्यहं मनुष्यांशस्य प्रतिबिंबम्।''[135]

b l idkj l Mk- ek/ko u eu"; d o{k e Jxky nf"V e od] ok.kh e nk thHk okyk सर्प, हृदय में व्याग्र, मन में वानर, गले में कौशिक, शिष्ण में कुत्ता] eg e fcYyh b l idkj l मनुष्य के विभिन्न अंगों में संबंधित पशुओं को अभिहित करते हुए मानवीकरण की उलटबाँसी लिखी gA

Mk- ek/ko fy[kr g &

^^o.kL; fg /k|ok eR;|&

/k|o tUe o.kL; pA**[136]

b l idkj l Mk- g"kno ek/ko u o.k ¼?kko½ dk ekuohdr djr g, ^tkrL; fg /k|ok eR;|/k|oe tUee`rL; p* b l mfDr dk o.k d lnHk e fy[kdj o.k dk ekuohdj.k fd;k gA

pj.kk e Kkuh i#"k dk vfHk/kkj.k djr g, Mk- ek/ko u fy[kk g&

^^iknk Kkfuuk Lr½] rkH;k Kkrk½ d.Vdk½AA**[137]

अर्थात् ज्ञानी पुरुष जिसे की परिस्थिति का अनुभव शीघ्र ही हो जाता है और उस अनुभव से lh[k ydj viuh ifrfØ;k nrk g Bhd mlh idkj l ijk dk Hkh Kkuhi#"k d :i e मानवीकृत करते हुए काँटों से प्राप्त वेदना पर शीघ्र प्रतिक्रिया देने वkyk dgk gA b l idkj l Mk- माधव ने पैरों को ज्ञानी पुरुष की एक विशिष्ट उपमा देते हुए पैरों का ज्ञानी पुरुष के रूप में ekuohdj.k fd;k gA

Mk- ek/ko u dUrh dh l; d ifr mfDr;k dk fy[kr g, l; dk ,d i#"k d :i e ekuohdj.k fd;k g] ,lk i#"k ftl fd dUrh vFkkr ,d L=h viu i; d :i e pkgrh g

vkj mIdk vHkh"V mI fi;re I djd viu viu fi;re dh rjg gh Irku dk ikIr djuk है। इस प्रकार से आकाश में दैदिप्यमान सूर्य का एक पुरुष के रूप में मानवीकरण किया गया है।

jI &

d:.k jI &

Mk- g"kno ek/ko dh dforkvk e dgh nfyr dh ihMk g dgh] vIo.kie dh ihMk] dgh बहू की पीठ पर सास द्वारा किये गये व्रण हैं। प्रहार की पीड़ा तो कहीं शराबी पति द्वारा वक्षस्थल ij fn; x; fIxjV d nkg d fpUg] dgh dU;k Hk.k gR;k d ?kko] bu IHkh dh ihMk ikBd d jkxV [kM dj nrh gA tc Økp feFku dh ihMk vkfndfo mRiUu dj Idrh g rk oreku thou dh fo"kerkvk] volkjk o vHkkok dh o.kihMk dk ngdj dkb Hkh dfo cu Idrk gA

^^rnk@o.kihMk nX/kok@dk·fi Hkofr dfo%@vkgr/kfj«;k n%[ke@
:f/kjjजितं नभसो मौनम्/क्षुभितजलस्य मन्थनम्/कलुषितवायोरशान्तिम्/
vLrxrrtIk oD;0;e@; vkReIkr djkfr@I foxfyro|kUrjk o.k%@
iIr@delI;orkjeA**[138]

bI idkj ipHkrk d m}yu dk tk vkReIkr dj Id] og foxfyro|kUrj ihMk gh fdIh vorkj dk mRiUu dj सकती है। विनाश व संत्रास के ताण्डव में अवतार की कल्पना कवि के आशावादी दृष्टिकोण को दर्शाती है।

Mk- हर्षदेव माधव शिशुओं के प्रति विद्यालय एवं पालकों के द्वारा अपेक्षाओं के बोझ को लेकर fpfUrr gkr g, vR;Ur d:.kke; Hkko I fy[kr g

^^L;rku oहतां शिशुकानां शैशवं/पुस्तकैः/गृहकार्यैः/शिक्षकैः/
yf.BroLruk@yf[krkfHk;kxkFk@ukfLr ifyILFkkudefiA**[139]

oreku ifjfLFkfr e ftruk ,d ikFkfed fo|ky; d fo|kFkh dk Lo; dk Hkkj g dN ifjfLFkfr;k e rk mld Ldy cx dk Hkkj Hkh mld Hkkj l T;knk gkxkA Lor= :i l शारीरिक एवं मानसिक संचरण करने के योग्य नन्हे शिशुओं के साथ में होने वाले ऐसे शारीरिक एवं ekufld vR;kpkj d fo"k; e f[kUu gkr g, dYiuk djr g fd dkb rk ,lk LFkku gk tgk bl vR;kpkj ij vkokt mBkb tk ld vkj भगवत्स्वरूप इन नन्हें शिशुओं पर अत्याचार करने oky vR;kpkfj;k dk nf.Mr fd;k tk ldA

fdlh vif{kr fi; dk dkb lekpkj iklr u gkuk vkj ml fojgtU; ifjfLFkfr e fd;k x;k ØUnu d:.k jl dk fo/kk;h vx gA Mk- ek/ko dh dfork v|kfi irh{kr ft le o fy[kr g

^^dfyd;k lg oDr@----@
irh{kr v|kfiA**[140]

अर्थात् सम्पर्क के समस्त संभव प्रयास करने के बाद भी जब किसी प्रकार की कुशलक्षेत्र की lpuk iklr u gkrh g vFkok Lo; dh vkj l fd;k tku okyk lEid Hkh lHko ugh gk ikrk g rc og irh{kkdkyhu le; fi; d ifr opuk irh{kkjr 0;fDr dh fLFkfr dk d:.kke;h cuk देती है, जिसमें कि वह किसी भी प्रकार से ईशतलाभ की अपेक्षा रखता है जो कि उसे सुलभ नहीं gk ikrk gA

blh idkj dh fLFkfr rc Hkh fufer gkrh g tcfd nkuk d chp lokn rk gk fdUr ,d दूसरे के प्रेमसंकेतों को समझ सकने की शक्ति का अभाव हो तब वास्तविक स्थिति का संज्ञान होने ij gku okyk ØUnu Hkh d:.kk dk tud gkrk g tl fd Mk- ek/ko u i"k; dfork e fy[kk g &

^^Ro;k i`f"kr dkfeuhi`"ie@e;k ik.Mji.ke@Ro;k i`f"kr%

lkjभजलधिः/मया अश्रुबिन्दुः/त्वया प्रेषिता शरद्यात्री/
मया/निश्वासः/त्वया प्रेषितं कोकिलकूजितम्/मया
चक्रवाकचीत्कारः/मम/कण्ठेऽस्ति रणतृषा–वर्तते निदाघशोषः।''[141]

ऐसी स्थिति में अन्तिम अभिलाषा वसन्त या शिशिर की नहीं होती, सावन की वर्षा से भी क्षुब्ध ,lk nhu व्यक्ति करूणा का भाजक होकर सूखे पर्णहीन नीरस आषाढ़ की आशा करता है –

^^vk"kk<ı i¨"k;
;fn ro lehi¢ HkoPpr`A**[142]

किसी नगर विशेष की चर्चा करते हुए डॉ॰ ek/ko u ik"kk.k uked dfork e fy[kk g &

^^vfLeu uxj¢
----------egky;¨"k----------
lthok% ik"kk.kk olfUrA**[143]

l|% fLFkfr d vulkj ekuo lekt viuh vi{kkvk dh ifr e bruk fueZu gk x;k g कि उसे पाषाण हृदय कहने में कोई भी संशय नहीं है भूख से बिलखते छोटे छोटे बच्चे मन्दिरों के ckgj Hkh[k ekxr jkxh vkj ctx n?kVuk e [ku l yFkiFk iM ?kk;y bruk gh ugh cfYd eR; dh irh{kk djr g, fdlh 0;fDr dk lgk;rk miyC/k djku dh vi{kk mldk ohfM;k cuku dh प्रथा जिस तेजी से समाज में फैल रही है उस दृश्य को देखते हुए डॉ॰ ek/ko dk ;g 0;X; fdruk lVhd g और मात्र तीन पंक्तियों में उस समस्त दृश्यावली को चित्रित करते हुए सहृदय पाठक के लिए करूणा का उत्पादन करता है। निश्चित रूप से डॉ॰ ek/ko dk ;g dguk fd bl uxj d cM&cM Hkouk e ltho ik"kk.k jgr g] fdruk vFki.k gA d:.kk dh ,lh fuee gR;k ikBd d ân; e d:.k jl dk lgt iokg djrh gA

tc 0;fDr vuif{kr lQyrk dk ikIr dj yrk g vkj og lQyrk mld LoHkko rFkk lkeF; l vf/kd gkrh g vkj mld QyLo:i og viu thou dk bruk foyx dj yrk g fd og lkekU; /kkjk e ugh vk ikrk g rc viu leku cU/kvk l dVdj dN le; rd rk lxo thrk g fdUr lQyrk dh bl v/kh nkM e nkMr nkMr mld viu dc ihN NV tkr g bldk vueku yxkuk Hkh mld fy, dfBu gkrk g fdUr tc mldk foJkfrdky vkrk g rc og n[krk g fd mld thou dk lkj pyk x;kA /ku deku d fy, ekuo u viu LokLF; dh ckth yxkbZ vkj ckn e LokLF; d j{k.k e mlh /ku dk [kp dj fn;kA ,l fu"Qy i;kl k d drk eu"; ij rc vkj Hkh d:.kk vkrh g tc mld e[k l fudyu oky okD; dN bl idkj d gk tl k fd Mk- ek/ko u fy[kk g &

^^dk·fi ee e'xRok;l eR;q nnkrA**[144]

स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः ग्रन्थ में डॉ- ek/ko dk ;g fy[kuk fd &

^^ik#"k iyk;r

Dyhcd¥pd ifj/kk;A**[145]

यह दर्शाता है कि किसी परिस्थिति विशेष में वीर बल सम्पन्न पुरुष के द्वारा भी पलायन की fLFkfr og Hkh Dyho cudj bruh d:.kke;h g fd lglk ml ik#"k ij n;k vk tkrh gA

''पत्नी क्षिपति शयनकक्षे/----@

0;k/kRo eA**[146]

dgk x;k g fd thou dk lkj vjkT; g] jkT; dk lkj jkt/kkuh g] jkt/kkuh dk lkj fuokl vkj fuokl dk lkj iRuh g vFkkr thou e vkuUn fo"k; dh ije lkf/kdk iRuh gh gkrh है, न केवल आनन्द अपितु परिवार के नित्यकार्य, सामाजिक दायित्व एवं समयानुकूल विभिन्न विशिष्ट nkf;Rok dk fuogu dju okyh iRuh dh fLFkfr dk;kf/kD; ,o ekufld Je d dkj.k vR;Ur

d:.kke;h gk tkrh g vkj ;g d:.kk rc vkj vf/kd c< tkrh g tcfd mldk lg;kx dju dh Hkkouk gku ij Hkh lg;kx djuk lHko ugh gk ikrk gA blhfy, Mk- ek/ko mlI L=h के ऊपर अत्यन्त कारूणिक शब्दों में इस कविता को लिखकर जीवन के आनन्द पर ही प्रश्नचिन्ह yxkr gA

Mk- माधव ने हाइकू के माध्यम से एक कारूणिक दृश्य उपस्थिr fd;k g ftle o fy[kr g &

^^?kVk·fLr y?kqA
dii nj: ---------lfyyeA
JkUrk pj.kkA**[147]

,d NkVh lh vi{kk dh ifr d ekx e Hkh rhu&rhu cMh ck/kk, vFkkr vi{kkifr dk gkuk tc vlHko lk irhr gkrk g rc mifLFkr gku okला कारूणिक दृश्य करूण रस का कारक gkrk gA एक अन्य हाइकू में इसी दृश्य को पुनर्चित्रित किया है जिसमें डॉ- ek/ko fy[kr g &

^^olUr: LeRok
यासपयन्ति शिशिरं
शेषाः स्थविराः।''[148]

vfHku=h ehukdekjh d ifr ,d ifDr fy[kr g, Mk- ek/ko u fy[kk g&

^^vJ}hiL; foglUrh jkKhA**[149]

इस पद्यांश में करूण रस का प्रवाह तो नहीं है किन्तु जिसने भी सिनेतारिका मीनाकुमारी को अभिनय करते हुए देखा है वे उस नाम को सुनकर ही कारूणिक दृश्य सजीव कर लेते हैं। इस

idkj l ;g dkO;[k.M u doy vn"V :i l d:.kk का जनक है बल्कि साहित्यशास्त्र के दृष्टिकोण से उत्तम काव्य का एक सशक्त उदाहरण भी है।

^^yrk[kkfnrxUFkk HkkRok@-----@
vFk p fHkfÙkfoxfyrkA**[150]

iLrr dfork Mk- ek/ko dh d:.k jl l Hkjh ,d ekfed dfork g ftle mUgku fdlh निराश एवं एकाकी o) d thou dh eu%fLFkfr dk cM gh dk:f.kd :i l fpf=r fd;k gA tc o fy[kr g fd o) ,d nhed yxk gvk xFk g ftl dkb ugh i<rk] ;k og ,lk dk;yk है जिसमें से आग निकल चुकी हो या जब वे लिखते हैं कि निराशा की अग्नि उसे सूखे ठूंठ की rjg tyk jgh है इसी तरह के अनेक विशेषण प्रतिकथन उस वृद्ध के करूणामय जीवन को व्यक्त djr gA

मृत्युशतक में मृत्यु के विभिन्न पर्यायवाचियों के माध्यम से डॉ- माधव ने एक ऐसा दृश्य उत्पन्न किया है जो सहज करूणा का विधायी है। इन मृत्यु के विशेषणों में से एक जिसमें वे fy[kr g &

^^eR;jFkkr
ehuL; tykn cfg% {kki%A**[151]

जल के विरह में जल के अभाव में जीवन की आकांक्षा से तड़पती मछली का दृश्य जितना करूण होता है वैसी करूणा के अन्य उदाहरण ढूंढना प्रायः बहुत मुश्किल है और डॉ- ek/ko u ek= ,d ifDr e bl idkj का करूणामय उदाहरण लिख देना अपनी मृत्युशतक की सार्थकता को |kfrr djrk gA

कोई भी शव हमेशा कारूणिक दृश्य उपस्थित कर देता है और यदि जिसका शव है उसका lc/k Lo; ,o Lo; d ifjfpr ,d cM lenk; l gk rk ogk d:.kk dh o"kk gk tkrh g A

Lodh; भाषा की मृत्यु के उपरान्त उस भाषा के शव की अपेक्षा करते हुए उस शव से भाषा के iu#Tthou d fy, fd;k x;k d:.k ØUnu tlk fd Mk- माधव के शब्दों में –

''शब्दानां निर्मक्षिकेषु ध्वंसावशेषेषु/-----@

d=fpr--------------------dnkfpr--------AA**[152]

,o

^^bl lohlu iokl.kk dfr dfr loRljk.kk

Hkk"kk

ekui;f³ddk;k i¥pRo xrk·fLrA**[153]

okRlY; jl &

शिशु के प्रति किया गया स्नेह वात्सल्य का परिचायक है। फिर चाहे वे शिशु स्वयं के हो, vU; d gk ;k ekuoRrj itkfr;k d gkA Mk- ek/ko okRlY; dk lUnj mnkgj.k fy[kr g fd o शिशु जिनके अभिभावक मनुष्य हैं और माता–पिता मुर्गा प्रजाति से है उन लोहे के पिंजरों में बंधे हुए कुटकुट शावकों के लिए जीवन किशोर नाम की बीमायोजना की अपेक्षा करना कवि के उन शिशुओं d ifr okRlY; dk iदर्शित करता है।[154]

Mk- माधव इसी विषय को आगे बढ़ाते हुए अत्यन्त अत्याचार से ग्रस्त मानव शिशु के विषय में Hkh fpfUrr gkr g, viuk okRlY; idV djr g, l yxr g tc o fy[kr g &

''स्यूतान् वहतां शिशुकानां शैशवं/----@

ukfLr ifylLFkkudefiAA**[155]

नटखट बच्चों की शरारतों की अपेक्षा करते हुए उन शरारतों में जीवन का आनन्द खोजने dk ;g i;Ru Mk- ek/ko dk okRlY; gh gA ,d igp g, lr tk fdlh futu {k= e vkJe cukdj jgr Fk o viu vkJe e cgr l Qynkj o{kk dh lkt lokj dj jg Fk rc mud ,d

fe= vU; lr u mul iNk fd vki Lo; ftu Qyk dk ugh [kkr g mUg viu vkJe e D;k yxkr g] rc mu fl) lr dk mRrj okRlY; jl l fHkxk;k gvk irhr gkrk gA okRlY; dk dkj.k Hkh mld ek/;e l lgt gh fn[kkb nrk gA mu fl) lr dk mRrj Fkk fd tc ej vkJe e Qynkj o{k gkx vkj mu ij Qy yxx rk leh i dh cLrh d NkV cPp mu Qyk को मांगेंगे, चुराएँगें, बाल सुलभ क्रीडाएँ करेंगे और उन बच्चों में मुझे सहज ही ईश्वर के दर्शन हो tk,x D;kfd cPpk e Hkxoku dk okl gkrk gA okRlY; dk ;g mnkgj.k Mk- ek/ko dh dfork के इस पद्यांश को समझने में सहायक है कि क्यों डॉ- माधव शिशुओं को बाल सुलभ क्रीडाएँ करने nu dh ijokh djr gA

ohj jl &

Mk- ek/ko d dkO; fofHkUu jlk d lgt iokgd gA o.kk:<xfUFk dkO;lxg e mUgku तटप्रदेश को संबोधित करते हुए वीररस से ओत–प्रोत एक कविता लिखी है। विभिन्न बाधाओं के ekxkojk/kk d gku d ckn Hkh ixfr ,o lQyrk dh vfHkyk"kk djuk ohj dk y{k.k gA ;fn मार्गावरोध विशाल एवं अधिक सामर्थ्य सम्पन्न हैं तब भी उन मार्गावरोधों dk ikj djd vkx c<u dh vfHkyk"kk okLrfod ohj dk y{k.k gkrh gA tlk fd Mk- ek/ko u fy[kk g &

^^rVkk !
ek jk/k;r e
xUr; iloÙk pj.keA**[156]

प्रबल शत्रु के होते हुए भी अल्पबल वाले का साहस ही उसका बल होता है और वीरता के fy, lkgस सबसे पहला अनिवार्य आवश्यक तत्व है। ''पवनाय कथयतु'' कविता में चींटी और वायु dh ijLij lkgl dh rqyuk djr g, Mk- ek/ko fy[kr g &

^^iouk; dFk;r ;n@rL; nyfyrk³xfyfHk@u pky;r lr

filiyfefr@,dk fiyhfydk l|Irk·fLr JeDykUrk@

i.kPNk;k;ke@iouk; dFk;r| ;u@u xPNr· l@ x|Yeekxi.kfrA**[157]

किसी श्रमगुणप्रधान की सहायता करना वह भी सामर्थ्यसम्पन्न शत्रु के सम्मुख ऐसा साहस वीरता का प्रथम एवं परम आवश्यक लक्षण है। डॉ- ek/ko u bl lkgl uked rRo dk ydj tk ;g dfork fy[kh g ble ohj jl dk lgt lpkj iाप्त होता है। दिशः कविता में हम बदलेंगे ;x cnyxk dh vfHk/kkj.kk e ;x ifjoru d iFke lkiku dk vkjkg.k Lo; d }kjk fd; tku dk 0;Dr djr g, Mk- ek/ko fy[kr g &

^^g fgeky; !@-----@

e;h LFkki;A**[158]

ohjrk doy cy vkj lkeF; l ugh vkdh tku okyh ohjrk dk ifjpk;d doy l?k"k d fy, fd;k tku okyk lkgl gh ugh cfYd nkuohj Hkh ohj dgk tkrk gA nkuohj d }kjk fd;k x;k foy{k.k nku mldh ohjrk dk ifjpk;d gkrk gA nku d lkFk&lkFk ;kX; 0;fDr l योग्यदान की अपेक्षा करना बड़े शक्ति एवं lkeF; l lEiUu 0;fDr l rnulkj cM nku dh अभिलाषा करना जैसे हिमालय से मस्तक मांगना जैसे समुद्र से जलराशि को दूर करने के लिए vi{kk djuk vkfn lkekU; ckr ugh g vkj bu ;kpukvk dh ftUg oLrr% ge ;kpuk u dg dj lkf/kdkj vi{kk dg ldr g mudk i;kx djuk ohj jl dk mnkgj.k gA

स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः काव्यसंग्रह में कवयोवयम् नामक कविता में डॉ- ek/ko u Lo; e mRlkg ifjr dju d y{; l ,d mRre dk0;jpuk dh g &

^^o;e@------@

do;k fg !!!**[159]

,d dfo ftldk e[; nkf;Ro gkrk g mRlkg dk lpkj djuk] bl nkf;Ro dk fuogu करने के उद्देश्य से कवि समुदाय में स्वयं में अंतर्निहित गुणों को जागृत करने का प्रयास किया। जब वे कवि को देशादि सीमा के संकुचन से दूर सीमारहित बताते हैं। कवि में ही अमृतत्व का vfHkknku djr g, mld mRlkg dk c<kr gA bl idkj l dfo dk ohjrk vkj mRlkg dk vxnr djr g, Mk- ek/ko u ohj jl dk lpkj fd;k gA

eR; l Hk;Hkhr ugh gkuk ohjrk dk ije y{k.k g D;kfd eR; gh og ije lR; g tk gj ,d dk iklr gkxk vkj eR; d iklr gku d ckn ohjrk ;gh dh ;gh /kjh jg tkrh g] fdUr ekufld mRlkg ohjrk dk og ije y{k.k g ftl l eR; ij fot; iklr dh tk ldrh gA bl lc/k e Mk- ek/ko fy[kr g &

^^eR;k ukfLe dki#"kk !

;rLRok ohj{;

भवेय ते शरण्यः।''[160]

eR; d lEe[k mifLFkr gku ij Hkh i#"kRo dk voyEcu djuk vkj eR; dh vfHkyk"kk djuk lgt ugh gkrk gA ;g doy ohj gh dj ldr g bl idkj l Mk- ek/ko dh ifl) कविता मृत्युशतकम् के इस पद्यांश में मृत्यु का आलिंगन करने की अपेक्षा वीरता के भाव से परिपूरित dj nrh gA

^j.ke* dfork e Mk- ek/ko u j.k{k= dk iR;{k o.ku fd;k g ftle j.k{k= dk doy Hkkxkfyd ;k vk;/k lc/kh o.ku gh ugh g cfYd j.k{k= e mRiUu gku okyh euksfLFkfr Hkh dfo d }kjk fpf=r g j.k{k= l iyk;u dju okyk dHkh Hkh ohj ugh dgykrk g ohj ogh g tk j.k{k= e igp dj ;) dh vkdk{kk djrk gA ;gk bl dfork e Mk- ek/ko fy[kr g &

^^dke e?kof"VfcUnfHk%@-----@

m".kdy=eA**[161]

bldk rkRi; g fd j.kHkfe ohj dh og vif{kr Hkfe g ;k og dkeuk g ftldk आलिंगन करना वह हमेशा चाहता है। लेखक के मुख्k l fudyu okyk okD; ^^j.k tkr Lox l[keA**[162] dk0; e ohj jl dh mifLFkfr dk lgt gh 0;Dr dj nrk gA

jkn jl &

jkn jl Øk/k dk vfHk/kk;h jl g] ,lh ifjfLFkfr ftue lgt fdlh 0;fDr ij Øk/k mRiUu gk ogk jkn jl idV gkrk gA itkr= d bl nkj e tgk ,d cf)thoh vkj ,d cf)ghu nkuk d erk dk eY; cjkcj g vkj ,lh fLFkfr e cgl[;d lenk; tc viu er dk fdlh Hk;] ykyl ;k ykyp d pyr xyr 0;fDr dk ndj d fot;h cuk nrk g] ml वस्तुतः देशद्रोह कहना चाहिए। इस व्यवस्था का विरोध करr g, y[kd Mk- ek/ko स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः में बड़े ही क्रुद्ध भाव से लिखते हैं –

^^;u Øhr ere@l@

विक्रेतुं शक्नुयात्/ LoekrjefiA**[163]

सत्य भी है कि जहाँ इस देश में नियम कानून बनाने का अधिकार संसद, विधानसभा आदि d ek/;e l tuifrfuf/k;k dk ikl gkrk g ogh bu tuifrfuf/k;k dk puu okyk ox tc viu veY; er dk foØ; djrk g rc og er [kjhnu okyk tuifrfuf/k Hk"Vkpkj djrk g ,o निरंकुश होकर राजतंत्र को संचालित करता है। ऐसी अवस्था में उस भ्रष्ट एवं निरंकुश व्यक्ति को er cpu oky dk Mk- ek/ko u Lo; viuh ek dk foØrk dgk g D;kfd Hkkjrh; lLdfr jgh g fd tuuh vkj tUeHkfe ; nkuk gh cjkcj g vkj db volj ij rk ekrHkfe dk ek l c<dj कहा गया है। मत को विक्रय करके जन– प्रतिनिधि को निरंकुश एवं भ्रष्टाचारी बना देनk ekrHkfe dk foØ; dj nuk g vkj ekrHkfe dk foØ; ek d foØ; d cjkcj g vkj tk 0;fDr viuh ek

dk lEeku u djrs gq, mldk foØ; dj nsrk gS mlls izkIr /ku ls vkuk LokHkkfod gh gS D;ksafd ekrHkwfe fdlh ,d O;fDr dh ek= ugha cfYd Hkkjr ds 125 djksM+ lnL; vf/kd fuokfl;ksa dh ek¡ gS vkSj mlh ek¡ dk foØ; djus ij fdlh dk Hkh jksn :i gks ldrk gSA

o.kZ:<xfUFk;ksa e Mk- ek/ko lsen dk bfxr djrs gq, fy[krs gSa fd &

^^unhuka tykfu@y{.Bf;Rok
जलाराशिर्जातोऽयं शठः।''[164]

Mk- ek/ko us ;gk¡ lsen dk yf{kr djds O;X;kRed :i ls iwathoknh ds ifr viuk Øks/k प्रदर्शित किया है कि जैसे कोई पूंजीपति निर्धनों से धन का संग्रह करके स्वयं और अधिक /kuoku gksrk gS] fdUrq og /ku mldk Lo; dk ugha gS vfirq og xjhcksa dk pwlk gqvk [kwu gS vkSj mlls ij viuk vf/kdkj tekdj समुद्र की तरह बाद में बारीश के बादलों की तरह उसमे से कुछ लौटा करके यश प्राप्त करना चाहता है। पूंजीवाद के इस विचार का विरोध करते हुए डॉ- ek/ko us jkSnz Lo:i /kkj.k djrs gq, e[kkSj fojks/k fd;k gSA

jkSnz jl dk vU; iz;ksx j.kkse dfork esa ikIr gksrk gS tgk¡ dfo fy[krs gSa &

^^e;k rq@gfjr{ks= drrq ro dkeuk dÙkZ@fdUrq@
Ro;k j.kekuhre@vrks u=;kLrs exr".kk orrs@
ee ân;s lfUr fldrk%A**[165]

इस काव्यांश का आशय है कि प्रायः व्यक्ति स्वयं झगड़े के लिए उत्सुक नहीं होता है। मानव ,d lkekftd izk.kh gS vkSj ekuo dk ey LoHkko fey&tqy dj jguk gS] fdUrq dHkh ykx ,sls Hkh gksrs gSa ftuesa ekuo ds ey LoHkko dk vHkko ik;k tkrk gS mUgsa yMkbZ&>xMs esa gh vkuUn feyrk gS ,sls O;fDr >xMk djds Hkh viuh bPNk iwjh ugha dj ikrs gSa fdUrq nwljs ds thou esa [kyy Mkydj mlds thou dk Hkh gfjr{ks= lq[kk Hkwfe cuk nsrs gSA

Mk- माधव संत्रासवाद कविता में भारत ही नहीं अपितु विश्व की समसामयिक सबसे बड़ी leL;k vkrdokn dk fpf=r fd;k gA o fy[kr g &

^^l=k lokn@----@
r fujk)| gLrkA**[166]

bl idkj l आतंकवाद एक वैश्विक समस्या है यद्यपि आतंकवाद का पोषक एवं आतंकवाद Qyku okyk vkrdh dHkh Hkh ekuork dk fgr"kh ugh gk ldrk g rFkkfi mudk leFku dju वाले दुर्भाग्यवश इस समाज में विद्यमान हैं जिनका सहयोग लेकर वे समाज में आतंक का वातावरण fufer djr gA bl idkj l vkrd l tM g, iR;d 0;fDr dk dfo jkn :i e 0;Dr djrk gA

gkL; jl &

i lUurk l ifji.k pgjk gj fdlh d fy, vkd"kd gkrk gA gkL; d fcuk lkfgR; ,o कला के विभिन्न प्रतिमान अधूरे होते हैं। हास्यबोध किसी कवि के लिए आवश्यक विधायी rRo gA Mk- माधव का हास्यबोध भी अवसर के अनुसार उद्भाषित होता रहता है। स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः uked xUFk e vfHkjkt jktUn feJ d xhfrdk0; ^;r i;kfpre* d ifrdk0; e Ro;k e fy[kr g &

^^;Uu| lf¥pr| e;k rn 0;;hdr| Ro;kA@----@
enxg| p thfor| lodhdr| Ro;kA**[167]

पति पत्नी के मध्य सहज होने वाला दृश्य एवं मीठी नोंक–झोंक के माध्यम से डॉ- ek/ko u bl li.k xhr dk ltk;k gA bl xhr d iR;d in e gkL; i.k {kerk d lkFk e foykl djrk gA

Mk- ek/ko viu gkL;ck/k l fp=irx uked dfork e fy[kr g &

^^;fn

ro xg}kfj

मार्गदर्शका भविष्यन्ति--------------A**[168]

dfo d }kjk dkfeuh d xg dk vUo"k.k dju d fy, dguk Lo; e gkL; dk fo/kk;d g vkj dkfeuh d xg d vUo"k.k d fy, fp=irxk dk vuqlj.k djuk vkj Hkh vf/kd gkL;tud gA ;fn bl dk0; dk y{k.k n[kk tk, rk i"iLrcd vkj fp=irx d ek/;e l कवि का आशय प्रेयसी कामिनी के घर पर एक अन्य सुन्दरी की अपेक्षा और स्खलित चरित्र वाली ml lUnjh d ifjr% mld vkd"k.k l vkdf"kr gku oky ;ok iेeh dh dYiuk lgt gh gk जाती है। इस प्रकार से अपनी प्रेयसी के घर पर अन्य कामिनी की कल्पना करना एक विशिष्ट तरह dk vkilh okrkyki ;kX; gkL; gA

Mk- माधव जनाः शीर्षक से लिखते हैं –

''भारस्तु सम एव/आवयोः पृष्ठदेशे/जनास्तुभ्यं

^xnHk8 bR;fe/kku nnfr@eg;@g"kno ek/ko bfrA**[169]

Lo; d Åij glu okyk ;g dk0;[k.M vf}rh; mnkgj.k gA ldl d tkdj ,o fofHkUu gkL; ifr;kfxrk d ifrHkkxh Lo; ij gldj gh mifLFkr lenk; dk glu ij etcj dj nr gA gkL; dh ijkdk"Bk Hkh bl gh dgk tk ldrk gA

,d vU; irhdkRed dk0; e lh/kk&lh/kk 0;X; fy[kk g&

^^bnefLr ik=e@ryu ukfLr@

g xj#o;l ! fd f{kifl rfLeuA**[170]

bl idkj l Mk- माधव का हास्य बोध है जिसमें उन्होंने बहुत सीमित शब्द लिखे हैं किन्तु उसका आशय समझने पर व्यक्ति बहुत देर तक हँसता रहता है और यदि ऐसा कोइ mnkgj.k

mld vklikl g rk ml n[kdj lgt gh db fnuk Mk- माधव का यह काव्यांश स्मरण हो जाता gA

शांत रस –

Mk- माधव शांति के समर्थक के रूप में भी गिने जाते हैं अपने काव्य में सहज ही उन्होंने शांति की उपासना की है। जैसा कि स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः e flgklu dfork e o fy[kr g &

^^flgklukr
y{;k tunj Hkofr
l[kL; lkekT;eA**[171]

flgklu dh ifjHkk"kk e Mk- ek/ko u nk fo"k; fy[k g 1- शासित वर्ग के हृदय पर शासन dju oky dk flgklu iklr gkrk g 2- dVuhfr d }kjk Ny से प्राप्त शासन। दोनों स्थितियों में प्राप्त होने वाली राज्यसत्ता व्यक्ति को शांति से दूर कर देती है प्रथम स्थिति में उसे शासित वर्ग के सुख और सौहार्द्र का विशेष ध्यान रखना होता है जबकि दूसरी स्थिति से प्राप्त शासन में लगातार "kM;=k dk lkeuk djuk gोता है अतः सदा व्यस्तता बनी रहती है, किन्तु यदि सुख और शांति की अपेक्षा है तो उसका निवास शासन से या सिंहासन से बहुत दूर प्रतीकात्मक रूप से कह सकते हैं कि लक्ष्य संयोजन दूर रहता है और वहाँ जाने वाले को अर्थात् शासन तंत्र से यथासंभव दूर रहने oky 0;fDr dk सुख का साम्राज्य प्राप्त होता है। इस प्रकार से कवि शांति के अभिलाषी होकर शांत jl dk iokg djr g, irhr gkr gA

o)koLFkk dk fpf=r djr g, Mk- ek/ko fy[kr g &

^^yrk[kkfnrxUFkk HkkRok@-----@
vFk p fHkfÙkfoxfyrkA**[172]

bl dfork e y[kd u o)koLFkk dk lgt fp=.k fd;k gA viu thou d fofHkUu vkuUnk dk lk{kkRdkj dj pd fdlh 0;fDr d thou e lkeF;ghurk okyh fLFkfr vku ij og परमशांति की अभिलाषा करता है। इस प्रकार से यहाँ शांत रस उद्भाषित होता है।

Mk- ek/ko d }kjk fy[kk गया मृत्युशतक् जीवन के अन्त से आरंभ होता है। जीवन की परम शांति भी यही है। इस प्रकार से शताधिक श्लोकों में बना हुआ यह मृत्युशतक शांत रस को मुखर djrk gA

मौनस्य परिभाषायाम् काव्य में भी शांति को अभिप्रेत किया हुआ है और यहाँ डॉ- ek/ko ने एक नया शब्द भी प्रदान किया है 'शून्यवाद' जो कि परमशांति का लक्षण है। शून्यवाद में सर्वथा शांत रस निहित है।

o.kk :<xfUFk e Mk- ek/ko d }kjk fy[kh xbZ eR;q lokdUn uked dfork e eR;q d विविध स्वरूप लिखे हैं जिसमें आहत्य दश कुड्मल वर्णित है किन्तु मृत्यु को भी परम शांति न ekudj Mk- माधव ने पुनर्जन्म व्यवस्था के अनुसार शांति के लिए केवल मृत्यु को ही अन्तिम साधन नहीं माना है बल्कि मानसिक शांति को परमविधायी तत्व मानते हैं वे लिखते हैं –

^^ro ikii.;;k% lpuk ikIrk·fLr
iujfi iFoh xUr; i³Drk fr"BA**[173]

स्पष्ट है कि जीवन का अंत ही शांति प्रदाता नहीं है अपितु शांति के लिए अतिरिक्त प्रयत्न Hkh dju gkr gA

rV%[174] कविता में जीजिविषा के विश्रामस्थल को शांति के तट के रूप में कहा गया है। यह तट ही शांति को अपने अंक में समेट लेrk gA bl idkj l bl dfork d ek/;e l Mk- माधव ने शांति के वास्तविक स्वरूप को शांत रस में पिरोकर अभिव्यक्त किया है।

यद्यपि मृत्यु एक परम सत्य है एवं मृत्यु को शांति के एक आयाम के रूप में देखा जाता है fdUr ;fn leLr bPNkvk dk i.k djd eR; iाप्त हुई है तो ही वह मृत्यु शांति विधायी है अन्यथा मृत्यु के उपरान्त भी वह शांति से विलग कर देती है इसलिए जीवन में आने वाले प्रत्येक उतार चढ़ाव अनुकूल और परिस्थिति को सहज भाव से लेकर उन सबमें निरलिप्त होकर ही शांति का vkfyxu fd;k tk ldrk g &

^^olUr vkxR; xr%@------@

vfi Rof; ân;ed LiUnUr u ofrA**[175]

इस प्रकार से इस कविता में शांत रस परिलक्षित होता है।

ek dk ;kn djr g, y[kd dk Hkko g fd ek viu i= dk fdlh Hkh fLFkfr e ihfMr gkr g, ugh n[k ldrh og doy orekuu gh ugh vfir Hkkoh ihMkvk dk Hkh nj dju dk i;kl djrh gA ek dk eeRo nlj thok dh fglk dju l Hkh viu i= dk nj djrk gA bruk gh ugh ek d fnoxr gku ij y[kd dh dYiuk &

''कदाचित्/ईश्वरस्य व्रणेषूपचारं/

dÙkeo@vEck@xrk Hkor LoxeA**[176]

यह कल्पना माँ के वात्सल्य के साथ–साथ जीवन की अपेक्षित शांति में माँ के योगदान को चित्रित करती है। परम शांति के आधार पर ईश्वर के भी स्वास्थ्य की चिंता करना परम शांति को प्राप्त करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। इस प्रकार से डॉ॰ माधव ने शांत रस को बM gh okRlY; e fHkxkdj mnHkkflr fd;k gA

शांति की प्राप्ति के विषय में डॉ॰ ek/ko fy[kr g &

''अवकाशसंस्था 'नासा' अपि

न जाानात्येकाकिनः शून्यावकाशम्।''[177]

कहने का आशय यह है कि जितनी भी वैज्ञानिक उन्नति है वह शांति का अन्वेषण नहीं कर ldrh है। शांति का अन्वेषण तो हृदय का भाव है जो कि सहज जाग्रत होता है। वास्तविक शांति की प्राप्ति के लिए एकाकी होकर शून्यावकाश में विचरण करना होता है। इस प्रकार से शांति की महत्ता बताते हुए शांत रस के बारे में लेखक का विमर्श प्राप्त होता है।

vnHkqr jl &

आश्चर्य की उपस्थिति वहाँ होती है जहाँ कुछ अनपेक्षित की प्राप्ति होती है और ऐसे स्थान पर अद्‌भुत रस का उद्‌भव होता है। स्पर्शलज्जाकोमलास्मृतिः ग्रन्थ में डॉ- ek/ko fy[kr g &

^^ik#"k iyk;r@Dyhcd¥pd ifj/kk;@
शतघ्नीभिः रक्ष्यते नगरभित्तिः/
u ohjrk;k v{kr;kfu%A**[178]

ये दोनों ही उलटबाँसियाँ हैं क्लिबत्व का आश्रय लेना पौरुष के लिए एवं मशीनगन के होने पर भी वीरता पर संशय करना अद्‌भुत रस को जन्म देता है।

Mk- ek/ko d fy[k gkbd &

^^f[kLrefUnj
flDFkofr% & oir
iki ân;A**[179]

में पुण्यस्थान पर पाप का अर्जन करना दर्शाया गया है जो कि आश्चर्य को उत्पन्न करता है। ;|fi oreku le; e ;g yxHkx lolkekU; vkj lo= nf"Vxkpj gkrk g rFkkfi lkfgR; d nf"Vdk.k l ;gk ij vnHkr jl curk g &

''शान्तिरस्ति

v.kqckEcL; cká iVyeA**[180]

fy[kr g, Mk- ek/ko u vnHkr dk Bhd mlh rjg mnHkkfIr fd;k gA

''अत्रापि सिंह आसीत्/किन्तु/अधुना/केचित् शृगालाः/

fuoIUR;=@;u@jfprfen fIgLefrefUnj@LoknLiR;A**[181]

bI idkj I fy[kdj Mk- माधव वर्तमान आश्चर्योत्पादिका परिस्थिति को दर्शाते हैं कि किस idkj I leFk 0;fDr d tku d ckn mId pkVdkjk }kjk mI leFk 0;fDr d uke I LefrefUnj ;k VLV cukdj mId /ku vkj mId eku&IEeku dk n:i;kx fd;k tkrk gA bIh rjg &

^^bnefLr ik=e]
ry ukfLr
g x#o;! ! fd f{kifI rfLeuA**[182]

यह काव्यांश भी अद्भुत रस का निदर्शन है।

कदाचित् शीर्षक से लिखी गई कविता –

''निशा दीर्घदिवसा भवन्ति कदाचित्/----@
अहो ! हस्तरेखा दशन्ति कदाचित्।''[183]

e fofHkUu myVckfI;k ,o vIHkok dh dkeuk dh xb g bIe tc Iehi gkdj Hkh nj jguk fy[kk tkrk g rk og vnHkr jI dk ifjpk;d gA

fd, x, IE; i;kI d ckn Hkh Icf/kr 0;fDr d }kjk frjLdkj vFkok foijhr ifrfØ;k nuk eu dk dfBr djrk g vkj Iân; ikBd d fy, ,Ih ifjfLFkfr vnHkr jI dk mifLFkr djrh gA bI Iri= d.k d ek/;e I 0;k[;kf;r fd;k x;k g&

^^e;k lnko Ro; ikfFkZrk@----@

j.k xPNUrh ;k lajLorh] lk Roeokf·flA**[184]

ekuo LoHkko eyr% lkekftd rk l ofLVr g fdUr lafpr lkp Hkh ekuo LoHkko dk gh ,d y{k.k g tk fd fdlh e de vkj fdlh e अधिक मात्रा में प्राप्त होती है। शनैः शनैः यह lafpr ekufldrk ykyp ,o djhfr;k e cn dj ijEijk dk Lo:i /kkj.k dj yrh g vkj ijEijk dk ikyu djr g, ge cj dk;k ij Hkh iQfYyr gk tkr g tlk fd iLrr dfork o;e e g &

^^o;l Lokrl«;fiz;k%@-----@

o;l dk ufUofr dk tkukfr crA**[185]

vnHkr jl iLrr mnkgj.k e lgt g tc Mk- माधव लिखते हैं कि स्वतंत्रता प्रेमी पशुओं dk lxgky; e j[kdj ge ilUu gkr gA fdlh nlj O;fDr dk dkjkxkj e Mkydj U;k; djr gA fHk{kd dk nk rhu d:.kki.k opu lukdj Lo; okrkudfyr Hkktuky; e Hkktu djd lrq"V gk tkr gA L=h yiV gkdj Hkh Lo; dk /kkfed fn[kkr g diV d }kjk lfpr /ku l i.; dk vtu djuk pkgrh g vkj lUnj i"i dk rkMdj l?kdj u"V djd viu vkidk lkUn;ieh dgykr g ;g vnHkr gh gA

eLrde dfork e Mk- ek/ko u fy[kk g

''वैतालपञ्चविंशति कथायाम्/एकस्य मस्तकं द्वितीयस्य कबन्धे

f}rh;L; eLrd iFkeL; nag@yXu Hkofr@;fn lR;l u

मन्यसे कथेयम्/तर्हि/पश्य/सत्यासत्ययोर्देहयोः/विपर्ययमिमम्।''[186]

,d /kM ij nlj dk flj vkj nlj d /kM ij igys O;fDr dk flj yxkuk vnHkr jl dk fo/kk;d gA

^^efu [kkfnrekxrk; jk{kl k;

efunÙkoku n;keA**[187]

bl idkj fy[kdj Mk- ek/ko u ,d gh okD; e vnHkr jl dh yfC/k djk nh gA fujhg शक्तिहीन मुनि को खाने d fy, vk, g, ujHk{kh jk{kl dk efu d }kjk n;k inku djuk आश्चर्य ही है।

'अहो बत ! आश्चर्यम्' शीर्षक से लिखे गये काव्य में डॉ- माधव ने आश्चर्य के कतिपय mnkgj.k iLrr fd, g o fy[kr g &

''ध्वंसावशेषु/-----@

अहो बत ! आश्र्चमेतत्।''[188]

o.kk :<xfUFk% e Mk- माधव ने आश्चर्य का यथायोग्य प्रयोग किया है। कवि के द्वारा thouchek ifrfuf/k l dh xb fofHkUu chek vi{kk, vnHkr jl dk mRiknd g&

^^g thouohek&ifrfu/k@----@

ro lehiA**[189]

bld vUrxr Hk[k l;kl dRrk fitj e c/k ex efx;k] Hkkj <ku oky ÅVk] lUnj i"ik] if{k;k] eNfy;k] e<dk] dcrjk vkfn d fy, thouchek ifrfuf/k l dh xb ikFkuk vnHkr jl dk mRiUu djrh gA oreku lnHk e foKkiuk d vkf/kD; dk fpf=r djr g, Mk- ek/ko u &

''न्यायालयाद् बहिः/सत्यस्य द्रव्यकोशः/कस्यापि मुखाद् वियुक्तः/

foLer% dukfi okDdhyu@nf"kr% dukfi lkf{k.kk@mif{krk@

U;k;yf[kU;k@xfgrO;k@;fn pr Loifjp% lehi Hkor@-----@

egkfo|ky;&ikx.k"kA**[190]

इस प्रकार से न्यायालय एवं शोकसभा के mk/;e l ;Fkk;kX; ifjfLFkfr d vHkko ij आश्चर्य करते हुए व्यंग्य कसा है जो कि अद्भुत रस का श्रेष्ठ उदाहरण है।

विज्ञापन की तरह समाचार पत्रों में प्रकाशित कुछ समाचारों को भी आश्चर्य की श्रेणी में रखा tk ldrk g &

^^xrfnu ij"k tuiknryefnr@,dy{k fiyhfydkuk
पञ्चत्वमुपगतम् / कार्यालयेषु / पञ्चविंशतिसहस्त्रेण
dekfjfHkek/;kgu gkjk}; ;kou@funk ikIrkA@-----@
Lo lodH;%A**[191]

जैसा शासकीय कार्यालय, हत्या, नेता और पत्रकार, आरक्षण, सम्पादक, घूस एवं आतंकवाद dk mud ijLij fojk/kh ifjfLFkfr;k e mRiUu होने को दर्शाया गया है जिससे कि अद्भुत रस mRiUu gkrk gA

lnHk xFk & ipe v/;k;

1- f=ikBh] ik- Mk- राधावल्लभ, आधुनिक संस्कृत की नई दिशाएँ, पृ- 14&15
2- संस्कृत साहित्य, बीसवीं शताब्दी, पृ- 165
3- शर्मा, प्रो- gfjnÙk] vk/kfud lLdr dh ub दिशाएँ, पृ- 38
4- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 2
5- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 2
6- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 16
7- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 18
8- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पशkyTtkdkeyk Lefr%] i- 19
9- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 27
10- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 30
11- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 33
12- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 33
13- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 36

14- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 55
15- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 105
16- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 57
17- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृr%] i- 76
18- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 81
19- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 89
20- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 99
21- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 110
22- ek/ko Mk- g"kno] स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 133
23- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 136
24- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 133
25- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 152
26- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 153
27- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 154
28- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 164
29- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 164
30- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 164
31- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जkdkeyk Lefr%] i- 165
32- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 174
33- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 176
34- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 176
35- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 179
36- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 197
37- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 202
38- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 11&12
39- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 18
40- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 18&19
41- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 21&22
42- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 26
43- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 31

44- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 34

45- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 36&37

46- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 38

47- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 47&48

48- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 49&50

49- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 51

50- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 52

51- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 59

52- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 72&74

53- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 123

54- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 129

55- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 131

56- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 133

57- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 134

58- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 140

59- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 141

60- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 150

61- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 152] 154

62- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 157

63- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 160

64- ek/ko Mk- g"kno] rFkkLr] i- 24

65- lc dN dk fu"Øe.k] g"kno ek/ko dh dfork] ik- jk/kkoYyHk f=ikBh] i- 11

66- nd] vd 2] i- 38

67- रथ्यासु जम्बूवर्णनां शिराणाम्, पृ- 37&40

68- ek/ko Mk- हर्षदेव, मृत्युशतकम्, पृ- 25

69- ek/ko Mk- हर्षदेव, मृत्युशतकम्, पृ- 29

70- ek/ko Mk- हर्षदेव, मृत्युशतकम्, पृ- 41

71- dekj lEHkoe] 1@59

72- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 70

73- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 68

74- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 74
75- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 139
76- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 144
77- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 151
78- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 153
79- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 154
80- झा गोविन्द, शाश्वत श्रृंगार का अमृतोपम ज्वर, भा- t- i- 9
81- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 108&109
82- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 25
83- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 51
84- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 51
85- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 149
86- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 2
87- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला Lefr] i- 12
88- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 16
89- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 46
90- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 50
91- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 62&63
92- ek/ko Mk- g"kदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 69
93- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 72
94- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 81
95- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 82
96- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 46
97- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 160
98- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 166
99- vkg tk Mk- सुदेश, आधुनिक संस्कृत की नई दिशाएँ, पृ- 297
100- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 11
101- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 16&17
102- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 23&24
103- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 26

104- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 165
105- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 39&40
106- ek/ko Mk- g"kno] स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 41
107- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 76
108- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 23
109- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 27
110- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 2
111- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 2
112- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 4
113- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 5
114- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 10
115- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोeyk Lefr%] i- 23
116- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 38
117- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 25
118- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 77
119- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 77
120- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 147
121- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 176
122- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ-4
123- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 4
124- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 12
125- ek/ko Mk- g"kदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 34
126- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 34
127- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 103
128- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 108
129- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, प- 34
130- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 103
131- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 108
132- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 158
133- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk%] i- 16&17

134- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 25
135- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 85
136- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 112
137- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 147
138- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 119
139- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 30
140- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 47&48
141- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 137
142- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 137
143- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 145
144- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 137
145- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 2
146- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 5
147- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 12
148- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 13
149- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 41
150- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 62&63
151- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 136
152- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 164
153- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमलk Lefr] i- 165
154- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 11
155- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 30
156- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 92
157- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 95
158- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 158
159- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 69
160- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 133&134
161- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 152&153
162- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 152
163- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 44

164- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 139

165- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 142

166- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 146

167- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 23

168- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 37

169- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 38

170- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 72

171- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 15

172- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलT tkdkeyk Lefr] i- 62&63

173- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 24

174- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 90

175- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 97

176- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 113

177- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 126

178- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 2

179- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 12

180- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 30

181- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 51

182- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 72

183- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 92

184- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 95

185- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 97

186- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला Lefr] i- 107

187- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 159

188- ek/ko Mk- हर्षदेव, स्पर्शलज्जाकोमला स्मृतिः, पृ- 167

189- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 11&13

190- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 31

191- ek/ko Mk- g"kno] o.kk :<xfUFk] i- 41

ipe v/;k;

Mk- g"kno ek/ko dk lLdr lkfgR; e LFkku

काव्यशास्त्रीय दृष्टि से –

Mk- g"kno ek/ko ijEijk dfo ijEijk d vk/kkj ij vkx ugh c< g] mUgkus dkO; lc/kh ijEijkoknh nf"Vdk.k dk NkMdj uohu ijEijk dk vkRelkr fd;k gA Mk- ek/ko u ikphu काव्यशास्त्रीय परम्पराओं के स्थान पर आधुनिक प्रयोगधर्मी सृजनात्मक मूल्यों एवं नवीन समस्याओं, संवेदनाओं को अपने काव्य में नये शिल्प के साथ प्रस्तुत किया है। अपनी कविता में डॉ- ek/ko u uohu irhdk] fcEck o feFkdk dk lfEefyr fd;k g tk ;FkkFk ij vk/kkfjr g vkj ikphu dfork dh ijEijk l cgr nj gA

Mk- हर्षदेव माधव अपनी कविताओं में व्यापक विषयों को लेते हैं तथा प्रयोगशील रूप में इन्हें iLrr djr g] tk ledkyhu leL;kvk ,o lonukvk dk idV djrh gA fo"k;k d p;u e नवीनता तथा नवीन दृष्टिबोध माधव की कविताओं की विशेषता है। प्रो- dUnu ekyh d vulkj ^^g"kno dh dfork lLdr dkO; e uoioru dk lEHko dju okyh dfork ekuh tkuh pkfg;A lfUy"V rFkk lkoHkkfrd pruk lEiUu ifrHkk d ltukRed :ikUrj.k dh nf"V l ;jpuk;a g"kno dh dfork dk lLdr dh ledkyhu dfork dh ifrfuf/k dfork cukrh g vkj tk lLdr dh <kpkc) dfork l Lo; dk eä dju okyh dfork dk mnkgj.k cu tkrh gA**[1]

^o.kk :<xfUFk%* ledkyhu dfork dk ifrfuf/kRo djrk हर्षदेव माधव का सद्य प्रकाशित dkO; ldyu gA bl ldyu e thou d vuN, igyvk dk vfHkO;Dr djrh gb 120 dfork, हैं। कवि ने काव्य संकलन का शीर्षक तो 'व्रणो रूढग्रन्थिः' दिया है, परन्तु वर्तमान में समस्त lonuk; lekIr gk x;h g vr% o.kxfUFk iLQfVr u gkdj Lo; thou dk i;k; cu x;h gA

यूं भी बाह्य अर्थात् शरीर पर लगे घावों का उपचार तो संभव है, किन्तु हृदय पर लगे आघातों का dkb mipkj ugh gkrkA bl ihMk l dkb rÙock/k ;k c)Ro dh ikfIr Hkh ugh gkrhA

o.k o.k
tk;r u rÙockk/kk
n#[ku c)Roefi u tk;r
शनैश्शनैर्विस्मृतं भवति जीवितम्।
doy
:<xfUFkoz.kk Hkofr uue
vfLrRoj.ki;f.kA

'व्रणो रूढग्रन्थिः' काव्य संकलन के द्वितीय खण्ड में 'अलकनन्दा' शीर्षक से कुछ कवितायें ldfyr gA vyduUnk dfo dh og fn0; i;lh g] tk thou dh fo"kerkvk d e/; thou thu dk vkyEcu o vk/;kfRed vuHkfr inku djrh gA ik- राधावल्लभ त्रिपाठी के शब्दों में 'ध्वंस को स्वीकार कर लेने के बाद ही उसकी खोज आरंभ होती है, जो सार्थक है और अभी शेष है। हर्षदेव ने इस शेष सार्थक बचे dk ^vyduUnk* dgk gA**[2]

'अलकनन्दा' कवि की जीवन सर्वस्व, वह शाश्वत संवेदना है, जो कविता के माध्यम से उसे uothou inku djrh gA g"kno ek/ko dh ^vyduUnk* HkoHkfr d ^ijk ;= L=krk* dh d#.kk dk ydj ck.kHkVV dh ^dknEcjh* dk iu thou inku djrh g &

vyduUnk !
आसीद् यत्र पुरा स्त्रोतस्तत्रैव मे शवं पतितमस्ति।
ek iu thou nkr
dknEcjhor iujfi i;PN e

o l Urk··fogdkj l ipdi pEcueAA[3]

प्रणयिनी 'अलकनन्दा' के प्रति कवि का स्नेह जन्म–जन्मान्तर का है, वह देशकाल की lhekvk l c) ugh g] og rk lkj0; dh idfr o dkj.kjfgr i#"k dk feyu g tgk leLr dkeukvk dk y; gk tkrk g &

vfLeu ,dkUr tk;r dkeukuk y;%
Ro Hkofl urykpuk idfr&
jg i#"k% dkj.kjfgr%
fd;ueuorjkÙkj
iujfi
yC/k RoR lfu/kk tEco.kedkUre
vydu Un![4]

^o.kk :<xfUFk%* dk0; ldyu dk rrh; [k.M ^ex;k* gA dfo u eu"; d ml exRo ¼y?k :i½ dh ppk dh g] tk Lo; d lkeu vU; fdlh fo"k; e lkp gh ugh ikrhA oreku e भय व संत्रास में जी रहे मनुष्य की तुलना उन्होंने 'मृग' से की है। 'शिकारी के बाण के भय से Hk;rhr ex dh y?krk&Hkh:rk&nhurk okLro e oreku eu"; dh eukxfUFk;k dk i;k; cu x;h gA y?k l efä d fy, exRo l efä gh ekuk ,dek= fodYi gA**[5] oreku e vkrdokn] i;koj.k] in"k.k] ikUrh;rk] uDlyokn vkfn leL;k; ex;k d gh uolLdj.k gA ex dh eR; gh ex;k dk Qy g &

0;k/kkuk ukekfu ifjorukf/kxPNfrA
fdr
exL; eR;ex;;k% QyefLrA[6]

यही कारण है कि 'दिशः' कविता में कवि हिमालय से मस्तक, समुद्र से वेदना का विनाश, l; l dey dk mUehyu] ty dh ip.M mfe;k e Lo; dk LFkkfir dju dh ikFkuk fo"k; ifjfLFkfr;k e thou thu dh vnE; thftfo"kk dk Lokxr gA

'मानचित्र पूरण प्रश्नः' में वर्तमान व्यवस्था के सम्बन्ध में किये गये प्रश्न हैं। वास्तव में भारत के मानचित्र पर ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ गरीबी, भ्रष्टाचार, रिश्वत और अनैतिकता न हो। blh idkj ^gLrk* dfork e dfo u eEcb d egkuxjh; thou dh fofHkf"kdkvk dk o.ku fd;k gA रेल के डिब्बों में लोहदण्ड ग्रहण करने में व्यस्त हाथ, नेपीयन्सी के रास्ते पर रेडलाइट के प्रकाश में बढ़ते कामुक हाथ, 'धारावी' में श्रमिकों के घरों में शराब की बाry [kkyr gkFk] ckcyukFk efnj ij fHk{kk d fy, Qy gkFk] HkhM e ;kf=;k dh ikdV ekjr gkFk vkj ^ejhu Mkbo* e ;U=xfr ikIr gkFkk d vuojr l?k"k dk n[k dfo bl fu"d"k ij igprk g fd &

,r"k gLr"k
thouj[kk u lfUr]
doy lfUr eR;j[kkA

इसी प्रकार 'बाउलकाव्यम्' कवि का नवीन प्रयोग है। 'बाउलकाव्यम्' बंगप्रदेश का भक्ति गायन है जिसका संस्कृत कविता में कवि ने प्रयोग किया है। कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि हे ईश्वर ! तुम तो हमेशा मुझे बुलाते हो, मैं ही आकांक्षाओं से बद्ध तुम्हारी vkokt ugh lu ikrkA

g eulk eu"; !
तव शब्दोऽपि श्रुतः
fdr ee fpÙk gfjrr'.k"k li.k; fuolfr LeA[7]

ईश्वर के लिए दिया गया संबोधन इस बात का सूचक है कि मन ही है जो मनुष्य को उस rd igpu e ck/kd cu tkrk gA

i;koj.k in"k.k Hkh dfo dh fprk dk fo"k; gA tgk igy gj Hkj o{k Fk] vc ogk fjä Hk&Hkkx fn[kk;h nr g] tgk unh Fkh] ogk fIQ jr gA tgk /kku d <j Fk] ogk dN frud बिखरे हैं। जहाँ घर था कुछ ईंटे व टूटी दीवारें हैं। जहाँ कभी शब्द थे वहाँ अब मौन कदम्ब है तथा Lotu eg ekM dj py x; gA bl idkj vufxur ?kko g ftudh x.kuk ugh dh tk ldrh gA

Mk- g"kno ek/ko dh dforkvk e ijEijkvk d uokUe"k d lkFk vk/kfud ifji{; e अभिव्यंजन उनकी विशेषता है। प्रो- jk/kkoYyHk f=ikBh dgr g fd ^g"kno dh dfork d uiF;xg e ; lkjh ijEijk;] ekU;rk; o vo/kkj.kk; mifLFkr gA o uo&lf"V d fy, ;Fkkolj budk vkokgu djr gA**[8]

leh{kdk dh nf"V l &

Mk- हर्षदेव माधव संस्कृत कवियों में नव–शैली के प्रवर्तक के रूप में अपनी ख्याति अर्जित dj pd gA Mk- ek/ko dh dfork, lLdr dfork dk vk/kfudhdj.k iLrr djrh gA vkidh कविताओं में छन्दों का अभाव रहता है, इसके पश्चात् भी कविता में एक नवीन प्रयोग का समावेश gkrk gA ik- हरिदत्त शर्मा कहते हैं कि ''माधव कवि अपने काव्य में नये नये प्रयोगों का प्रयोग djrk g] eDr NUn d fofp= peRdkj dk idV djrk g] irhd] ldr rFkk xf.krh; lKkvk से भाव का प्रकाशन करता है तथा पारम्परिकता का परित्याग कर भाव एवं भाषा की अपूर्ण सारणी dk vulj.k djrk gA**[9]

g"kno ek/ko gekj le; d lcl vf/kd lkglh lLdr dfo;k e vU;re dg tk ldr gA o io ipfyr vo/kkj.kkvk] ekU;rk;k] ijijkvk dk viuh dfork d jxep l ckgj fudky dj d fQj jpuk dk vkfoHkko djr gA ij ftl idkj vd d vr e ik= iLFkku dj d in

d ihN ;k uiF; xg e ektn jgr g] mlh idkj g"kno dh dfork d uiF;xg e ; lkjh ijijk, o vo/kkj.kk, mifLFkr gA o uolf"V d fy; ;Fkkolj budk vkgokgu djr gA[10]

Mk- हर्षदेव माधव की कविता देशकाल की क्षुद्र सीमाओं से परे वैश्विक चेतना का स्पर्श djrh gA og viuh dfork e 0;kid विषयों को उठाते हैं तथा नवीन प्रयोगशीलता, संवेदनात्मकता तथा विश्लेषणपरकता के साथ प्रस्तुत कर व्यष्टि से समष्टि की यात्रा तय करते हैं। प्रो- dUnu ekyh के शब्दों में 'हर्षदेव की कविता संस्कृत काव्य में नवप्रवर्तन को सम्भव करने वाली कविता मानी जानी pkfg;A lश्लिष्ट तथा सार्वभौतिक चेतना सम्पन्न प्रतिभा के सृजनात्मक रूपान्तरण की दृष्टि से ये jpuk; g"kno dh dfork dk lLdr dh ledkyhu dfork dh ifrfuf/k dfork cukrh g vkj tk lLdr dh <kpkc) dfork l Lo; dk eDr dju okyh dfork dk mnkgj.k cu tkrh gA**[11]

ik- हरिदत्त शर्मा कहते हैं कि ''वे (डॉ- g"kno ek/ko½ fujUrj fy[k jg g] mRd"V dkfV dk fy[k jg g vkj fy[kr tk jg gA mud dfoRo dk fdlh lhek e ugh ck/kk tk सकता । वे विश्व के किसी भी भूखण्ड पर काल्पनिक उड़ान भर वहाँ का शब्दचित्र खींच nr g] ekuo&tkfr d fdlh Hkh ox d vUreu e iBdj mldh ihMk dk idV dj nr gA o ikjEifjd NUn d cU/ku e ugh g] fQj Hkh mudh dfork ^uo xfr uo y;] rky NUn uo* dh fuR;&uohurk l 0;kIr gA o dk0; dh Hkk"kk e ekuo&lonuk d xk;d g] ukjh&pruk d समर्थक हैं, तथा दलित–पतित के पथ–प्रदर्शक हैं। वे आधुनिक काव्यभाषा में प्रगतिवादी भी हैं और i;kxoknh HkhA mudk dk0;fpUru lektokn dh vkj mUe[k g vkj ekuookn dh vkj HkhA Hkko] Hkk"kk] NUn ,o vydkj lc e mud u; i;kx g, gA mudh dfork e foy{k.k fcEc&fo/kku एवं अद्भुत प्रतीक–प्रयोग हैं। वे वैश्विक चेतना के कवि हैं और संस्कृत–कविता को उन्होंने वैश्विक /kjkry ij igpk;k gA o vk/kfud lLdr d ;xn"Vk] ØkUrn"Vk ,o Økfrdkjh dfo gA[12]

Mk- सुदेश आहुजा का कथन है कि ''उudh dforkvk e dgh nfyr dh ihMk g] dgh vlo.kie dh ihMk] dgh cg dh ihB ij lkl }kjk fd; x; o.k gA igkj dh ihMk rk dgh शराबी पति द्वारा वक्षस्थल पर दिये गये सिगरेट के दाह के चिह्न, कहीं कन्या भ्रूण हत्या के घाव, इन lHkh dh ihMk ikBd d jkxV [kM dj nrh gA i;koj.k in"k.k Hkh dfo dh fprk dk fo"k; gA tgk igy gj Hkj o{k Fk] vc ogk fjä HkHkkx fn[kk;h nr g] tgk unh Fkh] ogk flQ jr gA tgk /kku d <j Fk] ogk dN frud fc[kj gA tgk ?kj Fkk ogk dN bV o VVh nhokj gA tgk कभी शब्द थे वहाँ अब मौन कदम्ब है, तथा स्वजन मुँह मोड़ कर चले गये हैं। इस प्रकार अनगिनत ?kko g] ftudh x.kuk ugh dh tk ldrhA tc Økp feFku dh ihMk vkfndfo mRiUu dj ldr g rk oreku thou dh fo"kerkvk] volknk o vHkkok dh o.kihMk dk ngdj dkb Hkh dfo cu ldrk gA[13]

Mk- dUnu ekyh g"kno ek/ko d fo"k; e fy[kr g fd ^^g"kno ek/ko dh dfork dk ,d iLFkku fcUn bl Hkh ekuk tkuk pkfg, fd o pfjrdk0; dh ijEijk l vyx gV dj fcEc dk0; dh jpuk djr g vkj pkg mudh ; fcEc कविताएँ शिल्प के दृष्टिकोण से बहुत प्रभावकारी न भी हों, तथापि इनकी सहज संवेदन तथा विचार की प्रवाहमयता तो अवश्य ही ध्यान vkd"V djrh gA

lkekftd] jktufrd] lkLdfrd rFkk vk/;kfRed ifji{; dk ydj ek/ko dk dfo eu [kklk lpru rFkk lfØ; utj vkrk g vkj ,d txg vkdj og llkj dh fuLlkjrk ij dfUnr gk tkrk gA vkfLrdrk fdlh Hkh eu"; d thou dk cgn futh i{k g] yfdu ;gk /;ku nu dh ckr ;g g fd dfo fdlh oFkk&Hkkodrk dh piV e u vkdj 0;kid ifji{; e gh vk/;kfRedrk dk j[kkfdr dju dk miØe djrk g vkj ,lk gku ij mldk dk0;Loj Hkh संयमित तथा आश्वस्तिकारक बन जाता है। यही बात किसी कवि को स्वीकार्य बनाने में सहायक

fl) gkrh gA Lor= pruk lEiUu dfo viu le; dh reke vuxtk dk ludj mUg viu jpukRed roj d lkFk vfHkO;Dr djrk g vkj ;gh pruk ml viu le; dk ifrfuf/k Loj cukrh gA ;gh dkj.k g fd ek/ko ,d dfo d Lrj ij jktejk dh NkVh&NkVh mu reke ?kVukvk l iHkkfor gkr g] ftul vk/kfud thou vkj vf/kd vljf{kr] vfLFkj rFkk ppy ,o vkRedfUnr cu x;k utj vkrk gA [14]

शिवकुमाj feJ dk dFku g fd ^^dfo ek/ko viuh vfHk/kk e dN dgr gh ugh g] o हमेशा सादृश्यों में बात करते हैं, वह भी नयी–नयी वचन–भंगिमाओं के साथ। उनके गहन विचार एवं भाग–श्रृंखलाएँ संवेदना का संस्पर्श पाकर बिम्बों, प्रतीकों और मिथकों में ही आकार ग्रहणk djrh gA इसीलिए उनकी कविताएँ छोटी होती है और मर्मस्पर्शी भी। आज के भागमभाग की दुनिया में छोटी jpukvk dk fdruk egRo g] ;g fdlh l vfofnr ugh gA blfy, o viuh ih<h d vU;re jpukdkj gA**[15]

e- e- देवर्षि कलानाथ शास्त्री कहते हैं ''मुझे यह देखdj gekjh vkjk/;k fpj;orh गीर्वाणवाणी की अजरामरता पर पूरा विश्वास हो गया है कि स्वतंत्रता के बाद जन्म लेने वाले नई पीढ़ी के कवि कहे जाने वाले प्रगतिशील कवियों की एक सबल जमात आज भी उभर रही है जो हम tl lLdr lodk dh bl fpUrk dk mRd"V mipkj dj ldrh g fd bl ;x e /khj /khj lLdr dk vtL= thoUrrk dh /kkjk l[k u tk,] lLdr bfrgkl e gh u jg tk,A u; dfo lkeu vk jg g vkj mud ie[k ij.kkL=kr g Mk- g"kno ek/koA**[16]

निश्चित रूप से हर्षदेव की कविता की भाषा रचनात्मकता की जटिल चुनौतियk l t>r ,d ledkyhu lLdr dfo dh Hkk"kk gA ikjifjd lLdr dfork e ,d inRr inkoyh dk nkgjko yxrk gA g"kno u viu dk0; e vud= ikphu lLdr dk0; l vk; g, ink dk i;kx u dj d u; ink] egkojk vkj vfHkO;fDr;k dk l/kku fd;k gA l/kku dh ifØ;k ,d

dkj.k vud= vux<iu Hkh mue gA ij bl ifØ;k u vkt dh lLdr dfork dk vNrk Hkkock/k Hkh fn;k gA[17]

Mk- सुदेश आहुजा का कथन है कि ''समकालीन संस्कृत कविता अपने नवीन परिदृश्य व नये Hkkock/k d lkFk foÜo jxep ij mrjh gA ikphu काव्यशास्त्रीय परम्पराओं को अस्वीकार करते g, uohu i;kx/keh l tukRed eY;k d lkFk] uohu lonukvk dk viu e lekfgr fd;] u; शिल्प व नये तेवर के साथ संस्कृत कविता अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। नये प्रतीकों, बिम्बों व feFkdk d lkFk vfr ;FkkFk d /kjkry ij l?k"k djrh gb ledkyhu lLdr dfork u bl /kkj.kk dk fuey dj fn;k g fd og ijEijkoknh <j ij py jgh ijkuh dfork gA ikphu अवधारणाओं के ध्वंस के बाद नवनिर्मिति आवश्यक है। विद्रोह एवं विध्वंस की नींव पर निर्मित एवं ioreku 0;oLFkk ,o e्ल्यों के सम्मुख संशयात्मक तथा कला और विचार के क्षेत्रों में क्रांति लाने oky ijkokLrookn dk vorj.k lLdr e gk ld] ;g Hkh ,d Økfr gA ;fn dgk tk; fd bl क्रांति की मशाल लेकर संस्कृत कविता पर सफल प्रयोग करने वाले कवि हर्षदेव माधव है तो अतिशयोक्ति नही gkxhA[18]

jhrk f=onh ^ex;k* dh leh{kk djr g, dgrh g fd] ^^idfr dh lfUuf/k eu"; d अस्तित्व की अनिवार्य आवश्यकता है। लेकिन मनुष्य विज्ञान की क्षितिज पर पहुँचा है, लेकिन वहाँ से प्रकृति के मूलतत्त्वों का नाश होता है। मनुष्य की धरातल के तत्त्व दया, निर्दोषता] ie] d:.kk vkfn का ह्रास होता है। उनको कवि 'मृगया' के प्रतीक से दर्शाते हैं। प्रदूषण, रसायन, प्रदूषित नदीजल, अणुबॉम्ब आदि। यहाँ कवि श्री 'प्रतीक्षा' शब्द का प्रयोग करके अपनी तीव्र संवेदनाओं को प्रकट करते gA**

ledkyhu lkfgR;dkjk dh nf"V l &

vk/kfuक संस्कृत साहित्य अपने रचनाशिल्प एवं भावबोध से अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा gA ikphu ekU;rkvk l t>dj uohu eY;k dk LFkkfir dju dk Lolu vkt d lkfgR; l tid d fy, [kyh pukrh gA D;kfd ijEijkxr bUgh uojlk] vkB LFkk;h Hkko] ,o rrhl 0;fHkpkjh Hkkok l u;h lonuk d fp= [khpuk cgr gh n"dj dk; gA uolLdj.k dk :ikf;r dju d लिए उसके शाश्वत दृष्टिकोण में कुछ परिवर्तन अपेक्षित हैं। लेकिन परम्पराओं से हटकर जब भी किसी साहित्य साधन ने नये क्षितिज की उड़ान भरी है, तब ही उसके पंखों की शक्ति vkj lkgl पर प्रश्नचिन्ह लगे हैं। उसकी उन्मुक्त सोच एक ओर परम्परावादियों को काव्यशास्त्र का उल्लंघन irhr gkrh g vkj nljh vkj uoftKklvk d fy, vuly>h igyh cu tkrh gA ,l e g"kno ek/ko tlk yhd rkMdj pyu okyk dfo vkykpdk dh HkHkfxek l dl cp ldrk g \

viuh lkfgR; lk/kuk l vokphu lLdr txr dk LrC/k dj nu oky bl lk/kd u विश्वमंच पर अपनी एक पहचान दी है। उनका इहलौकिक प्रेम कब सोपान तय करता हुआ परमात्म fpUru e cny tkrk g bldk vueku vUr rd ikBd ugh dj ikrkA ,l peRdkfjd fpUru d /kuh Mk- g"kno ek/ko u viu 0;kid o.;fo"k; dk fp=kRedrk] bfUn;xkárk vkj lkE; lkUn; l ltkdj vU; Hkk"kh; lkfgR; d e/; vfxe ifDr e cBku dk Jelk/; dk; fd;k gA[19]

vpuk frokjh dk dFku g fd ^^g"kno ek/ko dh dfork uohu iHkkokRikndrk vkj शिल्पगत प्रयोगशीलता, संवेगात्मक तरलता और मार्मिक सांकेतिकता, चित्रोपम प्रतीकात्मकता और ân;kotd fcEckRedrk] lpru ;FkkFkrk vkj vk/kfud ltukRedrk dh okfgdk gA ;gk ccl] खिन्न, हताश, पीड़ित, व्यथित मानवमन के असंख्य प्रतिबिम्ब है। विकास की प्रक्रिया e vkx c<r lekt dh ihN NVrh tk jgh dkey lonukvk dh [kud ;gk ix&ix ij lukbl nrh gA

यांत्रिक होती जा रही सामयिक व्यवस्था से त्रस्त मानवजीवन की विषमताओं, विवशताओं, निराशाओं vkj fujUrj c<rh tk jgh fjDrrkvk dk l{e vdu dfo d dk0; txr की विशेषता है।''[20]

vk/kfud lLdr lkfgR; e tc Hkh lkFkd dfork dh ckr pyrh g] g"kno ek/ko की रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं। कम शब्दों में भावों की लड़ी पिरो देना उनके लिए dkbl dfBu dk; ugh gA mUgkau ik;% mUgh lkef;d fo"k;k dk mBk;k g tk thou dk dMok सच कहते हैं। वस्तुतः हर्षदेव माधव ऐसे अपारम्परिक कवि हैं जो पाश्चात्य जीवन एवं समाज से lUnHk ydj lLdr dfork x<r g] ;FkkFk l tMdj viuh ckr dgr g pkg og fdruh gh dMoh D;k u gkA dHkh&dHkh dfo ek/ko dh ckr bruh rh[kh gkrh g fd fcuk dN dg lh/k ân; rd viuk vlj fn[kkrh gA og vfHk/kk e dN ugh dgr] ijUr mud mieku vkj mie; d chp bruk vPNk rkyey gkrk g fd ikBd ml 0;X; ij eLdjk mBrk gA

Mk- g"kno ek/ko dh igpku lLdr&lkfgR;&txr e ,d peRdkjh] vnHkr vkj नवनवोनमेष प्रतिभा वाले कवि के रूप में सुविदित है। भारतीय प्रज्ञा, विश्वसाहित्य का सटीक परिचय, बिम्बविधान का कुशल प्रयोग, तन्त्र साधना का दर्शन, समग्र ब्रह्माण्ड की दिव्यादिव्य vfHk0;fDr vkj fofo/k 0;tukvk dk mudh dfork e vnHkr lekxe gA

okLrfodrk dk fu:i.k djrh] vk/kfud thou&txr dh tfVyrkvk dk lgt Hkko l vfHk0;Dr djrh] 0;fDr eu dh iMrky djrh] lkef;d folxfr;k vkj foMEcukvk dk Loj nrh] tu&lkekU; dk lex :i l ifrfuf/kRo djrh g"kno ek/ko dh dfork vkt lLdr&txr e ifrf"Br LFkku ikIr dj pdh gA lLdr&dfork dk le&lkef;d ekuoh; मन–मस्तिष्क से जोड़ते हुए कवि ने यहाँ नवीन काव्यशिल्प को नवीन भावाभिव्यक्तियों से ltk;k&lokjk gA

शिवकुमार मिश्र का कथन है कि ''जो साहित्य कुछ नया नहीं दे रहा हो, न तो कथ्य में और नहीं शिल्प में, वह साहित्य, साहित्य नहीं अपितु साहित्यभास है। सृजनशीलता और संवेदनीय रचना d ik.krÙo gA**[21]

uouhr t- जोशी कहते हैं कि ''अपने काव्यों में कवि ने मूर्तता, विशदता, उसे सिद्ध करने वाले कौशल और मुक्त लयविधान से उत्पन्न व्यंजना की सृष्टि की है, और यही rk fcEcoknh dfo dk ie[k y{k.k gA dkO; d Hkkok dk lo| cukdj] Hkko&lonuk dk errk inku djd mldk iR;k;u dju e gh mÙke fcEc dh lkFkdrk gA dfo g"kno d fcEcdkO;k e e[; dfode dkO;lkUn; dk fu"iUu dju dk gA mud fcEck e fp=kRedrk] HkkokRedrk] bfUn;xkárk] शब्दरूपकता जैसे उत्तम गुण प्रकट होते हैं। कविकर्म के अन्तराल में वस्तुजगत् और वास्तविकता का iR;kjki.k gvk gA dfo dh Hkk"kk e ckypky dh Hkk"kk dk iV feyk gvk gA dkO; miHkkx dh pht g vkj mldk l;ktu vkLok| fcEck l gku ij gh og ikBd dk ekfgr dj ldrk gA fcEcokn e ljy dkO;ok.kh dk vkxg blh dkj.k gh fd;k tkrk gA ckypky dh Hkk"kk e i;Dr fcEc fdlh Hkh oLr dk ikBdfpÙk e i.k :i l lØkUr dju dh {kerk j[krk gA dfork ikBd dk ver vFkfopkj d lkFk Vdjkdj ekj Mky] ,l fcEcokfn;k dk drb etj ugh gA**[22]

bl idkj ,dfcEch; dkO;fo/kk dk lLdr e viuk dj dfo g"kno ek/ko u lfn;k l बहने वाली संस्कृत की भाववाही धारा को एक नया मोड़ दिया है। नवनवोनमेष सृजनाशक्ति ने एक नये ही भावविश्व d }kjk)kVu dk dk; fd;k gA vokphu lLdr& uoy[ku dk miU;kl] कहानी, एकांकी, यात्रावृत्त, दैनन्दिनी तथा गीत आदि विधाओं तथा वैदेशिक प्रतिमानों पर प्रणीत lLdr dh gkbd] lhtk] lkuV rFkk xty&iHkfr dkO;dfr;k l fijk; tku okyh lkfgR;ekyk e एक नई मणि जुड़ गई है। आज के बदलते परिवेश में साम्प्रतिक समय और समाज के साथ

संस्कृत की सुसंगति कराने के लिए आवश्यक यह एक नया आयाम है, जो साहित्य के लिए प्रेरक cy Hkh cu ldrk g tgk lLdr vkt rd ugh igp ikbl Fkh] ,lh Hkko&Hkfe dk tkuu d fy, fd;k x;k ;g ,d uru ldr gA

Mk- मंजुलता शर्मा का कथन है कि ''वस्तुतः हर्षदेव माधव ऐसे अपारम्परिक कवि हैं जो पाश्चात्य जीवन एवं समाज से सन्दर्भ लेकर कविता गढ़ते हैं भले ही वह यह बात जीवन का कड़वा lp gh D;k u gkA ^o.kk :<xfUFk%* mudk blh idkj dk dkव्य संकलन है। जिसमें शब्दों के ऐसे ,fUn;fp= g tk ekuoh; Hkko vkj loxk l vuikf.kr gA ble irhdk dh vkHkke;h iLrfr jkpdrk dk c<krh gA ijku irhd vR;Ur :< gku d dkj.k mru lkef;d ugh g vr% vk/kfud ifjfLFkfr;k ,o ekuoeu dh eukoKkfud 0;k[;k dju d fy; uru irhdk d ltu की आवश्यकता अनुभव की जा रही है इसी को स्मृतिपथ में रखते हुए माधव ने व्रणो रूढ़ग्रन्थिः में lfpr onuk dk fofHkUu fcEck ,o irhdk d ek/;e l 0;Dr fd;k gA okLrfodrk ;g g fd bl xUFk e ?kuhHkत पीड़ा अनेक रूप लेकर दृश्यात्मक चित्रों के विधान से पाठकों को चमत्कृत djrh gA ?kkok dh xkB vR;Ur :< g] lekt dh fodfr;k vc ihfMr dj jgh g ,l e dfork dh /kkjk Hkh vc cnyu yxh gA**[23]

Mk- कश्यप एम- f=onh dgr g fd ^^dfo Jh g"kno ek/ko tUetkr dfo gA vki Jh dh fxjk l lLdr lkfgR; vkj txr /kU; gvk gA vkidk lLdr Hkk"kk dk tu lkekU; l tkMu dk i;kl ljkguh; gA oreku lekt vkj jk"V dh leL;k dk vuHko djd jk"V dh] lekt dh] vke turk dh lonukvk dk viuh fxjk e ixV djr g। उसमें आदर्श नहीं है, वास्तविकता gA vr% okLrookfnh dfo d :i e vki ifl) gA bu lonuk dk ixV dju e vki irhdk का प्रयोग करते हैं जो हृदयस्पर्शी, चोटदार और समस्या को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में, ध्वनि को 0;ä dju e J"B gA**[24]

Mk- ek/ko के काव्यों में प्रतीक में जो संवेदना प्रकट होती है उनको संवेदनशील भाव अप्रकट भावों का अनुभव कर सकते हैं। हर्षदेव माधव के ''मृत्यु शतक'' में ऐसे अप्रकट भाव प्रतीकों से व्यक्त gkr gA

Mk- उमेशदत्त भट्ट का कथन है कि ''अर्वाचीन संस्कृत साहित्य के प्रfrfuf/k dfo Mk- g"kno ek/ko tc Hkh] viuh fdlh Hkh uohu ltuk d lkFk lLdr&lkfgR; dh /kjk ij vorh.k g, rk og ek= ltuk gh ugh jgh vfir ,d vfHkuo fopkj&Økfr dk /ot Hkh fl) gbA ekfyd fpUruk d ,l mRl lkfgR;dk dk ekul e ,d vnHkr gypy dk vk/kkj djr gA fpUrdk d ikjkokj dh mBrh rjx ikBdk dk eku jgdj dN fHkUu gh lkp e Mky nrh gA og cl bld उन्माद के रस में डूब सा जाता है। आश्चर्य से उसका कण्ठ कुछ पलों के लिए अवाक् ही रह जाता gA Mk- ek/ko dh iR;d dfr e ,lk gh x.k n[ku dk feyrk gA pkg og mudh i;kx/kferk jgh gk ;k irhd ;ktukA fcEcdk0; fo/kku jgk gk ;k feFk i;kxA pkg NUnkc)&vudj.k&dk0; jgk gk ;k irhd :idk dh ;ktuk ,lh dkb ltuk g gh ugh tk uohurk leV dj u pyh gkA D;k cky lkfgR;] D;k dFkk lkfgR;] D;k miU;kl ;k fQj D;k काव्यशास्त्रीय विधान की अवधारणा\ सभी में अद्भुत वैशिष्ट्य देखने को मिलता है। नित्य चिरनवीन विचारों के आकाश का स्पर्श करती कवि–सृष्टि।''[25]

lnHk & v/;k; ipe

1- o.kk :<xfUFk] Hkfedk] i- 4
2- f=ikBh] ik- jk/kkoYyHk] lc dN dk fu"Øe.k] g"kno ek/ko dh dfork l] i- 8
3- ek/ko Mk- g"kno] vyduUnk] i- 123
4- ek/ko Mk- g"kno] vyduUnk] ,dkUre] i-129
5- xlr Mk- ओमप्रकाश, मृगया, आधुनिक की अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति की कविता, पृ- 21
6- ek/ko Mk- g"kno] ex;k] i- 157
7- ek/ko Mk- g"kno] ckmy dk0;e] i- 175

8- f=ikBh] ik- jk/kkoYyHk] lc dN dk fu"Øe.k] g"kno ek/ko dh dfork l] i- 8

9- शर्मा प्रो- gfjnRr] ,d vk/kfud ØkUrn"Vk ØkfUrdkjh dfo] vk/kfud lLdr dh ubZ दिशाएँ, पृ- 39

10- f=ikBh ik- Mk- jk/kkवल्लभ, हर्षदेव माधव की कविता, आधुनिक संस्कृत की नई दिशाएँ, पृ- 15

11- o.kk :<xfUFkk] lLdr dh ledkyhu dfork dk vk/kfud pgjk] Hkfedk] i-- 4

12- ik- हरिदत्त शर्मा, एक आधुनिक क्रान्तदृष्टा क्रान्तिकारी कवि, आधुनिक संस्कृत की नई दिशाएँ, पृ- 42

13- vkgtk Mk- सुदेश, समकालीन संस्कृत कविता के नवीन परिदृश्य, आधुनिक संस्कृत की नई दिशाएँ, पृ- 111

14- ekyh Mk- dUnu] ledkyhu lLdr dfork dh u0;] vk/kfud bckjr] vk/kfud lLdr की नई दिशाएँ, पृ- 120&121

15- मिश्र शिवकुमार, सादृश्यों के दर्पण e uokUe"k d dfo g"kno ek/ko] vk/kfud lLdr dh नई दिशाएँ, पृ- 123

16- शास्त्री म- e- nof"k dykukFk] uokUe"k vkj i;kx/kferk d i;k; ¼ Mk- g"kno ek/ko] आधुनिक संस्कृत की नई दिशाएँ, पृ- 53

17- ik- Mk- jk/kkoYyHk f=ikBh] g"kदेव माधव की कविता, आधुनिक संस्कृत की नई दिशाएँ, पृ- 21

18- vkgtk Mk- सुदेश, समकालीन संस्कृत कविता के नवीन परिदृश्य, आधुनिक संस्कृत की नई दिशाएँ, पृ- 109

19- शर्मा, डॉ- etyrk] ;xn"Vk ,o ;xl"Vk Mk- g"kno ek/ko] vk/kfud lLdr dh ubZ दिशाएँ, पृ- 54

20- तिवारी अर्चना, शब्दप्राणित अनुभूतियाँ/ऋषेः क्षुब्धे चेतसि, आधुनिक संस्कृत की नई दिशाएँ, i- 171

21- nd]&2] i- 3

22- जोशी, नवनीत जे-, एकबिम्बीय काव्य और हर्षदेव माधव, आधुनिक संस्कृत की नई दिशाएँ, i- 224

23- शर्मा, डॉ- etyrk] ;xn"Vk ,o ;xl"Vk Mk- g"kno ek/ko] vk/kfud lLdr dh नई दिशाएँ, पृ- 64

"k"Ve v/;k;

mi lgkj

Mk- g"kno ek/ko lLdr dfork d ;xiorld dfo eku x, gA u doy Hkkjr e yfdu समग्र विश्व में डॉ॰ हर्षदेव माधव अपने सृजनशील साहित्य d fy, ifl) gA u doy dk0; लेकिन कहानियाँ, नाटक, विवेचन, काव्यशास्त्र इत्यादि लगभग साहित्य की हर एक विधा में लेखक u dk; fd;k gA

,d gh fo"k; dk dUn e j[kdj dfork&lePp; dh jpuk djuk ;k fQj NkVh&NkVh dfork dk vUrxfEQr Ük[kyk cukuk dfo g"kno dh dk0; i)fr dk vk/kkj curk g जिससे हमें कवि की बहुपठित मेघा तथा विश्लेषणपरक सामर्थ्य का संकेत मिलता है। इससे यह ckr Hkh fl) gkrh g viu le; e thu okyk dkb Hkh jpukdkj viu le;ck/k l dV dj jpuk rk dj ldrk g yfdu ml jpuk dh vk/kfud eY;oRrk rk fcYdy ugh gk ldrh gA ;g Hkh vdkj.k ugh g fd dfork e ftru i;kx dfo g"kno u fd; g] o lcd lc egt संस्कृत कविता में प्रयोगशीलता दिखने भर को नहीं है वरन् संस्कृत जैसी प्राचीन, शास्त्रीय भाषा की ltukRed lHkkoukvk dk idV dju d fy; fd; gA fQj ;g Hkh g fd viu dk0; fo"k;k dk लेकर कवि किसी भी सीमा या देश–काल में आबद्ध नजर नहीं आता। इस दृष्टि से भी हर्षदेव की कविता संस्कृत काव्य में नवप्रवर्तन को संभव करने वाली कविता मानी जानी चाहिए। संश्लिष्ट तथा lkoHkkfed pruk&lEiUu ifrHkk d ltukRed #ikrj.k dh nf"V l vud dfork, miyC/k g tk fd g"kno dh dfork dk lLdr dh ledkyhu dfork dh ifrfuf/k dfork cukrh g vkj tk lLdr dh <kpkc) dfork l Lo; dk eä dju okyh dfork dk mnkgj.k cu tkrh gA

lLdr dfork d ipfyr dk0; #ikdkjk e jpuk djr g, Hkh dfo fo"k;oLr d fygkt l rk vk/kfud vkj ixfrlUu) gh jgrk gA fcEc&dfork,] gk ;k #id dk0;] pkg gk;d gk या अपेक्षाकृत बड़ी कविताओं का समुच्चय, कवि हर्षदेव नवीन काव्य कलेवर तथा नवशिल्प को viuku d ifr cjkcj rRij utj vkr gA er vkj ver] tM vkj pruk] l{e vkj 0;kid] देशक और वैश्विक, सामाजिक और आध्यात्मिक, क्षण–भंगुज और शाश्वत, सांसारिक और vk/;kfRed] thou vkj eR; bR;kfn fo"k;k dk p;u vkiu fd;k gA

काव्य शिल्प का जहाँ तक प्रश्न है तो कहना pkfg, fd lLdr d l=kRed rFkk oKkfud भाषा होने के नाते मूल संस्कृत में तो काव्य–शिल्प अपने आप में सुगठित, प्रभावकारी ही होगा, क्योंकि संस्कृत का आंतरिक–अनुशासन वैसे भी किसी कवि को मनचाही छूट नहीं देता। हाँ, इतना अवश्य है कि हिन्दी अनुवादों में काव्य–शिल्प कई जगहों पर बिखरा हुआ सा लगता है तो इसे भाषांतरण की प्रक्रिया के खाते में डाला जा सकता है। यह आशा अवश्य की जानी चाहिए कि आने oky le; e lLdr&dk0; vkykpuk g"kno ek/ko dh dfork] mldh dfe;k rFkk [kfc;k ler mldk lE;d eY;kdu vवश्य करेगी। प्रो॰ राधावल्लभ त्रिपाठी की इस बात के लिए प्रशंसा dh tkuh pkfg, fd mUgku g"kno dh dfork dk fgUnh ikBdk rd igpk;k vkj vR;Ur l/k g,] mÙkjnkf;Roi.k <x l igpk;kA

lLdr Hkk"kk e ijkokLrooknh dfork dh jpuk vk/kfud lLdr ok³e; e x.koRrk dh ,frgkfld nf"V l Hkh vHkrio gA vk/kfud lLdr&lkfgR; e ijkokLrooknh dk0;k dk ikjHk सर्वप्रथम हर्षदेव माधव ने ही किया है। वैश्विक घटनाएँ, कवि–चेतना में जो स्पंदन जागती है, उनकी dykRed vfHk0;fDr bu dforkvk e n[kh tk ldrh gA thou&/kferk vkj jpuk&/kferk dk सार्थक सामंजस्य इन रचनाओं की विशिष्ट उपलब्धि है। यहाँ पर संस्कृत का आधुनिकता के साथ

बेजोड़ अनुसंधान दर्शनीय है। कवि ने भाषा को एक नया प्रवाह देकर चित्त की संकुल स्थितियों को ijkokLrooknh nf"Vdk.k l n[kk gA

^^Mk- g"kno ek/ko lLdr e ,l uohu] ij Bkl i;kx dj jg g] ;g n[kr g, Mk- चन्द्रप्रकाश देवल कहते हैं कि ''इस तरह संस्कृत का आज के माध्यम की तरह बरतने का कार्य निश्चय ही वन्दनीय है। अच्छी प्रतिभा से सम्पन्न लेखक, कवि ही यह गुरुतर कार्य कर निष्पादित dj ldrk gA**[1]

श्री द्विवेदी 'प्रणव' की इस कारयित्री प्रतिभा से प्रसन्न होकर कवि को बीसवीं शती की संस्कृत–कविता का नूतन घनश्याम कहते हैं, यह उचित ही है। साथ ही बड़े विश्वास और श्रद्धा से लिखते हैं कि ''संस्कृत कविता को विश्व–कविता के समकक्ष ले जाने का जो प्रकल्प पण्डित राधावल्लभ, राजेन्द्र मिश्र, केशवचन्द्र दाश या द्विवेदी प्रणव रच रहे हैं, उसके भगीरथ आप बनेंगे यह fu%lfnX/k gA

श्री गोविन्द झा का भी यह दृढ़ विश्वास है कि ''पहली अनुक्रिया जिसमें ऐसे–ऐसे उत्कृष्ट dk0; fy[k tku yx g] og lLdr Hkk"kk vc ledkyhu lkfgR; e mruk gh Åpk LFkku ik yxh] ftruk Åpk vklu ikphu lkfgR; e ml ikIr gA**[2]

Mk- हरिदत्त शर्मा इस संदर्भ में कहते हैं कि ''नव सृष्टि, नव काव्य संस्कृत काव्य को विश्वभर e py jg uo dk0;kUnkyu d lekukUrj yk [kMk dj nrk g] lkFk gh ;g lLdr dk ^erHkk"kk] Dykfld Hkk"kk rFkk ikphu Hkk"kk* d lhfer {k= l ckgj ykrk gA bl rjg Jh g"kno ek/ko u lLdr dk viuh ,d u;h igpku nu dk tk miØe fd;k g] og fu%lfnX/k jx yk;xk vkj vk/kfud lLdr lkfgR; e ,frgkfld] vHkrio vkj vfoLej.kh; LFkku ikIr djxkA**[3]

fu"d"kr% dg ldr g fd Mk- g"kno ek/ko dh dfork ledkyhu lLdr Hkk"kk dh u;h i;kx/keh dfork g tk thou d l?k"k o HkVdko d e/; lQyrk d u; vFk [kktrh gA

परम्परागत बन्धनों से मुक्त वह वैश्विकता के उस धरातल पर पहुँचना चाहती है जहाँ देश, जाति, धर्म, सम्प्रदाय की कोई सीमा न हो, जहाँ सृष्टि का रम्य प्रकाश व वरेण्य तेज हो। संवेदनशील कवि dh ;gh dfork ;k=k mls ledkyhu gh ugh] lkodkfyd Hkh cukrh gA

lUnHk & "k"Be v/;k;

1- ek/ko Mk- g"kno] HkkofLFkjkf.k tuukUrjlkânkuh] i- 165
2- ek/ko Mk- g"kno] d..kD;k f{kIr ekf.kD;uije] vkoj.k i"B 2
3- ek/ko Mk- g"kno] HkkofLFkjkf.k tuukUrjlkânkuh] i- 34

lnHk xFk lph

Ø-l-	xUFk	y[kd@liknd	प्रकाशक
g"kno ek/ko d ekfyd xUFk			
1-	jF;kl tEco.kkuk शिराणाम् (1985 ई-½	Mk- g"kno ek/ko	पार्श्व पब्लिकेशन vgenkckn ¼xtjkr½
2-	vyduUnk ¼1990 b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
3-	शब्दानां निर्मक्षिकेषु ध्वंसाशेषेषु (1993 ई-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
4-	ex;k ¼1994 b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
5-	cgUuyk ¼1995 b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
6-	ykokjlfnX/kk Lolue;k iorkS ¼1996 b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
7-	vklhPp e eufl ¼1997b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
8-	fu"ØkUrkS lo ¼1997 b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
9-	ijk ;= L=krk ¼1998 b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
10-	मृत्युशतकम् (1999 ई-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
11-	dkyk·fLe ¼1999 b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
12-	l"kE.kk;k fueXuk ukdk ¼1999 b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
13-	HkkofLFkjkf.k tuukUrjlkânkfu ¼2000b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
14-	d.kD;k f{klr ekf.kD;uije ¼2000 b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
15-	l/kkflU/kke/; ¼2002 b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&

16-	Hkkfr r Hkkjre ¼2007 b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
17-	eR;L; dLrjhexk·fLr ¼1998 b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
18-	dYio{k ¼2002 b-½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
19-	lLdr ledkyhu dfork	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
20-	ikjkf.kd dFkk,i vkj vk[;ku&,d voykdu	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
21-	u[kkuk ikf.MR;e	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
22-	u[kfpUg ¼2001½	Mk- g"kno ek/ko	&&^^&&
23-	वागीश्वरी कण्ठसूत्रम् (2011)	Mk- g"kno ek/ko	jk"Vh; lLdr lLFkku] ub fnYyh

vU; xUFk

1-	vfHkuodk0;kydkjl=e	ik- jk/kkoYyHk f=ikBh	lEi.kkuUn lLdr विश्वविद्यालय, वाराणसी
2-	अभिराजयशोभूषणम्	^vfHkjkt* jktUn feJ	वैजयन्त प्रकाशन, bykgkckn ¼2006½
3-	काव्यप्रकाश	eEeVkpk;l	Kkue.My fyfeVM okjk.klh ¼1998½
4-	dk0;ehekIk ¼1&5 v/;k;½	राजशेखर	pk[kEck IjHkkjrh okjk.klh ¼2002½
5-	काव्यादर्श	n.Mh	pk[kEHkk fo|kHkou] okjk.klh ¼1996½
6-	dk0;kydkjdkfjdk	jokiIkn f}onh	pk[kEHkk IjHkkjrh okjk.klh ¼1977½

7-	vfXuijk.kkDr	l- ikjukFk f}onh	lEi.kkuUn lLdr विश्वविद्यालय, वाराणसी
8-	अभिनवकाव्यशास्त्रम्	Mk- शंकरदेव अवतरे	lkfgR; lgdkj] fnYyh ¼2001½
9-	शिojktfot;	i- vfEcdknÙk 0;kl	हंसा प्रकाशन, जयपुर ¼2007½
10-	दशरूपक	/ku¥t;	pk[kEck fo|kHkou] okjk.klh
11-	/oU;kyksd ¼ykspuVhdk lfgr½	vkuUno/kukpk;Z	pk[kEHkk lLdr Hkou] okjk.klh ¼2061 fo-l½
12-	नाट्यशास्त्र	Hkjrefu	fo|kfuf/k प्रकाशन fnYyh ¼1998½
13-	lkfgR;niZ.k ¼foeyk 0;k[;k lfgr½	विश्वनाथ	ekrhyky cukjlhnkl fnYyh ¼2009½
14-	vokphu lLdr lkfgR; दशा एवं दिशा	l- मंजुलता शर्मा	परिमल पब्लिकेशन fnYyh ¼2004½
15-	vk/kfud lLdr dkO; ijEijk	केशवराव मुसलगावकर	pk[kEHkk fo|kHkou okjk.klh ¼2004½
16-	vk/kfud lLdr lkfgR; dk bfrgkl ¼lIre [k.M½	l- txUukFk ikBd	उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान y[kuÅ ¼2000½
17-	vk/kfud lLdr lkfgR; Jh	l-jk/kkoYyHk f=ikBh	प्रतिभा प्रकाशन, fnYyh ¼2001½
18-	vk/kfud lLdr lkfgR;frgkl%	Mk- jkedekj nk/khp	हंसा प्रकाशन, जयपुर ¼2004½

19-	vk/kfud lLdr	देवर्षि कलानाथ शास्त्री पदम् शास्त्री	जगदीश संस्कृत पुस्त- t;ij ¼2004½
20-	vk/kfud fgUnh vkykspuk	cPpufLg	वाणी प्रकाशन fnYyh ¼2007½
21-	dk0;तत्व विमर्श	Mk- jkeefr f=ikBh	वाणी प्रकाशन, fnYyh] 2008
22-	nook.kh lokl ¼Hkkx nk½	l- vfHkjkt jktUn feJ	देववाणी प्रकाशन
23-	lLdr dfork dh ykd/keh ijEijk	Mk- jk/kkoYyHk f=ikBh	रामकृष्ण प्रकाशन, e- i- ¼2000½
24-	lLdr d गौरव शिखर	nof"k dykukFk शास्त्री	jk"Vh; lLdr lLFkku fnYyh ¼1998½
25-	lLdr lkfgR; dk vfHkuo bfrgkl	Mk- jk/kkoYyHk f=ikBh	fo-fo- प्रकाशन okjk.klh ¼2001½
26-	lLdr lkfgR; dk bfrgkl	कलानाथ शास्त्री	;fud VMl t;ij ¼2003½
27-	lLdr lkfgR; dk bfrgkl	Mk- उमाशंकर ^_f"k*	pk[kEHkk Hkkjrh; vdkneh
28-	lLdr lkfgR; dk bfrgkl ¼ofnd o ykdd [k.M½	ihfriHkk xk;y	jktLFkkuh xUFkkxkj] tk/kij
29-	lLdr lkfgR; dk leh{kkRed bfrgkl	Mk- dfiyno f}onh	bykgkckn ¼2004½
30-	lLdr lkfgR; dh	ik.M; ,o 0;kl	lkfgR; fudru

	:ij[kk		dkuij ¼2001½
31-	lLdr lkfgR;% बीसवीं शताब्दी	Mk- jk/kkoYyHk f=ikBh	jk"Vh; lLdr lLFkku fnYyh ¼1999½
32-	lLdr lkfgR; e vU;kfDr	jktUn feJ	fgUnh lkfgR; lEeyu i;kx ¼1985½
33-	lLdr ldfo leh{kk	cyno mik/;k;	pk[kEHkk fo|kHkou okjk.klh ¼1987½
34-	समीक्षाशास्त्र	i- lhrkjke pronh	d".knkl vdkneh okjk.klh ¼1983½
35-	LokrU«;kRrj lLdr dk0; e gkL; 0;X;	Jhjke Bkdj *nknk*	प्रतिभा प्रकाशन fnYyh ¼1999½
36-	dkfynkl xUFkkoyh	l- cãkuUn f=ikBh	pk[kEHkk ljHkkjrh] okjk.klh ¼2005½
37-	भर्तृहरिशतकत्रय		/khjt ikdV cDl] ejB
38-	विंशशताब्दी काव्यामृतम् ¼iFke Hkkx½	l- ^vfHkjkt* jktUn feJ	fnYyh lLdr vdkneh
39-	विंशश्कrkCnh dk0;kere ¼f}rh; Hkkx½	l- pUnHk"k.k >k	fnYyh lLdr vdkneh
40-	mnckgokeurk	Mk- ioh.k i.M;k	jk"Vh; lLdr lkfgR; dUn] t;ij] 2006
41-	T;kfrTokyue	Mk- ioh.k i.M;k	सांस्कृतिक अनुशीलन lLFkku] lkpkj] 2005
42-	thokrjlek/ohde	Mk- ioh.k i.M;k	jk"Vh; lLdr lkfgR; dUn] t;ij] 2010

कोश ग्रन्थ –

44-	अमरकोश	vejflg	pk[kEHkk lLdr ifr"Bku fnYyh
45-	बृहत् हिन्दी कोश	l- dkfydki lkn	Kkue.My fyfeVM okjk.klh ¼2008½
46-	lLdr fgUnh कोश	वामन शिवराम आप्टे	ch- ch- lh- fnYyh ¼2002½
47-	साहित्य दर्पण कोश	Mk- रमणकुमार शर्मा	विद्या निधि प्रकाशन fnYyh ¼1996½
48-	हिन्दी–संस्कृत शब्दकोश	श्री प्रकाश पाण्डेय	lLdr Hkkjrh] fnYyh ¼2006½
49-	हिन्दी साहित्य कोश ¼iFke Hkkx½	l- /khjUnz oek	Kkue.My fyfeVM okjk.klh ¼2009½
50-	Anglo-Hindi Dictionary	l vkj-lh- ikBd	Jh xxk iLrdky; okjk.klh ¼2007½

i=&if=dk,¡ &

51-	dFkklfjr	l- बनमाली बिश्वाल o ukjk;.k nkl	dFkkHkkjrh] i;kx
52-	nd	i- l- xkfoUn pUn ik.M;	nx Hkkjrh] bykgkckn
53-	nok	l- विन्ध्येश्वरी प्रसाद feJ	dkfynkl vdkneh] mTtSu ¼e-i-½
54-	ukV;e	l- jk/kkoYyHk f=ikBh	ukV; ifj"kn] lkxj मध्यप्रदेश

55-	Hkkjrh	i- l- dykukFk शास्त्री	Hkkjrh; Hkou t;ij
56-	विश्वज्योति	i-l- bUnnÙk mfu;ky	साधु आश्रम, होशियारपुर
57-	विश्वम्भरा	l- दिवाकर शर्मा	हिन्दी विश्वभारती chdkuj ¼jkt-½
58-	विश्वसंस्कृतम्	l- bUnnÙk mfu;ky	विश्वेश्वरानंद शोध संस्थान (होशियारपुर)
59-	शोधप्रभा	i- l- okpLifr mik/;k;	ykycgknj lLdr fo|kihB] fnYyh
60-	संस्कृत विमर्श	l- deykdkUr feJ	jk"Vh; lLdr lLFkku fnYyh
61-	सम्भाषण सन्देश	l- txUukFk gxM	fxfjuxj] cxy :
62-	lkxfjdk	l- jk/kkoYyHk f=ikBh	lkxfjdk lfefr lkxj ¼e-i-½
63-	vk/kfud lLdr lkfgR; lnHk lph	l- jk/kkoYyHk f=ikBh	jk"Vh; lLdr lLFkku fnYyh ¼2002½
64-	Catalogue of the 20th Century Sanskrit Works	vfHkjkt jktUn feJ	अक्षयवट प्रकाशन bykgckn